हिन्दी-पर्यायवाची कोश

जिसमें विषयों के अनुसार समस्त व्यावहारिक शब्दों की
पर्यायों का वर्गीकरण ४ खण्ड और ३६ वर्गों में
बड़ी उत्तमता के साथ हुआ है।

लेखक
पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल

विद्या-मन्दिर
ब्रह्मनाल, वाराणसी-१

प्रकाशक
विद्या-मन्दिर,
ब्रह्मनाल, वाराणसी

संशोधित एवं परिवर्द्धित
सस्करण

मूल्य : चालीस रुपये

मुद्रक
हितचिन्तक प्रेस,
रामघाट, वाराणसी-१

परिचय

आजकल हिन्दी के कई छोटे-बड़े शब्द-कोश बन गये हैं जिनका संकलन अक्षर-क्रम से होने के कारण ज्ञात शब्दों के अर्थ ढूँढ़ने में बहुत सुबीता रहता है। पर शब्द-कोश-संकलन की एक और पुरानी पद्धति हमारे यहाँ प्रचलित थी, जिसमें वस्तुओं के वर्गीकरण के अनुसार शब्द रखे जाते थे। वह पद्धति सर्वथा अनुपयोगी नहीं कही जा सकती। अक्षर क्रम से संकलित आधुनिक ढंग के कोशों में हम ज्ञात शब्दों के अर्थ निकाल सकते हैं। पर यदि किसी को कोई वस्तु या पदार्थ ज्ञात है, पर उसके लिये ठीक शब्द उसके ध्यान से उतर गया है, तो उसका काम अक्षर क्रमवाले कोशों से नहीं निकल सकता। उसके लिये वस्तुओं के वर्ग-विधान वाले कोश ही काम दे सकते हैं ऐसे कोशों से कविता या लेख लिखने का अभ्यास करने वाले भी लाभ उठा सकते हैं। किसी दृश्य के वर्णन के लिये उन्हें बहुत से वृक्षों, पशुओं या नगर की वस्तुओं के लिये अनेक प्रकार के शब्द एकत्र मिल सकते हैं। यही बात किसी प्रसंग के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। किसी शब्द के अनेक पर्य्यायवाचक शब्द भी चुनाव के लिये एक जगह मिल जायँगे।

इस प्रकार के कोशों की उत्तमता वस्तुओं के वर्गीकरण में देखी जाती है। जितने ही अधिक और जितने ही ठीक वर्ग पदार्थों के किये जायँगे उतनी ही सुगमता शब्द ढूँढ़ने वालों को होगी। हिन्दी में "अनेकार्थ नाममाला" ऐसे कुछ पद्यबद्ध पुराने कोश बने थे। पर पद्यबद्ध होने के कारण उनके पर्य्याय शब्दों के अतिरिक्त कुछ फालतू शब्द भी छन्द के अनुरोध से रखे रहते हैं जिससे भ्रम की सम्भावना रहती है। वस्तु-वर्ग-विधान वाला ऐसा शब्द-कोश जिसमें केवल पर्य्याय रखे गये हों, मैं समझता हूँ यह पहला है। आयुर्वेद, ज्योतिष इत्यादि भिन्न भिन्न विषयों के ग्रन्थों से भी शब्द लिये जाने के कारण शब्दों की संख्या इस कोश में अधिक है। पाण्डेय श्रीकृष्ण शुक्ल का यह प्रयत्न निस्सन्देह स्तुत्य है। उन्होंने बड़े परिश्रम से यह कोश प्रस्तुत किया है।

आशा है, जिन लोगों के लिये यह ग्रन्थ तैयार किया गया है वे इससे पूरा लाभ उठायेंगे और संकलनकर्त्ता को धन्यवाद देंगे।

दुर्गाकुण्ड, काशी }
१८-५-३५.

रामचन्द्र शुक्ल,
प्रोफेसर हिन्दी-विभाग,
हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी।

प्राक्कथन

(प्रथम संस्करण)

हिन्दी के अर्वाचीन साहित्य में बहुधा संस्कृत के तत्सम शब्दों का बाहुल्य देख पड़ता है, जिनके लिये प्रायः विद्यार्थी, लेखक और कवि हिन्दी और संस्कृत के शब्द-कोशों की सहायता लेते हैं। शब्द-कोशों में समानार्थवाचक शब्दों की संख्या परिमित होती है, जिससे विद्यार्थियों एवं कवियों में प्रचुर शब्द-भाण्डार की पूँजी नहीं हो पाती। फलस्वरूप वे उन्हीं इ नेगिने शब्दों को लेकर साहित्य क्षेत्र में अवतरित होते हैं और अपनी रचनाओं में प्रायः शब्द दारिद्र्य का ही प्रदर्शन करते हैं। यदि उन्हें पर्य्यायवाची शब्दों की नितान्तावश्यकता जान भी पड़ी तो 'हिन्दी-शब्दसागर', 'मङ्गलकोश', 'शब्दार्थपारिजात' आदि हिन्दी के अर्थकोश अथवा संस्कृत के 'अमरकोश' की सहायता लेते हैं। जब इतने पर भी उनकी पिपासा पूर्ण नहीं होती, तो वे या तो संस्कृत के अन्यान्य कोशों की खोज करते हैं, अन्यथा इत्यलम् समझ कर चुप बैठते हैं।

इस प्रकार की कठिनाइयाँ हिन्दी-साहित्य के उच्च कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा मेरे सामने कई बार आईं। यथासाध्य मैं उनका तो समाधान करता गया, परन्तु मेरे मन में यह बात बराबर खटकती रही कि हिन्दी का कोई ऐसा पर्य्यायवाची कोश नहीं है जिस एक ही ग्रन्थ से हम सभी विषयों के शब्दों के यथेष्ट पर्य्याय प्राप्त कर सकें। बहुत कुछ खोज करने पर जो कुछ एक छोटे-मोटे पर्य्याय कोश मिले भी वे अपूर्ण और नितान्त अक्रम थे। उनसे अच्छी और बहुत अच्छी सहायता तो 'अमरकोश' नामक अत्यन्त व्यापक और प्रचलित संस्कृत कोश से ही मिल जाती है। हिन्दी संसार के इस समुन्नत क्षेत्र में इस प्रकार का अभाव मेरे लिये असह्य हो गया। मैं दिन रात इसी चिन्ता में व्यग्र था कि किस प्रकार हिन्दी के माथे से इस अभाव का कलङ्क मिटाया जाय? मैंने एक बार अपनी यह चिन्ता गुरुवर स्वर्गीय लाला भगवान दीनजी के समक्ष प्रगट की और उनसे प्रार्थना की कि वे इस अभाव को दूर करके हिन्दी के भण्डार की एक बृहत् पर्य्याय कोश से अभिवृद्धि करें। पहिले तो लालाजी ने

मेरी प्रार्थना पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया, परन्तु जब मैं इसी बात को लेकर उनके पीछे पड़ गया और कई बार अपनी आकांक्षा प्रकट की तब एक दिन आपने मुझसे झिझक कर कहा कि "मुझे तो समय नहीं है, तुम्हीं क्यों नहीं लिख डालते ?"

मेरे हृदय में इस विचार का बीजारोपण तो पहिले ही से हो चुका था, उसपर "गुरोराज्ञा गरीयसी" का सिञ्चन पाकर पूर्वारोपित बीज अंकुरित हो उठा। "आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है" इस सिद्धान्त के अनुसार मैं अपने कार्य के साधनों का जुगाड़ करने लगा और विश्वेश्वर की अनुकम्पा एवं गुरुवर के आशीर्वाद से विक्रमाब्द १९७८ की गुरुपूर्णिमा को मैंने इस कार्य का आरम्भ किया। प्रायः तीन महीने के परिश्रम से प्रथम खण्ड समाप्त करके मैंने गुरुवर लालाजी के सामने अपना सङ्कलन रखा, जिसे देखकर उन्हें आश्चर्य और अत्यधिक प्रसन्नता हुई। आपने मेरी पीठ ठोंकी और अपने अन्तःकरण की रत्नमञ्जूषा से निकाल कर शुभाशीर्वाद रत्न का पुरस्कार दिया। मेरा उत्साह और साहस बढ़ा। मैंने सहायक ग्रन्थों का संग्रह करना आरम्भ किया। कुछ ही साधक ग्रन्थ जुट पाये थे कि अनेक सांसारिक झंझटों के कारण कई वर्षों तक यह कार्य स्थगित रहा। इसी बीच मेरे प्रोत्साहक गुरुवर लालाजी का स्वर्गवास हो गया। परन्तु उनका दिया हुआ सत्साहस एवं आशीर्वाद-रत्न मेरे हृदय के एक कोने में सुरक्षित रहा, जिसके दिव्यालोक में मैंने पुनः लिखना आरम्भ किया। कार्य की अधिकता एवं समय का अभाव होते हुए भी मैं अपने अनुष्ठान में लगा रहा और इश्वर प्रायः तीन वर्षों के अविरत परिश्रम से आषाढ़ कृष्ण एकादशी सं० १९९१ वि० को यह 'हिन्दी-पर्य्यायवाची-कोश" समाप्त होकर सर्वान्तर्यामी भगवान शंकर के चरणारविन्द में समर्पित हुआ।

विषयों के अनुसार इस ग्रन्थ का विभाजन चार खण्डों में किया गया है। प्रथम खण्ड में देवादि शब्दों के पर्य्याय दिये गये हैं, जिसमें देवता, देवतुल्य विशिष्ट व्यक्ति, तीर्थ, आकाश के ग्रहोपग्रह-नक्षत्रादि, दिशा-कालादि के नामों के पर्य्याय कुल छः वर्गों में विभाजित हैं, जिनमें मूल शब्दों की संख्या २६७ है। द्वितीय खण्ड में स्थल एवं जल के विभिन्न विभागों के साथ-हीसाथ उद्भिज्ज, खनिज और जलजादि सम्बन्धी शब्दों के पर्य्यायों का वर्गीकरण १५

वर्गों में हुआ है, जिनमें कुल ५८६ मूल शब्दों के पर्य्याय हैं। तृतीय खण्ड में मानव जगत के शब्दों का विभाजन ११ वर्गों में किया गया है, जिनमें कुल ९९८ मूल शब्दों के पर्य्याय हैं, चतुर्थ खण्ड में मानवेतर जीवों (पशु-पक्षी-कीट-पतङ्गादि) एवं कुछ चुने हुए क्रियापदों के पर्य्याय दिये गये हैं, जिसमें कुल ५ वर्गों में विभाजित ४०० मूल शब्दों के पर्य्याय हैं। इस प्रकार यह सम्पूर्ण ग्रन्थ विषयानुसार ३७ वर्गों में विभाजित है, जिनमें कुल २२७१ मूल शब्दों के पर्य्याय हैं। ग्रन्थ का वर्गीकरण करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि हमारे व्यवहार में आनेवाले विषय एवं उनके अन्तर्गत उपयोगी शब्द यथासम्भव न छूटने पावें। फिर जहाँ इन्द्रादिक देवता भी शब्द-वारिधि का पार न पा सकें वहाँ हमारी तुच्छ बुद्धि उसके अवगाहन में कहाँ तक समर्थ हो सकती है?

वर्गों के अनुसार शब्द-संग्रह करने में मुझे विभिन्न विषयों के ग्रन्थों से सहायता लेनी पड़ी। हिन्दी शब्द-कोशों में अर्थ-विचार से इने-गिने शब्द रखे जाते हैं, उनसे पर्य्याय का पूरा मतलब हल नहीं हो पाता। सुतरां संस्कृत कोशों की सहायता के बिना शब्द-भाण्डार सर्वथा अपूर्ण ही रहता है। अतः मैंने संस्कृत के अमरकोश, वैजयन्ती कोश, मेदिनी कोश, शब्दकल्पद्रुम से, एवं हिन्दी के शब्दसागर, शब्दार्थपारिजात, नाममाला (नन्ददास) और विश्व-कोश से शब्दों के पर्य्यायों का संग्रह किया। जब इतने ग्रन्थों से शब्द संग्रह करने पर भी मुझे आयुर्वेद, ज्यौतिष सम्बन्धी शब्दों के यथेष्ट पर्य्याय नहीं मिल सके तब मैंने आयुर्वेद और ज्यौतिष के ग्रन्थों से शब्द संग्रह करना आरम्भ किया। इस प्रकार मैंने शालिग्रामनिघण्टु, राजनिघण्टु, हरीतक्यादि निघण्टु, बृहन्निघण्टु रत्नाकर, भाव-प्रकाश, माधव-निदान आदि आयुर्वेद के ग्रन्थों एवं सूर्य्यसिद्धान्त, ग्रह लाघव, मुहूर्त्त-चिन्तामणि आदि ज्यौतिष ग्रन्थों से एतद्विषयक शब्दों का सङ्कलन किया।

यद्यपि यह ग्रन्थ केवल पर्य्याय के अभिप्राय से लिखा गया है, तथापि पाठकों की विशेष जानकारी के लिये मैंने यथास्थान उपयोगी पादटिप्पणियों का भी समावेश कर दिया है। इन टिप्पणियों में अनेक शास्त्रों एवं पुराणादिकों के मतानुसार कहीं तद्विषयक विस्तृत व्याख्या, कहीं परिभाषा, कहीं परिचय और

कहीं वस्तुओं के आकार प्रकार, भेद, गुण दोषादि का विवेचन किया गया है। जैसे 'दुर्गा' का पर्य्याय देते हुए टिप्पणी में देवी के अन्तर्गत पञ्चदेवी, सप्तमाता, नवदुर्गा, नवकन्यका, नवशक्ति, दश महाविद्या और चौंसठ योगिनियों के नामों का उल्लेख कर दिया गया है। 'अग्नि' शब्द की टिप्पणी में वैद्यक मत से अग्नि के तीन प्रकार एवं कर्मकाण्डानुसार अग्नि के छः भेदों का उल्लेख हुआ है। 'वायु' शब्द पर शरीरस्थ पञ्चवायु एवं उनचासों पवनों के नाम दिये गये हैं। खनिज वर्ग में गन्धक, हरिताल, अभ्रक और शिलाजीत के भेद, उत्पत्ति, लक्षण और गुणों की व्याख्या पुराण और वैद्यक दोनों मतानुसार की गई है। इसी प्रकार संस्कार, विद्या, व्यसन और कलाओं के भेदों के नाम, नाट्यशास्त्रानुसार रूपकों और उपरूपकों के भेद, गायन-वादन कला के अनुसार स्वरतालादि के भेदोपभेद वर्णित हैं। इस प्रकार पाद टिप्पणियों के समावेश से ग्रन्थ की उपयोगिता अधिक बढ़ गई है। मेरा विश्वास है कि ये पाद टिप्पणियाँ पाठकों को मनोरञ्जन के साथ ही साथ अपनी उपयोगिता से सन्तुष्ट करेंगी।

मुझे इस बात का अवश्य दुःख है कि शब्दों के जितने पर्य्याय मैंने दिये हैं, वे सबके सब अपने मूल शब्द के आन्तरिक भावों के द्योतक नहीं हो सके। बहुत से ऐसे शब्द हैं जो वास्तविक पर्य्याय न होकर पर्य्यायाभास मात्र कहे जा सकते हैं। परन्तु उनके प्रयोगों की रूढ़ि पर्य्याय रूप से ही चली आ रही है, अतएव वे अब पर्य्याय ही में परिगणित हो रहे हैं। ऐसे शब्दों के सङ्कलन करने में मेरा विशेष दोष नहीं। हम संस्कृत कोशों में भी ऐसे दोष पर्य्याप्त रूप में पाते हैं। वास्तव में उन कोशकारों ने भी शब्दों के पर्य्याय देने में वस्तुओं के आकार प्रकार, गुण-दोष एवं व्यवहारादि के अनुसार पर्य्याय दिये हैं। अतः कहीं-कहीं तो शब्द वाच्यार्थ बोधक और कहीं लक्ष्यार्थ बोधक हो गये हैं। जैसे 'शंखाहुली' का पर्य्याय 'मेध्या' है। यह वास्तविक पर्य्याय नहीं प्रत्युत यह नाम शंखाहुली में मेधा शक्ति बढ़ानेवाले गुण के अनुसार है। अतः यह शंखाहुली का वाचक नहीं लक्षक शब्द कहा जा सकता है। इसी प्रकार 'तरबूज' नामक फल का पर्य्याय उसके आकार-प्रकार के अनुसार माँसफल, माँसल, सुवर्त्तुल दिया गया है, एवं उसके स्वाद के अनुसार 'सुखाश' नाम पड़ा है।

ऐसे ही बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनके पर्य्याय किसी अन्य शब्द के पर्य्याय से मिलते हैं। यथा 'हलदी' शब्द के जितने पर्य्याय हैं उनसे 'रात्रि' का, एवं 'रात्रि' के पर्य्याय से हलदी का परस्पर समान बोध होता है। इसी प्रकार 'मिलावाँ' और 'अग्नि' शब्द के पर्य्याय परस्पर एक दूसरे के अर्थ बोधक हैं। विज्ञजन प्रसंगानुसार वास्तविक अर्थ लगा लेते हैं।

अनेकार्थ बोधक बहुत से ऐसे शब्द भी मिलते हैं जो कई शब्दों के पर्य्याय हैं। जैसे 'हरि' शब्द सिंह, बन्दर, विष्णु भगवान और सुवर्ण का; 'शिव' शब्द सियार, शंकर भगवान और कल्याण का एवं 'पुष्कर' शब्द आकाश, जल और पोखर (तालाब) का बोधक होता है अस्तु, अनेक शब्दों के अनेक अर्थ होने पर भी प्रसंगानुसार उनसे एक ही अर्थ का बोध किया जाता है।

हमारी व्यावहारिक हिन्दी भाषा में पर्य्यायों का प्रयोग प्रायः नहीं होता, इसलिये हमें अर्थ में एक ही शब्द का प्रयोग जो परम्परा से चला आता है, करने का अभ्यास पड़ गया है। कहीं-कहीं एक अर्थ में एक से अधिक दो या तीन शब्द भी प्रयोग में आते हैं, बस, इतना ही बहुत है। जैसे पानी के लिये पानी या जल इन्हीं दो शब्दों का प्रयोग हिन्दी भाषा भाषियों में प्रचलित है। अब इनके अतिरिक्त किसी अन्य पर्य्याय जैसे घनरस, अमृत, वारि, तोय, जीवन आदि का प्रयोग करें तो वह एक हँसोड़मात्र होगा। हाँ, पद्यरचना में हम पर्य्यायों का स्वेच्छया प्रयोग करते हैं और वह परम्परित प्रथा होने के कारण कुछ बुरा भी नहीं जान पड़ता। किसी देश, प्रान्त वा समाज की बोल-चाल की भाषा प्रायः सरल एवं परम्परित होती है, किन्तु उसी देश वा समाज के साहित्य की भाषा बोलचाल की भाषा की अपेक्षा कुछ क्लिष्ट और अप्रचलित हो सकती है। कारण इसका केवल यही जान पड़ता है कि बोलचाल की भाषा पठित एवं अपठित समाज में समान रूप से व्यवहृत होती है, इसी लिये उसका एक सरल, व्यापक और परम्परित रूप ही व्यवहार में आता है और साहित्य की भाषा पठित समाज के सामने आती है, इसलिये उसका क्षेत्र बोलचाल की भाषा से अधिक व्यापक और रूप कहीं-कहीं क्लिष्ट भी होता है। इसमें ही हम एक अर्थ का बोध करानेवाले अनेक पर्य्यायों का प्रयोग करते हैं। हमें अपने भावों को व्यक्त करने में कभी-कभी शब्दों के लक्षक

एवं व्यञ्जक रूपों का भी प्रयोग करना पड़ता है, और उस समय उनसे वाच्यार्थ न निकाल कर लक्ष्यार्थ वा व्यङ्गयार्थ ही का बोध करना श्रेयस्कर होता है। जैसे 'तुम तो पूरे नारद हो', 'वह बड़ा कौआ है', 'वह तो सूख कर काँटा हो गया है', इनमें नारद का लक्ष्यार्थ झगड़ालू, कौआ का चेष्टावान और काँटा का अत्यन्त कृश ही होगा। यहाँ कहनेवाले के भाव से वाच्यार्थ कदापि स्पष्ट नहीं हो सकता। इसी प्रकार जब हम दूब नामक घास का प्रयोग साधारणतः घास के अर्थ में करना चाहते हैं तब तो दूब वा दूर्वा भले ही कह लें, परन्तु जब उसका प्रयोग किसी मंगल सूचक अर्थ में किया चाहते हैं तब उसे मंगल्या, अमृता, गौरी, गुणा, विजया, शिवा, शिवेष्टा, शुभा, स्वच्छा, सुरवल्लभा, अनन्ता, महावरा आदि अनेक मंगल वाचक शब्दों से बोधित करते हैं। क्योंकि ये शब्द दूर्वा में मंगलात्मक गुणों का लक्ष्य कराते हैं, अतः ये दूब के लक्षक पर्य्याय हैं। इसी प्रकार शब्दों के विभिन्न पर्य्याय उनके गुण, दोष, बल, वीर्य, विपाक, आकार, प्रकार, आदि के अनुसार विभिन्न अवस्थाओं में प्रयुक्त हो सकते हैं। अब इन पर्य्यायों का उचित उपयोग उनके प्रयोग करने वाले की योग्यता पर निर्भर है। वह चाहें उसका उचित प्रयोग करें वा अनुचित, इसके लिये यश वा अपयश के भागी वे ही हो सकते हैं। पर्य्याय तो सभी ठीक हैं।

इस कोश में विभिन्न ग्रन्थों से ऐसे भी शब्द संकलित हुए हैं जिनमें से अधिकांश हमारे व्यवहार और प्रयोग से दूर हो गये हैं। अतः उनके ठीक ठीक रूपकरण में मुझे सन्देह है। मैंने उन ग्रन्थों में—जिनसे शब्द संग्रह किया है, जैसा रूप देखा ज्यों का त्यों वैसा ही दिया है, यदि कहीं उनके रूप अशुद्ध रह गए हों तो विद्वज्जन सुधार कर मुझे उसकी सूचना देने का कष्ट करेंगे। मैं उनके इस उपकार का आभारी रहूँगा। इसके अतिरिक्त कुछ प्रूफ संशोधन में भी भूलें रह गई हैं, जिनके लिए "शुद्धि-पत्र" देकर उनका सुधार कर दिया गया है। पाठक कृपया उसके अनुसार संशोधन करके तब ग्रन्था-वलोकन करें।

"हिन्दी-पर्य्यायवाची-कोश" लिखने में जिन २ ग्रन्थों से मैंने सहायता ली है, उनके नाम नीचे दिये जाते हैं—

संस्कृत-ग्रन्थ—

१. अमरकोश
२. मेदिनीकोश
३. वैजयन्तीकोश
४. जटाधर
५. शब्दकल्पद्रुम
६. माधव निदान
७. भावप्रकाश
८. शालिग्राम निघण्टु
९. हरीतक्यादि निघण्टु
१०. राज निघण्टु
११. बृहन्निघण्टु रत्नाकर
१२. सूर्यसिद्धान्त
१३. ग्रहलाघव
१४. मुहूर्त्त चिन्तामणि
१५. अग्निपुराण
१६. ब्रह्मवैवर्त्तपुराण
१७. देवीपुराण
१८. राजवल्लभ
१९. गारुड़ी
२०. कामसूत्रम् (वात्स्यायन)
२१. काव्य-प्रकाश
२२. संगीत दामोदर
२३. मनुस्मृति
२४. चाणक्यनीति
२५. शुक्रनीति

हिन्दी-ग्रन्थ—

२६. रामचरितमानस
२७. काव्य-प्रभाकर
२८. रूपक-रहस्य
२९. शब्द-सागर
३०. विश्वकोश
३१. नाममाला
३२. नाम-रामायण
३३. शब्दार्थ पारिजात
३४. मङ्गलकोश
३५. पाक-प्रकाश

जिन ग्रन्थों से मैंने इस कोश-रचना में सहायता ली है, उनके लेखकों एवं अपने प्रथम प्रोत्साहक गुरुवर स्वर्गीय लाला भगवान 'दीन' जी को अभिवादन पूर्वक धन्यवाद देता हूँ। साथ ही मैं आचार्य पण्डित रामचन्द्र शुक्ल (प्रोफेसर हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी) का अत्यन्त उपकृत हूँ जिन्होंने कृपापूर्वक इस ग्रन्थ का 'परिचय' लिख कर इसकी पद्धति एवं उपयोगिता का समर्थन किया

है। मैं उन विद्वानों का भी अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने अपनी शुभ सम्मति द्वारा ग्रन्थ की उपयोगिता प्रमाणित की है। अन्त में मैं अपने अभिन्न मित्र पं॰ जगन्नाथ प्रसाद शर्मा 'रसिकेश' एम॰ ए॰ (प्रोफेसर, हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी) को हृदय से धन्यवाद देता हूँ जो सर्वदा हमारे सभी कार्यों में सत्परामर्शदाता रूप से सहायक रहते हैं। इस कोश की रचना में आपने ही प्रायः सभी सहायक ग्रन्थों का संग्रह करके मुझे कार्यक्षेत्र में प्रोत्साहित किया है।

मैंने इस कोश का सङ्कलन अपनी बुद्धि के अनुसार यथासाध्य बहुत कुछ परिश्रम से किया है। मेरा विश्वास है कि इस छोटे से कोश से हमारे व्यवहार के प्रायः सभी वर्ग के शब्दों के पर्य्याय मिल सकते हैं। साथ ही जो थोड़ी बहुत पाद टिप्पणियाँ दी गई हैं, उनसे भी मनोरञ्जन पूर्वक लाभ की सम्भावना है। मुझे पूर्ण आशा है कि यह "हिन्दी-पर्य्यायवाची-कोश" कवि, लेखक, समालोचक, शिक्षक और विद्यार्थी वर्ग का एक विश्वस्त मित्र के समान सहायक, एवं सुयोग्य शिक्षक के समान शब्द-पथ-प्रदर्शक का काम देगा। यदि यह गुणग्राही पाठकों की दृष्टि में कुछ भी उपयोगी जँचा तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा। मैं सहृदय, उदार विद्वज्जनों का अत्यन्त आभारी होऊँगा यदि वे इस कोश में किसी प्रकार की त्रुटि दिखाने की कृपा करेंगे, अथवा इसके संकलन का कोई इससे उत्तम, सरल और अधिक उपयोगी मार्ग बताने का अनुग्रह करेंगे। मैं यथासम्भव अगले संस्करण में उनके सुधारने का प्रयत्न करूँगा।

ज्येष्ठ-गङ्गादशहरा
विक्रमाब्द १९९२

विनम्र निवेदक,
श्रीकृष्ण शुक्ल

वक्तव्य

[तृतीय संस्करण]

'हिन्दी पर्य्यायवाची कोश' का प्रथम संस्करण सन् १९३५ और द्वितीय (संशोधित एवं परिवर्धित) संस्करण १९४८ में स्थानीय 'भार्गव पुस्तकालय' द्वारा प्रकाशित हुआ था। तब से आज बीस वर्ष की लम्बी अवधि के भीतर इसके तृतीय संस्करण के प्रकाशित होने का सुअवसर न मिल सका। वर्तमान समय की महर्घता को देखते हुए ऐसे उपादेय ग्रन्थ के प्रकाशन की ओर किसी प्रकाशक ने ध्यान नहीं दिया। एक दिन अकस्मात् मेरे सन्मित्र पं० रामजी वाजपेयी (विद्यामंदिर प्रकाशन, ब्रह्मनाल, वाराणसी) ने इसके प्रकाशन की चर्चा मुझसे की। मैंने सहर्ष यत्किंचित् संशोधन और सुधार करके उन्हें पुस्तक दे दी। उसी दिन हमलोग श्री पावगी जी के हित-चिन्तक प्रेस, रामघाट में गये और मुद्रण लिये पुस्तक उनके हवाले कर दी। विश्वेश्वर की अनुकम्पा से आज वैशाख शुक्ल अक्षय तृतीया को कोश का तृतीय संस्करण हिन्दी-जगत् की सेवा में छापकर उपस्थित किया जा रहा है। मैंने इसके अन्तिम प्रूफ देखने का भार स्वयं स्वीकार तो कर लिया था, परन्तु मुझे खेद है कि अपनी वृद्धावस्था और दृष्टि-दोष के कारण सावधानी रखने पर भी इसमें मुद्रण की कुछ भूलें रह गई हैं। इसके लिए ग्रन्थ के अंत में शुद्धिपत्र देकर मैंने यथासाध्य उन भूलों का परिमार्जन तो कर दिया है तथापि मुझे शंका है कि यत्किंचित् भूलें फिर भी रह गई होंगी, जिनके लिए सहृदय विद्वज्जनों एवं पाठकों से सानुनय प्रार्थना है कि वे कृपापूर्वक जहाँ कहीं त्रुटि पावें उसे अपने विवेक से सुधार लें तथा इस सुधार की सूचना मुझे वा प्रकाशक को अवश्य देने का कष्ट करें।

मैंने अपनी शारीरिक अवस्था को दिनानुदिन क्षीण होते देखकर इसके प्रकाशन की सूखती हुई स्थिति पर लघुसिंचन के रूप में ही इसे अपने प्रिय एवं विश्वस्त प्रकाशक को देना स्वीकार किया है।

यह ग्रन्थ कैसा बन पड़ा है, इसके लिये मेरा अपनी ओर से कुछ भी कहना धृष्टता ही नहीं अनुचित भी होगा। ग्रन्थ के प्रथम संस्करण में ही कुछ शीर्ष कोटि के विद्वानों एवं सामयिक प्रतिष्ठित पत्रिकाओं द्वारा जो कुछ भी संस्तुतियाँ प्राप्त हो सकीं उन्हें मैंने इस संस्करण के अन्त में उधृत कर दिया है, जिससे ग्रन्थ की उपयोगिता प्रमाणित हो जाती है। अस्तु, इससे अधिक मुझे कुछ भी नहीं कहना है। इसके द्वारा जिसकी कुछ भी आवश्यकता पूर्ति हो जाय वही इसकी उपादेयता पर प्रकाश डाल सकते हैं, और वही उचित भी है।

अन्त में मैं अपने सत्परामर्श दाताओं का अनुग्रह कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करता हूँ जो यदाकदा इस ग्रन्थ की त्रुटियों की ओर मेरा ध्यानाकर्षण करते हुए पाठकों का उपकार करते रहे हैं और भविष्य में भी करते रहने की कृपा करेंगे।

वैशाख शुक्ल
अक्षय तृतीया सं. २०२५ वि.

विनम्र निवेदक
—श्रीकृष्ण शुक्ल

हिन्दी-पर्य्यायवाची कोश की

वर्ग-सूची

—:※:—

पूर्ण संख्या—खण्ड ४, वर्ग ३९

हिन्दी पर्यायवाची कोश

प्रथम खण्ड

१. स्वर्गादिवर्ग

स्वर्ग—स्वः। अव्यय। त्रिदिव। त्रिविष्टप। त्रिदशालय। द्यौ। सुरलोक। नाक। दिव। मन्दर। अवरोह। गौ। फलोदय। देवलोक। स्वर्लोक। सुखाधार। सौरिक। शक्रभुवन। दिवान। ऊर्ध्वलोक। दिव्यलोक।

ईश्वर—ईश। परमेश्वर। परमात्मा। ब्रह्म। परब्रह्म। सच्चिदानन्द। ॐ। शिव। शर्व। अलख। अगोचर। अज। अनादि। अनन्तर। गुणातीत। निर्गुण। व्यापक। महेश्वर। सर्वेश्वर। शंकर। हिरण्यगर्भ। भगवान। प्रभु। महाप्रभु। स्वामी। परमपिता। पति। साहब। साईं।

देवता*—अमर। निर्जर। देव। त्रिदश। विबुध। सुर। सुपर्वा। सुमना। त्रिदिवेश। लेख। दिवौकस। आदितेय। अदितिनन्दन। आदित्य। ऋभु। अस्वप्न। अमर्त्य। दानवारि। अमृतान्धा। बर्हिर्मुख। क्रतुभुक्। गीर्वाण। वृन्दारक। अग्निमुख। अमृतेश। भट्टारक। अग्निजिह्व।

[नोट—कश्यप की स्त्री दिति से दैत्यों की और अदिति से देवताओं की उत्पत्ति हुई।]

देवसभा—सुधर्मा। शुभा। देवसमाज। सुधर्मी।

---

* देवजाति के अन्तर्गत—

(१) देवयोनि—विद्याधर। अप्सरा। यक्ष। रक्ष। गन्धर्व। किन्नर। पिशाच। गुह्यक। सिद्ध। भूत।

(२) द्वादश आदित्य—१. विवस्वान्। २. अर्यमा। ३. पूषा। ४ त्वष्टा। ५. सविता। ६. भग। ७. धाता। ८. विधाता। ९ वरुण। १० मित्र। ११. शक्र। १२. उरुक्रम।

(३) अष्टवसु—१ धर। २ ध्रुव। ३ सोम। ४ विष्णु [सावित्र]। ५ अनिल। ६ अनल। ७ प्रत्यूष। ८ प्रभास।

असुर—दनुज । दैत्य । दानव । दैतेय । इन्द्रारि । शुक्रशिष्य । दितिसुत । सुरद्विट् । पूर्वदेव । राक्षस । निशिचर । तमीचर । निशाचर । मनुजाद ।

किन्नर—तुरङ्गमुख । मयु । किंपुरुष गीतमोदी । हरिण । नर्तक ।

[नोट—देवताओं की एक जाति जिनका मुख घोड़े की तरह होता है ।]

गन्धर्व*—देवजन । सुरगायक । विद्याधर । गातु । दिव्यगायन ।

अप्सरा()—स्वर्वेश्या । स्वर्गवेश्या । अरुणप्रिया । परी । हूर ।

इन्द्र†—मघवा । बिडौजा । पाकशासन । शक्र । पुरन्दर । वज्री । वासव । वृषा । वृत्रहा । आखंडल । सहस्राक्ष । हरि । पुरुहूत । मेघवाहन । बलाराति । सुरपति । शचीपति । पाकरिपु । सुनासीर । जिष्णु । गोत्रभिद् । ऋभुक्षा । दिशिराज । । देवराज । शतक्रतु । संक्रन्दन । वृद्धश्रवा । लेखर्षभ । वास्तोस्पति । शतमन्यु ।

---

(४) दश विश्वेदेव—कृतु । २ दक्ष । ३ । वसु । ४ सत्य । ५ काम । ६ काल । ७ ध्वनि । ८ रोचक । ९ आद्रव । १० पुरुरवा । [वह्निपुराण—गणभेद नामाध्याय ।]

(५) गणदेवता—आदित्य । विश्वेदेव । वसु । तुषित । आभास्वर । अनिल । महाराजिक । साध्य । रुद्र—ये नव गणदेवता वा संहत देवता कहे जाते हैं । प्रत्येक के अनेक भेद हैं ।

*अग्निपुराण में गन्धर्वों के ११ गण माने गये हैं । आश्राज्य, अंधारि वंभारि । शूर्यवर्चा । कृधु । हस्त । सुहस्त । स्वन् । मूर्धन्या । विश्वावसु । कृशानु । इनमें ये प्रधान गन्धर्वमाने गये हैं:—हाहा । हूहू । हंस । चित्ररथ । विश्वावसु । गोमायु । तुंबुरु । नंदि । (—"जटाधर")

() उर्वशी । रंभा । मेनका आदि स्वर्ग की अप्सरायें हैं ।

† जतुर्दश इन्द्र—इन्द्र । विश्वभुक् । विपश्चित । विभु । प्रभु । शिखि । मनोजन । तेजस्वी । बलिभीव्य । त्रिदिव । सुशान्ति सुकीर्ति । ऋतधाता । दिवस्पति—'[देवीपुराण—कालव्यवस्थाध्याय]'

सुत्रामा। जम्भभेदी। मरुत्वान्। तुषाराट्। दुश्च्यवन। महेन्द्र। कौशिक। पूतक्रतु। हरिहय। स्वाराट्। नमुचिसूदन। विश्वम्भर। पुरदंशा। शतधृति। वज्रपाणि। पर्वतारि। पर्य्यण्य। देवताधिप। नाकनाथ। पूर्वदिक्पति। पुलोमारि। अर्हं। प्राचीनबर्हि। तपस्तक्ष।

इन्द्राणी—शची। पुलोमजा। इन्द्रवधू। पूतक्रतायी। माहेन्द्री। जयवाहिनी। ऐन्द्री। शतावरी। पौलोमी।

इन्द्रपुरी—अमरावती। देवपुरी। इन्द्रलोक। देवलोक।

इन्द्र का पुत्र—पाकशासनि। जयन्त। ऐन्द्रि। उपेन्द्र।

इन्द्र का हाथी—अभ्रमातङ्ग। राजेन्द्र। ऐराव्रत। ऐरावण। अभ्रमुवल्लभ। श्वेतहस्ती। चतुर्दन्त। मल्लनाग। सदादान। सुदामा। गजाग्रणी।

इन्द्र का वज्र—कुलिश। वज्र। पवि। अशनि। भिदुर। गो। ह्लादिनी। शतकोटि। स्वरु। भेदी।

इन्द्र का विमान—व्योमयान। विमान।

वरुण❀—यादसाम्पति। प्रचेता। पाशी। अप्पति। जलेश। पाथपति। पाशधर। अपांपति। जम्बुक। मेघनाद। जलेश्वर। परञ्जय। जीवनावास। नन्दपाल। दैत्यदेव। सुखाश। वारिलोम। राम। कुण्डली।

कुबेर†—किन्नरेश। यक्षराज। धनद। धनाधिप। गुह्यकेश्वर। राजराज। धनेश। त्र्यम्बकसखा। पौलस्त्य। वैश्रवण। मनुष्यधर्मा। पुण्यजनेश। ऐलविल। सख। यक्ष। नरवाहन। एकपिङ्ग। श्रीद। हर्य्यक्ष। अलकाधिप।

इन्द्र के घोड़े को "उच्चैःश्रवा", सारथी को "मातलि", महल को "वैजयन्त" वन को 'नन्दनवन" पुरी को "अमरावती", और अस्त्र को "वज्र" कहते हैं।

❀ वरुण पश्चिम दिशा के स्वामी हैं। अदिति के गर्भ से उत्पन्न कश्यप ऋषि के पुत्र हैं। जल के प्रधान अधिष्ठातृ देव हैं।

† कुबेर को इन्द्र का भण्डारी और महादेव जी का मित्र मानते हैं। यह विश्रवस् ऋषि के पुत्र और रावण के सौतेले भाई हैं। यह उत्तर

कुबेर का पर्वत—कैलाश पर्वत। कुबेराद्रि। कुबेराचल।

कुबेर का ऐश्वर्य*—विभूति। भूति। ऐश्वर्य।

कुबेर का खजाना—निधि। शेवधि। कोष। भण्डार।

यम†—वैवस्वत। मृत्युपति। सूर्यपुत्र। महिषध्वज। काल। नरदण्डधर। जीवनपति। अन्तक। कृतान्त। धर्मराज। कोपन्त। शमन। पितृपति। यमुनाभ्राता। समवर्ति। श्राद्धदेव। परेतराट्। धर्म। जीवितेश। यमराज। औदुम्बर। दण्डाधर। कीनाश। दध्न। महिषवाहन। शीर्णपाद। भीमशासन। कङ्क। हरि। कर्मकर।

राक्षस—कौणप। निशिचर। निशाचर। पुण्यजन। यातुधान। क्रव्याद। मनुजाद। असप। आशर। निकषात्मज। रजनीचर। अदेव। कर्बुर। नैऋत। यातु। रक्ष। क्षपाट। सन्ध्याबल। कीलाप। नृचश। पलाश पलाशी। भूत। नीलाम्बर। कल्माष। कटप्रू। अगिर। कीलालय। नराधिष्मण। असुर।

[नोट—'असुर' शब्द के पर्याय 'राक्षस' के भी पर्याय हो सकते हैं]

दानव* — दनुज। दैत्य। दुर्जय। अयोमुख। धूम्रकेशी।

स्वामी हैं। इनके एक आँख, तीन पैर और आठ दाँत हैं। यह सम्पूर्ण धन के स्वामी हैं। इनके पुत्र का नाम नलकूबर है। कुबेर की पुरी को "अलकापुरी" उद्यान को "चैत्ररथ" और विमान को 'पुष्पक' कहते हैं।

* कुबेर के ऐश्वर्य के अन्तर्गत अष्टसिद्धियाँ हैं—

अष्टसिद्धि—१. अणिमा, २. महिमा, ३. लघिमा, ४. गरिमा, ५. प्राप्ति, ६. प्राकाम्य, ७. ईशत्व और ८. वशित्व।

नवनिधि—१. पद्म, २. महापद्म, ३. कच्छप, ४. नील, ५. मकर, ६. मुकुन्द, ७. शंख, ८. खर्व और ९. नन्द।

†चतुर्दश यमों के नाम—१. यम, २. धर्मराज, ३. मृत्यु, ४. अन्तक, ५. वैवस्वत, ६. नील, ७. दध्न, ८. काल, ९. सर्वभूतक्षय, ११. परमेष्ठि, ११. वृकोदर, १२. औदुम्बर १३. चित्र, १४. चित्रगुप्त।

* [१] कश्यप ऋषि के वीर्य से दक्षकन्या दनु के गर्भ से उत्पन्न ६१

राक्षसी—कौणपी । निशिचरी । सिंहका । दानवी ।

नरक†—यमालय । यमलोक । यमपुर । निरय । नारक । दुर्गति । संघात । का सूत्र ।

नरक-भोगी—नारकी । पापी । पतित ।

नरक-जीव—प्रेत । अग्निमुख ।

नरक-पीड़ा—यातना । तीव्र वेदना । पीड़ा । बाधा । व्यथा । दुःख । कृच्छ्र । आमनस्य । प्रसूतिज । तेलहत । कारणा ।

ब्रह्मा()—आत्मभू । स्वभू । सुरज्येष्ठ । स्वयंभू । चतुरानन । परमेष्ठी । पितामह । हिरण्यगर्भ । लोकेश । विधि । विधाता । धाता । स्रष्टा । अब्जयोनि । नाभिजन्म । कमलासन । अण्डज । पूर्वनिधन । कमलोद्भव । प्रजाधिप । सृष्टिकर्ता । रजोमूर्ति । सदानन्द । सत्यक । वेधा । द्रुहिण । विरंचि । हंसवाहन । अज । विश्वसृज । कर्तार । द्रुहिन ।

दानवों में से प्रधान १८ दानवों के नाम ये हैं, जो दानव शब्द के पर्य्याय रूप में भी प्रयुक्त होते हैं—द्विमूर्द्धा । तापन । शम्बर । अरिष्ट । हयग्रीव । विभावसु । अयोमुख । शंकुशिरा । स्वर्भानु । कपिल । अरुण । पुलोमा । वृष-पर्व्वा । एकचक्र । विरूपाक्ष । धूम्रकेश । विप्रचित्ति । दुर्जय ।

[२] 'राक्षस', और 'दानव'—नाम पृथक् होते हुये भी परस्पर एक दूसरे के पर्य्याय माने जाते हैं ।

† नरक के भेद:—[१]पापवास, [२]तामिस्र, [३]अन्धतामिस्र, [४]महारौरव, [५]कुम्भीपाक, [६]असिपत्रवन, [७]शूकरमुख, [८]अन्धकूप, [९]कृमिभोजन, [१०]सन्दंश, [११]तप्तभूमि, [१२]वज्रकण्टक, [१३]शाल्मली, [१४]पूयोद, [१५]प्राणरोध, [१६]लाला-भक्ष, [१७]सारमेयादन, [१८]अवीचिरयपान, [१९]क्षारकर्दम, [२०]रक्षोगण, [२१]शूल-प्रोत, [२२]दन्तशूक, [२३]अवनिरोधन, [२४]पर्यावर्तन, [२५]सूचीमुख ।

() ब्रह्मा = सृष्टिकर्त्ता, रक्तवर्ण, चतुर्मुख, कमलासन, हंसवाहन, विष्णु के नाभि से उत्पन्न और रजोगुण की मूर्ति हैं । कहते हैं कि वेद सबसे पहले ब्रह्मा-जी के ही मुखश्री से उच्चरित हुए ।

ब्रह्मा का वाहन—हंस। मराल। मुक्ताभुक्। श्वेतगरुत्। चक्राङ्ग। मानसौकस। कलकण्ठ। सितच्छद। सितपक्ष। खरकाक। पुरुदंशक। मानसालय।

विष्णु†—नारायण। कृष्ण। वैकुण्ठ। माधव। धरणीधर। जनार्दन। हरि। मुरमर्दन। मुकुन्द। विश्वरूप। जलशायी। श्रीवत्सलाञ्छन। विधु। कैटभजित्। विश्वंभर। अधोक्षज। कंसाराति। बलिध्वंसी। वनमाली। पुरुषोत्तम। देवकी-नन्दन। शौरि। श्रीपति। त्रिविक्रम। वासुदेव। मधुसूदन। मधुरिपु। चतुर्भुज। पद्मनाभ। चक्रपाणि। उपेन्द्र। गोविन्द। गरुडध्वज। पीताम्बर। अच्युत। शार्ङ्गी। हृषीकेश। केशव। पुराणपुरुष। यज्ञपुरुष। नरकान्तक। दैत्यारि। दामोदर। सनातन। पुरुष पुरातन। मनुजाद निकन्दन। अनन्त। भगवान। श्रीश। इन्द्रवरज। शेषशायी। हिरण्यगर्भ।

नोट—(१) ये सब नाम श्रीकृष्णजी के लिये भी प्रयुक्त हो सकते हैं।

(२) 'लक्ष्मी, शब्द के किसी पर्य्याय के साथ 'पति' शब्द वा उसका पर्य्याय जोड़ देने से विष्णु शब्द का बोधक होता है।

विष्णु का घोड़ा—शैब्य। सुग्रीव। मेघपुष्प। बलाहक।

विष्णु का वाहन—गरुड। अरुत्मान्। नागान्तक। तार्क्ष्य। सुपर्ण। वैनतेय। विष्णुरथ। पन्नगाशन। खगेश्वर। खगपति। पक्षिराज। खगकेतु। खगेश उरगारि। उरगाद। हरियान। शाल्मलिस्थ। अमृताहरण। तरश्वी (तरस्वी)। पक्षिसिंह। शाल्मली। महावीर।

महादेव*—शंभु। शंभू। ईश। पशुपति। शिव। शूली। महेश्वर।

---

† त्रिदेव में से एक, सत्वगुण के अधिष्ठातृदेव। विष्णु के उपासक को वैष्णव कहते हैं। विष्णु के शंख को 'पाञ्चजन्य', चक्र को 'सुदर्शन' गदा को 'कौमोदकी', खड्ग को 'नन्दक', धनुष को 'शार्ङ्ग', छाती के चिन्ह को 'श्रीवत्स' मणि को 'कौस्तुभ', सारथी को 'दारुक' तथा मंत्री को उद्धव कहते हैं।

* महादेव—(१) गौरी या पार्वती शब्द के किसी पर्य्यायवाची शब्द के

ईश्वर। शर्व। ईशान। शंकर। चन्द्रशेखर। भव। भूतेश। खण्डपरशु। गिरीश। हर। मृड। कृत्तिवास। पिनाकी। प्रमथाधिप। उग्र। कदर्पी। श्रीकण्ठ। शितिकण्ठ। कपालभृत्। वामदेव। विरूपाक्ष। त्रिलोचन। पञ्चानन। कृशानुरेत। सर्वज्ञ। धूर्जटि। प्रभु। स्थाणु। उमापति। त्र्यम्बक। भर्ग। त्रिपुरारि। रुद्र। गंगाधर। अन्धकरिपु। नन्दीश्वर। भूतनाथ। नीलकण्ठ। अग्निकेतु। क्रतुध्वंसी। भगवान। स्मरहर। मदनारि। नटराज। अहिर्बुध्न्य। अष्टमूर्ति। महानट। चन्द्रमौलि। गौरीपति। गिरिजापति। कापालिक। कैलासनाथ। भोलानाथ। रेरिहाण। भगाली। पांशुचन्दन। दिगम्बर। अट्टहास। कालञ्जर। पुरद्विट्। वृषाकपि। महाकाल। बराक। नन्दिवर्द्धन। हरि। वीर। खरु। भूरि। कटप्रू। भैरव। ध्रुव। गुड़ाकेश। देवाधिदेव। कङ्कालमाली। सिद्धदेव। विश्वेश्वर। विश्वनाथ। चन्द्रापीड़। काशीनाथ। अस्थिमाली। श्मशानेश्वर। हिण्डी। विषमाक्ष। खेचर। रसनायक। अर्द्धनारीश। यमान्तक। ऊर्ध्वरेता। अधीश। कुलेश्वर। शिपिविष्ट। वृषाङ्क।

साथ पति-वाचक शब्द जोड़ देने से 'महादेव' का बोधक हो जायगा।

(२) ईश्वर शब्द के जितने पर्य्याय हैं, वे सब 'महादेव' के बोधक हैं।

(३) महादेव त्रिदेव में से एक देव हैं। यह तमोगुण के अधिष्ठातृ देवता हैं। यह दिगम्बर वेषी (नग्न) हैं। इनका वर्ण कर्पूर के समान श्वेत, आसन व्याघ्रचर्म तथा ओढ़ना गजचर्म है। त्रिशूल इनका अस्त्र है। इनके ललाट पर कालरूप एक तीसरा नेत्र है जो किसीको नाश करने के समय खुलता है। इनके ललाट पर नवीन चन्द्रमा और जटाजूट में गंगा हैं।

(४) शिव की अष्टमूर्त्ति मानी गई है—१. क्षितिमूर्ति=शर्व। २. जलमूर्ति=भव। ३. अग्निमूर्त्ति=रूद्र। ४. वायुमूर्त्ति=उग्र। ५. आकाशमूर्ति=भीम। ६. यजमानमूर्ति=पशुपति। ७. चन्द्रमूर्त्ति=महादेव। ८. सूर्यमूर्त्ति=ईशान।

(५) एकादश रुद्र=१. अज २. एकपात ३. अहिर्बुध्न्य। ४. अपराजित। ५. पिनाकी। ६. त्र्यम्बक। ७. महेश्वर। ८. वृषाकपि। ९. शम्भु। १०. हरण। ११. ईश्वर।

सावित्री ×—ब्राह्मणी। शतरूपा। गायत्री।

सरस्वती※—ब्राह्मी। भारती भाषा। वाचा। गो। गिरा। सुष्ठु। वाणी। शारदा। इला। वीणापाणि। वागीश। महाश्वेता। विधात्री। धनदा। धनेश्वरी। श्री। वाक्। इरा। ईश्वरी। वर्णमातृका। सन्ध्येश्वरी। वाक्येश्वरी।

लक्ष्मी†—कमला। पद्मा। पद्मालया। पद्मासना। रमा। हरिप्रिया। श्री। इन्दिरा। लोकमाता। मा। क्षीरोद-तनया। समुद्रजा। भार्गवी। क्षीरसागर-कन्यका। विष्णुवल्लभा। जगन्माता। सम्पत्ति। सम्पदा। विभूति। भूति। ऋद्धि। माया। शोभा। विष्णुप्रिया।

पार्वती‡—उमा। कात्यायनी। गौरी। काली। हैमवती। कपर्दिनी। ईश्वरी। शिवा। भवानी। रुद्राणी। शर्वाणी। सर्वमंगला। अपर्णा। दुर्गा। मृडानी। चण्डिका। अम्बिका। आर्या। दाक्षायणी। गिरिजा। मेनकात्मजा। हिमाचलसुता। हिमगिरि-सुता। शंकरप्रिया। सती। शैलसुता। शैलनन्दिनी।

---

(६) शिव के नन्दीगण = शृङ्गी, भृङ्गी, रिटि, तुण्डी, नन्दिक, नन्दिकेश्वर।

(७) शिव की पुरी को 'कैलास', जटाजूट को 'कपर्द', धनुष को 'पिनाक' वा 'अजगव', और परिषद को 'प्रमथ' कहते हैं। शिव के उपासकों को शैव कहते हैं।

× सावित्री = ब्रह्मा की स्त्री। ब्रह्मा के शरीर से ही उत्पन्न।

※ सरस्वती = ब्रह्मा की शक्ति और पुत्री हैं। विद्या बुद्धि को देनेवाली हैं। संगीत एवं वादन कला की अधिष्ठातृ-देवी हैं। इनका वाहन हंस है।

† लक्ष्मी=विष्णुप्रिया। धन-वैभव-स्वरूप को देनेवाली हैं। सम्पूर्ण दरिद्रता को दूर कर सुख-शान्ति-धन-धान्य-प्रदायिनी हैं। इनका वाहन उल्लू (उलूक) है।

‡ पार्वती=हिमाचल की कन्या, शिव की अर्द्धाङ्गिनी हैं। सौभाग्यदायिनी हैं। इनका वाहन सिंह है।

पतिव्रता । इला । शिवार्द्धाङ्गिनी । अम्बा । माया । विश्वकारिणी । सिंहवाहिनी । मैनासुता । भवा ।

गणेश—लम्बोदर । हेम्बर । द्वैमातुर । एकदन्त । मूषकवाहन । गजवदन । गणपति । शिवसुत । विनायक । गजास्य । विघ्नराज । गजानन । वक्रतुण्ड ।

देवी के अन्तर्गत: —

(१) पञ्चदेवी—दुर्गा । लक्ष्मी । राधा । वाणी । शाकम्भरी ।

(२) सप्तमाता—१ ब्राह्मी । २ माहेश्वरी । ३ कौमारी । ४ वैष्णवी । ५ वाराही । ६ इन्द्राणी । ७ चामुण्डा ।

(३) नवदुर्गा—शैलपुत्री । २ ब्रह्मचारिणी । ३ चन्द्रघण्टा । ४ कूष्माण्डा । ५ स्कन्दमाता । ६ कात्यायनी । ७ कालरात्रि । ८ महागौरी । ९ सिद्धिदात्री ।

(४) नवकन्यका—१ कुमारी । २ त्रिमूर्त्ति । ३ कल्याणी । ४ रोहिणी । ५ कालिका । ६ शांभवी । ७ दुर्गा । ८ चण्डिका । ९ सुभद्रा ।

(५) नवशक्ति—१ वैष्णवी । २ ब्रह्माणी । ३ रौद्री । ४ माहेश्वरी । ५ नारसिंही । ६ वाराही । ७ इन्द्राणी । ८ कार्तिकी । ९ सर्वमङ्गला ।

(६) दश महाविद्या—१ काली । २ तारा । ३ षोडशी । ४ भुवनेश्वरी । ५ भैरवी । ६ छिन्नमस्ता । ७ धूमावती । ८ बगला । ९ मातङ्गी । १० कमला ।

(७) ६४ योगिनी—नारायणी । गौरी । शाकम्भरी । भीमा । रक्तदंतिका । पार्वती । दुर्गा । कात्यायनी । महादेवी । चन्द्रघण्टा । महाविद्या । महातपा । भ्रामरी । सावित्री । ब्रह्मवादिनी । भद्रकाली । विशालाक्षी । रुद्राणी । कृष्ण-पिङ्गला । अग्निज्वाला । रौद्रमुखी । कालरात्रि । तपस्विनी । मेघस्वना । सहस्राक्षी । विष्णुमाया । जलोदरी । महोदरी । मुक्तकेशी । घोररूपा । महाबला । श्रुति । स्मृति । धृति । तुष्टि । पुष्टि । मेधा । विद्या । लक्ष्मी । सरस्वती । अपर्णा । अम्बिका । योगिनी । डाकिनी । शाकिनी । हारिणी । हाकिनी । लाकिनी । त्रिदशेश्वरी । महाषष्ठी । सर्वमङ्गला । लज्जा । कौशिकी । ब्रह्माणी । ऐन्द्री । नारसिंही । बाराही । चामुण्डा । शिवदूती । विष्णुमाया । मातृका । कार्तिकी । विनायकी । कामाक्षी ।

महाकाय। धूम्रकेतु। गणाध्यक्ष। भालचन्द्र। विघ्ननाशक। विकट। मोदकप्रिय। मोददाता। विद्यावारिधि। बुद्धिविधाता। जगवन्द्य। आदिपूज्य। भवानीनन्दन। परशुपाणि। आखुग। शूर्पकर्ण।

कार्तिकेय* —महासेन। शरजन्मा। षडानन। पार्वतीनन्दन। स्कन्द। सेनानी। गुह। अग्निभू। बाहुलेय। क्रौञ्चदारण। शक्तिधर। शिखिवाहन। कुमार। श्रीविशाख। तारकाजित। षाण्मातुर। अग्निकुमार। स्वामि कार्तिक।

भैरव—भूतनाथ। श्वानवाहन। रुद्रमूर्ति। भयङ्कर। भीम। कराल। कालमूर्ति। विकराल। भयानक।

[**नोट**—अष्ट भैरवों के नाम—१. महाभैरव, २. संहारभैरव, ३. असिताङ्ग भैरव, ४. रुरु भैरव, ५. काल भैरव, ६. क्रोध भैरव, ७. ताम्रचूड़ भैरव, ८. चन्द्रचूड़ भैरव।]

अग्नि+ —वह्नि। वीतिहोत्र। धनञ्जय। कृपीटयोनि। ज्वलन। जातवेद। तनूनपात्। पावक। अनल। रोहिताश्व। वायुसख। आशुशुक्षणि। हिरण्यरेत। हुतभुक्। दहन। हव्यवाहन। सप्तार्चि। दमुन। शुक्र। चित्रभानु। विभावसु।

* महादेव जी के पुत्र हैं। कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण कार्त्तिकेय नाम पड़ा। इनके छः मुँह हैं। यह देवताओं के सेनानायक हैं। शिव जी के वीर्य्य को अग्निदेव ने कबूतर का रूप धारण कर पान कर लिया था, इन्हीं से स्कन्द की उत्पत्ति हुई। इनका बाहन मोर है।

+ वैद्यक मत से अग्नि ३ प्रकार की मानी गई, यथा—भौमाग्नि जो पदार्थों के जलने से उत्पन्न होती है। २. दिव्याग्नि जो आकाश में बिजली से उत्पन्न होती है। ३. जठराग्नि, जो पित्त रूप से हृदय और नाभि के बीच में रहती है। कर्मकाण्ड में अग्नि छः प्रकार की मानी गई है, यथा—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि। इनमें आरम्भ की तीन प्रधान हैं। ऋग्वेद का प्रादुर्भाव अग्नि से ही माना जाता है। अग्नि की सात जिह्वाएँ मानी गई गई हैं—काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, उग्रा और प्रदीप्ता।

शुचि। वैश्वानर। (अप० वैसन्दर) अपित्त। हुताशन। दव। उषर्बुध। धूम्रकेतु। आग। तपन। निर्जर जीभ। दग्धद्रुम। वृक। कुन्त। कुतप। शिखि। सप्तजिह्व। पांचजन्य। शुष्म। बर्हि।

वड़वानल—(जल में लगने वाली आग), और्वि। वाड़व। बड़वाग्नि।

वन की अग्नि—दव। दाव। दावानल। दावाग्नि। दवारी। वन-हुताशन। वनाग्नि।

पेट की अग्नि()—जठराग्नि। पाचकाग्नि।

अग्निकण—स्फुल्लिंग। अनल-कण। चिनगी। चिनगारी।

अग्निज्वाला—ज्वाला। कील। शिखा। अग्निशिखा। वर्चिस्। हेति। उल्का। भूति। भस्म। क्षार। लूक। लुकारी। अग्नि कुक्कुट। लपट। लवर। लौ।

अग्नि सन्ताप—संज्वर। सन्ताप। दाह। भस्मीभूत। डाढ़ा। झुलस। जलन।

वायु†—१. श्वसन। २. स्पर्शन ३. मातरिश्वा। ४. सदागति। ५. पृषदश्व।

() जठराग्नि—हृदय और नाभि के बीच में उत्पन्न होने वाली अग्नि जो भोजन को पचाती है और क्षुधा उत्पन्न करती है। कार्तिक शु० ८ से अग्रहण कृष्ण ८ के भीतर नवीन जठराग्नि की उत्पत्ति होती है।

† शरीरस्थ वायु—पाँच प्रकार का होती है।

(१) प्राणवायु—मुख्य स्थान शिर है। छाती और कण्ठ तक विचरण करता है बुद्धि, हृदय और चित्त को धारण करता है।

(२) उदानवायु—मुख्य स्थान छाती है। नासिका, नाभि और गला विचरने के स्थान हैं। भोजन प्रवेश करना, छींक, डकार और जँभाई लेना इसके मुख्य कर्म हैं।

(३) व्यानवायु—मुख्य स्थान हृदय है। यह सब शरीर में व्याप्त रहता है। अपक्षेपण, उत्क्षेपण, निमेष, आदि इसके कर्म हैं।

६. गन्धवह। ७. अनिल। ८. आशुग। ९. समीर। १०. मारुत। ११. मरुत्। १२. जगत्प्राण। १३. समीरण। १४. नभस्वान्। १५. वात। १६. पवन। १७. पवमान। १८. प्रभंजन। १९. अजगत्प्राण। २०. श्वश्वास। २१. वाह। २२. धूलिध्वज। २३. फणिप्रिय। २४. वाति। २५. नभप्राण। २६. भोगिकान्त। २७. स्वकम्पन। २८. अक्षति। २९ कम्पलक्ष्मा। ३० शसीनि। ३१. आवक। ३२. हरि। ३३. वास। ३४. सुखाश। ३५. मृगवाहन। ३६. सार। ३७. चञ्चल। ३८. विहग। ३९. प्रकम्पन। ४०. नभस्वर। ४१. निश्वासक। ४२. स्तनून। ४३. पृषतांपति। ४४. प्राण। ४५. अपान। ४६. समान। ४७. व्यान। ४८. उदान ४९. सूक्त। सरिमन। सरण्य। हवा। सवंग। सरट। खग। बयार। बतास। झञ्झा (सवृष्टिक वायु)।

[नोट※ ये ही "उनचास पवन" के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। कहते हैं कि ये अदिति के पुत्र हैं। इनके कोई सन्तान नहीं हुई। इन्द्र ने इन्हें देव-पद दिया है।]

आँधी—आँधी। महावात। प्रकम्पन। अंधड़। बवण्डर (चक्राकार वायु)। प्रभञ्जन।

वायुवेग—तरस्। रहस। रय। स्पद। जव।

कामदेव※—मदन। मैन। मयान। मन्मथ। मार। प्रद्युम्न। कन्दर्प।

---

(४) समानवायु—मुख्य स्थान नाभि है, विचरणस्थान कोष्ठ है। अन्न ग्रहण करना, पकाना, और विवेचन करना इसके मुख्य कर्म हैं।

(५) अपानवायु—मुख्य स्थान गुदा है, विचरणस्थान कटि, बस्ति, लिङ्ग और जाँघ हैं। मल, मूत्र, वीर्य, आर्तव और गर्भ आदि निकालना इसके मुख्य कर्म हैं।

※ (१) कामदेव के पंचबाण—१. सम्मोहन, २. उन्मादन, ३. शोषण ४. तापन, ५. स्तम्भन। कामदेव का धनुष पाँच प्रकार के पुष्पों से बना है—अरविन्द, अशोक, आम्र, 'नवमल्लिका और नीलकमल। इसे पुष्पधनु भी कहते हैं। इन पुष्पों में काम को चैतन्य करने की शक्ति है।

(२) कामदेव की स्त्री का नाम 'रति' है।

मीनकेतन । दर्पक । अनङ्ग । काम । पञ्चशर । शम्बरारि । मनसिज । कुसुमेषु । अनन्यज । पुष्पधन्वा । रतिपति । मकरध्वज । आत्मभू । अतनु । कुसुमसर । मन्थि । नवरंगी । मनोभव । मनजात । मकरकेतु । स्मर । हरि । विरहविदार । पुष्पचाप । कुसुमायुध । ब्रह्मसू । विश्वकेतु । कामद । कान्त । कान्तिमान् । कामग । कामचार । कामी । कामुक । कामवर्द्धन । रम । रमण । रतिप्रिय । रममाण । नन्दक । नन्दन । नन्दी । रतिसखा । भ्रामक । भृङ्ग । मोहन । मोहक । मोह । मोहवर्द्धन । मातङ्ग । खेलक । विलास ।

अश्विनीकुमार†—स्वर्वैद्य । अश्विनीसुत । आश्विनेय । अश्विनी । नासत्य । दस्र । नासिक्य । गदागद । पुष्करस्रज ।

जप—भजन । स्मरण । नाम स्मरण । जपन । मन्त्रोच्चारण । मन्त्रस्मरण । मन्त्रोद्धरण ।

तप-व्रत । अनुष्ठान । तपस्या । योग । योगाभ्यास । योगसाधन । ध्यानोपासना ।

पूजा—अर्चा । नमन । अर्हण । अपचिति । आराधन । पूजन । आराधना । आदर । सम्मान । सपर्य्या । नुति ।

यज्ञ*—याग । मख । क्रतु । अध्वर । सत्र । सप्ततंतु । इष्टि । वितान । मन्यु । आहव । हव । हवन । सवन । अभिषव । होम । मह ।

दान—त्याग । विहापित । उत्सर्जन । विसर्जन । अंहति । विश्राणन । वितरण । स्पर्शन । प्रतिपादन । प्रादेशन । निर्वपन । अपवर्जन । दाय । प्रदान । अतिसर्जन । विसर्ग । स्पर्श । क्षणन । प्रदेशन ।

---

† प्रभा के गर्भ से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्रों को अश्विनीकुमार कहते हैं। एक बार सूर्य के तेज को सहन करने में असमर्थ होकर प्रभा घोड़ी बन कर भाग गई और तप करने लगी । तब सूर्य भी घोड़ा बन कर उनके पास गये । इसी संयोग से अश्विनीकुमारों की उत्पत्ति हुई ।

* पञ्च महायज्ञ—१. स्वाध्याय । २. अग्निहोत्र । ३. आतिथ्य । ४. पितृतर्पण और ५. बलिवैश्वदेव ।

यज्ञ के चार ऋत्विज् होते हैं—होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा ।

उपासना—शुश्रूषा। सेवा। परिचर्य्या। वरिवस्या।

व्रत—(देखो 'तप' शब्द)

संन्यास—वैराग। वैराग्य। त्याग। चतुर्थाश्रम। निर्राग। परिव्रजन।

संन्यासी—त्यागी। वैरागी। दण्डी। निर्वाणरथी। चतुर्थाश्रमी। यति। परिव्राज। भिक्षु। कर्मन्दी। पराशरी। मस्करी। भिक्षुक। न्यासी। स्वामी। गोस्वामी। जितेन्द्रिय। योगी। परिव्राजक।

तपस्वी—तापस। तपी। पारिकांक्षी।

ब्रह्मत्वभाव—ब्रह्मभूय। ब्रह्मत्व। ब्रह्मसायुज्य।

विवेक—पृथगात्मता। ज्ञान। सद्विचार। सद्बुद्धि। प्रबोध।

दर्शन—निर्वर्णन। निध्यान। आलोकन। ईक्षण। निभालन।

धर्म*—पुण्य। श्रेय। सुकृत। वृष। आचार। स्वभाव।

मुनि†—तपी। साधक। तापस। परिकदांक्षिन्। मुनि। ऋषि। व्रती। संयमी। साधु। योगी।

ब्रह्मज्ञानी—ज्ञाता। दार्शनिक। तत्त्वज्ञ। तत्त्वविद्। ब्रह्मज्ञ। ब्रह्मपरायण। ब्रह्मपर।

मुक्ति—कैवल्य। निश्रेणी। निर्वाण। मोक्ष। अक्षय। स्वर्ग। अपवर्ग। अमृत। अपुनर्भव। महासिद्धि।

अमृत—पीयूष। अमृत। सुधा। सोम। मधु। अगदकार। सुरभोग। अमी। अमिय। शशिरस।

स्वर्णाचल—मेरु। सुमेरु। हेमाद्रि। रत्नसानु। सुरालय। हेमकूट।

देववृक्ष—कल्पद्रुम। कल्पवृक्ष। मन्दार। पारिजातक। सन्तान। कल्पतरु। सुरद्रुम। हरिचन्दन। सुररुख। सुरतरु।

---

* धर्म के दस लक्षण—१. धृति, २. क्षमा, ३. दम, ४. अस्तेय (चोरी न करना), ५. शुचि, ६. इन्द्रियनिग्रह, ७. बुद्धि, ८. विद्या, ९. सत्य, १०. अक्रोध (क्रोध न करना वा क्रोध को रोकना)।

† सप्तर्षिमण्डल—विश्वामित्र, यमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, अत्रि, वशिष्ठ और कश्यप।

देवनदी—मन्दाकिनी। वियद्गङ्गा। स्वर्णदी। सुरदीर्घिका। देवसरि। स्वर्गापगा। देवगङ्गा। स्वर्गङ्गा।

कामधेनु—सुरधेनु। कामधुक्धेनु। सुरसुरभी। कामदुहा।

वेद*—ब्रह्म। श्रुति। निगम। धर्ममूल। छन्द। आम्नाय। प्रवचन।

शास्त्र†—आगम। विद्या। ग्रन्थ।

---

* वेद चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वणवेद। इन्हीं वेदों से चार उपवेद निकाले गये, यथा—धन्वन्तरि ने ऋग्वेद से आयुर्वेद निकाला, विश्वामित्र ने यजुर्वेद से धनुर्वेद निकाला, भरतमुनि ने सामवेद से गन्धर्व-वेद निकाला और विश्वकर्मा ने अथर्वणवेद से स्थापत्य निकाला।

वेदाङ्ग छः हैं, यथा—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द।

† शास्त्र १८ हैं, यथा—४ वेद + ६ वेदाङ्ग तथा मीमांसा, न्याय, धर्म-शास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद तथा अर्थशास्त्र।

२. देवावतार वर्ग

रामचन्द्र*— राम। दाशरथि। रघुबर। रघुपति। रघुराज। राघव। रघुनन्दन। रघुराय। सीतापति। खरारि। रावणारि। अवधेश। दशरथात्मज। कौशल्यानन्दन। जानकीश। सीतानाथ। जानकीवल्लभ। दशाननारि।

जानकी†—जानकी। वैदेही। सीता। भूतनया। भूमिजा। जनकनन्दिनी। जनकात्मजा। रामप्रिया। मैथिली। मिथिलेश कुमारी।

परशुराम‡—रेणुकात्मज। परशुधर। राम। यामदग्नि। भार्गव।

कृष्ण—श्याम। साँवले। सँवलिया। नन्दनन्दन। जनार्दन। यदुनन्दन। देवकीनन्दन। कंसारि। मुरमर्दन। मुरलीधर। वंशीधर। गिरिधर। द्वारिकाधीश। माधव। केशव। हृषीकेश। मुकुन्द। मधुसूदन। गोपीनाथ। राधारमण। पुरुषोत्तम। भगवान। चक्रपाणि। यादवेश। योगीन्द्र। व्रजभूषण। वासुदेव। वृन्दावन बिहारी।

राधा—राधिका। वृषभानुजा। हरिप्रिया। वृषभानु नन्दिनी। कीर्तिकिशोरी। व्रजरानी।

यशोदा—जसुमति। यशुदा। नँदरानी। नंदमहरि।

बलराम—बलदाऊ। दाऊ। बलदेव। हलदेव। हलधर। रौहिणेय। बलभद्र। संकर्षण। नीलाम्बर। रेवतीरमण। मूशलपाणिक। राम। कामपाल। हलायुध। अच्युताग्रज। प्रलम्बघ्न। मुसली। हली। तालाङ्क। सीरपाणि। कालिन्दीभेदन। बल। बलवीर। तालध्वजी।

---

*अयोध्यानरेश महाराज दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र थे। लव और कुश इनके दो पुत्र हुए।

†मिथिला के राजर्षि महाराज जनकजी की पुत्री थीं। इनकी उत्पत्ति पृथ्वी से हुई है।

‡महर्षि यमदग्निजी के पुत्र थे। इन्होंने सहस्राबाहु को मार कर २१ बार हैहयवंशी क्षत्रियों का नाश किया था। इनकी माता का नाम रेणुका था।

अनिरुद्ध—उषापति। ब्रह्मसू। ऋष्यकेतु।

नृसिंह—नरहरि। नरसिंह। नारसिंह।

गौतम बुद्ध—शाक्यसिंह। सर्वार्थ। गौतम। मायासुत। अर्कबन्धु। शाक्यमुनि। शौद्धोदनि। सर्वज्ञ। सुगत। बुद्ध। धर्मराज। तथागत। जिन। भगवत। दशबल। मारजित्। लोकजित्। समन्तभद्र। षडभिज्ञ। अद्वयवादी! विनायक। मुनीन्द्र। श्रीघन। शास्ता। सिद्ध। महाबोधि। आर्य। दशार्ह। महामैत्र। अर्हण।

गायत्री—वेदमाता। सावित्री। ब्राह्मी। ब्रह्मबीज।

हनुमान—पवनसुत। अञ्जनीकुमार। महावीर। विक्रम। बज्राङ्गी (अप० बजरंगी)। कपिकेशरी। कपीश। जितेन्द्रिय। वातात्मज। आञ्जनेय। रामदूत। वरिष्ठ। प्रभंजनजात। मारुति। अक्षहन्त। रामभक्त। भक्तराज।

नारद- देवर्षि। ब्रह्मसू। ब्रह्मपुत्र। ब्रह्मर्षि।

विश्वामित्र—कौशिक। गाधिसूनु। गाधेय। राजर्षि।

विश्वकर्मा—शिल्पराट्। सुशिल्पकी। पटुशिल्पेश।

शृङ्गी ऋषि—शृङ्गी। मृगज। विभांडसुत। शान्ताधव। (यह राजा दशरथ के जामाता, शान्ता के पति थे)

अगस्त्य—घटज। घटोद्भव। घटसंभव। घटयोनि। कुम्भज। सिन्धु-शासनि। मैत्रावरुण। विन्ध्यकूट। समुद्रचुलुक। पीताब्धि। और्वशेय।

[नोट—अगस्त्य की स्त्री लोपामुद्रा हैं।]

वशिष्ठ—वैरञ्चि। ब्रह्मसू। ब्रह्मर्षि।

[**नोट**—वशिष्ठ की स्त्री अरुन्धती हैं]

वाल्मीकि—आदिकवि। वल्मीकोद्भव। प्राचेतस्। मैत्रावरुणि।

पाणिनि—आहिक। दाक्षीपुत्र। शालंकी। शालातुरीय।

कपिल—सांख्याचार्य।

व्यास—वेदव्यास। द्वैपायन। पाराशर्य। सत्यवतीसुत।

युधिष्ठिर—धर्मराज। अजातशत्रु। कौंतेय। कुरुराय।

अर्जुन—जिष्णु। धनंजय। विजयरथ। फल्गुन। किरीटी। गुडाकेश।

गांडीवधर । पार्थ । कपिध्वज । सव्यसाचि । शब्दभेदि । धनुर्धर । कौन्तेय । नर । भारत । अनघ ।

कर्ण—राधेय । वसुषेण । अर्कनन्दन । सूर्यसुत । चाम्पेश । सूतपुत्र । अङ्गराट् ।

भीष्मपितामह—गंगापुत्र । गांगेय । पितामह । शान्तनुसुत ।

द्रौपदी—द्रुपदसुता । पाञ्चाली । कृष्णा । सैरिंध्री । नित्ययौवना । याज्ञसेनी । वेदिजा ।

अभिमन्यु—सौभद्र । पार्थनन्दन । पाण्डुपौत्र ।

दशरथ—कौशलपति । अवधेश । रघुवंशमणि । दिगस्यन्दन ।

जनक—राजर्षि । मिथिलेश । विवेकनिधि । तिर्हुतराज ।

लक्ष्मण—सौमित्र । अहीश । शेष । अनन्त । लखन । रामानुज । लछिमन ।

शत्रुघ्न—रिपुदमन । रिपुसूदन । शत्रुहन्ता । शत्रुहन ।

रावण—दशवदन । दैत्येन्द्र । दशकन्ध । लंकेश । निशिचरपति । दशकंठ । दशमाथ । दशग्रीव । यातुधानेश । दशानन ।

मेघनाद—शक्रारि । इन्द्रजित । रावणात्मज ।

जामवन्त—ऋक्षराज । जांबुवान ।

३. तीर्थादिवर्ग

प्रयागराज—तीर्थराज। प्रयाग। तीर्थेश। तीर्थपति। दशाश्वमेध तीर्थ।

अयोध्या*—अवध। अवधपुरी। विमला। आदिपुरी। आद्या। साकेत।

मथुरा—मधुपुरी। मधुवती। मधुरा।

काशी—आनन्दपुरी। आनन्दवन। आनन्दकानन। शिवपुरी। काशिका। वाराणसी। मोक्षदा पुरी। महाश्मशान।

जगन्नाथपुरी† – जगदीशपुरी। पुरी। जगन्नाथ।

द्वारकापुरी—द्वारकाधीश। वेंकटेश। द्वारावती।

गंगा—भागीरथी। जह्नुनन्दिनी। मन्दाकिनी। सुरसरि। देवापगा। ध्रुवनन्दा। भीष्मसू। त्रिपथगा। सुरध्वनि। नदीश्वरी। हरमौलिबिहारिणी। त्रिस्रोता। सुरापगा। अलकनन्दा। अध्वगा। जाह्नवी।

['देव' वाची शब्द के आगे कोई 'नदी' वाचक शब्द जोड़ देने से 'गंगा' का बोधक होगा]

यमुना—सूर्यसुता। सूर्यतनया। कालिन्दी। शमनस्वसा। कृष्णा। अर्कजा। तरणिजा।

[नोट—'सूर्य' के किसी पर्याय के साथ 'कन्या' का पर्याय जोड़ देने से 'यमुना' का बोधक होगा।]

---

* सप्तमोक्षदायक तीर्थ—अयोध्या। मथुरा। काशी। कांची (काञ्जी-वरम्।) अवन्तिका (उज्जैन)। जगन्नाथपुरी। द्वारकापुरी।

† भारत वर्ष के उत्तर में बदरिकाश्रम, दक्षिण में रामेश्वरम्, पूर्व में जगन्नाथ-पुरी, और पश्चिम में द्वारका पुरी ये चारों धाम तीर्थयात्रा की दृष्टि से मुख्य माने जाते हैं।

नर्मदा—रेवा । नर्मदा । सोमोद्भवा । मेकलसुता ।

सरयू—सरजू । वाशिष्ठी । आनन्दाश्रुजा ।

मंदाकिनी—[देखो 'गंगा' शब्द पृ. १९]

गोमती वाशिष्ठी । धेनुमती ।

गोदावरी—गोदा । गौतमसम्भवा । ब्रह्माद्रिजाता । गौतमी ।

नैमिषारण्य—नीमखार ।

पुष्करतीर्थ—रूपतीर्थ । सुखदर्शन । ब्रह्मकृततीर्थ ।

[यह तीर्थ अजमेर में पुष्कर झील के नाम से प्रसिद्ध है ।]

रामेश्वर—सेतुबन्ध रामेश्वर । रामेश्वरम् ।

वृन्दावन—मधुवन । खदिरारण्य । वृन्दाकानन । कदम्बखण्डी । नन्दालय । नन्दनवन । तालवन । बकुलारण्य । कुमुदारण्य । काम्यारण्य । भद्रवन । भाण्डीरवन । श्रीवन । लोहवन । महावन । गोकुल । वृन्दारण्य । लीलाभूमि । ब्रजभूमि । तुलसी वन ।

४. दिशादिवर्ग

दिशा—दिक् । ककुभ । दिशा । काष्ठा । आशा । हरित । ओर । तरफ ।

दिक्पाल*—दिगाधिप । दिशाधिप । दिग्पति । दिगेश । दिशीश ।

पूर्व—प्राची । पूरब । पुरुब ।

पश्चिम—पच्छिम । प्रतीची । पच्छूं ।

उत्तर—उदीची

दक्षिण—अवाची । दक्खिन । दच्छिन ।

दिगान्तर† —कोण । दिशाओं का मध्यवर्त्ती कोना । दिक्कोण ।

दिग्गज‡—दिशिकुञ्जर । दिक्स्तम्भ ।

मण्डल—चक्रवाल । चक्र । चक्क ।

ऊपर—ऊर्ध्व । ऊँचा । उच्च । उपरि । तुङ्ग । उन्नत । उच्छ्रित । प्रांशु । उदग्र । उतङ्ग ।

नीचे—निम्न । अधः । तले (तरे, तर) । तल ।

आगे—अग्रे । अग्र । पूर्व । प्रथम । पहले । अग्गल ।

सम्मुख—सन्मुख । साभे । सामुहे । सोंहे । सौंहे । प्रत्यक्ष । समक्ष । साक्षात् । पुरतः ।

---

* दशो दिग्पाल—पूर्व के इन्द्र । पश्चिम के वरुण । उत्तर के कुबेर । दक्षिण के यम । ईशान के ईश । नैर्ऋत्य के नैर्ऋती । वायव्य के वायु । आग्नेय के अग्नि । ऊर्ध्व के ब्रह्मा । अधः के शेष ।

† दिगान्तर—ईशान (पू० + उ०), नैर्ऋत्य (प० + द०) वायव्य, वायुकोण (पू० + द०) आग्नेय, अग्निकोण (प० + उ०) ।

‡ अष्ट दिग्गज—ऐरावत (पू०) । पुण्डरीक (आ०) । वामन (द०) कुमुद (नै०) अञ्जन (प०) । पुष्पदन्त (वा०) सार्वभौम (उ०) सुप्रतीक (उ० पू०) ।

विमुख—परोक्ष । विलग । गुप्त । निगूढ़ । विगूढ़ । अन्तर्हित । अन्तर्धान । पिहित । प्रच्छन्न । निभृत । तिरोहित । सम्वरित । गोप्य । गहन । परे । परतः । न्यारे ।

एकान्त—अकेला । निर्जन । शान्त । इकन्त । एकाकी । शून्य । सूनसान । निराला ।

ओट—आड़ । परदा । छिपाव । दुराव ।

दहिना—दक्षिण । दाहिन । दाएँ ।

बायाँ—वाम (बाम) । वाएँ । बावाँ ।

समीप—पास । निकट । अनतिदूर । अदूर । अतिपार्श्व । अध्यास । नेरे । पार्श्व । आसन्न । उपकंठ । समर्याद । अन्तिक । अभित । सनीड । तट । सन्निकट । ढिग । अभ्यास । सविध । अभ्यग्र । सदेश । अभ्यर्ण । सवेश ।

आदि—आरम्भ । प्रथम । प्रारम्भ । समारम्भ ।

मध्य—वीच । मधि । माँझ ।

अन्त—अवसान । समाप्त । इति । पर । छोर । पूर्ण ।

दूर—परे । विलग । अलग । पृथक । भिन्न । विगत । न्यारा । अरल । अनत । अन्यत्र ।

५. आकाशादि वर्ग।

आकाश—द्यो। द्यौ। अभ्र। अभ्भ। व्योम। पुष्कर। अम्बर। नभ। अन्तरिक्ष। अन्तरीक्ष। गगन। अनन्त। सुरवर्त्म। ख। वियत्। विष्णुपद। विहाय। नाक। अनङ्ग। मेघवेश्म। महाबिल। मरुद्वर्त्म। मेघवर्त्म। त्रिपिष्टप। शून्य।

मेघ—अभ्र। मेघ। वारिवाह। धाराधर। जलमुच। मुदिर। धूम्रयोनि। तड़ित्वान्। घन। जलधर। स्तनयित्नु। जलदान। बलाहक। अम्बुभृत्। जीमूत। वारिद। बादर। पर्जन्य। बादल। बद्दल। नीरद। वारिधर। पयोद। अम्बुद। पयोधर। सारंग। पुरजन। यज्ञपुत्र। जगजीवन। असुर। अम्भोधर। व्योमधूम। घनाघन। वायुदारु। नभश्चर। कन्धर। कन्ध। गगनध्वज। वार्मुक। बनभुक्। अब्द। नभोगज। मदयित्नु। कद। कन्द। गदामर। खतमाल। वातरथ। श्वेतनील। नाग। जलकरङ्क। पेचकमेक। दर्दुर। क्षीरद। तोयद। स्नेहवाही। स्नेहधर। पाथेद। गदाम्बर। गाड़व। वारिमसि। अद्रि। ग्रावा। गोत्र। वल। अश्न। पुरुभोज। बलिशान। अश्मा।

मेघपंक्ति—मेघमाला। मेघावली। घनमाला। कादम्बिनी। आसार।

मेघगर्जन—रसित। स्तनित। गर्जित। गर्जन। घोष। घनरव।

बिजुली—क्षण (छन)। छटा। तड़ित्। दामिनी। चपला। चंचला। विद्युत्। कौंधा। घनबल्ली! सौदामिनी। सम्पा। विज्जु। चटुल। अशनि। शतह्रद। ह्लादिनी। चाँकी। जगप्रभा। ऐरावती। अकालकी। शम्पा।

इन्द्रधनुष—इन्द्रायुध। शक्रधनु। ऋजुरोहित। सप्तवर्ण।

वृष्टि—सम्पात। आसार। वर्षा। बारिस। वर्षण। बरखा।

झींसी—फुहार। सीकर। जलकण। अम्बुकण।

मृगतृष्णा—मरीचिका। मृगजल। भ्रमजल। मृगत्रास। मिथ्याजल।

पाला—तुषार (तुसार, तुसार)। हिम। तुहिन। अवश्याय। मिहिका। प्रालेय। नीहार। ओला।

ग्रहोपग्रह और नक्षत्रादि के नाम

सूर्य*—दिवाकर। प्रभाकर। दिनकर। दिवसाधिप। भास्कर। हंस। मिहिर। तिमिरहर। विभाकर। विवस्वान्। भानु। विभावसु। पतंग। सविता। अम्बरमणि। रवि। खग। गभस्तिमान्। हिरण्यगर्भ। नक्षत्राधिपति। आदित्य। अंशुमाली। अर्क। मरीची। अवि। सूर। वीरोचन। मार्तण्ड। पूषण। तरणि। सुनूर। कुतप। अर्यमा। चित्ररथ। चक्रबन्धु। कमलबन्धु। खगपति। हरि। सप्ताश्व। द्वादशात्मा। उष्णरश्मि। असुर। विकर्तन। ग्रहपति। सहस्रांशु। पद्माक्ष। तेजोराशि। महातेज। तमिस्रहा। छायानाथ। कर्मसाक्षी। जगच्चक्षु। प्रद्योतन। सारंग। मित्र। खद्योत।

[नोट—'दिन' शब्द के किसी पर्यायवाची शब्दके साथ 'स्वामी' अर्थ-बोधक कोई शब्द जोड़ देने से 'सूर्य' का बोधक होगा।]

सूर्य के पारिपार्श्वक—माठर। पिङ्गलोदण्ड। चण्डांश।

सूर्य का सारथी—अरुण। सूर्यसुत। अनूरु। काश्यपी। गरुड़ाग्रज।

सूर्यमण्डल—मण्डल। परिवेष। परिधि। उपसूर्यक। मण्डन।

सूर्य-किरण—किरण। दीधित। उस्र। मयूख। कर। रश्मि। घृणि। गभस्ति। अंशु। गो। वसु। ज्योति। मरीचि। रंस। छटा। कला। भर्ग। प्रद्योत। आलोक।

सूर्य-प्रकाश—प्रभा। रुचि। द्युति। छवि। शोचि। रोचि। भा। भास। त्विष। दीप्ति। प्रकाश। आतप। घाम।

सूर्य के घोड़े—सप्ताश्व। उच्चैः श्रवा। रविहय।

चन्द्रमा†—चन्द्र। चन्द्रमा। सोम। सुधाधर। इन्दु। सुधाकर।

---

* सूर्य की १२ कलाओं के नाम—१. तपिनी, २. तापिनी, ३. धूम्रा, ४. मरीची ५. ज्वालिनी, ६. रुचि, ७. सुषुम्णा, ८. भोगदा, ९. विश्वा। १०. बोधिनी, ११. धारिणी, १२. क्षमा।

† किसी नक्षत्र, औषधी, रात्रि आदि के किसी पर्यायवाची शब्द के साथ

हिमांशु । शुभ्रांशु । शशि । शशधर । शशाङ्क । ग्लौ । मृगाङ्क । नक्षत्रेश । औषधीश । कुमुदबान्धव । निशापति । निशिनाथ । सुधांशु । विधु । कलानिधि । अब्ज । क्षपाकर (छपाकर) । द्विजराज । जंवातृक । सुधानिधि । अमीकर । हिमरोम । सिन्धुसुत । अम्भोज । ऋक्षराज । भेश । मृगपति । कलङ्कधर । जलज । उडुप । मयङ्क । मन्थी । सुखग । तारापति । सारंग । राकापति । अमृतबन्धु । अमृतद्युति । अमृतवपु ।

चन्द्रमण्डल—चन्द्रबिम्ब । मण्डल ।

चन्द्रिका—चाँदनी । ज्योत्स्ना । जोन्ह । कौमुदी । हिमकर । अँजोरिया । चन्द्रमरीची । अमृततरंगिणी । अमृतद्रव ।

द्वितीया का चन्द्रमा—नवचन्द्र । वक्रचन्द्र । बालविधु ।

पूर्णमासी का चन्द्रमा—पूर्णचन्द्र । राकाशशि । राकेश ।

चन्द्र-चिह्न—निर्वाद । अधम । प्रमाद । कलङ्क । अङ्क । लांछन । लक्ष्म । मसि । लक्षण । मलिन । मली । मृगाङ्क । मृगचिह्न ।

चन्द्रमा की स्त्री—रोहिणी । धातृ । अब्जयोनि । विवातृ ।

मङ्गल—अङ्गारक । कुज । भौम । भूमिसुत । लोहिताङ्ग ।

बुध—सौम्य । चन्द्रसुत । जारज । चन्द्रज । रौहिणेय । ज्ञ । विद । विदित्व ।

बृहस्पति—गुरु । सुरगुरु । आङ्गिरस । सुराचार्य । गीष्पति । वाचस्पति । धिषण । जीव । चित्र । शिखण्डिज । ईज्य ।

शुक्र—कवि । काल । दैत्यगुरु । उशना । भार्गव । दैत्यराज । आदिदेव । गुरु ।

स्वामी अर्थबोधक कोई शब्द जोड़ देने से चन्द्रमा का बोधक होगा ।

चन्द्रमा की १६ कलायें—१. अमृता, २. मानदा, ३. पूषा, ४. पुष्टि, ५. तुष्टि, ६. रति, ७ धृति, ८. शशनी, ९. चन्द्रिका, १०. कांति, ११. ज्योत्स्ना, १२. श्री, १३. प्रीति, १४. अंगदा, १५. पूर्णा, १६. पूर्णामृता ।

शनैश्चर—शनि । मन्द । मन्दचाल । छायासुत । सौरि । रविनन्दन । आर्कि । मन्दग्रह ।

राहु—विधुन्तुद । तम । स्वर्भानु । सैंहिकेय । सिंहिकासुत । असुर ।

केतु—शीर्षग्रह । धूमकेतु । धूम्रकेतु । मत्स्यवाहन । शिखि ।

नक्षत्र॰—ऋक्ष । भ । तारा । उडु । तारिका । खग । नखत । निशिचर । नभचर । नभचर । जुन्हाई । निहारिका ।

नक्षत्रों का समूह—तरैया । उडुगण । नखतावली । निहारिकावली ।

ध्रुव—औत्तानपाद । निश्चल । अचलग्रह । स्थिरग्रह ।

अश्विनी—अश्वयुज् । अश्व । दास्र ।

भरणी—यम । अन्तक । (कोई भी यम का पर्य्याय) ।

कृत्तिका—अग्नि । अनल । (कोई भी अग्नि का पर्याय) ।

रोहिणी—विधातृ । धातृ । अब्जयोनि ।

मृगशिरा—मृगसिर । अग्रहायणि । मृग । शशभृत । चन्द्र ।

आर्द्रा—रुद्र । शिव ।

पुनर्वसु—अदिति ।

पुष्य—सिध्य । तिष्य । इज्य । जीव । देवपुरोहित ।

अश्लेषा—सर्प । उरग । भुजग । व्याल । अहि । भुजङ्ग ।

मघा—पितृ । पितर ।

॰ २७ नक्षत्र—अश्विनी । भरणी । कृत्तिका । रोहिणी । मृगशिरा । आर्द्रा । पुनर्वसु । पुष्य । अश्लेषा । मघा । पूर्वाफाल्गुनी । उत्तराफाल्गुनी । हस्त । चित्रा । स्वाती । विशाखा । अनुराधा । ज्येष्ठा । मूल । पूर्वाषाढ़ । उत्तराषाढ़ । श्रवण । धनिष्ठा । शतभिषा । पूर्वाभाद्रपदा । उत्तराभाद्रपदा । रेवती । (नोट—ज्योतिष के अनुसार 'अभिजित' नामक एक और नक्षत्र उत्तराषाढ़ के बाद माना जाता है । इस प्रकार कुल २८ नक्षत्र होते हैं) ।

पूर्वाफाल्गुनी—भग । योनि ।

उत्तराफाल्गुनी—अर्यम ।

हस्त—अर्क । रवि । कर ।

चित्रा—त्वाष्ट्र । तक्ष ।

स्वाती—वायु । समीर । अनिल । मरुत ।

विशाखा—राधा । द्विदैव । शक्राग्नि । द्वीश ।

अनुराधा—मित्र । मैत्र ।

ज्येष्ठा—इन्द्र । शक्र । शाक्र ।

मूल—निरिति । रक्ष । राक्षस ।

पूर्वाषाढ—क्षीर । जल ।

उत्तराषाढ—विश्व । वैश्व ।

अभिजित—विधि ।

श्रवण—कर्ण । गोविन्द । हर ।

धनिष्ठा—श्रविष्ठा । वसु । वासव ।

शतभिषा—सततारक । तोयप । जलप । वरुण । जलधि । उदम्बुप ।

पूर्वाभाद्रपदा—प्रोष्ठपदा । अजवरण ।

उत्तराभाद्रपदा—प्रोष्ठपदा । अहिर्बुध्न ।

रेवती—पूषा । अन्त्य । पौष्ण । अन्त्यभ ।

राशि*—लग्न । मुहूर्त । भ ।

मेष—अज ।

वृष—वृषभ ।

मिथुन—युग्म ।

---

* प्रसिद्ध राशियां १२ हैं—मेष । वृष । मिथुन । कर्क । सिंह । कन्या । तुला । वृश्चिक । धनु । मकर । कुम्भ । मीन ।

कर्क—कर्कट ।
सिंह—मृगेन्द्र ।
कन्या—कन्यका । सुता । कुमारी ।
तुला—तौलि । युक् । तुल ।
वृश्चिक—अलि ।
धनु—चाप । कोदण्ड ।
मकर—नक्र ।
कुम्भ घट ।
मीन—झख । मत्स्य ।

६. कालादि वर्ग

समय—वेला । अनिमेष । काल । बार । इष्ट । अदृष्ट । वशिष्ट । अनेह । वय । नमय । अवसर । प्रसङ्ग । दण्ड । मुहूर्त । घड़ी । बिरिया ।

पल—क्षण (छन) । (२४ सेकेण्ड का एक पल होता है) ।

दण्ड—घटी । घटिका । घड़ी ।

[नोट—२४ मिनट का एक दण्ड होता है । एक दिनरात में ६० दण्ड होते हैं) ।

प्रहर❀—पहर । याम । (३ घण्टे का एक प्रहर होता है) ।

दिन—दिवस । वासर । घस्र । अह्न (अहन) ।

प्रातः काल—प्रत्यूष । अहर्मुख । प्रत्युषसी । गोसर्ग । प्रातः । सबेरा । भोर । प्रभात । भिनुसार । बिहान । अरुणोदय । कल । दिनमुख । तड़का । सकाल ।

मध्याह्नकाल—दोपहर । दुपहरिया । मध्यदिवस ।

सायंकाल—रजनीमुख । सायं । दिनान्त । सन्ध्या । गोधूलि । प्रदोष-काल । साँझ । पितृप्रसू ।

रात्रि—निशा । शर्वरी । निशीथ । निशीथिनी । त्रियामा (रात्रि का तीसरा पहर) । क्षणदा । विभावरी । रजनी । यामिनी । क्षपा (छपा) । निशी । नक्त । रैन । रात । कादम्बरी । सिता । कोटर । दोषा । असुर ।

अँधेरी रात—तमी । तमिस्रा । तामसी । तमस्विनी । श्यामा ।

❀प्रहर—एक दिन रात में ८ प्रहर होते हैं । यथा दिन में—१ पूर्वाह्न वा प्रातः, २ मध्याह्न, ३ अपराह्न, ४ सायं । रात्रि में—१ प्रदोष वा रजनी-मुख, २ निशीथ, ३ त्रियामा, ४ उषा भोर वा ब्राह्ममुहूर्त ।

उँजाली रात— ज्योत्स्नी । चन्द्रिकयान्वित । कौमुदी । हरिद्रा । विभावरी ।

सप्ताह—अठवारा । हफ्ता । (७ दिन का एक सप्ताह) ।

पक्ष—पख । पाख । पखवारा । (१५ दिन का १ पक्ष) ।

कृष्णपक्ष—अँधेरा पाख । असित पक्ष ।

शुक्लपक्ष—उँजेरा पाख । सितपक्ष ।

मास—माह । महीना ।

वर्ष—अब्द । वत्सर । हायन । सरत । संवत् । सम ।

अमावस्या—सूर्येन्दुसङ्गम । कुहू (जब कि चन्द्रमाकी कला नष्ट हो जाती है) । सिनीवाली (जब कि चन्द्रमा की कला अवशेष रहती है) । अमा । दर्श । अमावस ।

पूर्णमासी—पौर्णमासी । राका । पर्व । पूनो । पुनवासी । पुनमासी ।

चैत्र—चैत । चैत्रिक । मधु ।

वैशाख—माधव । राध । बैसाख ।

ज्येष्ठ—जेठ । शुक्र । तपन ।

आषाढ़—शुचि । असाढ़ । हाड़ ।

श्रावण—नभा । श्रावणिक । सावन ।

भाद्रपद—प्रोष्ठपद । भाद्र । भादों । भादँव । नभ ।

आश्विन—इष । अश्वयुज् । क्वाँर । कुआर ।

कार्तिक—कार्तिकक । बाहुल । कातिक । ऊर्ज्ज ।

मार्गशीर्ष—मृगसिर । अग्रहण । अगहन । मगशिर । माग । आग्रहायणिक । सहस् ।

पौष—सहस्य । पूस ।

माघ—तपा । मह ।

फाल्गुन—फाल्गुन । फाल्गुनिक । तपस्य ।

अधिकमास*—मलमास। लौंद का महीना। पुरुषोत्तम मास। असंक्रान्त मास। मलिम्लुच। विनामक। अधिमास।

वसन्त (ऋतु)—ऋतुराज। पुष्प समय। कुसुमाकर। माधव। सुरभि बहार। ऋतुपति। कुसुमकाल। मधु।

ग्रीष्म—उष्मक। निदाघ। उष्म। उष्मागम। उष्णागम। तप। तपन। तपाक। गरमी।

वर्षा—प्रावृट्। पावस। बरसात।

शरद्—हिमर्तु। सरत्।

शिशिर—शीत। सिसिर। जाड़ा।

हेमन्त—हिमन्त।

सतयुग—कृतयुग। पुण्ययुग। देवयुग। सत्ययुग।

कलियुग—कलि। कलिकाल। कृष्णयुग। कल्कि।

प्रलयकाल—संवर्त। प्रलय। क्षय। कल्प। कल्पान्त। नाश।

अवशिष्ट—शेष। बचत। बाकी।

उपस्थित—विद्यमान। प्रस्तुत। उद्यत। आयात। उपनित। तैयार। वर्तमान। प्रतिपन्न।

अनुपस्थित—अप्रस्तुत। अनुद्यत। अभाव। शून्य। बिना। रहित।

गत—बीता हुआ। बिगत। व्यतीत। भूत। परोक्ष। पहले। पीछे।

आगामी—आनेवाला। भविष्यत्। भविष्य।

---

* प्रति तीसरे वर्ष एक अधिक मास होता है, जो शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से लेकर अमावास्या पर्यन्त रहता है, और इसमें संक्रान्ति नहीं होती। यह चान्द्र और सौर वर्षों को एक करने के लिये चान्द्र वर्ष में जोड़ लिया जाता है।

नित्य—प्रतिदिन । सदा । सर्वदा । निरन्तर । निरवधि । सतत । सन्तत । सनातन । शाश्वत । अनांतर । अनपायिनी । अनुदिन । अविरल । अविरत । अश्रान्त । ध्रुव ।

पश्चात्—पुनः । बहुरि । फिर । उपरान्त । अथ । तदन्तर । अनन्तर । तदनन्तर । अन्तर ।

द्वितीय खण्ड

१. स्थलादिवर्ग।

पृथ्वी—भू। भूमि। अचला। अनन्ता। रसा। विश्वम्भरा। स्थिरा। धरा। धरित्री। धरणी। क्षोणी। ज्या। काश्यपी। सर्वसहा। वसुमती। वसुधा। उर्वी। वसुन्धरा। गोत्रा। कु। पृथिवी। क्ष्मा। अवनि। मेदिनी। मही। रत्नगर्भा। सागराम्बरा। अब्धिमेखला। भूतधात्री। रत्नवती। देहिनी। पारा। विपुला। धरणीधरा। धारणी। महाकान्ता। जगद्वहा। खण्डनी। गन्धवती। धात्री। गिरि कर्णिका। धारयित्री। सहा। अचलकीला। गौ। द्विरा। इड़ा। इड़िका। इला। इलिका। उदधिवस्त्रा। इरा। आदिमा। वरा। उर्वरा। आद्या। जगती। पृथु। श्यामा। क्रीड़ाकान्ता। खगवती। अदिति। वीजप्रसू। पृथवी। पहुमि। भुइँ। उरा। सारँग। असुर। पृथिवी।

संसार*—जगत। भुवन। लोक। विश्व। जगती। भव। जग। भूलोक। भुव। मृत्युलोक। मर्त्यलोक। विष्टप। संसृति। ब्रह्माण्ड।

मिट्टी—मृत्। मृत्तिका। माटी। मट्टो। मृत्स्ना। प्रशस्ता।

धूलि—धूर। धूल। धूसर। रज। रेणु। पांशु (पाँस)। पिंजल। धूसरी। खेह। संचरा। वातकेतु। वातध्वज।

उपजाऊ भूमि—उर्वरा। उर्वरी। सस्याढ्या।

विना उपजाऊ भूमि—ऊषर। ऊसर। सस्यहीना अनुर्वरा। वन्ध्याभूमि। बंजर।

आर्यावर्त देश—भारतवर्ष। भरतखण्ड। भारत। आर्यभूमि। भारतभूमि। पुण्यभूमि। हिन्द। हिन्दुस्तान।

---

* लोक चौदह हैं—भूर्लोक, भुवर्लोक, महर्लोक, जनलोक, सत्यलोक, तपोलोक और स्वर्गलोक—ये सात ऊपर के लोक हैं। तल, अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल और पाताल—ये सात नीचे के लोक हैं।

(नोट—विशेषतः हिमालय और विध्याचल की मध्यस्त भूमि को ही आर्यावर्त कहते हैं।)

राष्ट्र—नीवृत । जनपद । सुदेश । उपवर्तन । विषय ।

ऊसरदेश—ऊषवती । ऊषरा । ऊषरस्थली । ऊषर । ऊषवान् । क्षारभूमि । मरुभूमि । मरुस्थल । अनुर्वरा भूमि ।

खेत—क्षेत्र । वप्र । केदार भूमि । निष्कुट । राजिका । वलज । पाटीर ।

म्लेच्छदेश—प्रत्यन्त । म्लेच्छवास । पतितभूमि । अनार्यभूमि ।

जलप्रचुरदेश—अनूपदेश । मालवदेश ।

बालुकायुतदेश—शर्करा । शर्करिल । शार्कर । शर्करावती ।

वल्मीक—वामलूर । नाकु ।

मार्ग—मग । राह । अयन । वर्त्म । पथि । अध्वा । सृति । सरणि । पद्धति । पथ । पन्थ । पदवी । एकपदी । वर्तनि । संचरण । पद्या । वाट ।

सुन्दर मार्ग—अतिपन्थ । सुपन्थ । सत्पथ । सन्मार्ग । अतिध्वनि । विशिष्टमार्ग । रम्यपथ ।

दुर्गममार्ग—प्रान्तर । कान्तार । क्लिष्ट पथ । कण्टकाकीर्ण मार्ग । दुष्पथ । कुपथ । कुमार्ग । कुराह । कापथ । विपथ । दुर्गम पथ ।

संकीर्ण मार्ग—रथ्या । विशिखा । वीथिका । लघुपथ । गली । प्रतोली । ओलिका । गैल । खारि । कूचा ।

चौराहा—चतुष्पथ । शृंगाटक । चौमुहानी । चौरस्ता । चौहट्टा । चौक ।

राजमार्ग—घंटापथ । राजपथ । संसरण ।

नगर—नगरी । पुर । पुरी । पत्तन । पुटभेदन । निगम ।

टोला—मुहल्ला । टोली । पुर । पुरवा । कूचा ।

बाजार—हाट । पण्य । पैंठ । पण्यवीथिका । राजपथ । चतुष्पथ । शृङ्गाटक । विपणि । मण्डी ।

तेल का बाजार—तेलहट्टा । तेलियाना ।

कपड़े का बाजार—बजाजा। चैल हट्टा।

मछली का बाजार—मछरहट्टा। मछरटोला।

सुनारों का बाजार—सर्राफा।

बर्तनों का बाजार—ठठेरी बाजार। ठठेरा।

गाँव—ग्राम। गँवई। संवसथ। देहात।

अहीरों का गाँव—घोष। अभीरपल्ली। आभीरपल्ली। अहिराना।

भीलों का गाँव—पक्कण। शबरालय। शबर ग्राम।

चमारों का गाँव—चमरौटिया। चमर टोलिया।

घर—गृह। आलय। आगार। ओक। आयतन। गेह। सदन। सद्म। साध। वेश्म। वार। निकेत। निधान। निःशान्त। निवेश। शिविर। शाला। धाम। भवन। मन्दिर। मकान। आश्रप्रद (आस्पद)। विश्रपद। वस्य। आवास। शरन। निलय। निवास। असन। परिघ। वाक्य। शाला। आवास। हर्म्य। स्थान।

[**नोट**—कच्चे घर को 'बखरी' भी कहते हैं तथा पक्के और बड़े घरों को महल, प्रासाद या हवेली कहते हैं।]

घर की दीवार—दिवाल। भीत। भित्ति। भीती। कुड्य।

गृहद्वार—द्वार। पौर। दुआर। ड्योढ़ी। पहरा। दरवाजा। प्रतीहार। देहली। सिंहपौर।

बगली द्वार—पार्श्व द्वार। पक्षद्वार। पक्षक। गुप्तद्वार।

देहली—देहरी, डेहरी। ड्योढ़ा। गृहावग्रहणी।

ओसारा—ओटा। अलिन्द। प्रघाण। प्रघण। प्रकोष्ठक। दालान।

आँगन—आङ्गण। गृहाङ्गण। अजिर। चत्वर। बगर। सहन। चौक। चौगान। बाखर। प्राङ्गण। अँगना। चतुःशाल। संजवन। चौसार।

खंभा—खंभ। स्तम्भ। स्तूप।

सीढ़ी—आरोहणी। सोपान। निश्रेणी (निसेनी)। अधिरोहिणी। आरोह। सिढ्ढी।

अटारी—अट्टालिका। अटा। कोठा। सौध। हर्म्य।

खिड़की—अन्तर द्वार । प्रच्छन्न । गवाक्ष । वातायन । जालरन्ध्र । झरोखा । जालमार्ग । झँझरी । वारी । पक्षक ।

किवाड़—किवार । केवाड़ । कपाट । पट । पल्ला । दरवाजा । अरर । द्वार । फाटक । (बड़ा दरवाजा) ।

छाजन—खपड़ैल । छप्पर (फूस का छाजन) । छत । पाटन । छादन । पटल । छदि ।

बैठक—स्थायी । अथाई । बैठका । चौबारा । चौपाल । अतिथिशाला ।

शयनगृह—शयनागार । शयनावास । आरामखास ।

रसोईगृह—पाकगृह । पाकशाला । सूपगृह । महानस । भोजनालय । पाकस्थली । अन्नक्षेत्र । रसवती सदन ।

रतिगृह—क्रीड़ालय । क्रीड़ावास । गर्भागार । वासगृह । रतिशाला । रंगमहल । विलास स्थल ।

प्रसवगृह—सूतिकागृह । अरिष्ट । सौरी । सोवड़ । प्रसूतिकागृह । जननावास ।

राजमहल—राजमन्दिर । राजभवन । प्रासाद । सौध । उपकारिका । राजसदन । उपकार्य । सर्वतोभद्र । स्वस्तिक । नन्द्यावर्त । हर्म्य । निष्कुट । महल । हवेली । गढ़ी ।

कोट—आवर्तक । प्रकारक । परिघ । सालि । पुरसीम । प्राचीर । घेरा । वेष्टक ।

किला—दुर्ग । विकटस्थल । दुर्गम । अगम । गढ़ । सौध । विद्ध ।

अन्तःपुर—रनिवास । अवरोध । शुद्धान्त । स्त्रियागार । भोगपुर । हर्म्य (हरम) ।

देवमन्दिर—देवालय । मन्दिर । प्रासाद । देवस्थान (देवथान) । देवगृह ।

सभा भवन—समाज भवन । वास । सभा । अखाड़ा । बैठक । परिषद् । पञ्चायत का स्थान ।

झोपड़ी—पर्णकुटी । झोपड़ी । उटज । मुनिवास । शाला । पर्णशाला । पल्ली । कुञ्ज । गह्वर । कुटी ।

घुड़साल—घोड़शाला। हयशाला। घुड़सार। बाजिशाला। मन्दुरा। अस्तबल।

हाथीखाना—गजशाला। पीलखाना। गयशाला।

गोशाला—गोसाला। गऊशाला। घोष। गोथान। गोकुल। खिरक (खरिक)। गोमण्डल। गायगोंठ।

औषधालय—चिकित्सालय। भैषज्यागार। चिकित्साभवन। दवाखाना।

पाठशाला—विद्यालय। चटशाला। विद्यामन्दिर। सरस्वतीभवन। गुरुकुल। गुरुगृह। मदरसा।

यज्ञशाला—चैत्यधाम। यजनायतन। यज्ञस्थल। यज्ञथली। मखशाला। मखस्थान। यज्ञभूमि।

शस्त्रालय—शस्त्रागार। हथियारखाना।

धर्मशाला—मठ। सराय। क्षेत्र। आवास। धर्मक्षेत्र। जनावास।

रणभूमि—समरभूमि। संग्रामभूमि। संगरभूमि। वीरभूमि। युद्धभूमि। रणस्थल। युद्धस्थल। मैदान। क्षेत्र (खेत)। युद्धक्षेत्र।

न्यायशाला—न्यायालय। न्यायभवन। कचहरी। न्यायमंदिर।

मद्यगृह—कलवरिया। गञ्जा। मदिरागृह। आबकारी। कलालालय।

शिल्पशाला—आवेशन। शिल्पिशाला।

पौसरा—प्रण। पौसर। पानीयशाला। प्याऊ। जलसत्र। पानीयशालिका।

श्मशान—मरघट। मसान। मुरदघट्टा। मृतकस्थान। दग्धस्थान। पितृवन। शातनक। रुद्राक्रीड़। दाहस्र। अन्तशय्या। पितृकानन। [श्म=शव, शान=शयनस्थान।]

कारागार—कारावास। बन्दीगृह। यातनागृह। जेलखाना।

जुआखाना—द्यूतगृह। फड़।

नाट्यशाला—नाटकभूमि। रंगभूमि। अभिनयस्थल। रंगालय। रंगस्थल। नाटकघर। नाचघर। नृत्यशाला।

व्यायामशाला—अखाड़ा। कसरतघर।

पर्वत*—भूधर । भूभृत् । क्ष्माभृत् । महीभृत् । शैल । अचल । महीध्र । शिलोच्चय । गिरि । अद्रि । गोत्र । धर । ग्राव । शिखरी । अहार्य । नग । नाकु । भूमिधर । महीधर । कूट । मेरु । तुंग । अग । कुधर । धराधर । रजत । पयोधर । दरीभृत । शृंगी । हरि । ग्रावा । पृथुशेखर । धरणी । कीलक । कुट्टार । जीमूत । स्थिर । कटकी । वृक्षयान् ।

पर्वत शिखर—शिखर । शृङ्ग । कूट । मेरु । सुमेरु । दिवेश ।

पाताल—अधोभुवन । बलिसद्म । नागलोक । रसातल । अध । उरगस्थान ।

गड्ढा—गड़हा । गर्त्त । अवट । भूरन्ध्र । दर । श्वभ्र ।

पत्थर—पाषाण । पाहन । प्रस्थर । पाथर । उपल । ग्राव । दृषत् । अश्म । शिला । पखान । भार । सिल । गुरु । चट्टान ।

कन्दरा—दरी । कन्दर । गुफा । गह्वर । बिल । खोह । देवखात । गुहा । माँद । विवर । कुहर । गर्त्त ।

हिमालय-पर्वत—नगपति । नगाधिराज । मेनाधव । उमागुरु । हिमाद्रि । अद्रिराट । मेनकाप्राणेश । हिमवान् । हिमप्रस्थ । भवानीगुरु ।

सुमेरु—मेरु । हेमाद्रि । रत्नसानु । सुरालय । अमराद्रि । भूस्वर्ग ।

हेमकूट—हेमाद्रि । स्वर्णाचल । स्वर्णपर्वत ।

विन्ध्य-पर्वत—विन्ध्य । विन्ध्याचल । विन्ध्यगिरि । विंध्याद्रि ।

[विन्ध्याचल के जंगलों को 'विन्ध्याटवी' कहते हैं]

—: ० :—

---

* सप्तपर्वत—१. हिमालय । २. निषध । ३. विन्ध्य । ४. माल्यवान् । ५. पारियात्रक । ६. गन्धमादन । ७. हेमकूट ।

२. जलादि वर्ग

जल—पानीय । सलिल । नीर । पानी । कीलाल । अम्बु । आप । वाः । वारि । तोय । पय । पाथ । उदक । जीवन । बन । अम्भ । अर्ण । अमृत । घनरस । मेघप्रसव । कमल । भुवन । कबन्ध । पुष्कर । सर्वतोमुख । सरिल । सल । जड़ । कं । अन्ध । कमन्ध । उद । दक । नार । शम्बर । अभ्रपुष्प । घृत । कृत्स्न । पर्य्य । यादोनिवास । जीवनीय । कुलीनस । कुलीन । पिप्पल । कुश । विष । काण्ड । सत्रर । सर । कृपीट । सदन । चन्द्रोरस । कबुर । व्योम । सम्ब । इरा । वाज । तामर । कम्बल । स्यन्दन । सम्बल । जलपीथ । क्षर । ऋत । ऊर्ज्ज । कोमल । सोम । छद्म । क्षोद । नभ । क । मधु । पुरीष । रेत । कश । जन्म । वृबूक । तुग्या । धरुण । सुरा । अरविन्दानि । जामि । रस । भेषज । ओज । सह । शव त्त्र । शुभ । रयि । सर्व । पूर्ण । क्षीर । गन । गो । सारंग । अधोगति ।

जलाशय—पनघट । जलस्थान जलाधार ।

समुद्र*—सागर । सिन्धु । जलधि । पारावार । अमृतोद्भव । सरस्वान् । अब्धि । अर्णव । उदधि । रत्नाकर । जलधाम । पयोधि । अकूपार । उदनवत ।

---

* (१) सप्तसिन्धु—१. क्षीरोद । २. लवणोद । ३. दध्युद । ४. घृतोद । ५. सुरोद । ६. ईक्षूद । ७. स्वादूद । (ये पौराणिक नाम हैं) । तथा, १. अन्ध महासागर । २. प्रशान्त महासागर । ३. हिन्द महासागर । ४. उत्तरीयध्रुव महासागर । ५. दक्षिणीध्रुव महासागर । ६. हिममहासागर । ७. भूमध्य सागर । (ये भौगोलिक नाम हैं) ।

(२) समुद्र से निकले हुए १४ रत्न—लक्ष्मी, कौस्तुभमणि, रम्भा-अप्सरा, सुरा, अमृत, पाञ्चजन्यशंख, ऐरावत हाथी, इन्द्र धनुष, धन्वतरि वैद्य, कामधेनु गौ, चन्द्रमा, कल्पवृक्ष, हलाहल विष और उच्चैश्रवा घोड़ा ।

नदीश। नीरनिधि। सरित्पति। वारीश। पयोधि। अनम्र। दधि।

समुद्र-मर्य्याद—अवधि सीम। मर्याद। बेला।

समुद्र-फेन—फेन। आप्य। आम्यय।

तरङ्ग—ऊर्मि। भङ्ग। बीचि। उल्लोल। कल्लोल। लहर। मौज। ढेह। हिलोर। हलफ। परिवाह। ऊर्मिका। विलास।

जल की गहराई—गम्भीर। गहिर। अतलस्पर्श। अथाह। निम्न। अगाध। गभीर। डाबर। नीचा।

पानी का चक्र—भँवर। चक्र। आवर्त्त। अम्भभ्रम। जलावर्त्त।

जल-विन्दु—पृषत। बिन्दु। बुन्द। अम्बुकण। शीकर। कण। फुही। फुहार। बूँद। सीकर। जलकण।

जलाशय का किनारा—तट। कूल। रोध। तीर। प्रतीर। पार। उपकंठ पुलिन। करार। किनारा। गो।

जलाशय के बीच का स्थल भाग—द्वीप। टापू। रेती। रेता।

नदी—सरिता। तरंगिणी। तटिनी। द्वीपवती। ह्रादिनी। शैवलिनी। रोधवक्ता। निर्झरणी। अपगा। अधगा। निम्नगा। आपगा। स्रोतस्वती। तलोदा। जलधिगा। स्रवन्ती। विरेका। जयमाला। श्रोती। स्रवती। आवर्त्तिनी। सरस्वती। सारंग। चतुष्क। धारावती। जम्बालिनी। लहरी। सरि। धुनि। ध्वनी। कूलंकषा।

तालाब—जलाशय। सरोवर। ह्रद। तड़ाग। कासार। सरसी। सर। पद्माकर। पल्वल। पुष्करण। सरस। सरक। सरस्वत। ताल। सत्र। सारंग। जलवान। पोखरा (पुष्कर)।

बावली—वापी। दीर्घिका। बौली।

झरना—स्रोत। सोता। अम्बुप्रस्रवण। सरण। निर्झर। झर। उत्स। वारिवाह। प्रपात। जलमाला।

पनाला—प्रणाली। पयस्। नारी। नाली। पनारी।

भँवर—चक्र। नाँद। जलभ्रमण।

नहर—कुल्या । अल्पा । कृत्रिमासरि ।

नदी-संगम—सभेद । सङ्गम । मिलन ।

नदी का फेन—माँजा (मञ्जा) । झाक । फेन । जलफेन ।

कीच—पंक । शाद । कर्दम । काँदो । निषद्वर । जम्बाल । जलकल्क । चुलुक । क्षेत्रजा । साद । दम । मृत्सा । कीचड़ । कीचा । गारा । चिकिल । द्राप ।

बाँध—अम्भसा । पूर ।

कुँआ—अन्धु । प्रहि । कूप । उदपान । निवान । निपान । इनार । इनारा (इन्दारा) ।

पानी निकालने की रस्सी—रज्जु । लेजुर । उबहन । उबहनी । उद्वाहिनी । रसरी । गुण । गोन ।

बालू—रेत । रेतना । बालुका । बारू । सिकता । रेणु । शिलाकण । सिक्ता । शीतला । सूक्ष्म शर्करा । प्रवाहोत्था । महाश्लक्ष्णा । सूक्ष्मा । प्रवाही । पानीयवर्णिका । बालिका ।

खाई—परिखा । खेय ।

पुल—सेतु । अलि ।

नौका—नाव । तरणि । तरनी । जलयान । जलपात्र । पठावनी । बेड़ा । तरी । उड़प । प्लव । कोल । डोंगी । भौली । पनसुय्या (छोटी नाव) । ना । नावर । वहित्र । तरिका । तरण्डी । तरण्ड । पादालिन्द । उत्प्लव । होड़ । घाघू । बार्व्वट । पोत । बन-वाहन । तरन्त । पतंग ।

जहाज—बोहित । पोत । अर्णव पोत ।

नाँव की डाँड—नौकादण्ड । क्षेपणी । क्षेपणिका । डाँड़ । डाँड़ा ।

पतवार—करिया । दरित्र । केनिपातक ।

पानी फेकने की कड़ाही—तसली । सेक । सेकपात्र । सेचन ।

केवट—मल्लाह । कर्णधार । नाविक । कैवर्त । तारक । खेवट । नौसाध्य-जन । माँझी । केवट । जालक । दाश । धीवर ।

नाव की उतराई—आतर। तरपण्य। द्रोणी। खेवा। महसूल। उतराई। खेवाई।

नाव खींचने वाली रस्सी—गुण। कूपक। गून। गोन। गोनियाँ।

वंसी—काँटा। वडिश। मत्स्यबेधन। मत्स्याघाती। मीनहा। कुम्भी।

मछली पकड़ने का जाल—जालानाय। पवित्रकी। शणभव। सूत्री। जार।

मछली꧁—मत्स्य। मच्छ। माछ। मच्छो। पृथुरोमा। शकुली। अण्डज। झख। वैसारिणी। मीन। तिमि। गण्डक। जलचर। जलजीवन। विसार। अण्डभव। मकर। मगरी। शष्कुली।

केंचुआ—महीलता। गण्डूपद। किञ्चुल।

गोह—निहाका। गोधिका। गोधी।

सुइँस—उलूपी। शिशुक।

केकड़ा—कर्कट। कर्कटक। कुलीर। कर्क।

कछुआ—कूर्म। कमठ। कच्छप। कच्छ।

घड़ियाल—ग्राह। अवहार। नक्र। जलकुञ्जर। कुम्भीर। क्रोड़। जल किराट। जलाटक।

जोंक—रक्तपा। जलूका। जलौरगी। तीक्ष्ण। वमनी। वेधनी। जलसर्पिणी। जलसूची। जलाटनी। जलाका। पटालुका। जलोका। जलौका।

मछली रखने का पात्र—मत्स्यधारिणी। डोलनी। डोली। कुवेणी।

सीपी (साधारण सुतुही)—जलशुक्ति। कृमिसू। कृमिसूक्ति। क्षुद्रशुक्तिका। शम्बूका। जलडिम्ब। पुटिका। नर शुक्ति।

सीपी (मोतीवाली)—मुक्ताप्रसू। महाशुक्ति। शुक्ति। शुक्तिका।

꧁ मछली की विशेष जातियाँ – पाठीन = पेना वा पहिना। सहस्र दंष्ट्रा उलूपी। शिशुक। चिलिमिल = चेल्हवा। नल। प्रोष्ठी। शफरी = सिबरी, सफरी। झींगा = झिंगवा। पोता। शकुलार्भक। रोहू। सौरा। राया। सौरी। देशभेद और जलभेद से अनेक आकार-प्रकार की मछलियों की अगणित जातियाँ हैं।

पीला कमल—पीत कमल । स्वर्णकमल ।

कुमुद—(चन्द्रविकासी)—कुँई । कोंई । कमोदिनी । कुमोदिनी । नलिनी । पद्मिनी । कैरव । कुवलय । गर्दभ । चन्द्रकान्त । कन्दोत । कच्छ । कुम । गन्धसोम । कह्लार । शीतलक । धवलोत्पल । सितोत्पल । इन्दुकमल । चन्द्रिकाम्बुज ।

कमल-दल—दल । किसलय । संवर्त्तिका ।

कमल दण्ड—नाल । मृणाल । बिस । मुराट । मृणालकन्द । बिसिनी । कोरक । तन्तुर । कोमल । मृणाली । मृणालिनी । तन्तुल । कोमलक ।

कमल की जड़—करहाट । शिफाकंद । पद्मकन्द । भिस्साण्ड । जलालूक । पक शूरण । शालु । गोपभद्र । कटाह्वय । शालूक ।

कमल-केशर—जीरा । केशर । किञ्जल्क । चाम्पेयक । आपीत । काञ्चन । किञ्ज । पीतपराग । तुङ्ग ।

कमल-रस—मकरन्द । मधु । रस ।

कमल-धूलि—पराग । रज । रेणु । पाँसु । धूलि । मधु । पद्मबीज । पद्माक्ष । गालोड्य । पद्मकर्कटी ।

कमल-बीज (कमलगट्टा)—कमलगट्टा । वराटक । बट्टा । गट्टा । कन्दला । भेण्डा । क्रौञ्चादनी । क्रौञ्चा । श्यामा ।

जलकुम्भी—वारिपर्णी । कुम्भिका । काई । खजी । जलकुम्भिनी । खमूलिका । आकाशमूलि । कुतृण । कुमुदा । जलवल्कल । श्वेतपर्णी । अश्वकुम्भी । पानीय-पृष्ठज । पर्णी । पृश्नी । दलाढक । वारिकर्णी । कुम्भी ।

सिंघाड़ा—शृंगाटक । जलफल । वारिकंटक । त्रिकोणफल । जलसूचि । शुक्लदुग्ध । शृंगाट । वारिकुब्जक । शृंगरुह । जलवल्ली । शृंगकंद । शृंगमूल । विषाणी । त्रिकोट । त्रिफ । संघाटिका ।

सेवार—शैवाल । सेवाल । सिवार । अरक । जलनीली । जलकुंतल । जलपृष्ठजा । जलशूक । जलफल्क । शैवल । जलज । शेपान । शेवाल । शेपाल । वारि चामर । सलिलकुण्डल । हठपर्णी । अम्बुताल । जलाञ्चन । जलकेश । कावार । शिवल ।

केशर (कुंकुम)—कश्मीरी । कुंकुम । देववल्लभा । पिशुन । रक्त । वर । अग्नि । वाल्हीक । पीतन । धीर । काश्मीरज । शोणिताह्वय । कुसुमात्मक । संकोच । पीतन । रक्तचंदन । पीतक । वस्त्र । रक्तसंज्ञ । संकोचपिशुन । हरिचंदन । खल । रज । दीपक । लोहित । सौरभ । चन्दन । अग्निशिख । असृक । शठ । शोणित । घुसृण । वरेण्य । कालेयक । जागुड । कान्त । गौर । अस्त्र । केसर । रुधिर ।

बेंत—छरी । विद्री । छरित्र । वंजुल । अभ्रपुष्प । विदुर । बेतस् । शीत । नादेय । नादेयी । बानीर । निकुञ्चक । परिव्याध । जलवेतस् । शाखालु । मेघपुष्प । तोयकाम । अभ्रपुष्पक । नदीकूलप्रिय । वीरप्रिय । सुशीतल । व्याधिघात ।

मूँगा—विद्रुम । द्रुमभव । प्रवाल । अङ्गारक मणि । रक्तकंदल । रक्ताकार । अम्भोधिवल्लभ । भौमरत्न । रक्ताङ्ग । लतामणि । रक्तकन्द ।

मोती—सीपिज । मुक्ता । गुलिक । मौक्तिक । शुक्तिज । जलज । शशिगोती । शशिप्रभ । सीपसुत । वन्दनवार । ददुर । शंख । गज । क्रोड़ । शौक्तिकेय । तारा । अम्भःसार । हिम । इन्दुरत्न । लक्ष्मी । हारी । कुबल । सौम्य । तार । भौतिक । मुक्तिका । विन्दुफल । शशिप्रिय । हैमवत । नक्षत्र । शौक्तेयक । शीतल । स्वच्छ । तौतिक । हिमबल । शुक्तिमणि । सुधांशुभ । सुधांशु रत्न । लक्ष । भूरुह । शौक्तिक ।

तालमखाना—(देखो 'वनौषधिवर्ग') ।

३. खनिज वर्ग

(रत्न–उपरत्नादि)

खान—खनि । कान । खानि । आकर । खर ।

हीरा*—हीरक । वज्र । दृक् । निष्कम्पा । निष्क । पदक । पट्ठ । गो । अशिर । षट्कोण । दृढ़गर्भक । हीर । दधीच्यस्थि । वज्रक । सूचीमुख । वरारक । रत्नमुख्य । अभेद्य । दृढ़ाङ्ग । चन्द्र । मणिवर ।

[नोट—'वज्र' के लिये जितने पर्य्याय हैं वे सब 'हीरा' के लिये भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।]

पन्ना—मरकत । गरुडाश्म । मरक्त । राजनील । गरुडांकित । रौहिणेय । सौपर्ण । गारुत्मत । गारुत्मक । हरितमणि । अश्मगर्भ । गरुडोद्गीर्ण । बुधरत्न । अश्मगर्भज । गरलारि । वाप्रबोल । गारुड़ । गरुड़ोत्तीर्ण ।

लहसुनियाँ—वैदूर्य । वैदूर्य्य । राष्ट्रक । केतुरत्न । मेघस्वराङ्कुर । बलवायज । बालसूर्य । बालसूर्यक । कैतव । प्रावृष्य । अभ्ररोह । शराब्दांकुर । विदूर रत्न । विदूरज । केतुग्रह-वल्लभ ।

गोमेद—पिङ्गस्फटिक । अगस्तिसत्व । तमोमणि । गोमेदक । पीतरत्न । बाहुरत्न । स्वर्भानव । राहुमणि ।

माणिक—पद्मराग । मणि । लाल । कुरुविन्द । लोहितक । माणिक्य । शोणरत्नक । रत्नराट् । रविरत्नक । शोणरत्न । तरणिरत्न । शृंगारी ।

---

* नवरत्न—"वज्रं विद्रुम-मौक्तिकं, मरकतं वैदूर्य-गोमेदकम् ।
माणिक्यं हरि-नील-पुष्प-दृषदौ रत्नानि नाम्ना नव ॥"
—(निघण्टु रत्नाकर)

१. हीरा, २. मूँगा, ३. मोती, ४. मरकत (पन्ना), ५. वैदूर्य (लहसुनियाँ) ६. गोमेद ७. माणिक, ८. नीलम, और ९. पुष्पराग (पोखराज), ये नवरत्न हैं ।

रंग माणिक्य। तरुण। रत्ननामक। रागयुक्। रत्न। शोणोपल। सौगन्धिक। कुरुबिल्व। लोहित। कुरुविन्दक। लक्ष्मीपुष्प। अरुणोपल। मानिक।

[नोट—माणिक के छोटे कण को चुन्नी कहते हैं]

नीलम—नीलमणि। असितरत्न। इन्द्रनील। नील। नीलक। मच्छोद्भव। शौरिरत्न। नीलाश्मा। नीलशौपल। तृणग्राही। महानील। सुनीलक। मसार। हरिनील।

पोखराज—पुष्पराग। जीवरत्न। पीतस्फटिक। गुरुरत्न। पीतमणि। वाचस्पतिवल्लभ। पुष्पराज। पीत। पीतरत्न।

सूर्यकान्त मणि—दीप्तोपल। सूर्यकान्त। ज्वलनाश्म। अग्निगर्भक। रविकान्त। अर्कोपल। तापन। तपनमणि। सूर्याश्मा। दहनोपम। सूर्यमणि। (आतशी शीशा)।

चन्द्रकान्त मणि—चन्द्रकान्त। सोममणि। सिताश्मा। प्रस्तरोपल। चान्द्र। चन्द्रमणि। चन्द्रोपल। इन्दुकान्त। चन्द्राश्मा। संप्लवोपल। शीताश्मा। चन्द्रिकाद्राव। शशिकान्त। अमृतोद्राव।

स्फटिक मणि—श्वेत रत्न। शैव। स्फटिक। निरतुषोप्ल। स्फाटिक। स्फाटक। स्फटिकात्मा। स्फाटीक। स्फाटिकोपल। स्फटिकोपल। भादुर। शालिपिष्ट। धौतशिल। सितोपल। विमलमणि। निर्मलोपल। स्वच्छमणि। अमररत्न। निस्तुषरत्न। शिवप्रिय। बिल्लौरी पत्थर। शूक।

फिरोजा—पेरोज। हरिताश्म। भस्माङ्ग। हरित।

काँच—काच। कृत्रिमरत्न। पिगाण। मुकुर। कंच। शीशा।

(धातु–उपधातु)

लोहा—सार। शस्त्र्। अश्मसार। मुण्डज। कृष्णायस्। आयस। लोहकान्तक। लौह। लोह। कान्तलोह। कासायस्। शस्त्रालय। शस्त्र। तीक्ष्ण। शम्बक। पिण्ड। पिण्डायस्। निशित। खड्ग। अयः। कान्त। चित्रायस्। लोष्ठ। चालज। पिण्डक। शस्त्रक। वर्त्तलौह। तीव्र। अयस्कान्त।

लोह-कीट—मण्डूर। सिहान। किट्ट। लोहकिट्ट। अयोमल।

लोहसिंहानिका । लोहज । लोहपुरीष । लोहमल । सितवन । सिंहास । सितवाण । शूलघातन । लौहमल । किट्ट । लोहचूर्ण । लोष्टसिंहल ।

ताँबा❀—ताम्र । तामा । पवित्र । रक्तधातु । ब्रह्मवर्चस् । भासुर । सर्वलोह । तपनेष्ट । अम्बक । अरविन्द । रविलोह । रविप्रिय । रक्त । नैपालिक । द्व्यष्ट । उदुम्बर । म्लेच्छमुख । सुल्प । वरिष्ट । कनीयस । ताम्रक । शुल्व । द्विष्ट । उडुम्बर । शुल्ल । रविसंज्ञक । अर्क । मुनिपित्तल । सूर्याङ्ग । लोहितायस् । लोहिताप ।

[नोट—ताँबे के कीट को 'तूतिया' कहते हैं । यह औषधि के काम में आता है । इसकी गणना उपविषों में है । 'तूतिया' के पर्यायवाची शब्द के लिये देखो 'विषोपविषवर्ग' ।]

चाँदी†—रजत । रौप्य । खर्जूर । रुक्म । जातरूप । शुभ्र । चन्द्रकान्ति । महाधन । वाष्कल । चन्द्रवपु । महावसु । कलधौत । लोहराजक । अकुप्य । गौब । विमल । चन्द्रलोहक । शुभ । वसुश्रेष्ठा । दुर्दीन । रूपा । रूपक । दुर्वर्णक । रूप्य । श्वेत । खर्चर । रुधिर । श्वेतक । महाशुभ्र । ततरूपक । तार । चन्द्रभूति । सित । कलधूत । रंगवीज । चन्द्रहास । इन्दुलोहक । राजरंग । दुर्वर्ण । धौत । कुप्य ।

पीतल—पित्तल । आरकूट । कपिलोह । सुवर्णक । रिरी । रीरा । रीति । पीतलोह । सुरोहक । ब्राह्मी । राज्ञी । कपिला । ब्रह्मरीति । महेश्वरी । पतिकाबेर । द्रव्यदारु । मिश्र । आर । राजरीति । क्षुद्रसुवर्ण । सिंहल । पिंगल । पीतनक । लोह । लोहितक । पिंगललोह । पीतक । पिंग । पाकदुंडी । राजपुत्री । ब्रह्माणी । हरिलोह । कांची पीतल । पीतधातु ।

[नोट—पीतल उपधातु है । यह ताँबा और जस्ते के योग से बनता है ।]

❀ कार्त्तिकेय के वीर्य से ताँबे की उत्पत्ति है । (पौराणिक)

† त्रिपुरासुर वध के समय महादेव जी के वामनेत्र से जो अश्रुपात हुआ उससे चाँदी की उत्पत्ति हुई । (पौराणिक)

काँसा—कांस्य। विद्युत्प्रिय। कंस। ताम्रार्द्ध। घोष। बंगशुल्वज। कंसास्थि। प्रकाश। घंटाशब्द। असुराह्वय। फूल। सौराष्ट्रक। कांसीय। घोरपुष्प। वह्निलौहक। दीप्तलोहक। घोरलोह। दीप्तलोह। कांसक। कांस। ताँम्रत्रपुज। दीप्ति। काँसी। कस्कुट। फूल।

[**नोट**—काँसा उपधातु है। यह ताँबा और राँगा के योग से बनता है।]

सोना*—स्वर्ण। सुवर्ण। सुबरन। सोन। हाटक। पुरट। कञ्चन। काञ्चन। कनक। हेम। हरि। हिरण्य। जातरूप। चामीकर। कार्तस्वर। शातकुंभ। तपनीय। महारजत। अर्जुन। कर्बुर। रुक्म। भर्म्म। अष्टापद। जाम्बूनद। गारुड़। गौर। चन्द्र। कुन्दन। कान्ति। सुर। सानसि। अमृत। अग्निशिख। द्राविड़। भूरिपिंजर। गांगेय। करहाटक। ऋक्थ। अकुप्य। पिञ्जान। आपिञ्जर। तेज। दीप्त। अग्निभ। मनोहर। अग्नि। भास्कर। शतखण्ड। उज्वल। कल्याण। अभ्रक। मुख्यधातु। सारुक। चाम्पेय। मरु। अग्निबीज। भद्र। गैरिक। लोहवर। ऊर्ध्व। रेकन। कर्चूर। लोहोत्तम। भूत्तम। दीप्तक। मङ्गल्य। सौमेरुक। भृङ्गार। जाम्बव। आग्नेय। निष्क। तपनीयक। चण्ड। अय। पेश। कृशन। मरुत। दत्र। चारु रत्न। पीतक। श्रीनिकेत। भूषणार्ह। सूर्यनामक।

जस्ता—जसद। बंगसदृश। रीतिहेतु। श्वेतपटल। कंसास्थि। जस्त।

राँगा—रंग। बंग। नक्रसंज्ञ। स्वर्णज। नागजीवन। मृद्वंग। गुरुपत्र। तमर। नागज। कस्तीर। आलीमक। सिंहल। स्वर्षेत। त्रपु। त्रपुष। आप्। हिम। मधुर। कुरूप्य। पिच्चट। पूतिगंध। राँग। कलई।

शीशा—सीस। सुवर्णक। चीन। पिष्ट। सिन्दूरकारण। सीसक। सीसपत्रक। नाग। वप्र। योगेष्ट। वर्द्ध। गंडूपदभव। स्वर्गारि। यवनेष्ट। चोर। वध्र। पिच्चट। सुवर्णारि। त्रपु। बध्रक। महाबल। यामुनेष्टक। बहुमल। श्वेतरंजन।

---

* सप्तर्षियों की अत्यन्त सुन्दरी पत्नियों को देखकर अग्निदेव का जो वीर्य पृथ्वी पर गिरा वह 'स्वर्ण' नाम से विख्यात हुआ।

जड़ । भुजंगम । उरग । कुरंग । परिपिष्टक । मृदुकृष्णायस । पद्म । तारशुद्धिकर । शिरावृत्त । वयोरंग । चीनपिष्ट । चीनरंग । लेख्य । धातुमल । पार्वत ।

पारा*—पारद । रस । रसराज । रसधातु । रसेन्द्र । महारस । चपल । शिववीर्य । सूत । शिवाह्वय । महातेज । रसलेह । रसोत्तम । सूतराट् । जैत्र । शिवबीज । शिव । अमृत । लोकेश । दुर्द्धर । प्रभु । रुद्रज । हरतेज । अचिन्तज । अविन्तज । खेचर । अमर । देहद । मृत्युनाशक । स्कन्द । स्कान्दांशक । देव । दिव्य रस । रसायन श्रेष्ठ । यशोद् । सूतक । सिद्धधातु । रजस्वल । मूर्त्ति । पार । लोहेश । हेमनिधि । त्रिनेत्र । रोपण । स्वामी ।

गन्धक†—गौरी बीज । बलि । गन्धपाषाण । गन्धिक । गन्धाश्म । वामाघ्न । सौगन्धिक । सुगन्धिक । पामारि । गंधी । शुल्वारि । गन्धमोदन । वर । पूतिगन्ध । गंध । दिव्यगन्ध । सगन्ध । रस गन्धक । कुष्ठारि । क्रूरगन्ध । कीटघ्न । शरभूमिज । बलरस । गन्धमोहन । अतिगंध । पामागंध ।

संगजराहत—कम्बुजीर । श्लक्ष्णजीर । श्लक्ष्णभृत् । शंखजीरक ।

अभ्रक‡—अबरक । तबक । गिरिजाबीज । निर्मल । अब्द । गिरिजामल ।

---

* पृथ्वी पर महादेवजी का वीर्य गिरा वही संसार में 'पारद' नाम से विख्यात हुआ । यह परमौषधि है । निघण्टुरत्नाकर में लिखा है कि 'रसात् वरतरं लिंगं न भूतो न भविष्यति' अर्थात् पारे के समान श्रेष्ठ गुण वाला पदार्थ न हुआ है और न होगा ।

† गन्धक चार प्रकार का होता है, यथा—सफेद, लाल, पीला और नीला । सफेद गंधक व्रण आदि के काम में, लाल गंधक सुवर्ण शुद्ध करने में, पीला पारदादि रसायन कर्म में तथा नीला गंधक सर्व श्रेष्ठ और दुर्लभ है ।

‡ अभ्रक चार प्रकार का होता है, यथा—पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र । पिनाकाभ्रक खाने से महाकुष्ठ रोग, दर्दुर अभ्रक खाने से मृत्यु, नाग अभ्रक खाने से भगन्दर रोग होता है, तथा वज्राभ्रक के सेवन से सर्वरोग नाश, तरुणता, आयुष्य, बल, महावीर्य, और अत्यन्त पराक्रमी पुत्र की प्राप्ति होती है । वैद्यक मत से वज्र नामक अभ्रक सर्वोत्तम माना गया है ।

व्योम । घन । शुभ । बाहु पत्र । घनाह्वक । गिरिज । अमल । गौर्य्यमिल । गरुडध्वज । अभ्र । भृङ्ग । अम्बर । अन्तरिक्ष । ख । अनन्त । गगन । गौरीज । गौरीजेय । आभ । अबरख । भोडर । भोडल । भुरवल ।

[**नोट**—आकाश शब्द के जितने पर्य्याय हैं उनसे भी अभ्रक का अर्थ निकलता है ।]

मुरदासंग— स्वर्णवर्णक । ब्रणघ्न । नागसत्व । वोदार । मुरदाशिंग । वोदारशृंग । बेदारशृंगज ।

[वोंदार नामक शृंग पर मुरदासंग उत्पन्न होता है । यह बहुत भारी और चमकीले पीले रंग का होता है, व्रण आदि के काम में आता है]

रूपामाखी—तारमाक्षिक । माक्षिकश्रेष्ठ । विमल । श्वेताह्व । रूपामाक्षि । रौप्यमाक्षिक । तारामुखी । धातुमाक्षिक ।

[सफेद चमकदार को रूपामाखी और पीले चमकदार को सोनामाखी कहते हैं ।]

सोनामाखी—माक्षिक । धातुमाक्षिक । ताप । स्वर्णाह्वय । स्वर्णमाक्षिक । सुवर्णमाक्षिक । तापिच्छ । आपीत । ताप्यक । पीतमाक्षिक । आवर्त्त । क्षौद्रधातु । माक्षिकधातु । कदम्ब । चक्रनामा । तापिंज । स्वर्णवर्ण । हेमच्युत । मधुधातु । अजनामक ।

खपरिया—चक्षुष्य । अमृतोत्पन्न । खर्परी । दार्विका । खर्पर । रसक । खार्परिका । तुत्थ्य । खर्परी तुत्थ्य । खर्परी तुत्थक । यशदोपधातु । खापरिया । खापर ।

कौसीस*—कासीस । धातुकासीस । खाचर । शोधन । धातुशेखर ।

---

*कौसीस दो प्रकार की होती है—१. 'धातुकासीस' जो भस्म के समान अम्ल मृत्तिका होती है, जो प्रायः सफेद या फिरोजी रंग की होती है । २. "पुष्पकासीस' जो पीली होती है ।

पांसुकासीस । केसर । हंसलोमस । शुभ्र । नेत्रौषध । पुष्पकासीस । वत्सक । मलीमस । ह्रस्व । विशद । नीलमृत्तिका । हीराकस ।

गेरू (साधारण)—गिरिमृत । गैरिक । रक्तधातु । लोहितमृत्तिका । गिरिधातु । गवेधुक । धातु । गिरिमृद्भव । वनालक्त । गवेरुक । प्रत्यश्म । गिरिज । गैरेय । ताम्रधातु ।

स्वर्ग गैरिक (गेरू)—सुवर्ण गैरिक । स्वर्णधातु । सुरक्त । शिलाधातु । सन्ध्याभ्र । बभ्रुधातु । सुरक्तक ।

हिरौंजी—पाषाण गैरिक । कठिन । ताम्र वर्णक । पीत गैरिक । सोनगेरू ।

खड़िया (सेल खड़ी)—पाकशुक्ला । शिलाधातु । खटि । कठिनी । खड़ी । खटी । खटिनी । खटिका । धवल मृत्तिका । श्वेलधातु । पाण्डुमृत्तिका । खितधातु । पाण्डुमृ । कक्खटी । वर्णरेखा । वर्णलेखा । मृत्किकानख । अनीलाधातु । वर्णलेखिका । शुक्लधातु । धातुपल । कठिनिका । लेखनी । मकल्ल । खरियामाटो । गौरखड़ी । चाखड़ी । दुधिया ।

मैनसिल—मनः शिला । गोला । मनोज्ञा । नागजिह्विका । मनोगुप्ता । रोगशिला । नैपाली । कुनटी । शिला । मनःशिल । मनोह्वा । नेपालिका । मनसिल । कल्याणिका । नागमाता । रसनेत्रिका । दिव्यौषधि । कुलटी ।

सुरमा*(स्रोतोंजन)—नदीज । वाल्मीक । स्रोतज । जयामल । स्रोतोद्भव । स्रोतोभव । सौवीर । सौवीरसार । कपोतांज । यामुन । पीतसारि । वारिभव । कपोतसार । वाल्मीकशीर्ष ।

सुरमा (सौवीराञ्जन)—सौवीरक । पार्वतेय । नेत्रक । नीलांजन । कृष्ण । नादेय । स्रोतोज । दुष्प्रद । सुवीरज । चक्षुष्य । वारिसम्भव । कपोतक । अंजन । (श्वेतसुरमा । कालासुरमा ।)

---

* सुरमा तीन प्रकार का होता है । १. स्रोतोंजन, २. सौवीराञ्जन और ३. पुष्पाञ्जन ।

स्रोतोंजन देखने में नीला, चमकदार, परन्तु घिसने में गेरू की भाँति लाल होता है ।

सुरमा (पुष्पाञ्जन) – कौसुम्भ। रीतिक। कुसुमाञ्जन। रीतिपुष्प। पुष्पकेतु। पौष्पक। सदञ्जन। रीतिकुसुम। माक्षिक। चाक्षुष्य। कुमिरसाञ्जन। धातु माक्षिक।

हिंगुल* (ईंगुर)—हंसपाद। रसस्थान। हिंगुल। रक्तपारद। हिंगुलि। हिंगुलु। रक्त। मर्कटशीर्ष। दरद। रस। उरु। उन्द। कपिशीर्षक। बर्बर। सुरंग। सुनर। रञ्जन। म्लेच्छ। चित्राङ्ग। चूर्णपारद। चर्म्मारिक। रंजक। रसोद्भव। रसगर्भ। मनोहर। चर्म्मार। नानाशृंगार वर्द्धन। सिंगरफ। सिंगरिफ। ईंगुर। इंगुर। हींगलू। शुकतुण्डक।

सिंदूर—सींदुर। सेंदुर। नागज। वीर। रक्त। शिव। सन्ध्यारुण। रक्तबालका। रंगज। बंगज। शृंगारभूषण। अरुण। नाग रक्त। नाग सम्भव। रक्तचूर्ण। रक्तबालुक। रक्तशासन। भालदर्शन। नागरेणु। सीमन्तक। नागगर्भ। शोण। वीररज। गणेशभूषण। सन्ध्याराग। शृंगारक। सौभाग्य। मंगल्य। सीसज। सीसोपधातु। अरुण पराग। सौभाग्य चिह्न। सोहाग।

शिलाजीत† – शिलाजतु। अद्रिजतु। शैलनिर्यास। गैरेय। अश्मज।

---

* हिंगुल तीन प्रकार का होता है। (१) चर्म्मार-सफेद रंग का। (२) शुकतुण्डक–पीले रंग का, तथा (३) हंसपाद–लाल रंग का होता है। यही शृंगार के काम में आता है, जो ईंगुर नाम से विख्यात है। चीन देश का ईंगुर बहुत उत्तम और चमकदार होता है।

† उष्ण काल में सूर्य की किरणों से तप्त होकर पर्वत धातुओं के सार को गोंद की भाँति छोड़ते हैं, उसी सार को शिलाजतु वा शिलाजीत कहते हैं। यह धातुभेद से चार प्रकार का होता है। १. सौवर्ण, २. रजत, ३. ताम्र, और ४. आयस।

'सौवर्ण शिलाजीत' सुवर्ण की खान का सार है, यह लाल रंग का होता है।

'रजत शिलाजीत' चाँदी की खान का सार है, यह पाण्डु (पीले) रंग का होता है।

गिरिज। शैलधातुज। अर्थ्य। शिलाज। शैल। अगज। शैलेय। शीनपुष्पक। शिलाव्याधि। अश्मोत्थ। अश्मलाक्षा। अश्मजतुक। जत्वश्मक।

फिटकिरी—स्फटी। स्फटिका। श्वेता। शुभ्रा। रंगदा। दृढ़रंगा। रंगदृढ़ा। दृढ़ा। रंगा। स्फटिकारि। स्फटिकारिका। रंगाङ्गा। सुरंगा। गतरंगा। फटकिरी।

चुम्बक—चुम्बक पत्थर। कान्तपाषाण। अयस्कान्त। लौहकर्षक।

गोपी चन्दन—आढ़की। सौराष्ट्री। तुवरी। पर्पटी। कालिका। सती। सुजाता। काक्षी। पार्वती। मसी। मृत्सालका। मृत्। मृत्स्ना। आसङ्ग। सुराष्ट्रजा। मृत्तालक। काली। मृत्तिका। कंगोद्भवा। सुरमृत्तिका। तुल्या। सौराष्ट्रा। सोरठ की मिट्टी।

बोल* **(बोर)**—गन्धरस। पिंड। निर्लोह। बर्बररस। पौर। सुगन्ध। नालक। रसगन्ध। रस। सौरभ। बर्बर। रक्तापह। मुण्ट। सुरस। **पिण्डक।** विष। महागन्ध। विश्व। शुभगन्धक। विश्वगन्ध। व्रणारि। प्राण। गोप। गोस। पिण्डगोस। शश। गोसशश। गन्धार। मनिनर्द्धन। शोणज। गोपरस। गोपक। पिण्डल। गोल। बीजाबोल। हीराबोल।

'ताम्र शिलाजीत' तांबे की खान का सार है, वह मोर की गर्दन के रंग का होता है।

'आयस शिलाजीत' लोहे की खान का सार है, यह काले रंग का होता है। यही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यह मत "भाव प्रकाश" का है।

शुद्ध शिलाजीत की यही उत्तम पहचान है कि वह अग्नि में डालने से लिंगाकार खड़ा हो जाता है और उसमें से धुँआ नहीं निकलता।

—(निघण्टु रत्नाकर)

* यह लाल रंग का कडुआ पदार्थ गोंद के प्रकार का होता है। प्रसूता स्त्रियों को खिलाया जाता है। इसके खाने से गर्भाशय तथा योनि दोष दूर हो जाते हैं।

४. क्षारादिवर्ग

जवाखार—पाक्य । क्षार । यावशूक । यवक्षार । यवाग्रज । यवलास । यवशूक । सारक । रेचक । यवनालक । तिर्य्य । तीक्ष्णरस । यवज । यवशूकज । यवाह्व । यवापत्य ।

सज्जीखार—स्वर्जिकाक्षार । कपोत । स्वर्जिका । स्वर्जि । शूलघ्नि । सुखवर्चक । सौवर्चल । रुचक । सृज्जिकाक्षार । सर्जिका । क्षार । सज्जी । सुवर्चिक । सुघ्नी । योगवाही । स्वर्जका । सुवर्चक । सुघ्निका । सर्जि । सर्जिक्षार । सुखोर्जिक । सुवर्जिक । सुवर्चि । सुवर्ची ।

सुहागा—टङ्क । लोहद्रावी । सुभग । धातुवल्लभ । पाचनक । मालती । तीरज । लोहश्लेषण । रसशोधन । द्रावक । रसाधिक । रसघ्न । वर्त्तुल । कनक क्षार । मलिन । टंकण । रङ्गद । स्वर्णपाचक । टङ्ग । धातुसन्धिकर । सौभाग्य । श्वेतटंकण । टकणक्षार ।

सेंधा नोंन—सैन्धव । सिन्धूद्भव । माणिमन्थ । नादेय । लवणोत्तम । सितशिव । सिन्धूज । सिन्धुपल । वशिर । सिन्धुदेशज । माणिबन्ध । सिन्धुमन्थज । सिन्धुलवण । सिन्धूभव । शिव । सिद्ध । शिवात्मज । पथ्य । शुद्ध । सेंधा नमक ।

साँभर नोंन—शाकम्भरीय । वसुक । रौमलवण । रौमक । गड़ाख्य । गड़लवण । शुभ्र । पृथ्वीज । गड़देशज । गडोत्थ । महारम्भ । साम्भर । सम्बरोद्भव । सामर ।

समुद्री नोंन—सामुद्रिक । त्रिकूट । वशिर । लवणाब्धिज । वासर । कडक सागरज । शिव । सामुद्रज । समुद्रनोंन । पाँगा ।

संचर नोंन (कटीला नोंन)—विड । विडलवण । धूर्त । कृतक । विडगंध । काललवण । द्राविडक । खण्ड । क्षार । आसुर । सुपाक्य । खण्डलवण । कृत्रिमक । पाक्य । विट । बिरिया । साँचर नोंन । कटीला नोंन ।

गिरिज । शैलधातुज । अश्र्य । शिलाज । शैल । अगज । शैलेय । शीतपुष्पक । शिलाव्याधि । अश्मोत्थ । अश्मलाक्षा । अश्मजतुक । जत्वश्मक ।

फिटकिरी –स्फटी । स्फटिका । श्वेता । शुभ्रा । रंगदा । दृढ़रंगा । रंग-दृढ़ा । दृढ़ा । रंगा । स्फटिकारि । स्फटिकारिका । रंगाङ्गा । सुरंगा । गतरंगा । फटकिरी ।

चुम्बक—चुम्बक पत्थर । कान्तपाषाण । अयस्कान्त । लौहकर्षक ।

गोपी चन्दन—आढ़की । सौराष्ट्री । तुवरी । पर्पटी । कालिका । गती । सुजाता । काक्षी । पार्वती । मसी । मृदाह्वया । मृत् । मृत्स्ना । आसङ्ग । सुराष्ट्रजा । मृत्तालक । काली । मृत्तिका । कंगोद्भवा । सुरमृत्तिका । स्तुत्या । सौराष्ट्रा । सोरठ की मिट्टी ।

बोल* **(बोर)**—गन्धरस । पिंड । निर्लोह । बर्बररस । पौर । सुगन्ध । नालक । रसगन्ध । रस । सौरभ । बर्बर । रक्तापह । मुण्ड । सुरस । **पिण्डक** । विष । महागन्ध । विरव । शुभगन्धक । विश्वगन्ध । व्रणारि । प्राण । गोप । गोस । पिण्डगोस । शश । गोसशश । गन्धार । मसिवर्द्धन । बोलज । गोपरस । गोपक । पिण्डल । गोल । बीजाबोल । हीराबोल ।

'ताम्र शिलाजीत' ताँबे की खान का सार है, वह मोर की गर्दन के रंग का होता है।

'आयस शिलाजीत' लोहे की खान का सार है, यह काले रंग का होता है। यही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यह मत "भाव प्रकाश" का है।

शुद्ध शिलाजीत की यही उत्तम पहचान है कि वह अग्नि में डालने से लिंगाकार खड़ा हो जाता है और उसमें से धुँआ नहीं निकलता।

– (निघण्टु रत्नाकर)

* यह लाल रंग का कडुआ पदार्थ गोंद के प्रकार का होता है। प्रसूता स्त्रियों को खिलाया जाता है। इसके खाने से गर्भाशय तथा योनि दोष दूर हो जाते हैं।

४. क्षारादिवर्ग

जवाखार—पाक्य । क्षार । यावशूक । यवक्षार । यवाग्रज । यवलास । यवशूक । सारक । रेचक । यवनालक । तिर्य्य । तीक्ष्णरस । यवज । यवशूकज । यवाह्व । यवापत्य ।

सज्जीखार—स्वर्जिकाक्षार । कपोत । स्वर्जिका । स्वर्जि । शूलघ्नि । सुखवर्चक । सौवर्चल । रुचक । सुर्जिकाक्षार । सर्जिका । क्षार । सज्जी । सुनर्चिक । सुघ्नी । योगवाही । स्वर्जका । सुवर्चक । सुघ्निका । सर्जि । सर्जिक्षार । सुखोर्जिक । सुवर्जिक । सुवर्चि । सुवर्ची ।

सुहागा—टङ्क । लोहद्रावी । सुभग । धातुवल्लभ । पाचनक । मालती । तीरज । लोहश्लेषण । रसशोधन । द्रावक । रसाधिक । रसघ्न । वर्त्तुल । कनकक्षार । मलिन । टंकण । रङ्गद । स्वर्णपाचक । टङ्ग । धातुसन्धिकर । सौभाग्य । श्वेतटंकण । टंकणक्षार ।

सेंधा नोन—सैन्धव । सिन्धूद्भव । माणिमन्थ । नादेय । लवणोत्तम । सितशिव । सिन्धूज । सिन्धुपल । वशिर । सिन्धुदेशज । माणिबन्ध । सिन्धुमन्थज । सिन्धुलवण । सिन्धूभव । शिव । सिद्ध । शिवात्मज । पथ्य । शुद्ध । सेंधा नमक ।

साँभर नोन—शाकम्भरीय । वसुक । रौमलवण । रौमक । गड़ाख्य । गड़लवण । शुभ्र । पृथ्वीज । गड़देशज । गडोत्थ । महारम्भ । साम्भर । सम्बरोद्भव । साभर ।

समुद्री नोन—सामुद्रिक । त्रिकूट । वशिर । लवणाब्धिज । वासर । कडक सागरज । शिव । सामुद्रज । समुद्रनोन । पाँगा ।

संचर नोन (कटीला नोन)—विड । विडलवण । धूर्त । कृतक । विडगंध । काललवण । द्राविडक । खण्ड । क्षार । आसुर । सुपाक्य । खण्डलवण । कृत्रिमक । पाक्य । विट । बिरिया । साँचर नोन । कटीला नोन ।

काला नोंन—अक्ष। सौवर्चल। रुच्य। दुर्गन्ध। रुचक। शूलनाशन। कृष्णलवण। तिलक। हृद्यगन्ध। कोद्रविक। पाक्य। मेचक। चौहार कोड़ा। सोचर नोंन।

काँचिया नोंन—त्रिकूट। पाक्याह्व। लवण। नील। काचसंभव। काच-लवण। काचोद्भव। काचसौवर्चल। नीलक। पाकजका चेत्थ। हयगन्ध। काललवण। कुरुविन्द। काचगल। कृत्रिम। नीलकाचोद्भव।

खारी नोंन—औषरक। सार्वगुण। सार्वसंसर्गलवण। ऊषरज। साम्भार। बहुलगुण। मिश्रक। ऊषरलवण। खारी। खारी नूँन।

नौसादर—नरसार। क्षारश्रेष्ठ। अमृतक्षार। सादर। चूलिकालवण। बज्रक्षार। विदारन। बजरखार।

शोरा—सूर्यक्षार। अर्कक्षार। तार्क्ष्य। तीक्ष्णरस। सोरा। सुवर्चिका। सार्वसहा। औरिण। शिलाजतु। सूरखार। वाजी। सूर्यखार।

५. वनादि वर्ग

वन—अटवि। अरण्य। विपिन। कानन। कान्तार। जंगल। कुपथ। दुर्गमपथ। काटिका। कक्ष्यक। कुन्दिलवार्क्ष। वनी। गहन। घन। कृच्छ्र। दुर्गम। अटवी।

महावन—महारण्य। अरण्यानी। महाटवी। तृणाटवी।

उपवन—कृत्रिमवन। चित्रविपिन। आक्रीड़। उद्यान। बाग। बगीचा। बाटिका। निष्कुट। आराम। पुष्पोद्यान। पुष्पवाटिका। फुलवारी। कृतारण्य।

पौधा—क्षुप। ह्रस्वशाखा। शिफ। लघुवृक्ष। पेड़। क्षुद्रवृक्ष।

वृक्ष—विपट। पादप। अगम। द्रु। द्रुम। कुट। तरु। शाल। शाखी। महीरुह। अनोकह। पलाशी। सुखआल। पत्री। दली। छदी। फली। इकपद। बर्हि। मधु। अनुंत। नग। भूरुह। अद्रि। अग। कुज। विनद। पटल। द्विप। बिरवा। पर्णी। अगछ। अंघ्रिप। पेड़।

लताबौर—बल्ली। वल्लरी। वीरुथ। व्रतति। लता। गुल्मनी। उलप। प्रतान। बवंर।

बीज—बीज। बीया। दाना। बीजा।

जड़—मूल। शिफा। अंघि। पाल। जटा।

अंकुर—अँकुआ। अँखुआ। नवोद्भिद। प्ररोह। गाभ। अँगुसा। डाभ। कल्ला। कनखा। कोपल। आँख। प्रवाल।

मंजरी—बाल। बाली। पुष्पिल।

कली—मुकुलितपुष्प। कलिका। जालक। कोरक। मुकुल। अस्फुटित पुष्प।

फूल—पुष्प। पुहुप। सारंग। कुसुम। प्रसून। सुमन। सुम। समद। फलपिता। मञ्जरी। सुमनस्। सून। प्रसव। मणीचक।

फूल का गुच्छा—गुच्छ। गुच्छा। गुच्छक। स्तबक। गुलुच्छ।

पुष्प रस—मकरन्द । मधु । पुष्पद्रव । पुष्पसार । पुष्पस्वेद । पुष्पज । पुष्पनिर्यासक । पुष्पाम्बुज ।

पुष्प-रज—रेणु । रज । पराग । धूलि ।

पत्र—पत्ता । पत्ती । पर्ण । दल । छद । छदन । पल्लव । किसलय । पात । विसल । वर्ह । पलास । विटपाभरण । पान । पतत्र ।

शाखा—डाली । साखा । स्कन्ध । काण्ड ।

टहनी—वृन्त । प्रशाखा ।

काँटा—काँट । कंटक । पँखुरी ।

छाल—वल्कल । बकला । छिलका । छल्ली । त्वक् । त्वचा । ओलक । चोच । वल्क ।

बरोह—जटा । शिफा ।

गोंद—सार । मज्जा । लश । खपुर ।

फलयुक्त वृक्ष—सफल । फली । फलवान । फलिन । फलित वृक्ष ।

फलहीन वृक्ष—अफल । वन्ध्य । अवकेशी ।

फूला हुआ वृक्ष—प्रफुल्ल । उत्फुल्ल । संफुल्ल । विचक । व्याकोष्ठ । फुल्ल । स्फुट । विकसित । प्रबुद्ध । जृम्भ । स्मित । उन्मिषित । दलित । स्फुटित । उच्छ्वसित । विजृम्भित । विनिद्र । स्मेर । उन्निद्र । विमुद्र । हसित । कुसुमित । पुष्पित । व्याकोश ।

कोटर—निष्कुह । निष्कुट ।

काठ—दारु । काष्ठ । शंकु । स्थाणु ।

थाला—आलवाल । थावँल । थाल ।

६. विषोपविष वर्ग

[वैद्यक मत से विष दो प्रकार का होता है। एक स्थावर जो खान से अथवा किसी वृक्षादि के मूल–पत्र–फल–फूल–छाल–गोंद आदि से, वा किसी धातु से उत्पन्न हो; दूसरा जंगम विष है, जो साँप, कीट, नेवला, जोंक, मकड़ी, बिच्छी, मछली, चूहा, कुत्ता, सिंह, व्याघ्र, तेदुँआ, भेड़िया, शृगाल, आदि जंतुओं के दाँत, मुँह, नख आदि में होता है। बच्छनाग और संखिया की गणना विष में है और शेष उपविष श्रेणी में हैं।]

विष—क्ष्वेड। गरल। आहेय। अमृत। गरद। कालकूट। कलाकूल। हारिद्र। रक्तशृङ्गिक। मील। गर। घोर। हालाहल। हलाहल। शृङ्गी। भूगर। जाङ्गल। तीक्ष्ण। रस। जङ्गुल। जाङ्गल। काकोल। प्रदीपन। शौल्किकेय। ब्रह्मपुत्र। नाशक। अन्तक। महाकाल।

संखिया—मल्ल। शतमल्ल। गौरी पाषाण। आखु पाषाण। लोह शंकरकारक। सोमलखार। सोमल। शंखिया।

[संखिया खनिज विष है। शोधी हुई संखिया औषधि के काम आती है, परन्तु अशुद्ध संखिया अनेक प्रकार की व्याधियों एवं मृत्यु का कारण होती है।]

बच्छनाग—काकोल। गरल। क्ष्वेड। विष। दारद। सौराष्ट्रिक। शौल्ककेय। ब्रह्मपुत्र। प्रदीपन। नील। आहेय। गरद। कालकूट. कसाकूल। हारिद्र। रक्त। शृङ्गिक। हालाहल। हलाहल। गर। घोर। भुगर। शृङ्गी। जांगल। जांगुल। जंगुल। वत्सनाभ। तीक्ष्ण। रसायन। प्राणहर। जीवनाघात। किषल। जीवनान्तक। बचनाग। माहुर।

सेहुँड़—शूहर। स्नुही। समन्त दुग्धा। नागद्रु। महावृक्ष। बहु दुग्धिका। सुधा। वज्रा। शीहुण्डा। दण्डवृक्षक। सिहुण्ड। स्नुषा। स्नुहा। वज्र। वज्रद्रु। वज्रकण्टक। गुड़। गुड़ा। गुड़ी। गुला। यहु शाल। कृष्णसार। निस्त्रिंशपत्रिका। नेत्रारि। शाखाकण्ठ। सिंहतुण्ड। काण्डशाख। काण्डरोहक।

मदार (आक)—क्षीरदल । शुकफल । तूलफल । अर्क । अकौआ । सदासुम । प्रताप । क्षीरकाण्डक । विक्षीर । भास्कर । हरिदख । विवस्वान । अहर्मणि । अहबन्धिक । अर्यमा । अहर्पति । उष्णरश्मि । भानु । विकर्तन । गणरूप । मंदार । प्रभाकर । विभाकर । दिवाकर । सूनु । आस्फोत । बसुक । हिमराति । पुच्छी । क्षीरी । खर्जूघ्न । शीतपुष्पक । जम्भल । क्षीरपर्णी । विकीरण । सदापुष्प । सूर्याह्व । क्षीराङ्ग । आक ।

करियारी—कलिकारी । लाङ्गलिकी । दीप्ता । गर्भघातिनी । अग्निजिह्वा वह्निशिखा । वह्निवक्त्रा । लांगुली । हलिनी । विशल्या । गर्भपातिनी । अग्निमुखी । नक्ता । हली । इन्द्रपुष्पिका । विद्युज्ज्वाला । व्रणहृत् । पुष्पसौरभ । स्वर्णपुष्पा । इन्दुपुष्पिका । शक्रपुष्पी । अनंता । गर्भनुत । कलियारी । कलिहारी ।

कनेर*—करवीर । श्वेतपुष्प । शतकुंभ । अश्वमारक । प्रतिहास । शतप्रास । चण्डात । अश्वघ्न । हयघ्न । शीतकुंभ । तुरङ्गारि । रंगारि । शातकुम्भ । प्रचण्ड । वीर । शतकुन्द । कुन्द । अश्वरोधक । शंकुद्र । श्वेतपुष्पक । नरवराह्व । स्थलकुमुद । दिव्यपुष्प । गौरीपुष्प । सिद्धपुष्प ।

धतूरा—धत्तूर । धस्तूर । मदन । उन्मत्त । कितव । कनकाह्वय । शठ । देविका । महामोही । शिवप्रिय । खरदूषण । धूर्त्त । मातुल । पुरीमोह । धूर्त्तकृत । घण्टिक । मातुलक । श्याम । शिवशेखर । खर्जूघ्न । खल । कण्टफल । मोहन । कलम । मत्त । शैव । तूरी । धुस्तुर । देवता । मदनक । हरवल्लभ । मदकर । घटापुष्प ।

गुञ्जा (घुमची)—रक्तिका । गुञ्जिका । काकजंघा । शिखण्डिनी । कृष्णाला । काकिनी । कच्चा । कनीचि । काकणन्तिका । काकचिंची । शांगुष्ठा । काकादनी । अरुणा । ताम्रिका । शीतपाकी । उच्चय । कृष्णचूड़िका । रक्ता । काम्बोजी । भीलभूषणा । वन्या । श्यामलचूड़ा । वक्रशल्या । ध्वांक्षनखा । दुर्मोच्या । वायसादनी । चटकी । तुलावीजा । अंगार । वल्लरी । घुमची । घुंची ।

---

* पुष्पभेद से कनेर पाँच प्रकार की होती है । सफेद, लाल, गुलाबी, पीली और काली । इसको खाने से घोड़े मर जाते हैं ।

गुञ्जा—(सफेद)—श्वेतगुंजा । श्वेतकाम्बोजी । भिरिण्टिका । चक्रशल्या । चूड़ाला । चौटली । चिरमिटी । सफेद घुमची ।

जमालगोटा—जयपाल । सारक । रेचक । तिन्तिडी फल । दन्तीवीज । मलद्रावी । वीजरेचक । कुम्भिनी वीज । घंटावीज । शोधनी वीज । चक्रदन्ती वीज ।

कुचिला—कारस्कर । किम्पाक । विषतिन्दु । विषद्रुम । गरद्रुम । रम्यफल । कुपाक । कालकूट । कुपीलु । मर्कट तिन्दु । कच्चीर । वर्त्तुल । चिपिट । तिंदुक । दीर्घ पत्रक । जलज । कुलक । कालपीलुक । काकेन्दु ।

हरिताल*—पिञ्जर । पित्तल । ताल । मनोज्ञ । हरितालक । छत्राङ्ग । काञ्चन रस । गोदन्त । नट मण्डन विस्रगन्धि । पीतक । हरिताल । कबूर । पीतन । हरिवीज । सिद्धधातु । पिञ्जल । लोमहृत् । वंशपत्रक । वर्णक । नटभूषण । अल । पीत । गोरोच । चित्राङ्ग । पिञ्जरक । वैदल । तालक । कनकरस । काञ्चनक । विड़ालक । चित्रगन्ध । पिङ्ग । पिङ्गसार । गौरी ललित ।

[पुराणों के मतानुसार विष्णु के वीर्य से हरिताल, लक्ष्मी के रज से मैनसिल, शिव के वीर्य से पारा और पार्वती के रज से गन्धक की उत्पत्ति मानी गई है ।]

तूतिया—मूषा तुत्थ । कांस्यनील । तुत्थक । शिखिकंटक । तुत्थ । हरिताश्म । नीलांगज । मयूर ग्रीवक । ताम्रगर्भ । अमृतोद्भव । मयूर तुत्थ्य । भृतक । शिखिकण्ठ । नील । तुत्थाञ्जन । वितुन्नक । शिखिग्रीव । मयूरक । हेमसार । मृताभिद । ताम्रोपधातु । नीला थोथा । थोथा ।

अफीम†—अहिफेन । अफेन । निफेन । खसखस रस । खसफलक्षीर । आफूक । नागफेन । पोस्तोद्भव । पोस्तरस । भुजंगफेन । आफू । अफ्यून ।

---

* हरिताल दो प्रकार का होता है—१. पत्र हरिताल वा स्तबक वा तबकिया हरिताल । २. पिण्ड वा गोदन्त हरिताल ।

† अफीम चार प्रकार की होती है । यथा—१. जारण, सफेद रंग की होती है । यह शरीर को जीर्ण करती है । २. मारण, यह काले रंग की होती

भाँग—विजया। अजया। जया। शक्राशन। मत्कुणारि। भंग। वीरपत्रा। चपला। आनन्दा। हर्षिणी। मोहिनी। भृङ्गी। धूर्त्तवधू। मातुलानी। मातुली। नीली। हरा। मनोहरा। योगिनी। ज्ञानदा। उन्मत्तिनी। कामाग्नि। ज्ञानवल्लिका। शिवा। माया। मत्ता। हरप्रिया।

गाँजा—गंजा। संविदामंजरी। हर्षिणी। मादिनी। मिहनी। गर्भपातिनी। कामोद्दीपनी।

[नोट—शुद्ध किये हुए सभी प्रकार के विष और उपविष औषधिरूप में प्रयोग में लाये जाते हैं, परन्तु बिना शोधन के विष या उपविष मृत्यु वा अनेक व्याधि के कारण होते हैं।]

है। यह मृत्युकारक है। ३. धारण, यह पीले रंग की होती हैं। यह जरानाशक है। ४. सारण, यह चित्रवर्ण की होती है। यह मलको सारण करती है।

(अफीम की अधिकमात्रा खा लेने से मृत्यु हो जाती है।)

७. धान्य वर्ग

अन्न—धान्य। अनाज। नाज। दाना। गल्ला। अमृत। सस्य। लवेटिका। वीज्य। बीज। व्रीहि। वरेणुक। व्रीह्य। शाली। भोग्य। भोगार्ह। आद्य। जीवन धन। स्तम्बकारि। जीवन साधन। स्तम्बकरि।

धान (चावल)*—(देखो 'अन्न')

रक्तशालि। कलम। पाण्डुक। शकुनाहृत। सुगन्धक। कर्द्दमक। दूषक। पुष्पाण्डक। पुण्डरीक। दीर्घशूक। साठी। काञ्चनक। तण्डुल। तन्दुल। अक्षत। चाँवल। चाउर। धान्य।

[नोट—ये नाम साठी चाँवल के हैं। 'शालिग्राम निघण्टु' के अनुसार साठी चाँवल १८ प्रकार के हैं, उनके नाम ये हैं—रक्तशाली। महाशाली। कलमा। शष्टिका। खंजरीटा। पसाही। जरिका। कपिञ्जला। सौन्धी। शूकला। बिल्वासी। गरुड़ा। कचोरका। रुक्मदन्ती। कलमा (दूसरा)। बिल्वजा। मागधी। पीता। प्रान्त भेद से, चाँवलों के अगणित प्रकार हैं। कुल के नाम देने से एक अलग ही ग्रन्थ बन जायगा]।

जव (जौ)—यव। मेध्य। सितशूक। दिव्य। अक्षत। कंचुकि। धान्य-राज। तीक्ष्णशूक।। तुरगप्रिय। शक्तु। हयेष्ठ। पवित्रधान्य। शितशूक। हय प्रिय। यवक। श्वेतशुंग। प्रवेट। शीतशूक।

गेहूँ—गोधूम। बहुदुग्ध। अरूप। म्लेच्छ भोजन। क्षीरी। निस्तुष। रसाल। सुमन। सुमना। अपूप। निस्तुषक्षीर। श्लेष्मल। गोहूँ।

चना—चणक। हरिमन्थ। वाजिमन्थ। जीवन। चण। हरिमन्थक।

---

* धान की अधिक खेती बंगाल में होती है। वहाँ इसके तीन भेद हैं—आमन (अगहनी), आउस (भँदई) और बोरो (जेठी) महीन चाँवलों के भेद—बासमती, लटेरा, रामभोग, रानीकाजर, तुलसीवास, मोतीचूर, समुद्रफेन, कनकजीरा, स्यामजीरा। साधारण धान—बगरी, दुद्धी, सरमा, रामजवाइन।

हरिनन्थज । सुगंध । कृष्णचंचुक । बालभोज्य । बाजिभक्ष्य । कंचुकी । बाल्भैषज्य । सकलप्रिय । बूट । रहिला ।

मटर—कलाय । केराव । मुण्डचणक । हरेणु । रेणुक । सतीलक । खण्डिक । त्रिपुट । अतिवर्तुल । शमन । नीलक । कंटी । सतील । सतीन । हरेणुक । सतीनक ।

उड़द(उर्द)—उरदी । माष । कुरुविन्द । धान्यवीर । वृषांकुर । मांसल । बलाढ्य । पित्र्य । पितृभोजन । बीजरत्न । बली ।

लोबिया—राजमाष । महामाष । चपल । चवल । वर्वट । मरुत्कर । द्विजसत्त । नीमाष । नृपमाष । नृपोचित । खितमाष । दीर्घवीज । निष्पावी । सुकुमार । दीर्घशिम्बी । तुषामिजनक । लोबिया । बोड़ा । चौरा । लतरा ।

मसूर—मसूरिका । रागदालि । मङ्गल्य । पृथुबीजक । सूर । कल्याणवीज । गुरुवीज । मसूरक । मंगल्यक । मसुर । ब्रीहिकाञ्चन । गभोलिक । ताम्बूलराग । हालाहक । मसुरा । मसूरी । मसूरि । मंगल्या । मांगल्या ।

मूँग—मुद्ग । सूपश्रेष्ठ । वर्णार्ह । रसोत्तम । भुक्तिप्रद । हयानन्द । सुफल । बाजिभोजन

रहर—अरहर । अड़हर । आढ़की । तुवरी । वर्या । मृत्ताल । काक्षी । मृत्तालक । करवीरभुजा । वृत्तबीजा । सुराष्ट्रज । पीतपुष्पा । मृत्स्ना । तुवरिका । शणपुष्पिका ।

मोठ (मोथी)—मकुष्ठक । मकुष्ठ । वनमुग्द । अमृत । कृमीलक । अरण्यमुग्द । बल्लीमुग्द । मपष्ठ । राजमुग्द । वरक । मुकुष्ठक । निगूढ़क । कुलीनक । खण्डी । मुग्दष्टक । मुग्दष्ट । मुकुष्ठ । मयूष्ठ । मयष्टक । मयष्ट । मद्यक । मयुष्टक । मयुष्ट । बनमूंगिया ।

सावाँ—श्यामाक । श्यामक । श्याम । त्रिबीज । समा । अविप्रिय । सुकुमार । राजधान्य । तृणबीजोत्तम ।

कोद्रव (कोदो)—कोद्रव । कोरदूष । कोरदूषक । कुद्रव । कोरदुष्क । कोद्दार । कोद्दाल । कुद्दाल । मदनाग्रक । कोर्द्रव ।

मक्का—मकाई। मकाय। महाकाय। कटिज। काँडज। शिखालु। संपुटांतस्थ। भुट्टा। जोन्हरी।

बाजरा—बाजरी। बर्जरी। बजड़ी। नाली। नालिका। नील सत्य। साजक। अग्रधान्य। वर्जरीका। नीलकणा।

ज्वार—ललिता। क्रोष्टुपुच्छा। श्रीखंडी। सुगंधिका। कृष्णा। भाद्रपदी। मण्डा। जूर्णका। रक्तिका। यावनाल। श्वेता। कुब्जिका। जुआर। (छोटी जोन्हरी के नाम से भी प्रसिद्ध है)

केसारी—खेसारी। कसूर। कस्सा। त्रिपुट। खंडिक।

ककुनी—कंगु। प्रियंगू। प्रियंगु। कंगुका। पीत तंडुल। कंगू। कंगुनीका। कंगूनी। चीनक। काँगनी। कँगनी। काकुन।

तीनी (तिन्नी)❀—नीवार। तिली। अरण्य धान्य। तीली। देव भात। मुनिधान्य। तृणोद्भव। तृणधान्य। अरण्यशाली। असाबिका। देवधान। तृणान्न।

कूटू—फाफर। कुल्टू। काटू। तुम्बा। कालापुरवा, कसपत। कोटू।

[इसे व्रतादि में फलाहार के रूप में खाते हैं।]

❀ तीनी के चाँवल, नदियों या तालाबों के किनारे की एक प्रकार की घास से होते हैं। इनकी गणना अन्न में नहीं होती। यह घास का बीज है। इसे स्त्रियाँ भादों मास की हलषष्ठी और ऋषिपंचमी के व्रतों में खाती हैं। इसे ऋषि अन्न भी कहते हैं।

८. तिलादि वर्ग

तिल—होमधान्य। पवित्र। पितृतर्पण। पापघ्न। जटिल। पूतधान्य। वनोद्भव। स्नेहफल। पूरफल। तैलफल।

सरसों—सर्षप। कटुकस्नेह। भूतघ्न। रक्षिताफल। उग्रगन्ध। ग्रहघ्न। तन्तुभ। कदम्बक। सरिषप। कदम्बक। बिम्बट। कदम्ब। तन्तुक। कटुस्नेह। राजक्षवक।

राई—राजक्षवक। कृष्ण। तीक्ष्णफला। राजिका। राज्ञी। कृष्ण सर्षपा। राजसर्षप। राजसर्षप। कृष्णिका। सूरी। मुष्ठक। व्यष्टक। कटुक। क्षव। क्षुताभिजनन। क्षुधाभिजनन। लाई। राजी। तीक्ष्णगन्धा। क्षुज्जनिका। आसुरी। कृमिक। कटु। असुरी। काकोदुम्बरिका। रक्तिक। रक्तसर्षप। अतितीक्ष्णा। मधुरिक। क्षवक। क्षुतक। ज्वलन्ती। ज्वलत्प्रभा।

अलसी (तीसी)—अतिसी। अतीसी। पिच्छिला। देवी। उमा। मदगन्धा। मदोत्कटा। क्षुमा। हैमवती। सुनीला। नीलपुष्पिका। चणका। क्षौमी। रुद्रपत्नी। सुवर्चला। नीलपुष्पी। पार्वती। मसृणा। तैलोत्तमा। तीसी। मसीना।

बर्रे—वरटा। वरटी। कुसुमबीज। कुसुम फल। वरट्टिका।

रेंड़ी—अरण्ड। एरण्ड। व्याघ्रपुच्छ। चित्रक। इष्ट। त्रिपुटाफल। पंचाङ्गुल। शूलशत्रु। वातारि। दीर्घदन्तक। मंड। रुबूक। गंधर्वहस्तक। उरुबुक। चंचुक। वर्द्धमान। एरण्डक। अमंगल। तुच्छद्रु। व्रणहा। त्रिपुटी। व्याघ्रदल। बुक। अमंड। आमंड। व्यडम्बन। कान्त। तरुण। शुक्ल। दीर्घपत्रक। चित्रवीज। स्नेहप्रद। इष्ट।

मूंगफली—भूमिशिम्बिका। रक्तबीजा। भूमिजा। त्रिबीजा। स्नेह-बीजिका। मण्डपी। भूस्था। भूचणका। चीनाबादाम।

तेल—स्नेह। सनेह। अभ्यञ्जन। म्रक्षण। तैल।

खली—खरी। पिंडी। तिलपिण्डी। पिण्डा। पिण्याक। पीना।

—:०:—

९. शाक-भाजी वर्ग

बथुआ*—बस्तूक। वास्तुक। क्षारपत्र। शाकराट्। पांशुपत्र। शाकश्रेष्ठ। शाकवीर। कंकेल। वास्तु। हिल्मोचिका। बसुक। राजशाक। धनाघन।

[नोट—लाल पत्ती के बथुआ के पर्याय—चिल्ली। चिल्लिका। तुनी। अग्रलोहिता। मृदुपत्री। क्षारदला। क्षारपत्रा। महद्दला।

नोनियाँ—लोणा। लोणी। बृहल्लोणी। घोलिका। लोनी। कुलफा। पथरी। अश्मरी।

[नोट—येही पर्य्याय 'कुलफा' के लिये भी प्रयुक्त हो सकते हैं।]

मरसा—मारिष। वाष्पक। मार्ष।

चौराई—कंचट। पानीय। तण्डुलीय। चौलाई। जलज।

सोया—शतपुष्पादल। शतपुष्पिका। सितच्छत्रा। अतिच्छत्रा। मधुरा। मधुरिका। अवाक पुष्पी। कारवी। शताक्षी। शताह्वा। छत्रा। मिशी। मिसी। माधवी। घोषा। तालपर्णी। ताल्लपर्णी। शालेया। शीतशिवा। शालीना। बनजा। पुष्पिका। सुपुष्पी। सुरसा। बल्या।

पालक—पालंक। पालंक्या। मधुरा। क्षुरपत्रिका। सुपत्रा। स्निग्धपत्रा। ग्रामिणी। ग्राम्यवल्लभा। क्षुरिका। वास्तुकाकारा। पालकी।

पोय (पोई)—उपोदकी। कलम्बी। पिच्छिला। पिच्छिलच्छदा। मोहिनी। मदशाक। विशाला। वलिमोदकी। उपोदिका। उपोती। बृश्चिक प्रिया। अपोदिका। पूतिका।

मेथी—मेथिका। मेथिनी। दीपनी। बहुपत्रिका। बेधनी। गन्धबीजा। ज्योति। गन्धफला। वल्लरी। चन्द्रिका। मन्था। मिश्रपुष्पा। कैरवी। कुंचिका। बहुपर्णी। पीतबीजा। मुनीन्द्रिका।

---

* शाकों में बथुआ का शाक सर्वश्रेष्ठ माना गया है। यह सस्ता और उत्तम विरेचन है।

[नोट—ये ही शब्द मेथी के बीज के भी पर्य्याय हैं]

पेठा—कूष्माण्ड । पुष्पफल । पीतपुष्प । बृहत्फल । तिमिष । । ग्राम्यकर्कटी । कुष्माण्डक । कर्कारू । लिखिवर्द्धक । कुम्हड़ा । कोंहड़ा । कुष्माण्डी । सुफला । कुंचफला । नागपुष्पफला । भथुआ ।

[नोट—ये सफेद कुम्हड़े के नाम हैं]

कुम्हड़ा—कूष्माण्ड । पीत कूष्माण्ड । पीत पुष्पा । ग्राम्या । पीतफला । गुड़योगफला । लाल पेठा । मिलया कद्दू । काशीफल । सफुरिया । कुमार ।

लौकी (कद्दू)—अलाबू । तुम्बी । तुम्ब । तुम्बक । तुम्बा । पिण्डफला । महाफला । आलाबू । एलाबू । लाबु । लौआ । लाबुका । कदुआ । लौका ।

[नोट—यह दो प्रकार का होता है, एक लम्बा और दूसरा गोल]

तितलौकी*—कटुतुम्बी । पिण्डफला । राजपुत्री । नृपात्मजा । फलिनी । तिक्ततुम्बी । तिक्तका । कटुतिक्तका । इक्ष्वाकु । कटुकालाबु । कटुफला । दंतफला । तुम्बिका । तुम्बी । महाफला । क्षत्रियवरा । कटुतुम्बिका । कडुवी-तोंबी ।

ककड़ी—कर्कटी । लोमशी । व्यालपत्रा । बृहत्फला । व्यालपत्री । लोमशा । तोयफला । स्थूला । हस्तिदन्तफला । छर्द्दापनिका । पीनसा । मूत्रला । मूत्रफला । त्रपुषा । त्रपुषी । हस्तपर्णी । लोमशकाण्डा । बहुकन्दा । त्रिभटी । कर्कटाक्ष । शान्तनु । वालुंगी । इर्वारु । उर्वारु ।

खीरा—त्रपुष । कंटकीफल । सुधावास । सुशीतल । पीतपुष्पा । काण्डालु । कंटालु । त्रपुकर्कटी । बहुफला । कंटकिलता । कोषफला । तुंदिलफला । सुधावासा । खीरा । बालमखीरा ।

फूट-ककड़ी—मृगाक्षी । श्वेतपुष्पा । मृगेर्वारु । चित्रा । मृगादनी । चित्रवल्ली । बहुफला । कपिलाक्षी । मृगेक्षणा । पथ्या । विचित्रा । मृगचिर्भिटा ।

---

* तितलौकी की तुम्बी बनती है । सितार का तुम्बा, साधुओं का जलपात्र, तैरने के लिये और मछली पकड़ने की जाल में इसी का प्रयोग करते हैं ।

मरुजा। चिर्भिट। देवी। कुंभसी। कटकला। लघुचभिटा। भकुर। कचरिया। सेंध। फूट। ककड़ी। गोरख ककड़ी।

खरबूजा—दशांगुल। खर्बूज। फलराज। अमृताह्व। षड्भुजा। मधुफला। षड्रेखा। वृत्तकर्कटी। तिक्ता। तिक्तफला। मधुपाका। वृत्तेर्वारु। षण्मुखा।

तरबूज—कालिंग। कृष्णबीज। कालिंद। सुवर्त्तुल। मांरुफल। चित्रवल्लिका। चित्र। मधुरफल। वृत्तफल। घृणाफल। मांसल। अल्प प्रमाणक। सुखाश। राजतिनिष। लतापनस। नाटाम्र। मेट। शीर्णवृन्त। बृहद्रोल। सेट। गोडुम्ब। रक्तबीज। चेलान। मतीरी। मूत्रल।

तोरई—कोशातकी। स्वादुफला। सुपुष्पा। कर्कोटकी। पीतपुष्पा। धाराफला। दीर्घफला। सुकोषा। धामार्गव। जालिनी। कृतवेधना। राजकोशातकी। राजिमत्फला।

नेनुआ—महाकोशातकी। हस्तिघोषा। महाफला। घोषक। धामार्गव। ऐमी। महत्पुष्पा। सपीतिका। हस्तिपर्ण। घीयातोरई।

चिचिंड़ा—चिचिंड। श्वेतराजी। सुदीर्घ। गृहकूलक। चिचुंड। बेश्यकूल। बृहत्फला। अहिफला। दीर्घफला। चचेड़ा। चीन कर्कटिका। चिचड़ा।

परवल—पटोल। राजपटोल। स्वादुपटोल। स्वादु। स्वादिष्टा। जनवल्लभा। राजपूर्वा। सुशाकी। स्वादुपत्रफल। पर्वरा। परोरा। परवर।

कुन्दुरू—बिम्बी। बिम्बा। बिम्बाफल। बिम्बक। बिम्बजा। रुचिरफला। तुंडिकेरी। तुंडी। झंडिकेशी। कर्मकरी। पीलुपर्णी। बिम्बिका। कन्दूरी। ओष्टी रक्तफला।

खेखसा—कर्कोटकी। पीतपुष्पी। महाजाली। मनोज्ञा। मनस्विनी। अवन्ध्या। बोधनाजाली। ककोड़ा।

करेला—कारवेल्ली। वारिवल्ली। बृहद्वल्ली। चिरिपत्र। करका। कटिल्लका। सूक्ष्मवल्ली। तोयवल्ली। कण्डूर। कांडकटुक। पटु। सुकाण्ड। उग्रकाण्ड। सुषवी। करेली।

ढेंडसा—डिडिश। रोमशफल। मुनिनिर्मित। ढेंडश।

भिंडी—भेंडा। भिंडातिका। भिंड। भिंडक। क्षेत्रसंभव। चतुष्पद। चतुपुण्ड। सुशाक। पिच्छिल। भिंडीतक। अस्रपत्रक। करपर्ण। वृत्तबीज। भिंडा। रामतरोई।

बैगन (भाँटा)—वार्त्ताकी। कण्टवृन्ताकी। कंटालु। कंटपत्रिका। मांसलफला। निद्रालु। वृन्ताकी। महोटिका। चित्रफला। कंटकिनी। महती। कटफला। मिश्रवर्णफला। नीलफला। रक्तफला। नृप। प्रियफला। सिंही। भंटाकी। वार्त्ता। दुष्प्रधर्षिणी। वातिकुण। शाकबिल्व। राजकुष्मांड। वङ्गण। अङ्गण। बेर। नीलवृषा। भांटिका। वृनान्तक। नीलकंटका। भटा। बैंगन। भंटा। भाँटा।

ग्वालिन—ग्वार की फली। गोराणी। दृढ़बीजा। बाकुची। निशान्ध्यघ्नी। सुशाका। वक्रशिम्बी। गुआलिनी। ग्वारिणी। गोरत्नफलिनी।

सेम—अंगुलिफला। नखनिष्पाविका। निष्पावी। ग्राम्या। वृत्तनिष्पाविका। नखपुंजफला। अशना। कपिकच्छुफला।

सहिजन—शोभांजन। शिग्रु। तीक्ष्णगान्धक। सुपत्रक। मधुगुंजन। मोचक। बहुमूल। शुभांजन। कालोवक। उग्र। कोमल पत्रक। दंशमूल। उपदंश। क्षमादंश। कटुकन्द। आक्षीव। गंध। गंधक। सैंजना।

कचनार—कांचनार। कोविदार। कुद्दाल। कुदार। कुण्डली। कुली। आस्फोत। उद्दालक। चमरो। स्वल्पकेसर। कांचनाल। कर्बूदार। पाकारि। आश्मन्तक।

१०. मूल-कन्द वर्ग

लहसुन—रसोन। अरिष्ट। म्लेच्छकन्द। महौषध। शुक्लकन्दा। महाकन्द। वातारि। दीर्घपत्रक। रसुन। गृंजन। रसोनक। कटुकन्द। राहूच्छिष्ट। राहूत्सृष्ट। भूतघ्न। उग्रगंध। यवनेष्ट। लहशुन। लहसन। कांदा।

प्याज—राजपलाण्डु। यवनेष्ट। नृपाह्वय। राजप्रिय। महाकन्द। दीर्घपत्र। रोचक। नृपेष्ट। नृपकन्द। रक्तकन्द। राजेष्ट। पलाण्डु। पियाज।

मूली—मूलक। हरिपर्ण। भूमिकाक्षार। नीलकंठ। महाकन्द। रुचिष्य। हस्तिदन्तक। राजालुक। कुरुकन्दक। हस्तिदन्त। मूलाह्व। दीर्घमूलक। दीर्घपत्रक। मृत्क्षार। कन्दमूल। सित। शंखमूल। रुचिर। दीर्घकन्दक। कुंजर। क्षारमूल। शिम्बीफल।

बड़ी मूली—चाणक्यमूलक। वानेय। विष्णुगुप्तक। स्थूलमूल। महाकन्द। कौटिल्य। मरुसम्भव। शालामर्कट। मिश्र। मूला। मूलक।

गाजर—गर्जर। गृंजन। नारंगवर्ण। पिण्डमूल। पीतकन्द। सुमूलक। स्वादुमूल। सुपीत। नारंग। पीतमूलक। पिण्डीक। गजीड़।

सलजम (गोलगाजर)—शिखीमूल। यवनेष्ट। वर्तुल। ग्रन्थिमूल। शिखाकन्द। कंद। पिंडीरमोदक।

सूरन—सूरण। कन्द। जिमीकन्द। ओल्ल। कन्दल। अर्शोघ्न। ओल। कंठाल। कंडुल। कंदी। सुकन्दी। थूरकन्दक। दुर्नामारि। सुवृत्त। वातारि। अर्शारि। कन्दशूरण। तीव्रकण्ठ। कदार्ह। कन्दवर्द्धन। बहुकन्द। रुच्यकन्द। सूरणकन्द। भूकन्द।

[नोट—सूरन सभी कन्दों में श्रेष्ठ माना जाता है, बवासीर रोग का नाशक है।]

लाल कन्द—रक्तकन्द। रक्तपिण्डालु। रक्तालु। रक्तपिण्डक। लौहित। लौहितालु।

शकरकन्द (सफेद)—पिण्डीतक। पिण्डकन्द। रोमशकन्द। कन्दग्रन्थि। पिण्डालु। पिच्छल। स्वादुकन्दक। काँदू। शकरकन्दी। रतालू। कंदा। गंजी।

अरबी (घुइयाँ)—आलुकी। आलुक। गजकर्ण। हस्तिकर्ण। महापत्रालुक। तीक्ष्णकन्द। दीर्घनाल। घुय्याँ। आल। गजकर्णालु।

[ये ही शब्द 'बंडा' के लिए भी प्रयुक्त हो सकते हैं।]

आलू—शुआलु। महिषकन्द। लुलायकन्द। शुक्लकन्द। सर्पाख्य। वनवासी। विषकन्द। नीलकन्द।

सुथनी—मध्वालुक। मध्वालू। रोमालुकी।

कसेरू—गुंडकन्द। क्षुद्रमुस्ता। कसेरुका। शूकरेष्ट। सुगन्धि। सुकन्द। कसेरुक। राजकसेरुक।

---

११. फल वर्ग

आम—आम्र। रसाल। सहकार। अतिसौरभ। कालाङ्ग। मधुदूत। माकन्द। पिकवल्लभ। चूत। चूतक। अम्र। फलश्रेष्ठ। अमृतफल। अमृत। मृषालक। षडपदातिथि। वसन्तद्रु। पिकप्रिय। स्त्रीप्रिय। अलिप्रिय। गन्धबन्धु। शरेष्ट। पिकबन्धु। मदिरासख। केशवायुध। कोषी। कामशर। कामवल्लभ। मदाढ्य। मन्मथावास। सुमदन। प्रियम्बु। शुकप्रिय। मोदाख्य। कीरेष्ट। भृंगाभीष्ट। नूत।

कलमी आम—राजाम्र। राजफल। स्मराम्र। मधुर। कोकिलोत्सव। टंक। कोकिलानन्द। कामेष्ट। नृपवल्लभ। आम्रात। कामाह्व। राजपुत्रक।

आमड़ा—आम्रातक। पीतनक। कपिचूत। अम्लवाटक। वर्षपाकी। कपिच्चूड। तनुक्षीरी। कपिप्रिय। पीतन। कपीतन। मधुराम्लक। अम्रवाटिक। भृंगीफल। रसाढ्य। तनुक्षीर। अम्बरातक। अम्बरीष। आम्रात। अध्वगभोग्य। मर्कटाम्र। तुङ्गी। अमड़ा। आमला। आमरा।

अनार—दाडिम। दाड़िमीसार। कुट्टिम। फलषाडव। करक। रक्तबीज। सुफल। दन्तबीजक। मधुबीज। कुचफल। शुकवल्लभ। मणिबीज। वल्कफल। वृत्तफल। पिण्डपुष्प। दाडिम्ब। पर्वरुट्। स्वाद्वम्ल। पिण्डीर। फलाशाडव। मुखवल्लभ। रक्तपुष्प। डालिम। शुकादन। फलषाडव। सुनील। नीलपत्र। नीलापत्रक। लोहितपुष्पक। दाड़िमी।

केला—कदली। सुफला। रंभाफल। मोचा। रंभा। वारणवल्लभा। सुकुमारा। चर्मण्वती। तत्पत्री। नगरौषधि। वारणबुसा। अंशुमत्फला। काष्ठीला। कदल। वारबुषा। वारणबुषा। सकृत्फला। गुच्छफला। हस्तिविषाणी। गुच्छदन्तिका। निःसारा। राजेष्टा। बालकप्रिया। ऊरुस्तम्भा। भानुफला। वनलक्ष्मी। कदलक। मोचक। रोचक। लोचक। वारवृषा। आयतच्छदा। तन्तुविग्रहा। अम्बुसारा।

नारियल—नारिकेल। दृढ़फल। लाङ्गली। कूर्चशीर्षक। तुङ्ग। स्कन्धफल। तृणराज। नारिकेर। नाड़िकेल। रसफल। सुतुङ्ग। कूर्चशेषर। दृढ़नीर। नीलतरु। मङ्गल्य। उच्चतरु। स्कन्धतरु। दाक्षिणात्य। दुरारुह। शिराफल। त्र्यम्बकफल। करकाम्भा। पयोधर। मुत्कुण। कौशिकफल। फलमुण्ड। जटाफल। मुण्डफल। विश्वामित्रप्रिय। नाड़ीकेल। नारकेर। सुमङ्ग। फलकेशर। वरफल। महाफल। सदाफल। तोयगर्भ। त्र्यक्षफल। खोपरा।

खजूर (पिंडखजूर)—पिंड खर्जूरिका। पिडखर्जूरी। राजजम्बू। पिण्डी। फलमुद्गारिका। दीप्या। मधुरस्रवा। सपिण्डा। फलपुष्पा। स्वादुपिंडा। हयभक्षा। दुष्प्रधर्षा। कषायी। हरिप्रिया। खर्जू। खरस्कन्धा। निःश्रेणी।

ताड़ी-फल—मदाढ्य। दीर्घपादप। ध्वजद्रुम। आसवद्रुम। गुच्छपत्र। पत्री। तालफल। ताड़ी। पत्रला। फलपाकान्त। तृणद्रुम। तृणराज। ताल। लेख्यपत्र। भूमिपिशाच। दीर्घतरु। तन्तुगर्भ। मधुरस। चिरायु। शतपर्वा। द्रुमेश्वर। तरुराज।

सेव—महाबदर। मुष्टिप्रमाण। बदर। सिंचितिकाफल। सेवित। सेवि।

नाशपाती—अमृतफल। रुचिफल। महाबदर। नास्पाती।

अमरूद—पेरुक। मांसल। पृथक् त्वच। मृदुफल। पीतफल। तुवर। मधुराम्लक। अमृतफल। सफरी-सफेद। बीह। सफरी-लाल। अमरूत। पियारा। पियरा। प्रिया।

नारंगी—नारंग। नागरंग। त्वक्सुगन्ध। मुखप्रिय। नार्यंग। नागर। ऐरावत। नागरूक। चक्राधिवासी। किर्मिर। सुरंग। किर्मीरत्वक्। वक्रवास। योगरंग। वरिष्ठ। गन्धपत्र। शंतरा।

नीबू (कागजी)—निम्बुक। अम्लजम्भीर। वह्निबीज। वह्नीदीप्य। अम्लसार। दन्ताघात। शोधन। जन्तुमारी। निम्बूक। रोचन। मातुलुग।

नीबू (बिजौरा)—बीजपूर। मातुलुंग। फलपूरक। अम्लकेशर। बीजपूर्ण। सुकेशर। बीजक। सुफूर। बीजफलक। जन्तुघ्न। दन्तुरच्छद। पूरक। रोचनफल। रुचक।

नीबू (जम्भीरी वा कमला)—जम्बीर। दन्तशठ। जम्भ। जम्भीर। जम्भल। रोचनक। मुखशोधी। जाड्यारि। जन्तुजित। जम्भक। जम्भर। दन्त-हर्षण। दन्तकर्षण। गम्भीर। जम्भिर। रेवत। वक्त्रशोधी। दन्तहर्षक। जम्भी। मीठा नीबू। कमला नीबू। बिहारी नीबू। कन्ना नीबू।

इमली—अम्लिका। चुक्रिका। आम्री। चुक्रा। दंतशठा। अम्ला। चिंचका। चिंचा। तिंतिडिका। तित्तिडी। तिंतिड़ीक। तिंतिलिका। वृक्षाम्ल। अम्लीका। आम्लिका। तितिंड। तितिली। तिंतिका। आम्बिदका। चुक्र। अत्यम्ला। भुक्ता। भुक्तिका। चारित्रा। गुरुपत्रा। पिच्छित्रा। यमदूतिका। चरित्रा। शाकचुक्रिका। सुचुक्किका। सुतिंतिडी। पंक्तिपत्रा। सर्वाम्ला।

कटहल—पनस। कंटकीफल। फणस। अतिबृहत्फल। अपुष्प। फलद। स्थूलकंटफल। कंटाकाल। आशय। पलस। मुरजफल। फलस। चम्पकालु। चम्पाकोष। मृदंगफल। चम्पालु। पानस। महासज। फलिन। फलवृक्षक। स्थूल। कण्टाफल। मूलफलद। अपुष्पफलद। पूतफल। कटहर। कठल।

बड़हल—लकुच। क्षुद्रपनस। लिकुच। डहु। लकच। ऐरावत। अम्लक। निकुच। कषया। दृढ़वल्कल। कार्श्य। शाल। शूर। स्थूलस्कन्ध। ग्रन्थिमत्फल। बड़हर।

महुआ—मधूक। मधुवृक्ष। मधुष्ठील। मधुस्रव। गुडपुष्प। रोध्रपुष्प। वानप्रस्थ। माधव। मध्वग। डोलाफल। तीक्ष्णसार। महाद्रुम। मधु। मधुक। मधुवार। मध्वल।

कैथा—कपित्थ। दधित्थ। कगित्थ। कवित्थ। कइत्थ। कपिप्रिय। पुष्प-फल। दधिफल। दन्तशठ। ग्राही। मन्मथ। देवपादाढ्य। मालूर। मङ्गल्य। नीलमल्लिका। ग्राहीफल। चिरपाकी। ग्रन्थिफल। कुचफल। कपीष्ट। गन्धफल। दन्तफल। करभवल्लभ। काठिन्य फल। करञ्जफलक। अक्षसस्य।

कमरख—कर्मरंग। कारक। शुकप्रिय। शिराल। बृहद्दल। रुजाकर। कर्मारि। कर्मरक। कर्मर। पीतफल। मुद्गर। धाराफल। कर्मारिक।

हरफा रेवड़ी—लवली। सुगंधमूला। पाण्डु। घना। कोमलवल्कला। स्निग्धा। स्कन्धफला।

करौंदा—करमर्द। वनेक्षुद्रा। कराम्ल। करमर्दक। कृष्णपाकफल। अविग्न। सुषेग। कृष्णशाक। पाकफल। कृष्णफल। पाककृष्ण। फलकृष्ण। वनालय। वनालक। कराम्बुक। हणचूक। बोल। वश। करमर्दी। कराम्लक। कण्टकी। पाणिमर्द। अविघ्न। सुपुष्प। दृढ़कण्टक। जातिपुष्प। क्षीरफल। डिंडिम। गुच्छी। क्षीरी। बहुदल।

बैर—बदर। कोल। सौवीर। फेनिल। कुह। कर्कन्धु। कोलि। कुवल। बदरीच्छदा। पिच्छला। सौवीरक। बालेष्ट। फल शैशिर। वृत्तफल। घोण्टा। गोपघोण्टा। हस्तिकोलि। शृगालकोलि। बादिर। गूढ़फल। दृढ़बीज। कण्टकी। वक्रकण्टक। सुरस। सुफल। स्वच्छ। कर्कन्धू। कुबली। गृध्रनखी। कुकोल। कोकिल। अजामिया। उभयकण्टक। बदरी।

खिरनी—खिन्नी। खिरणी। राजादन। फलाध्यक्ष। राजन्या। क्षीरिका। राजफल। कपीष्ट। क्षीरवृक्ष। नृपद्रुम। निम्बबीज। मधुफल। माधवोद्भव। क्षीरी। गुच्छफल। भूपेष्ट। राजवल्लभ। दृढ़स्कन्ध। क्षीरशुक्ल। क्षीरिणी।

फालसा—परूषक। गिरिपीलु। रोषणी। नागदलोपम। परावत। नीलचर्म। नीलमण्डल। परापर। अल्पास्थि। मृदुफल। धन्वनच्छद। परूषा। पारुषा।

शरीफा—सीताफल। गंडगात्र। वैदेहीवल्लभ। कृष्णबीज। अग्निमाख्य। आतृप्य। बहुबीजक। सरीफा। श्रीफल।

अनन्नास—पारवती। आम। अनन्ताक्ष। कौतुकसंज्ञक। अनानाश।

मकोय—काकमाची। ध्वांक्षमाची। वायसी। घनाघना। काकमाचिका। काका। वायसाह्वा। सर्वतिक्ता। बहुफला। कटफला। रसायनी। गुच्छफला। काकमाता। स्वादुपाका। सुन्दरी। तिक्तिका। बहुतिक्ता। जवनेफला। काकिनी। कुष्ठघ्नी। कबैया। मकोइया।

आँवला—आमलकी। आमलक। पंचरसा। श्रीफली। धात्री। धात्रिका।

शिवा। अकरा। अमृता। वयस्था। वृष्या। तिष्यफला। कायस्था। बहुफली। शान्ता। अमृतफला। वृत्तफला। रोचनी। कर्षफला। तिष्या। धात्रीफल। श्रीफल। अमृतफल। जातीफल। आमला। औंरा।

गूलर—उदुम्बर। क्षीरवृक्ष। हेमदुग्ध। सदाफल। अपुष्पफल। सम्बन्ध। यज्ञाङ्ग। शीतवल्कल। कृमिकंट। कृमिकंटक। पाणिमुख। पुष्पहीना। जन्तुफल। यज्ञफल। यज्ञोडुम्बर। उडुम्बर। हेमदुग्धक। ब्रह्मवृक्ष। हेमदुग्धी। सुचक्षु। श्वेतवल्कल। कालस्कन्ध। यज्ञयोग्य। यज्ञीय। सुप्रतिष्ठित। शीतवल्क। यज्ञसार। पुष्पशून्य। पवित्रक। सौम्य। शीतफल। जघनेफल।

शहतूत—तूत। सहतूत। तूद। ब्रह्मकाष्ठ। ब्रह्मदारु। यूष। मृदुसार। सुपुष्प। सुरूप। नीलरंगक। तूल। ब्राह्मणेष्ट। नीलवृन्तक। क्रमुक। विप्रकाष्ठ। मदसार। पूण। नूद़। पूष। ब्रह्मण्य। पलाशिक।

लिसोड़ा—श्लेष्मान्तक। पिच्छिल। लेखशाटक। शेलु। शैलु। भूशेलु। गन्धपुष्प। शापित। बहुवारक। उद्दाल। बहुवार। भूतवृक्ष। द्विजकुत्सित। शीतफल। शाकट। कर्बुदारक। कर्बुदार। भूतद्रुम। श्लेष्मान्त। शीत। उद्दालक। सेलु।

(छोटे लिसोड़े के नाम।)—भूकर्बुदार। लघुश्लेष्मान्तक। लघु-पिच्छिल। लघुशीत। लघुशेलु। सूक्ष्मफल। मधुभूतद्रुम। भूकर्बुदारक। निसोरा। लभेरा। भूशेलु।

जामुन (छोटी जामुन)—जम्बू। सुरभिपत्रा। नीलफला। श्यामला। महास्कन्धा। राजार्हा। राजफला। शुकप्रिया। मेघमेदिनी। जम्बुल।

जामुन (बड़ी जामुन)—फरेंदा। महाजम्बू। राजजम्बू। स्वर्णमाता। महाफला। शुकप्रिया। कोकिलेष्टा। महानीला। बृहत्फला। महापत्रा। फलेन्द्र। नन्द। सुरभिपत्र।

बेल—बिल्व। महाकपित्थाख्य। श्रीफल। गोहरीतकी। पूतिवात। मंगल्य। मालूर। त्रिशिख। शांडिल्य। शैलूष। कपीतन। महाकपित्थ। महाफल। अतिमंगल्य। शल्य। हृद्यगन्ध। शालाटु। कर्कटाह्व। शिवेष्ट। शैलपत्र। त्रिपत्र।

गन्धपत्र । लक्ष्मीफल । गन्धफल । दुरारुह । त्रिशाखपत्र । शिवद्रुम । सदाफल । सत्यफल । सुनीतिक । समीरसार । सत्यधर्म । अधरारुह । कण्टकाढ्य । सितानन । नीलमल्लिक । पीतफल । सोमहरीतकी ।

पपीता—स्थूलएरण्ड । महाएरण्ड । महापंचांगुल ।

[सूखाफल-मेवा आदि]

छोहारा—छुहारा । गोस्तनाकारखर्जूरी । खर्जूरी । पिण्डखर्जूरी ।

बादाम—बाताद । बातबैरी । नेत्रोपमफल । बाताम ।

आलूबोखारा—आरुक । वीरसेन । वीर । वीरारुक । आलूक । मल्ल । मल्लूक । मह्ल । रक्त फल ।

अखरोट—अखरोट । पार्वतीय । फलस्नेह । गुडाशय । कीरेष्ट । कर्पराल । स्वादुमज्ज । पृथक्छद । रेखाफल । वृत्तफल । मदनाभफल । अक्षोट । अक्षोटक । अखोट । आखोट । आक्षोड । आक्षोट । कन्दराल । आस्फोटक ।

सुपारी—पूग । पूगीफल । पुंगीफल । पूगी । खपुर । गुवाक । क्रमुक । घोण्टा । कपीतन । क्रमु । क्रमुकी । पूगवृक्ष । दीर्घपादप । दृढ़वल्कल । वल्कतरु । चिक्कण । अकोट । तन्तुसार । सुरंजन । गोपदल । राजताल । छटाफल । करमटट । मुद्वेग । घोण्टाफल । सोपाड़ी । कषैली । कसैली । छालिया । डली ।

चिरौंजी—प्रियाल । खरस्कन्ध । चार । बहुवल्कल । राजादन । तापसेष्ट । सन्नकद्रु । धनुष्पट । अखट्ट । ललन । चारक । बहुवल्क । सन्नद्रु । तापसप्रिय । धनु । स्नेहबीज । उपवट । मोद्यवीर्य । द्रुसल्लक । राजातन । पियाल । पट । हसन्नक । पियालक । पियाज । प्याज-मेवा ।

पिस्ता—चारुफल । निकोचक । सकोच । जलगोजक । पिस्त । मुकूलक ।

अंजीर—मंजुल । काकोदुम्बरिका फल ।

काजू—काजूतक । वृत्तफल । गुच्छपुष्प । पार्वती । स्निग्धपीत फल । पृथग्बीज । अरुष्कर । अग्निकृत । उपपुष्पिका ।

अंगूर—द्राक्षा। मधुरसा। स्वादी। कृष्णा। चारुफला। रसा। मृद्वीका। गोस्तनी। यक्ष्मघ्नी। तापसप्रिया। प्रियाला। गुच्छफला। रसाला। अमृतरसा। अमृतफला। स्वादुफला। हारहूरा। फलोत्तमा। सुफला। दाख।

मुनक्का—काकलीद्राक्षा। जाम्बुका। फलोत्तमा। लघुद्राक्षा। सुवृत्ता। रुचिकारिणी। दाख। गोस्तनी (लाल मुनक्का)।

किशमिश—गोस्तनी। कपिलफला। मधुवल्ली। मधूलि। हरिता। हराहूरा। मृद्वी। हिमोत्तरा। पथिका। हैमवती। शतवीर्या। काश्मीरी।

निर्मली—कतक। छेदनीय। श्लक्ष्ण। तोयप्रसादन। कात्थ। कतकरेणु। चक्षुष्य। शोधनात्मक। पायपसारी। लेखनात्मक। अम्बुप्रसाद। कत। तिक्तफल। रुच्य। गुच्छफल। तिक्तमरिच। पयःप्रसादी।

१२. पुष्प वर्ग

चमेली (पीली)—सुमना । मालती । जाती । सुरप्रिया । चेतकी । स्वर्णजाती । सुरभिगन्धा । सुकुमारी । संध्यापुष्पी । मनोहरा । राजपुत्री । मनोज्ञा । तैलमालिनी । जनेष्टा । हृद्यगंधा । राजपुत्रिका । जातिका । प्रियंवदा । मालिनी । वासंती । प्रहसंती । सुवसन्ता । वसन्तजा । वार्षिका । स्वर्णजातिका । जाई । पीलीजाई ।

चमेली (सफेद)—उजाती । सुवर्णा । सुरूपा । श्रीमती । वर्षापुष्पा । बलिह्वासा । वेशिका । सुजाती । श्वेतजाती ।

बेला—वार्षिकी । शीतभीरु । मदयन्ती । प्रमोदनी । अतिगन्धा । गवाक्षी । भूपदी । वार्षिका । अष्टापदी । दन्तपत्रा । देवलता । श्रीपदी । षट्पदानन्दा । मुक्तगन्धना । दलकोषक । भद्रवल्ली । प्रिया । सौम्या । मल्लिका । वनचन्द्रिका । भूरदी । शीतभीरु । तृणशून्या । गौरी । नारीष्टा । गिरिजा । सिता । मल्ली । मुद्गरक । गन्धराज । सतपत्र । त्रिटप्रिय । मुद्गरा । राजपुत्री । वर्त्तुल । षट्पद-प्रिया । गन्धसार । अतिगंध । प्रिय । जनेष्ट । मृगेष्ट । मोगरा । बनमोगरा । घुघुरू मोतिया । मोतिया । बेली ।

[**नोट**—गुथे हुए गोल कली वाले फूल को मोतिया या मोगरा कहते हैं और लाँबी कली के फूल को बेला कहते हैं ।]

नेवारी—वासन्ती । प्रहसन्ती । सुवसन्ता । वसन्तजा । सुकुमारा । शिखरिणी । नेपाली । वनमल्लिका । मधुगन्धा । गुच्छपुष्पा । ग्रैष्मिका । राजा-दनदला । वनजा । सूक्ष्मपुष्पिका । सतला । नवमालिका । देवलता । भद्रवर्म । गन्धनलया । ग्रीष्मभवा । अतिमोदा । ग्रैष्मी । ग्रीष्मोद्भवा । शुचिमल्लिका । सुगन्धा । नेवाली । नेपाली । नेवाड़ी । नेमाली ।

जूही (सफेद)—यूथिका । यूथी । वासन्ती । बालपुष्पी । शिखण्डिनी । गणिका । अम्बष्ठा । मागधी । प्रहसन्ती । भृगनन्दा । बालपुष्पिका । पुण्यगन्धा ।

गुणोज्वला । चारुमोदा । शिखंडी । हरिणी । शंखयूथिका । सुगन्धिका । यूथितरुणी । सुगन्धा । मोदिनी । बहुगन्धा । गजाह्वया ।

जूही (पीली)—सुवर्णयूथी । हेमपुष्पा । सुगन्धा । युवतीष्ठा । हेमयूथिका । रक्तगन्धा । नागपुष्पिका । पीतयूथ । पीतिका । कनकप्रभा । हैम । गन्धाढ्या । हेमपुष्पिका । सुवर्णाह्वा । व्यक्तगन्धा । सोनजुही ।

माधवी—अतिमुक्ता । सुवसन्ता । पराश्रया । अतिमुक्त । कामुक । मण्डप । भ्रमरोत्सव । चन्द्रवल्ली । सुगन्धा । भृङ्गप्रिया । भद्रलता । भूमिमण्डप । भूषण । वासन्ती । पुण्ड्रक लता । अतिमुक्तक । माधविका । विमुक्तक । माधवलता । वसन्तदूती ।

मालती—सुमना । जाति । वासन्ती । युवती ।

गुलाब*—सेवंती । रामतरुणी । कर्णिका । चारुकेशर । कुमारी । सहा । शतपत्री । गन्धाढ्या । शिववल्लभा । भृङ्गेष्टा । तरुणी । सुदला । बहुपत्रिका । भृङ्गवल्लभा । शतपत्री । सौम्यगन्धा । सुवृत्ता । शतपत्रिका । महाकुमारी । लाक्षापुष्पा । अतिमंजुला । सुमना । सुशीता । शतदला । सुवृत्ता । कुब्जक । भद्रतरुणी । वृत्तपुष्प । अतिकेसर । महासह । कण्टकाढ्या । खर्व । अलिकुल । संकुल । बृहत्पुष्प । महासहा । वारिकण्टक । देवतरुणी । सेवती । कूजा ।

चम्पा†—चम्पक । सुकुमार । सुरभि । शीतल । चाम्पेय । हेमपुष्प ।

---

* सफेद गुलाब को सेवती तथा लाल या प्याजी रंगवाले गुलाब को 'कुब्जक' या कूजा कहते हैं। एक पीले रंग का भी गुलाब होता है, जो भारतवर्ष का नहीं है। चैत में फूलने वाले चैती गुलाब को सबसे उत्तम माना गया है। इसी को गुलकन्द, अर्क और अन्य ओषधि के प्रयोग में लाते हैं।

† चम्पा पुष्प की गंध तीव्र होती है। इसके निकट भौंरे नहीं जाते। सम्भवतः वे इसकी तीव्रता को सहन नहीं कर सकते। चम्पे के लिए यह दोहा प्रसिद्ध है—

"चंपा तोमें तीन गुन, रूप-रंग औ वास।
अवगुन केवल एक है, भँवर न फटकत पास॥"

काञ्चन । कुसुमाधिराट् । हेमाह्व । सुभग । शीतलच्छद । कुसुमाधिप । वरलब्ध । उपगन्ध । कुट । हेमपुष्पक । पुण्यगन्ध । नागपुष्प । स्वर्णपुष्प । भृङ्गमोही । भ्रमरातिथि । दीपपुष्प । वनदीप । स्थिरगन्ध । अतिगन्धक । पीतपुष्प । स्थिरपुष्प ।

मौलसिरी—बकुल । केसर । कण्ठ । तैलङ्ग । मधुपंजर । सिंहकेशर । मुकुल । वकूल । मकुल । वरलब्ध । सीधुगन्ध । दोहल । स्त्रीमुखमधु । मधुपुष्प । सुरभि । भ्रमरानन्द । शारदिक । करक । सिन्धुगन्ध । विशारद । गूढ़पुष्पक । धन्वी । मदन । मद्यमोद । चिरपुष्प । मौसरी । मौलिश्री ।

मुचुकुन्द—छत्रवृक्ष । चित्रक । प्रतिविष्णुक । दीर्घपुष्प । बहुपत्र । सुदल । हरिवल्लभ । सुपुष्प । रक्तप्रसव ।

कुन्द—कुन्द । माध्य । सदापुष्प । शुक्लपुष्प । दलकोष । वरट । वोरट । मकरन्द । महामोद । मनोहर । मुक्तापुष्प । तारपुष्प । अट्टपुष्पक । दमन । वनहास । मनोज्ञ । भृङ्गबन्धु । मनोरम । अट्टहास । भृङ्गसुहृद् ।

कदम्ब—भूमिकदम्ब । भूनीप । भूमिज । भृङ्गवल्लभ । लघुपुष्प । वृत्त-पुष्प । विषघ्न । व्रणहारक । धाराकदम्ब । कदम । नृत्यनीप । प्रीअंक । मदिरा-गंध । हवाह । नीप ।

केवड़ा सफेद—केतकी । सूचिकापुष्प । क्रकचच्छद । जम्बुक । चामर-पुष्प । तीक्ष्णपुष्पा । विफला । धूलिपुष्पिका । मेध्या । कण्टदला । शिवद्विष्टा । नृपप्रिया । क्रकचा । दीर्घपत्रा । स्थिरगन्धा । गन्धपुष्पा । इन्दुकलिका । दलपुष्पा । पांशुला ।

केवड़ा-पीला—स्वर्णकेतकी । लघुपुष्पा । सुगन्धिनी । कनकप्रसवा । हैमी । पुष्पी । छिन्नरुहा । ि्छारुहा । स्वर्णपुष्पी । कामखड्गदला ।

कटसरैया-पीली—किंकिरात । कुरण्ट । पीतपुष्पक । कनक । पीताम्लान । सहचर । पीतसैरेयक । कुरण्टक । सहचरी । सहचर । वीर । पीतपुष्प । दासी । पुर । कुरुण्टक ।

कटसरैया-नीली—नीलपुष्पी । नीलझिण्डी । वाण । आर्त्तगल । अर्तगल । नीलकुरण्टक । शैरीयक । शैरेय । वाला । नीलकुसुमा । कण्टार्त्तगला ।

कटसरैया-लाल—रक्ताम्लान । रक्तपुष्प । रामालिंगन । कामुक । रागप्रसव । सुभग । शीलझिण्टिक । कुरबक । रक्तझिण्टी । रक्तझिण्टिका । शोणझिण्टी ।

कटसरैया-सफेद—सैरेय । सैरेयक । कुरण्टक । कुरबक । सरैया । पियावासा ।

गुलदुपहरिया—बन्धूक । माध्यान्हिक । बन्धुजीव । रक्त । रक्तक । बन्धुजीवक । बन्धुक । बन्धु । बन्धुल । बन्धूली । बन्धुर । सूर्यभक्तक । ओष्ठपुष्प । अर्कवल्लभ । मध्यन्दिन । रक्तपुष्प । रागपुष्प । हरिप्रिय । ज्वरघ्न । शरत्पुष्प । सुपुष्प ।

गुलतुर्रा—सिद्धेश्वर । सिद्धनाथ । सिद्धाख्य ।

गुलपरी—शंखोदरी । बर्हपुष्पा । चिञ्चापत्रा । सुपुष्पा । अल्पकण्टकी । श्लाखापत्री । वनवासी । सुशिम्बिका । गुलतोरा ।

मखमली—झण्डू । स्थूलपुष्पा । झण्डूक । कलगा । लाल मुर्गा । गुल-मखमल ।

लटकन*—सिन्दूरपुष्पी । सिन्दूरी । तृणापुष्पी । जाफर । रक्तबीजा । रक्तपुष्पी । वीरपुष्पा । करच्छदा । शोण पुष्पी । सुकोमला । सिन्दूरिया । जोगिया ।

हारसिंगार—प्राजक्त । पारिजात । परजाता । हारसृङ्गार । नालकुंकुम । रागपुष्पी । खरपत्रक ।

---

* इसका सूखा फूल मुनक्का के बीज के समान कड़ा होता है । पंसारियों की दूकान पर मिलता है । इसे पीसकर पकाते हैं और कपड़े रँगते हैं । इसमें अच्छी भीनी सुगन्ध होती है । रंग सिन्दुरिया-जोगिया होता है ।

ओड़हुल—प्रातिका। जपाकुसुम। ओंड़पुष्प। ओंड्राख्या। रक्तपुष्पी। अर्कप्रिया। रामपुष्पी। अरुणा। त्रिसन्ध्या। हलहुल। गुड़हर।

अगस्त्य—अगस्तिया। बङ्गपुष्प। मुनिपुष्प। अगस्ती। शीघ्रपुष्प। व्रणारि। दीर्घफलक। शुक्लपुष्प। सुरप्रिय। स्वरध्वंसी। पवित्र। वङ्गसेनक। कनली। वक्रपुष्प। हथिया। बोड़ीका फूल। हदगा।

गुलदौना—दमनक। दान्त। मुनिपुत्र। तपोधन। गन्धोत्कट। ब्रह्मजट। विनीत। कुलपत्रक। पुष्पचामर। मदनक। दमन। मुनि। जटिला। दण्डी। पाण्डुराग। ब्रह्मजटा। पुण्डरीक। तापसपत्री। पत्री। पवित्रक। देवशेखर। कुलपत्र। तपस्वीपत्र। दौना।

कनेर—(देखो विषोपविषवर्ग)

[**नोट**—कमल। कुमुद आदि के नाम जलादि वर्ग में दिये जा चुके हैं।]

---

१३. वृक्ष वर्ग

बड़—बट । रक्तफलशुङ्गी । न्यग्रोध । स्कन्धज । ध्रुव । क्षीरी । वैश्रवणावास । बहुपाद । जटिल । पटीर । रक्तफला । नन्दी । शुङ्ग । बृहत्पाद । वैश्रवणोदय । वृक्षनाथ । भृंगी । यमप्रिय । कर्मज । भाण्डीर । जटाल । रोहिण । अवरोही । विटपी । स्कन्धरुह । मण्डली । महच्छाय । यक्षावास । यक्षतरु । पादरोहण । नील । शिफारुह । जटी । बरगद । बर ।

पीपल—गजाशन । केशवालय । चैत्यद्रु । नागबन्धु । चैत्यवृक्ष । देवात्मा । महाद्रुम । कपीतन । अच्युतावास । पवित्रक । शुभद । याज्ञिक । श्रीमान् । क्षीरद्रुम । विप्र । मंगल्य । श्यामल । गुह्यपुष्प । सेव्य । सत्य । शुचिद्रुम । धनुर्वृक्ष । बोधिद्रुम । पिप्पल । अश्वत्थ । चलदल । चलपत्र ।

पाकर—प्लक्ष । जटी । पर्कटी । कर्परी । चारु दर्शिनी । शृंगी । वरोह शाखी । अश्वत्थी । पिपरी । वटी । कमण्डलुतरु । कपीतन । क्षीरी । सुपार्श्व । कमण्डलु । गर्दभाण्ड । पीतन । दृढ़प्ररोह । प्लवक । प्लवंग । महाबल । कन्दरालु । पर्काटी । प्लक्षा । प्लीक्षा । पाकड । पकड़ी । पाखर । पिलखन ।

सिरस—सिरीस । शिरीष । भण्डिल । भण्डी । भण्डीर । कपीतन । शुकपुष्प । शुकतरु । मृदुपुष्प । शुकप्रिय । कर्णपूर । शुकद्रुम । भण्डील । भण्डिर । मूर्द्धपुष्प । विषघाती । शीतपुष्प । भण्डिक । स्वर्णपुष्पक । वहुपुष्प । उद्दानक । शुक्रतरु । शंखिनी फल । लोमशपुष्पक । कलिग । श्यामल । मधुपुष्प । वृत्तपुष्प । प्लवग । श्यामवर्ण ।

शीशम—शिंशपा । कृष्णसारा । पिपला । युगपत्रिका । पिच्छला । धूम्रिका-वीरा । कपिला । अगुरुशिंशिपा । अगुरु । युग्मपत्रिका । कालानु । सार्य । श्यामा । धीरा । मंडलपत्री । तीव्रधूमका । भस्म गर्भा । पीता । कपिलाक्षी ।

शाल—शाल । सर्जकाय । अश्वकर्णिका । सस्यसम्बर । अश्वकर्णक । शस्य-शम्बर । उपमेत । दीर्घशाख । जलदाशन । लतातरु । लताशंख । शंकुतरु ।

शंकुवृक्ष । सर्ज । सर्जरस । कल । वल्लीवृक्ष । चीरपर्ण । शालकार्य । अजकर्णक । कषायी । वस्तकर्ण । ललन । गन्धवृक्षक । वंश । दिव्यसार । सुरेष्टक । शूर । अग्निवल्लभ । यक्षधूप । सिद्धक । जरगद्रुम । तार्क्ष्य प्रसव । धन्व । दीर्घपर्ण । कुशिक । अश्वकर्ण । साखू । सखुआ । साल ।

सलई—शल्लकी । गजभक्षा । ह्लादिनी । महारुहा । वसा । मोचा । सुरभी । सुरभीरसा । सिल्लकी । सुवहा । महेरुणा । महेरणा । महाराणा । अश्वपुत्री । कुम्भी । करका । नागवधू । सुश्रीका । सालई । गन्धमूला ।

अर्जुन—फाल्गुन । पार्थ । धनंजय । किरीटी । पांडव । धन्वी । वीर । वीरवृक्ष । धवल । कोह । कौह । ककुभ ।

विजयसार—बीजक । पीतसार । पीतसालक । प्रियक । बन्धूकपुष्प । असन । पीतसाल । परमायुस । महासर्ज । सोरि । बीजवृक्ष । आसना । आसन । असना । नीलक ।

खैर—खदिर । रक्तसार । गायत्री दन्तधावन । कंटकी । बालपत्र । बहुशल्य । याज्ञिक । बालतनय । निकसारा । यूपद्रुम । खदिरी । बालपुत्र । कर्कटी । जिह्मशल्य ।

पपड़िया खैर—श्वेतसार । कदर । सोमवृक्ष । सोमसार । ब्रह्मशल्य । महावृक्ष । द्विजप्रिय । नेमिवृक्ष । श्यामसार । सफेद खैर ।

बबूल—मालाफल । बब्बूल । युगकण्ट । दृढ़ारुह । कण्टकी । सूक्ष्मपत्र । पीतपुष्प । कषायक । किंकिरात । कण्टालु । युगलाक्ष । तीक्ष्ण कण्टक । गोशृंग । कफान्तक । स्वर्णपुष्प । पीतक । कीकर ।

रीठा—अरिष्टक । मांगल्य । कृष्णवर्ण । अर्थ साधन । पीतफेन । फेनिल । गर्भपातन । गुच्छफल । अरिष्ट । कुम्भबीजक । प्रकीर्य । सोमवल्कल ।

तमाल—तापिच्छ । कालस्कन्ध । अमृतद्रुम । लोकस्कन्ध । नीलध्वज । नीलताल । तम । तापिंज । तमा । महाबल । श्यामतमाल ।

भोजपत्र—भूर्जपत्र । भूर्ज । चर्मी । बहुवल्कल । सुचर्मी । छत्रपत्र । वल्क-

द्रुम। शिग्रि। बिन्दुपत्र। बहुरट। विग्रादल। छत्रपत्र। स्थिरच्छद। पत्रकी। भुज। मृदुत्वक्।

पलास—पलाश। किंशुक। पर्ण। याज्ञिक। रक्तपुष्पक। क्षारश्रेष्ठ। वातपोथ। ब्रह्मवृक्ष। समद्विर। करक। त्रिपत्रक। पलाशक। पूतद्रु। ब्रह्मोपनेता। काष्ठद्रु। बीजस्नेह। कृमिघ्न। वक्रपुष्पक। सुपर्णी। ढाक। टेसू। केसू। धारा। कांकरिया।

सेमल—शाल्मली। शाल्मलीनिर्यास। शाल्मलीवेष्टक। पिच्छ। मोचस्राव। मोचरस। मोचनिर्यास। मोचसार। मोचश्रुत। पिच्छिलसार। सुरस। मोचाक। वेश्मरस। सेमल। शाल्मल।

धव—पिशाचवृक्ष। शकटाख्य। धुरन्धर। दृढ़तरु। गौर। कषाय। मधुरत्वक्। शुष्कवृक्ष। शुष्काङ्ग। पाण्डुतरु। धवल। पाण्डुर। धट। नन्दितरु। स्थिर। पीतफल। धौं। धावा।

करील—करीर। गूढ़पत्र। शाकपुष्प। कटुफल। ग्रंथिल। तीक्ष्णसार। मरुभूरुह। ककर। ककच। निष्पत्रिका। करिर। तीक्ष्णकण्टक। मृदुफल। निष्पत्र। शोणपुष्प। विशाहिक। शाकुन्त। सुफल। उष्णसुन्दर। विष्वक्पत्र। कृशशाख।

सागौन—शाक। ककचपत्र। खरपत्र। अतिपत्रक। महीरुह। श्रेष्ठकाष्ठ। स्थिरसार। गृहद्रुम। अनिल। अर्ण। महापत्र। शाकतरु। अर्जुनोपम। शरपत्र। अतिपत्र। द्वारदारु। योगी। हलीमक। गन्धसार। स्थिरक। भूतसाधन। सागवन।

समी—शमी। शक्तुफली। शान्ता। केशहन्त्री। शिवफला। मंगल्या। शुभदा। लक्ष्मी। पवित्रा। पापनाशिनी। सक्तुफली। शिवा। काननारि। तुंगा। कचरिपुफला। केशमथनी। ईशानी। तपनतनया। इष्टा। शुभकरी। हविर्गन्धा। मेध्या। दुरितदमनी। समुद्रा। वह्निगर्भा। समीर। सुरभि। पापशमनी। भद्रा। शङ्करी। सुपत्रा। सुखदा। शंकरा। शंकुफलिका। सुभद्रा। छांकर। छौंकर। सफेदकीकर।

रुद्राक्ष—शिवाक्ष। शर्वाक्ष। भूतनाशन। पावन। अमर। पुष्पचामर।

अशोक—शोकनाशन। विचित्र। कर्णपूरक। कंकेली। हेमपुष्पक। पिण्डपुष्पक। अंगनाप्रिय। विशोक। वंजुलद्रुम। मधुपुष्प। अपशोक। केलिक। रक्तपल्लव। चित्र। कर्णपूर। सुभग। दोहली। ताम्रपल्लव। रोगितरु। वामांकपातन। नट। रामा। वल्लद्रु। कान्ताचरणदोहद। चक्रगुच्छ। शोकहर्त्ता। स्मराधिवास। दोषहारी। प्रपल्लव। वामांघ्रिघातक। अशोग।

नीम—निम्ब। निम्बन। नियमन। नेता। पिचुमद। अरिष्ट। सर्वतोभद्र। सुभद्र। पारिभद्रक। शुकप्रिय। शीर्षपर्णी। वरत्वच। छर्दन। हिंगु। निर्यास। पीतसार। रविप्रिय। मालक। पिचुमंद। पक्ककृन। पूकमालक। कीटक। विवन्ध। निम्बक। कैटर्य। हर्दिघ्न। कीरेष्ट। विशीर्णपर्ण। पीतसारक। शीत। राजभद्रक।

[**नोट**—कई वृक्षों के नाम जो फलवाले हैं, नहीं दिये गये हैं। उनके जो नाम फलवर्ग में दिये गये हैं वे उनके वृक्ष के लिए भी प्रयुक्त हो सकते हैं।]

१४. वनौषधि वर्ग

टैंटी*—विकंकत । ग्रंथिल । स्वादकंटक । स्रुवावृक्ष । व्याघ्रपाद ।

सोनापाढ़ा—टुंटुक । दीर्घवृन्त । श्योनाक । शुकनास । कटम्भर । मयूरजंघ । अरलुक । प्रियजीवी । कुटन्नंट । नट । मण्डूक पर्ण । पत्रोर्ण । कटंगङ्ग । ऋक्ष । दीर्घवन्त । शोनक । अरल । स्योनाक । विषनुत । अध्वान्तशात्रव । पूतिवृक्ष । मण्डूक । मण्डुक । भूतपुष्प । शोण । अरट्ठ । दीर्घवृन्तक । ध्वान्तशात्रव । वट्ठ । स्वर्णवल्कल । पृथुशिम्ब । शल्लक । शोषण । प्रियजीव । कुकंट । कन्दर्प । पादवृक्ष । पारिपादप । कुनट । विरोचन । भ्रमरेष्ट । जंघनेत्र । निःसार ।

भटकटैया—कंटकारी । कुलीक्षुद्रा । कासघ्नी । स्पृशी । कंटकारिका । धावनिका । व्याघ्री । दुःस्पर्शा । दुष्प्रधर्षिणी । कटश्रेणी । निदिग्धिका । बृहती । प्रचोदनी । राष्ट्रिका । अनाक्रान्ता । कण्टाकी । सिंही । कुली । धावनी । चित्रकला । लघुकटाई । कटेरी । रेंगनी ।

गोखरू (बड़ा)—गोक्षुर । पलङ्कषा । इक्षुगंधा । श्वदंष्ट्र । स्वादुकण्टक । गोकण्टक । गोक्षुरक । वनशृंगाट । त्रिकंट । स्थलशृंगाट । त्रिपुट । कंटफलक । क्षुर । गोखुरि । त्रिक । त्रिकट । इक्षुर । भक्ष्यकंट । इक्षुगंधिका । क्षुरांग । भद्रकंट । व्यालदंष्ट्र ।

गोखरू (छोटा)—क्षुद्रगोक्षुर । त्रिकंट । कंटो । षडंग । बहुकंटकक्षुर । वनशृंगाटक । चणद्रुम । स्थलशृंगाटक । स्वादुकंट । इक्षुगंध ।

जीवन्ती—जीवनी । जीवा । जीवदा । सुखंकरी । रक्तांगी । प्राणदा । भद्रा । मंगल्या । मृगराटिका । जीवनीवा । स्रवा । मधुस्रवा । मंगल्यनामधेया । पयस्विनी । जीव्या । जीवदात्री । शाकश्रेष्ठा । जीवभद्रा । क्षुद्रजीवा । यशस्या ।

---

* इसका पेड़ ब्रज में बहुत होता है। आगरा व मथुरा में इसके फल के अँचार बनाते हैं। यह स्वाद में कुछ कषैला और कडुआ होता है।

भृंगाटी । जीवपृष्ठा । कांजिका । शशशिम्बिका । सुपिङ्गला । पुत्रभद्रा । मधुश्वासा । जीववृषा । जीवपत्री । जीवपुष्पी । जीववर्द्धिनी । यशस्करी । डोड़ी ।

दूब—दूर्वा । शष्प । शाद्वल । शतपर्वा । शीतकुम्भी । शीतला । वामिनी । शाम्भवी । श्यामा । शीता । शतपर्विका । धूर्त्ता । अमृता । शतग्रन्थि । अनुवल्लिका । शिवा । शिवेष्टा । मंगल्या । जया । भूतहन्त्री । शतमूला । महौषधी । विजया । गौरी । शान्ता । रुहा । अनन्ता । भार्गवी । सहस्रवीर्या । शतवल्ली । शुणा । नन्दा । महावरा । हरसालिका । तिक्तपर्वा । दुर्मरा । हरिता । हरितालिका । हरिताली । कच्छरुहा । अमरी । अमरा । काण्डा । श्यामकाण्डा । गण्डदूर्वा । सूचिपत्रा । शकुलाक्षी । चित्रा । विद्या । शुभा । सुरवल्लभा । स्वच्छा । प्रचण्डा । कच्छान्तरुहा ।

तुलसी - वैष्णवी । वृन्दा । सुगन्धा । गन्धहारिणी । अमृता । पत्रपुष्पा । पवित्रा । सुरवल्लरी । सुभगा । तीव्रा । पावनी । सुरेज्या । विष्णुवल्लभा । सुरसा । कायस्था । सुरदुन्दुभी । सुरभी । बहुपत्री । मञ्जरी । हरिप्रिया । विष्णु-कान्ता । अपेतराक्षसी । श्यामा । गौरी । त्रिदशमंजरी । भूतघ्नी । भूतपत्री । प्रेतराक्षसी । पर्णास । कठिंजर । कुठेरक । पुण्या । माधवी । सुरवल्ली । सुरहा । ग्राम्या । सुलभा । विष्णुपत्नी । मालाश्रेष्ठा । लक्ष्मी । श्री । कृष्णवल्लभा ।

श्यामा तुलसी—कृष्णा । कृष्णतुलसी । कृष्णपर्णी । कालक ।

अरूसा—वासक । वासिका । वासा । सिंहिका । रामरूपक । मातृसिंही । वैद्यमाता । वृष । कसनोत्पाटन । अटरुष । सिंही । सिंहास्य । वाजिदन्तक । आमलक । वाशा । वाशिका । वाजी । वैद्यसिंही । सिंहपर्णी । रसादनी । सिंहमुखी । कण्ठीरवी । सितकर्णी । वाजिदन्ती । नासा । पंचमुखी । सिंहपत्री । मृगेन्द्राणी । आटरूष । सिंहानन । अडूसा । विसौंटा ।

पित्तपापड़ा—पर्पट । वरतिक्त । पर्पटक । पांशुपर्य्याय । कवचनामक । त्रियष्टि । तिक्त । चरक । वरक । अरक । रेणु । तृष्णारि । शीत । शीतप्रिय । पांशु । कलपाङ्ग । वर्मकण्टक । कृष्णशाख । भगन्ध । सुतिक्त । रक्तपुष्पक । पित्तारि । कटुपत्र । नक्र । शीतवल्लभ । दवनपापड़ा ।

करञ्ज—नक्तमाल । पूतिक । पूतिपत्र । पूतिकरंज । कैडर्य । कलिमार । पूतिपर्ण । दृढफल । रोचन । करज । करंजक । उदकीर्य । चिरबिल्व । प्रकीर्य । षडग्रन्थ । वृत्तपर्ण । गुच्छफल । स्निग्धपत्र । तपस्वी । विषारी । घृतपर्णक । षडग्रन्था । हस्तिवारुणी । अंगारवल्ली । शाङ्गष्ठा । काकघ्नी । करमाण्डिक ।

केवाँच—कपिकच्छु । आत्मगुप्ता । शुकशिम्बा । कपिप्रभा । शुकपिण्डी । स्वयंगुप्ता । कण्डूरा । शुकशिम्बिका । जड़ा । अध्यण्डा । प्रावृषायणी । ऋष्यप्रोक्ता । मर्कटी । सद्यः शोथा । प्रावृषा । अजहा । वानरी । गात्रभंगा । कच्छूमती । कच्छुरा । ऋषभ । जटा । व्याघ्रा । लांगली । कुण्डली । चण्डा । दुरभिग्रहा । अजडा । बदरी । गुरू । आर्षभी । काशीलोमा । व्यङ्गा । वृष्या । कौंछ ।

बीजबन्द—बला । वाट्यपुष्पी । समांशा । ओदनिका । भद्रा । मोटापाटी । वाटिका । प्रहासा । खिरैटी । बरियारा ।

सहदेई—महाबला । पीतपुष्पी । सहदेवी । वर्षपुष्पा । देवसहा । गन्धवल्ली । महागन्धा । मृगा । मृगरसा । वर्षपुष्पी । वाट्या । वाट्यायनी । सहदेवा । बृहद्गला । मङ्गलार्थ प्रसादनी ।

कपास—कार्पासी । तुण्डकेरी । समुद्रान्ता । बदरा । पटद । वादरा । सूत्रपुष्पा । वदरी । कार्पासिका । कर्पाससारिणी । कर्पासी । चव्या । तुला । गुड । मरूद्भवा । पिचु । वादर । पटलुन । छादन ।

बाँस—वंश । त्वक्सार । कर्मार । त्वचिसार । तृणध्वज । शतपर्वा । यवफल । वेणु । मस्कर । तेजन । किलाटी । पुष्पघाती । बृहत्तृण । किष्कुपर्वा । वन्य । सुपर्वा । तृणकेतुक । कंटालु । कंटकी । महाबल । दृढ़ग्रन्थी । दृढ़पत्र । क्षमुद्रुम । धानुष्य । दृढ़काण्ड । कीचक । कुक्षिरन्ध्र । षट्पदालय । कमठ । मृत्युबीज । वादनीय । फलान्तक । पर्वयोनि । दुरारुह ।

नर्कट—महानल । वन्य । देवनाल । नलोत्तम । स्थूलनाल । स्थूलदण्ड । सुरनाल । सुरद्रुम । नल । धमन । विभीषण । लालवंश । नट । नटी । नर्त्तक । नरसाल । नरसल ।

मूँज—भद्रमुञ्ज । मुञ्ज । शर । बाण । तेजन । मुञ्जात । स्थूलदर्भ ।

सुमेखल । मौंजी । तृणाख्य । ब्रह्मण्य । तेजनाह्वय । वानीरक । मुँजनक । शीरी । दुर्मूल । दृढ़तृण । बहुप्रज । रजन । शक्रभंग । रामसर । मूज ।

कास—काश । सुकाण्ड । काशे । नादेय । नीरज । काकेक्षु । वायसेक्षु । इक्षुरस । शिरि । इक्षुगन्धा । काशी । काशा । अमरपुष्पक । इक्षारी । शारद । दर्भपत्र । काण्ड । कच्छुलकारक । काँस ।

कुशा—कुश । दर्भ । बर्हि । सूच्यग्र । यज्ञभूषण । कुरव । पवित्र । याज्ञिक । ह्रस्वगर्भ । कुतुप ।

विदारीकन्द—विदारी । क्षीरविदारी । इक्षुगन्धा । इक्षुवल्ली । क्षीरवल्ली । पयस्विनी । महाश्वेता । ऋक्षगन्धिका ऋष्यगन्धा । क्षीरकन्द । क्षीरलता । पयःकन्दा । बिलैयाकन्द । बिलारीकन्द । दूधविदारी ।

मूसली—मुसली । खलनी । तालमूली । तालिक । अर्शोघ्नि । ताली । सुवहा । तालपत्रिका । गोधापदी । हेमपुष्पी । भूताली । दीर्घकन्दिका । महावृष्या ।

[मुसली दो प्रकार की होती है, सफेद और स्याह ।]

सतावर—शतमूली । महाशीता । भीरुपत्री । शतावरी । बहुसुता । भीरु । इन्दीवरी । ऋष्यप्रोक्ता । नारायणी । अहेरु । अभीरु । महापुरुष । दन्ता । रंगिणी । कांचनकारिणी । मदभंजिनी । शतपत्रिका । स्वादुरसा । लघुपर्णिका । विश्वस्ता । वैष्णवी । कार्ष्णी । दुर्मना । तैलवल्ली । अर्धकण्टका । सुपत्रिका । महौषधि । फणिजिह्वा । जटा । मूला । सुवीर्या । महती ।

असगन्ध—अश्वगन्धा । कट्टुका । अश्वावरोहक । हया । वाराहकर्णी । तुरगी । बल्या । बाजीकरी । काम्बुका । अश्वारोहा । बलजा । बाजिनी । पलाशपर्णी । वातघ्नी । काला । श्यामला । गन्धपत्री । पुण्या । वरगात्रकरी ।

इन्द्रायन (इनारूफल)*—इन्द्रवारुणिका । चित्रा । विशाला । गज-

---

* इन्द्रायन की बेल अधिकतर खारी भूमि में होती है । फल सूक्ष्म, कांटेदार लालरंग का होता है और इसका फूल पीले रंग का होता है । दूसरे प्रकार का इन्द्रायन पीले फल वाला भी होता है, जो रेतीली भूमि में उत्पन्न होता है । यह अत्यन्त कडुवा होता है ।

चिर्भिटा । मृगेर्वारु । क्षुद्रसहा । चित्रफला । ऐन्द्री । गवाक्षी । मरा । पिटंकोकी । मृगादनी । इन्द्रा । अरुणा । गवादनी । इन्द्रचिर्भिटी । सूर्या । विषघ्नी । गणकर्णिका । माता । सुकर्णिका । सुफला । तारका । वृषभाक्षी । पीतपुष्पा । इन्द्रवल्लरी । हेमपुष्पी । विषलता । अमृता । कपिलाक्षी । इनारू ।

सनाय—कल्याणी । हेमपत्री । रेचनी । स्वर्णपत्रिका । मलहारिणी । मलसारिणी । भेदिनी ।

नील—नीली । नीलिनी । नीला । मेघवर्णा । कुत्सला । दूली । क्लीतकिका । काला । नीलपुष्पिका । मधुपर्णिका । रंजनी । श्रीफली । तुत्था । तूणी । दोला । अक्लीका । काली । श्यामा । शोधिनी । भद्रा । भारवाही । मोचा । कृष्णा । व्यञ्जनकेशी । चारटिका । गन्धपुष्पा । रंगपत्री । स्थिररंगा । वृन्तिका । विजया । स्थिररागा ।

सरफोंका—कण्ठपुंखा । कंठालु । शरपुंखा ।

गोरखमुंडी—महाश्रावणिका । भूकदंबिका । लोचनी । कदम्बपुष्पिका । अव्यथा । तपस्विनी । मुण्डी । महामुण्डी । विकचा । क्रोडचूडा । पलंकषा । स्थविरा । लोतनी । अलम्बुषा । वृद्धा । छिन्नग्रन्थिका । बोड़ा । मुड़ली ।

लटजीरा (ओंगा)—अपामार्ग । शैखरिका । धामार्गव । मयूरक । प्रत्यक्पर्णी । किणी । स्थलमंजरी । मर्कटी । दुरभिग्रह । वाशिर । कंटी । अघाट । क्षुरक । पाण्डुकण्टक । कुब्ज । चिरचिटा ।

तालमखाना—कोकिलाक्ष । काकेक्षु । इक्षुर । क्षुरक । क्षुर । भिक्षु । काण्डेक्षु । इक्षुबालिका । शृंखला । शूरक । पिच्छिला । त्रिक्षुर । शुक्लपुष्प । कुलाहक । कैलया । मखान्न । पद्मबीजाभ । पानीयफल ।

घीक्वार—सहा । घृतकुमारी । अफला । सुरमा । मृदु । स्थलेरुहा । अजरा । अमरा । वीरा । तरुणी । रामा । कपिला । अदला । मण्डला । माता । रसायनी । कण्टकिनी । घीगुवार । ग्वारपाठा । कुवारपाठा । घीकुआर । कन्या ।

रामबाँस—क्षुद्रकेतकी । तृणकेतकी । रज्जुदात्री । दध्यदण्डा । काककेतकी । रामबान् ।

गदह पूरना—पुनर्नवा। नीला। श्यामा। नील पुनर्नवा। नीलिनी। विष खपरा। साँठ। नीली साँठ।

भँगरैया—भृंगराज। नील भृंगराज। नीलपुष्प। पावन। सुनीलक। कुकुर। भाँगरा। केशराज। भँगरा। महाभृंग।

सन—शण। निशादन। पटसन। सुनसुनियाँ। सनई।

सोमलता—सोमवल्ली। सोमक्षीरी। द्विजप्रिया। सोमा। चन्द्रवल्लरी। महागुल्मा। गुल्मवल्ली। यज्ञवल्ली। सोमक्षीरा। यज्ञाङ्गा।

आकाशबौर—अमर वेल। अकास बौर। दु:स्पर्शा। आकाशबेल।

शंखाहुली—शंखपुष्पी। मेध्या। सुपुष्पी। पीतपुष्पी। चण्डा। कौड़ियाली। वनमालिनी। विष्णुक्रान्ता।

अंधाहुली—अर्कपुष्पी। पयस्या। सूर्यवल्ली। क्षीरिणी। वक्रलस्या। दुराधर्षा। शीता। शीतला। सितपर्णी। दांधयार।

लज्जावन्ती—छुईमुई। लजाहुर। लाजवन्ती। लज्जालु। समङ्गा। रक्तपादी। ताम्रा। खदिरका। कन्दिरी। स्पृक्का। संकोचिनी। लज्जा। स्पर्शलज्जा। स्वगुप्ता। वशिनी। महौषधि।

ब्राह्मी—वयस्था। मत्स्याक्षी। सुरसा। ब्रह्मचारिणी। सोमवल्लरी। सरस्वती। सौम्या। सुरश्रेष्ठा। सुवर्च्चला। वैधात्री। कपोतवेगा। दिव्यतेजा। महौषधि। मण्डकमाता। मेध्या। वीरा। भारती। वरा। परमेष्ठिनी। दिव्या। शारदा।

गाजुबां—गोजिह्वा। गोभी। खुरसा। दार्विपत्रिका। दर्वी। अधःपुष्पी। खरपत्री। गोजिया।

कुकरौंदा—कुकुन्दर। ताम्रचूड़। सूक्ष्मपत्र। कुक्कुरद्रु।

सुदर्शन—सुदर्शना। सोमवल्ली। चक्राङ्गी। मधुपर्णिका। चक्राह्वा। दध्यानी। वृषकर्णी।

चाय—चाह। चाहा। चविका। चा।

माजूफल—मायाफल। माइफल। माइका। छिद्राफल। मायि। माजूफर।

तमाखू—सुरती। क्षारपत्रा। कृमिघ्नी। धूम्रपत्रिका।

इसरगोल—ईषदगोल। श्लक्ष्णजीर। स्निग्धजीर। ईसबगोल।

सालममिश्री—अमृता। जीवनी। जीवा। सुधीमूली। वीरकन्दा। प्राणदा।

लालमिर्च (मिरचा)—कटुवीरा। तीक्ष्णा। अजडा। कुमरिच। रक्तमरिच।

मेहदी—रंजका। रंजिनी। नखरंजिनी। सुगन्धपुष्पा। रागांगी। यवनेष्टा। मेदिका। रागगर्भा। कोकदन्ता।

बिधारा—वृद्धदारु। जीर्णदारु। जीर्णा। फंजी। अजरा। सुपुष्पिका। सूक्ष्मपत्रा।

हर्रं*—हर्रा। हर्रें। हरीतकी। अभया। पथ्या। पूतना। कायस्था। अमृता। हैमवती। अव्यथा। चेतकी। श्रेयसी। विजया। शिवा। वयस्था। जीवन्ती। रोहिणी। भिषग्वरा। प्राणदा। सुधा। वल्या। पाचनी। प्रथमा। शाका। हरडा। शक्रसृष्टा।

बहेड़ा—बिभीतकी। कलिद्रुम। कल्पवृक्ष। संवर्त। अक्ष। बिभीत। कर्षफल। बहेडुक। कासघ्न। तिलपुष्पक।

---

* जाति भेद से हर्र सात प्रकार की होती है। विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती, और चेतकी। हरड की प्रशंसा में तो यहाँ तक लिखा है कि—

"हरीतकी मनुष्याणां मातेव हितकारिणी।
कदाचित् कुप्यते माता, नोदरस्था हरीतकी ॥"

—(राजवल्लभ)

अर्थात् हर्रे मनुष्यमात्र को माता के समान सुख देनेवाली है। कदाचित् माता कुपित भी हो जाय, परन्तु उदर-स्थित हरीतकी कभी भी मनुष्य का अहित नहीं करती।

सोंठ—शुण्ठी । महौषधी । विश्वा । शुष्कार्द्र । भेषज । नागर । विश्वौषध । कण्टूत्कटक ।

अदरक—आर्द्रक । शृङ्गवेर । कटुभद्र । कटूत्कट । वर । कन्हर । सैकतेष्ठ । अपाकृष्णक । राहुच्छन्न । शार्ङ्ग । मच्छाक । आर्दिका । आदी ।

मिर्च (काली)—मरिच । पवित । श्याम । वेणुज । यवनप्रिय । बल्लीज । धर्मपत्तन । कोल । ऊषण । शिरोवृत्त । मृष्ट ।

मिर्च (सफेद)—सित मिरच । शीतोत्थ । सितवल्लीज । बालक । बहुल । धवल । चन्द्रके ।

पीपल—पिप्पली । मागधी । कृष्णा । चपला । चंचला । कणा । उपकुल्या । वैदेही । तिक्त तण्डुला । उष्ण । शौण्डी । कोला । कटी । कटुबीजा । सूक्ष्म तण्डुला । पीपर । कोरंगी ।

पिपरामूल—पिप्पलीमूल । ग्रन्थिक । चटकाशिर । कणामूल । कोलमूल । चटिका । कटुमूल । पत्राख्य । मागध ।

चीता—चित्रक । अनलनामा । पाठी । व्याल । ऊषण । कृष्णवर्त्मा । जातवेदा । बर्हि । विभाकर । विभावसु । बृहद्भानु । वैश्वानर । शिखावान । सप्तार्चि । हिमाराति । हिरण्यरेता । अग्नि । शार्दूल । चित्र । माली । हवि । शम्बर । द्वीपी । शूर । कुट । पाची । दारुण । अतितीव्र । मार्जार ।

[**नोट**—अग्नि के जितने नाम हैं, वे सब चीता के भी पर्याय हो सकते हैं ।]

सौंफ—शतपुष्पा । मधुरिका । माधुरी । तापसप्रिया । गन्धाधिका । घोषवती । सुगन्धा । छत्रा । शालेय । सितच्छत्रा । अतिच्छत्रा । मिसी । घोषा । पोतिका । अवाक् पुष्पी । कारवी । मिश्रेया । वनपुष्पा ।

मेथी—मेथिका । मेथिनी । दीपनी । वेधनी । गन्धबीजा । ज्योति । गन्धफला । वल्लरी । चन्द्रिका । मन्था । मिश्रपुष्पा । कैरवी । कुञ्चिका । बहुपर्णी । पीतबीजा । मुनीन्द्रिका ।

अजवायन—यवानी । दीप्यक । दीप्य । भूतिक । अजमान । यवनिका ।

यवाग्रज। उग्रगन्धा। यवाह्वा। ब्रह्मदर्भा। यवसाह्व। दीपनी। वातारि। यमानिका। उग्रा। अजमोदिका। अजमोदा।

अजमोद्—अजमोदा। खराश्वा। मयूर। दीप्यक। मोदा। ब्रह्मकुशा। कारवी। लोचमस्तक। वस्तमोदा। मर्कटी। मोदिनी। ब्रह्मकोशी। विशल्या।

जीरा-सफेद—शुक्लाजाजी। जाजी। जीरक। कणा। दीर्घक। कणजीरक। अजाजी। श्वेतजीरक। कणरह्वा। जीरा। मितदीप्य। सितजीरक।

जीरा-स्याह—कृष्णजाजी। जरणा। सुगन्धा। पट्ट। कालजीरक। वर्षाकाली। हृद्या। उद्‌गार। शोधिनी। भेदिनी। रुच्या। नीला। नीलकणा। कश्मीरजीरका। कालमेषी। कृष्णजीरक।

मगरैला—कालाजाजी। स्थूलजीरक। पृथिवी। पृथुका। कुञ्चिका। कुञ्ची। दिव्या। काला। स्थूलकणा। जीर्णा। तरुणी। सुषवी। पतिंवरा। भेषज। कृष्णा। शाली। कालिका। बृहज्जीरक। कलौंजी। मगरइल।

धनियाँ—धान्यक। धन्याक। धन्य। धनिक। छत्रा। कुस्तुम्बुरी। वितुन्नक। शाकयोग्य। सूक्ष्मपत्र। जनप्रिय। कुनटी। धाना। वेधक। धान्य-बीज। अल्लका। हृद्यगन्धा। वेशाष। निःसार।

कालीजीरी—बृहन्याली। क्षुद्रपत्र। अरण्यजीर। कण।

हींग—हिङ्गु। शूलद्विट्। रमठ। जतुक। जतु। दीप्त। सहस्रवेधि। जन्तुघ्न। सूपाङ्ग। सूपधूपन। हिङ्गुक। रामठ। पिण्याक। वाल्ही। ग्राहिणी। मधुरा। केसर। शूलहृत। भूतारि। रक्षोघ्न। जरण। भेदन।

बच—बालवच। उग्रगन्धा। गोलोमी। शतपर्विका। मंगल्या। जटिला। तीक्ष्णा। गालिनी। लोमशा। विजया। उग्रा। वच्या। कांगा। भद्रा। इक्षुपर्णी। स्मारणी। बोधनीया। भूतनाशिनी। जलजा। मेध्या। शुक्रा। भोगवती। कर्षिणी। वचा।

कुलींजन—कुलञ्ज। गन्धमूल। तीक्ष्णमूल। कुलंजन।

चोपचोनी—चोवचीनी। द्वीपान्तरवचा। अमृतोपहिता।

अकरकरा—आकारकरभ। आकल्लक। अकल्लक। आकरकरा।

बाबीरंग—वायविडंग । भस्मक । मोघा । विडंग । कैराल । केवल बेल्ल । तण्डुल । विडंगा । क्रिमिकंटक । रसायन । पावक । गर्दभ । चित्रा । वातारि । गह्वरा । कापाली । वरा । वृषणासना । चित्रबीजा । भाभीरंग ।

वंशलोचन—तुगाक्षीरी । शुभा । वांशी । त्वक्क्षीरी । वंशलोचना । क्षीरा । वंशजा । तुगा । शुभ्रा । वैणवी । कर्मरी । श्वेता । कर्पूररोचना । तुंगा । पिङ्गा । वंशशर्करा । वंशरोचना । रोचनिका ।

तीखुर (तवाखीर)—तवक्षीर । पयःक्षीर । यवज । गवयोद्भव । गोधूमज । पिष्टिका । तण्डुलोद्भव । तालसम्भूत । तालक्षीर ।

समुद्रफेन—फेन । डिण्डिर । अब्धिकफ । अर्णवज । सिन्धुकफ । जलहास । फेनक । श्वेतधामा । वार्द्धिफेन । सुफेन । पयोब्धिज । सामुद्र । शुष्काशुल्क । विंध्याह्व । दधिफेन । सारमल ।

काकोली—शीतपाकी । पयस्या । क्षीरा । मेदुरा । वायसोलिका । वीरा । धीरा । शुक्ला । स्वादुमांसी । वयस्था । जीवन्ती । मधुरा । पयस्विनी । कायस्थिका ।

क्षीरकाकोली—पयस्या । महावीरा । पयस्विनी । अष्टमी । क्षीरशुक्ला । सुकोली । क्षीरविषाणिका । जीववल्ली । जीवशुक्ला । क्षीरवल्ली । क्षीरमधुरा ।

मुलेठी—मधुयष्टी । यष्टी । यष्ट्याह्वा । यष्ट्याह्विका । मधुक । यष्टिका । यष्टीक । क्लीतक । यष्टि । मधुस्रवा । क्लीतन । मधुम । मधुवली । मधूली । मधुरसा । अतिरसा । मधुरनाम । शोषापहा । सौम्या । स्थलयष्टी । मुलहटी । मुलैठिका । जलयष्टी ।

कबीला—कम्पिल्ल । काम्पिल्ल । कम्पिल्लक । कर्कश । चन्द्र । रक्ताङ्ग । रोचना । रेचनी । पिकाङ्ग । लघुपत्रक । रेची । रञ्जक । लोहिताङ्ग । रक्तफल । बहुपुष्प ।

अमलतास—आरग्वध । राजवृक्ष । व्याधिघात । चक्रपरिव्याध । सम्पाक । चतुरंगुल । शम्याक । आरेवत । प्रमेह । कृतमाल । सुवर्णक । मन्थान । रोचन । दीर्घफल । स्वर्णपुष्प । हिमपुष्प । कण्डूघ्न । महाकर्णिकार । ज्वरान्तक । अरुज ।

स्वर्णाङ्ग। कुष्ठसूदन। कर्णाभरणक। आरोग्यशिम्बी। आमहा। शेफालिका। नक्तमाल। घनबहेड़ा।

कुटकी—तिक्ता। अरिष्टा। चक्राङ्गी। कटु। कटुका। शकुलादनी। कटुरोहिणी। जननी। मत्स्यपित्ता। शतपर्वा। द्विजाङ्गी। कृष्णा। कृष्णभेदा। महौषधि। अञ्जनी। कटंवरा। केदारकटुका।

चिरायता—भूनिम्ब। किरात। रामसेनक। किरातक। अनार्यतिक्त। चिरात्तिक्त। तिक्तक। चिराटिका। कैरात। हैम।

इन्द्र जौ—यव। कलिंग। भद्रयव। कालिंगक। वत्सक। शक्रबीज। कुटज। भद्रज। इन्द्रयव।

[**नोट**—कुटज के बीज को इन्द्रजव कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है। एक सफेद रंग का जो मीठा होता है और दूसरा काला जो कडुआ होता है।]

मैनफर—मदनफल। छर्द्दन। पिण्डीनट। करहाट। कण्ठ। मरुबक। शल्यक। विषपुष्पक। पिचुक। शल्य। रामच्छर्द्दनक। धाराफल। तगर। राठ। घण्टाल। करहर। मैनफल। मयनफल।

मालकँगुनी—ज्योतिष्मती। महाज्योतिष्मती। तीक्ष्णा। कंगुनी। तेजोवती। बहुरसा। कनकप्रभा। सुवर्णनकुली। लवणा। सुरलता। अग्निफला। अग्निगर्भा। शैलसुता। सुतैला। सुवेगा। वायसी। तीव्रा। काकाण्डी। गीर्लता। पीता। यशस्विनी। मेध्या। मेधावती। धीरा। उमीच्छिनी।

पुष्करमूल—पोहकर मूल। पौष्कर। पुष्कर। वीर। पद्मकर्ण। पद्मपर्ण। पुष्करणी। काश्मीर। ब्रह्मतीर्थ। मूलपुष्कर। पुष्कर। जटा। पद्मपुण्य। सागर। शूर। सुमूलक। शूलघ्न।

केकड़ा सिंगी—कर्कटश्रृंगी। श्रृंगी। कुलिंगी। चक्रा। महाघोषा। कर्कटी। चक्राङ्गी। घोषा। शिखरी। नताङ्गी। वक्रा। विषार्णिका। चन्द्रास्पदा।

कायफर—कट्फल। त्वक्फल। कुम्भी। कुमुदिका। श्रीपर्णिका। कैटर्य।

काफल। कुम्भिपाकी। पुरुष। कुमुदी। सोमवल्क। सोमवृक्ष। रोहिणी। नाशानु। भद्रारञ्जनक। भद्रा। लघुकाश्मर्य। श्रीपर्णी। कायफल।

मजीठ*—मञ्जिष्ठा। विकसा। जिंगी। समंगा। काला। कालमेषिका। मण्डूकपर्णी। भण्डीरी। योजनवल्ली। काण्डीरी। रञ्जनी। रक्ताङ्गी। रक्तयष्टी। रक्ता। भण्डी। लतायष्टी। हेमपुष्पी। मण्डिल। हरिणी। गौरी। वप्रा। रोहिणी। चित्रलता। चित्राङ्गी। विजया। मंजूषा। छत्रिणी। अरुणा। ताम्रवल्ली। चोल।

लाही (लाह)—लाक्षा। कीटजा। राक्षा। क्षतघ्नी। रक्तमातृका। जतु। याव। अलक्त। गराषिका। खदरिका। रङ्गमाता। पलङ्कषा। द्रुमव्याधि। क्रिमिजा। जतुका। गर्णधका। लाख। पलाशी। गन्धमादिनी। रक्ता। दीप्ति। नीला। द्रवरसा।

हलदी*—हरिद्रा। निशाह्वा। पीता। युवती। हेमरागिणी। काञ्चनी। क्षणदा। गौरी। मेदघ्नी। वरवर्णिनी। गन्धपलाशिका। सुवर्णवर्णा। मङ्गलप्रदा। कावेरी। उमा। वर्णवती। पिञ्जा। पीतबालुका। रंजनी। निशा। बहुला। वर्णिनी। वराङ्गी। अनेष्टा। घर्षिणी। विषघ्नी। पिङ्गा। मङ्गल्या। मङ्गला। लक्ष्मी। भद्रा। शिफा। शोभा। शोभना। योषित्प्रिया। क्रमिघ्नी। हरदी। ह्रद्विलासिनी। जयन्ती।

आमा हलदी—अम्बाहलदी। दार्वीभेद। आम्रगन्ध। सुरभिदारु। सुरभि। पद्मपत्रा। सुरनायिका। कपूर हलदी। आमियाहलदी।

[**नोट**—इसके लेप से अभिघात से उत्पन्न हुआ सूजन दूर होता है।]

---

* यह लाल रंग की लकड़ी होती है। पहले जब कि रंगने की बुकनी नहीं चली थी, तब इसीको लोग लाल रंग के लिए व्यवहार में लाते थे। इसको कूट कर पानी में भिगो देते हैं, फिर आग पर चढ़ाकर औटा लेने पर पक्का लाल रंग तैयार हो जाता है।

* एक प्रकार की लाल हलदी होती है, जिस से कुंकुम या रोली बनती है। दूसरी काली होती है, जिसे कचूर कहते हैं। यह कड़वी होती है।

दारु हल्दी—दार्वी। दारुहरिद्रा। द्वितीयाभा। पर्जनी। कपीतक। पीतद्रुम। कलियक। हरिद्रु। पचम्पचा। मर्मरी। पीतिका। पीतदारु। स्थिर-रागा। कामिनी। कटंकटेरी। पर्जन्या। पीता। दारुनिशा। कामवती। हेमकान्ति। पीतत्वक। पीतचन्दन। निर्दिष्टा। काष्ठरजनी। हैमवती।

रसवत—रसोत। रसांजन। तार्क्ष्यशैल। रसगर्भ। रसाग्रज। कृतक। वीर्याञ्जन। अग्निसार।

बकुची—सोमराजी। कृष्णफला। बाकुची। सोमवल्ली। पूतिफली। बेजानी। कालमेषिका। अवल्गुज। सुवल्ली। कृष्णा। चन्द्रलेखा। पूतिफला। कालमेषी। बांगुजी। ऐन्दवी। शूलोत्खा। सिता। सितावरी। चन्द्री। सुप्रभा। बल्गुजा। काम्बोजी। शशिलेखा। असितत्वचा। बायची। बावची।

चकवँड़—चक्रमर्द। प्रपुन्नाट। मेषलोचन। पद्माट। एडगज। चक्री। तर्किण। तर्किल। प्रपुन्नड। तर्वट। उरणाख्य। पवाड़। पमाड़।

अतीस—अतिविष। अतिविषा। श्वेता। विषा। अरुणा। घुणवल्लभा। शृङ्गीका। विश्वा। शृङ्गी। श्वेतकन्दा। भृंगी। विषरूपा। विरूपा। श्वेतवचा। माद्री। भंगुरा। मृद्वी। शिशुभैषज्य।

लोध—लोध्र। लोध्रक। तिरीटक। शाबर। शुक्ल। गालव। मार्जन। तिल्दुक। लत्तकर्मा। बलिप्रिय। तिलक। काण्डनील। हेमपुष्पक।

पठानी·लोध—पट्टिकालोध्र। क्रमुक। स्थूलवल्कल। पट्टी। जीर्णपत्र। लाक्षाप्रसादन। पट्टिका। जीर्णबुध्न। शाबर। अक्षिभेषज।

भिलावाँ*—भल्लातक। भल्लात। भेला। अरुष्कर। वह्निनामा। वीरतरु। भूतनाशन। शैलबीज। धनुर्वृक्ष। शोकनुत्। स्नेहबीज। रक्तहर। अग्निक।

---

* 'अग्नि' शब्द के जितने पर्य्याय हैं वे सब 'भिलावाँ' के भी पर्य्याय हो सकते । इसके अतिरिक्त गुण के अनुसार भी कितने पर्याय शब्द बना लिये जा सकते हैं, जैसे—वातारि (वायु को नाश करनेवाला), अर्शोहित (बवासीर में हितकारी) शोथहृत् (सूजन को दूर करने वाला) इत्यादि।

पोस्ता (अफीम का फल)—खसफल। खाखसफल। उल्लसत्फल। खस्खस-फल। पोस्तकेडोरे।

खसखस (पोस्ते के दाने)—खसबीज। खाखसतिल। सूक्ष्म तण्डुल। सुबीज। सूक्ष्मबीज। तिलभेद। खसतिल। पोस्ता का दाना।

गुर्च (गिलोय)—गुडूची। अमृतवल्ली। कुण्डली। चक्रलक्षणा। मधु-पर्णी। सोमवल्ली। विशल्या। तन्त्री। निर्जरा। वत्सादनी। छिन्नरुहा। तन्त्रिका। अमृता। जीवन्तिका। गुडुची। वातरक्तारि। उद्धारा। पित्तघ्नी। वरा। ज्वरारि। श्यामा। सुरकृता। रसायनी। छिन्ना। भिषकप्रिया। कुण्डलिनी। वयस्था। नाग कुमारिका। छिन्निका। चन्द्रहासा। चक्रक्षणिका। धीरा। देवा। निर्मिता। चक्राङ्गी।

पान—नागरबेल। नागबेल। नागवल्ली। ताम्बूल। नागिनी। दिवा-मीष्टा। पर्णलता। सप्तशिला। भक्षपत्रा। मुखभूषण।

[**नोट**—सर्प शब्द के किसी पर्य्याय के साथ 'लता' वाचक पर्याय जोड़ देने से 'पान' का बोधक हो जायगा। बहुधा पान के भीटे पर सर्प रहा करते हैं]

साबूदाना—साबू। सागू। सागूदाना।।

[अँग्रेजी शब्द "सैगो" से बना है इसका वृक्ष खजूर वा ताड़ के वृक्ष के समान होता है।

१५. गन्धादि वर्ग

कपूर*—कर्पूर। ओषधीश। सोमसंज्ञ। सिताभ्रक। शिला। हिमांशु। शीतांशु। चन्द्रभस्म। निशापति। तरुसार। रेणुसार। हनु। वेधक। शीतमरीच। विधु। शीतमयूख। घनसार। ग्लौ। हिमबालुका। इन्दु। गौर। स्फटिकाभ्र। हिमोपल।

[नोट—'चन्द्रमा' शब्द के जितने पर्याय हैं वे सब 'कपूर' के भी पर्याय हो सकते हैं।]

कस्तूरी—गन्धधूलि। मृगमद। मृगनाभिजा। अण्डजा। नाभी। मिश्रा। योजनगन्धिका। गन्धशेखर। मृगनाभि। मार्ग। मदलता। धूपसञ्चारी। वातामोद। मदनी। वेधमुख्या। मार्जारी। सुभगा। सहस्रवेधी। कामान्धा। मृगाण्डजा। ललिता। श्यामला। मोदिनी। सहस्रभित्।

चन्दन—श्रीखंड। मलयज। भद्रश्री। गोशीर्ष। सर्पेष्ट। ग्राम्य। रोहिण। पीतसार। महार्ह। तिलपर्ण। मङ्गल्य। चन्द्रद्युति। पावन। पटीर। एकाङ्ग। भद्राश्रय। भोगिवल्लभ। शीतल।

लालचन्दन—ताम्राभ। ताम्रसार। रक्तचन्दन। रञ्जन। रक्तसार। कुचन्दन। तिलपर्णी। क्षुद्रचन्दन। कुमोद। पत्राङ्ग। पतङ्ग। प्रवालफल। भास्करप्रिय।

अगर—अगरु। क्रिमिज। लोह। राजार्ह। वंशिका। लघु। कृष्ण। वर्णप्रसादन। पातका। भृंगज। अनार्यक अधार। अग्निकाष्ठ। प्रवर। योगज।

देवदारु—सुरदारु। द्रुकिलिम। भद्रदारु। देवकाष्ठ। पीतद्रु। शतपादप। किलिम। स्नेहवृक्ष। मस्तदारु। दारुक।

---

* कपूर के १३ प्रकार हैं. यथा—पोतास (बरास), भीमसेनी, सितकर, शंकरावास, पांशु, पिञ्ज, अब्दसार, हिमबालुक, जूतिका, तुषार, हिम, शीतल, पत्रिकाख्य।

तगर—कुटिल। लघुष। नत। जिह्म। दीपन्। कुञ्चिन। वक्र। कालानुसारि। शठ। महोरग। पादिक। विनम्र। नहुषाख्य। दीन। तगरक।

गुगुल—गुग्गुल। कालनियास। पलंकष। महिषाक्ष। पुट। जटायु। कौशिक। धूर्त्त। देवधूप। शिव। पुर। कुम्भ। उलूखलक। कुम्भोलु। कुम्भोलूखलक। सर्वसह। उष। कुम्भी। कुन्ती। उद्दीप्र। पवनद्विष्ट। भवाभीष्ट। निशाटक। जटाल। भूतहर। शाम्भव। दुर्ग। वायुघ्न। देवेष्ट। मरुदिष्ट। रक्षोहा। रूक्षगन्धक। दिव्य। गूगल। भैंसा गूगल।

राल—धूना। सर्जरस। देवधूप। यक्षधूप। विरूप। वह्निवल्लभ। कलकल। काल। कलयज। सर्वरस। बहुरूप। सालज। धूपन। धूनक। शालसार। शालवेष्ट। ललत। देवेष्ट। सुरभि। क्षण।

गन्धाबिरोजा—श्रीवास। सरलस्राव। वृक्षधूपक। श्रीवेष्ट। वेष्टसार। रसावेष्ट। श्रीपिष्ट। पद्मदर्शन। पायस। वृकधूप। सरलद्रव। रक्तशीर्षक। रसाह्व। यास। यवास। घृताह्वय। दध्याह्वय। क्षीराह्वय। श्रीरस। चितागन्ध। सरलांग। धूपाङ्ग। तिलपर्ण। विरोजा।

लौंग—लवङ्ग। देवकुसुम। श्रीसंज्ञ। भृङ्गार। तीक्ष्ण। लव। वारिज। लवङ्गक। शेखर। प्रसून। श्रीपुष्प। दिव्य। तोयाधिप्रिय। वारिपुष्प। तीक्ष्णपुष्प। चन्दनपुष्प।

जायफल*—जातीफल। फलजाती। सुमनःफल। कोषक। जातीकोष। जाती। राजभोग्य। जातिशस्य। शालूक। मालतीफल। मज्जसार। पुट। मदशौंड।

जावित्री—जातिपत्री। जातिकोषी। जातिकोषा। पत्रिका। सुमनपत्रिका। सौमनसायिनी। मालती।

---

* जायफल के वृक्ष जावा, सुमात्रा आदि टापुओं में होते हैं। इसके फल को जायफल तथा इसकी छाल के भीतर लाल गुच्छ होता है उसे जावित्री कहते हैं। सूखने पर जावित्री पीले रंग की होती है।

इलायची-बड़ी—एला। स्थूलएला। बहुला मलेया। बृहदेला। त्रिपुटा। त्रिदिवोद्भवा। सुरभित्वक्। महिला। कन्याकुमारी। कुमारिका। पृथ्वी। गोपुटा। कायस्था। कान्ता। घृताची। भद्रैला। एलीका। गर्भसम्भवा। ऐन्द्री। इन्द्राणी। निष्कुटी। बाला। गन्धालीगर्भ। पूर्बी इलायची। लाल इलायची।

छोटी-इलायची—सूक्ष्मैला। वधःस्था। त्रुटि। द्राविड़ी। तीक्ष्णगन्धा। उपकुञ्चिका। कोरंगी। भृगपर्णिका। पुत्था। त्रिपुटा। छर्दिकारिपु। पुटिका। चन्द्रसम्भवा। कपोतवर्णी। चन्द्रबाला। बहुला। निष्कुटी। कुनटी। गौरांगी। गर्भारा। गन्धफलिका। श्वेतैला। चन्द्रिका। गुजराती। इलायची। सफेद इलायची।

शीतलचीनी—कङ्कोल। कङ्कोलक। कोलक। कोषफल। फलक। तैलसाधन। कोरक। काकोल। कृतफल। कटुकफल। कटुक। काल। मरिच। माधोवोचित। द्वेष्य। मागधोषित। द्वीपसम्भव। कबाबचीनी। कंकोला।

नागकेशर—चाम्पेय। केशर। कनकाह्वय। राजपुष्प। भुजंगाख्य। इभाख्य। पुष्परेचन। केसरी। नागकिञ्जल्क। नागीय। रुक्म। हेम। पिञ्जर। फणिकेशर। पुन्नागकेशर। नागपुष्प। नागेश्वर। फलक।

दालचीनी*—दारुचीनी। तज। भृङ्ग। वराङ्ग। रामेष्ट। विञ्जुल। त्वच। उत्कट। चोल। गुडत्वच। सूतकट। हृद्य। मुखशोधन। शकल। सिंहल। वल्य। सुरस। कामवल्लभ। बहुगन्ध। वनप्रिय। लटपर्ण। वर। सैंहल। दारुलिता।

तेजपात—तेजपत्र। तज। पत्रक। गन्धजात। पत्र। पाकरंजन। दलाह्वय। राम। गोमेद। वसनाह्वय। छदन। दल। पालाश। अंकुश। वास। तापस। इष्टगंध। रोमश। तेजपत्ता। तमालक। पत्रज।

बालछड़—जटामासी। जटी। पेषी। लोमशा। जटिला। मिसि। तपस्विनी। हिंस्रा। मिषिका। चक्रवर्त्तिनी। नलद। वह्निनी। किरीतिनी।

---

* दालचीनी का पेड़ सिंहल, मालाबार, कोचीन, चीन, आदि देशों में अधिकता से होता है। इसकी पतली शाखाओं की छाल को ही दालचीनी कहते हैं। इसके फूल से तेल व इत्र बनता है।

भूतजटा । क्रव्यादी । पिशिता । पिशी । पेशिनी जटाला । माता । अमृतजटा । मृगभक्षा । पूतना । सेवाली । गौरी । कनुचर । छरीला ।

खस—उशीर । उसीर । नलद । अमृणाल । समगंधिक । सेव्य । अभय । जलाशय । लामज्जक । लघुभय । अवदाह । इष्टकापथ । अवदात । इन्द्र । जलवास । वीरणमूल । गांडरमूल । शिशिर । सुगन्धिमूल । कम्भु । कटायन । वीरभद्र । वीर ।

गोरोचन*—गोरोचना । गोपित्त । वन्दनीया । शोभा । मनोरमा । वन्द्या । रुचिरा । शोभना । शुभा । मङ्गला । गौरी । पिङ्गा । मङ्गल्या । शिवा । पीता । गौमती । गव्या । चन्दनीया । कांचनी । मेध्या । रोमा । श्यामा । भूतविद्राविणी । नंदिनी । गोपित्तसम्भवा । गोलोचन ।

नख—व्याघ्र नख । करज । व्याघ्रयुध । चक्रकारक । कूटस्थ । नखाङ्क । चक्री । चक्रनख । व्यस्रफल । द्वीपिनख । खपुर । व्यालायुध । व्यालबल ।

नखी—हनु । हट्ट विसासिनी । शुक्ति । शंख । कोलदल । खुर । नखरी । शंखनख । नागहनु । पाणिज । बदरीवच । रूप्य । पण्यविलासिनी ।

सुगन्ध बाला—बालक । वारिद । बाल । केश नामक । ह्रीबेर । कचामोद । वरपिङ्ग । बर्हिष्ठ । उदीच्य । वज्र । वारि ।

[**नोट**—पानी तथा बाल (केश) के जितने पर्य्याय हैं, वे सब इसके भी पर्य्याय हो सकते हैं ।]

पद्मकाठ†—पद्मक । मलय । चारु । पीतरक्त । सुप्रभ । पीत । पीतक ।

---

* गोरोचन गाय के मस्तक का पित्त होता है। इसका रंग पीला होता है। यह अनेक प्रकार से व्यवहार में आता है। इसका तिलक लगाकर वशीकरण करते हैं।

† पद्मकाठ का वृक्ष केदारजी वा हिमालय पर्वत पर होता है। इसको घिसकर पीने से गर्भधारण हो सकता है। यदि गर्भपात होने को हो तो गर्भ स्थिर हो जाता है।

मालेय। शीतल। शुभ। केदारज। पद्मवृत्त। पद्मगन्धि। पद्मकाष्ठ। केदार। पद्माक। पद्माख।

नागरमोथा—गांगेय। कुरुबिल्व। भद्रमुस्त। कुटन्नट। भद्रमुस्ता। भद्रमुस्तक। गुन्द्रा। कक्षोत्था। वराही। ग्रन्थि। भद्रकाशी। कशेरू। क्रोडेष्टा। कुरुविन्दाख्या। सुगन्धिग्रन्थिला। हिमा। बल्या। कच्छोला। अर्णोद। वारिद। अब्द। मोथा। भद्रमोथा। नागरमुस्ता। नादेयी। वृषध्मांक्षी। कच्छरुहा। चूडाला। पिण्डमुस्तक। नागरोत्थ। कलापिनी। चक्रांक्षा। शिशिरा। चारुकेसरा। उच्चटा। श्रीभद्रा।

छरीला*—शैलाख्य। वृद्ध। गिरिपुष्पक। शीतशिव। सुभग। शिलासन। शीतल। शैल। शैलज। कालानुसार्य। शिलादद्रु। शिलेय। शलक। गृह। स्थविर। पलित। जीर्ण। भूरि छरीला।

कचूर—कर्चूर। मुख्य। द्राविड। कल्पक। शठी। कश्यं। दुर्लभ। गन्धमूलक। गन्धसार। जटाल।

कपूर-कचरी—पलाशी। षडग्रन्था। सुव्रता। गन्धारका। ग्रन्थमूलिका। गन्धवधू। पृथुपलाशिका। गन्धमूली। कर्पूर। सटी। कर्बुर। सुगन्धासटी। गन्धोली। शठिका। पलाशिका। समुद्रा। तूणी। दूर्वा। गन्धा। कृष्णहरिद्रा। हिमोद्भवा। सौम्या। गंधपलाशी।

पुदीना†—व्यञ्जन। वान्तिहारी। रुचिश्य। शाकशोभन। सुगन्धिपत्र। अजीर्णहर। पुदिन।

---

* इसे पत्थर का फूल भी कहते हैं। यह पहाड़ों पर पाषाण में से ही उत्पन्न होता है। खूनी बवासीर की अकसीर दवा है।

† पुदीना मूलतः चीन देश का है, वहीं से भारत में आया है। प्राचीन न होने के कारण प्राचीन वैद्यक ग्रन्थों में इसका वर्णन नहीं है, केवल 'निघण्टु रत्नाकर' में जो नवीन ग्रन्थ है इसका वर्णन मिलता है। पिपरमेंट का पौधा पुदीना का ही एक भेद है।

१६. मधु वर्ग

मधु (शहद)*—पुष्परस । मकरंद । मरंद । मरंदक । क्षौद्र । माक्षिक । माक्षीक । कुसुमासव । पुष्पासव । पवित्र । पित्र्य । पुष्परसाह्वय । माध्वीक । सारघ । मक्षिकावान्त । वरटीवान्त । भृंगवान्त । पुष्परसोद्भव । शहद । सहत ।

मोम—मधूच्छिष्ट । मयन । मधुशेष । सिक्थक । मादन । मध्वाधार । मदनक । मधूषित । शिक्थ । काच । विघस । उच्छिष्ट । क्षौद्रेय । पीतराग । स्निग्ध । द्रावक । मक्षिकाश्रय । मधूत्थित ।

काँजी—काञ्जिक । कुण्डल । धान्यमूलक । कुल्माष । कुल्माषाभियुत । आरनालक । सौवीर । आवन्तिसोम । वीर । कुंजल । अभियुत । कांचिक । तुषाम्बु । संधान । गृहाम्ल । महारस । शुक्तचुक ।

मदिरा (शराब)—मद्य । प्रसवा । हाला । हलिप्रिया । अमृता । वीरा । माधवी । सुरा । परिश्रुत । वारुणी । इरा । कादम्बरी । मत्ता । प्रमत्ता । सीता । सन्धान । आसव । गुडारिष्ट । मध्वारिष्ट । मदिष्ठा । हारहूर । कल्प । परिप्लुता । महानन्दा । मधुलिका । मदनी । मधूल । कल्या । अद्रिजा । शुण्डा । मैरेय । बुद्धिहा । सिंदुर रसना । दारू । सिन्धुसुता । हेय । कश्य । अपूता । मार्द्वीक ।

[**नोट**—खजूर की मदिरा को खजूरी, ताड़ की मदिरा को ताड़ी कहते हैं । औषधियों के क्वाथ से बनी हुई मदिरा को अरिष्ट कहते हैं, जिसका प्रयोग औषधि रूप से होता है ।]

---

* विभिन्न प्रकार की मक्खियों द्वारा संचित किया हुआ पुष्परस 'मधु' वा शहद कहलाता है, जो जाति भेद से आठ प्रकार का होता है :—

"माक्षिकं भ्रामरं क्षौद्रं, पौत्तिकं छात्रकं तथा । आर्घ्यमौद्दालकं दालमित्यष्टौ मधुजातयः" ॥ अर्थात्—माक्षिक, भ्रामर, क्षौद्र, पौत्तिक, छात्रक, आर्घ्य, औद्दालक, तथा दाल नाम से मधु आठ प्रकार का होता है ।

ईख—इक्षु। दीर्घच्छद। भूरिरस। गुड़मूल। असिनपत्र। मधुतृण। मधुयष्टि। विपुलरस। गुड़दारु। कोशकार। रसाल। इक्षुर। असिपत्रक। पयोधर। कर्कोटक। वंश। कान्तार। सुकुमारक। अधिपत्र। वृष्य। मृत्युपुष्प। गन्ना। पौंड़ा। ऊख।

गुड़—इक्षुसार। मधुर। रसपाकज। शिशुप्रिय। सितादि। रसज। अरुण। खण्डज। द्रवज। सिद्ध। अमृत सारज। मोदक। इक्षुरसक्वाथ। गण्डोल। मधुबीजक। स्वादुखण्ड। गुल। स्वादु।

खाँड़—खण्ड। रसोद्भवा। शुक्ला। सुपिष्टा। पाण्डुरा। पंशुलका। शक्कर।

चीनी—शर्करा। शुक्ला। मीनाण्डी। सिता। बालुकात्मजा। अहिच्छत्रा। सिकता। शुभ्रा। शुद्धा। सितोपला। शुक्लोपला। शार्क। श्वेता। मत्स्यण्डिका। गुडोद्भवा।

[नोट—येही नाम मिश्री, कन्द आदि के भी हैं।]

१७. गोरस वर्ग

दूध—दुग्ध । क्षीर । पय । स्तन्य । पीयूष । उधस्थ । अमृत । दोहज । अवदोह । दोहापनय । बालजीवन ।

दही—दधि । पयस्य । मङ्गल्य । विरल । दधिद्रप्स । घनेतर । क्षीरज ।

मलाई—क्षीरफेन । क्षीरसन्तानिका । साढ़ी । बालाई ।

खोआ—खोया । मावा । किलाट ।

छेना-पानी—मोरट । (फाड़े हुए दूध का पानी)

छेना—तक्रपिण्ड ।

मट्ठा—तक्र । दण्डाहत । घोल । गोरसज । कट्वर । द्रव । अम्ल । कंकर । मथित । मलिन । भग्नसंधिक । गोरस । कालशेय । विलोडित । छाछ । उदश्वित । माठा ।

मक्खन—म्रक्षण । नवनी । नवनीत । सरज । सार । नोनी । मन्थज । दधिसार । कलम्बुट । क्षीरसार । क्षीरसत्व । नवोद्धृत । माखन । लवनी । नैनू ।

घी—घृत । आज्य । हवि । सर्पि । पुरोडास । आज । नवनीतक । पवित्र । वह्निभोग्य । तैजस । अभिघारक । तोयद । पीथ । अमृत । होम्य । आयु । जीवन ।

दूध का फेन - क्षीरहिण्डीर । शार्कर ।

दुहेड़ी—(दूध दूहने का पात्र)—गोदोहनी । गोदोहनपात्र । पारी । दोहनी ।

गोसमूह—गोधन ।

दही जमाने का पात्र—दहेंड़ी ।

तृतीय खण्ड

१. मनुष्य वर्ग

शरीर—कलेवर। गात्र। वपु। संहनन। वर्ष्म। विग्रह। काय। देह। मूर्ति। तनु। तनू। क्षेत्र। पुर। घन। अङ्ग। पिण्ड। भूतात्मा। स्वर्गलोकेश। स्कन्ध। पञ्जर। कुल। बल। प्राणागार। वपुष। करण। वेर। संचर।

अङ्ग—अवयव। प्रतीक। अपघन। गात्र। गात।

शिखा—चूड़ा। केशपाशी। जूटिका। जुटिका। चुरकी। केशी। शिखण्डिका। चोटी। चुटैया। चुण्डी (चुन्दी)।

सिर के बाल—कुन्तल। केश। बाल। शिरोरुह। कच। चिकुर। अलक। शिरसिज। मूर्द्धज। अस्त्र। वृजिन। श्याम।

[स्त्रियों के सिर के बाल—केशपाश। केशसमूह। जूरा। जूटा। (झोंटा)। घुँघराले बाल—कैश्यमलक। कुन्तल। कुञ्चित केश।]

चोटी—धम्मिल। वेणी। कबरी। प्रवेणी।

सिर—शिर। शीश। शीर्ष। मूर्द्धा। मस्तक। माथ। कपाल। खोपड़ी। उत्तमाङ्ग। मुण्ड। मुण्डिका। मूँड़।

ललाट—लिलार। माथा। अलिक। बेंदी। भाल। गोधि। भाग्यमणि। मस्तक। शंख। महाशंख। कपालक। ललाटक।

जटा—कपर्दक। बद्धकच। जूड़ा। जटाजूट। शटा। जटी। जूट। जुटक। शट। कोटीर। जूटक। हस्त।

[जटाधर, जटाटङ्क = शिव। जटाज्वाला = आग की लपट। जटाधारी = ऋषि मुनि।]

कान—कर्ण। श्रवण। श्रुति। श्रोत्र। शब्दग्रह। श्रव। वचोग्रह।

कनपटी—मलपट। कच्चा। गण्ड। गण्डस्थल। करट। कटक।

भौंह—भ्रू। तन्द्री। भृकुटी। भवँ।

बरौनी—पक्ष्म । अक्षिलोम । नेत्रच्छदरोम । गरुत् । पक्ष्मः । नेत्रकिञ्जल्क । बरुनी ।

आँख—लोचन । नयन । नेत्र । अक्षि । ईक्षण । प्रेक्षण । दृश् । वीक्षण । दृष्टि । दृक् (दृग) । अम्बक । विलोचन । रक्षिणी । चख । चक्षु ।

आँख की पुतली—तारका । तारा । सितारा । पुत्तली । कनीनिका । तारिका ।

आँख का गोला—बिड़ाल । कोया । नेत्रपिण्ड । गोलक ।

आँख का कोना—अपाङ्ग । कोण । नेत्रांत । कनखी । दृष्टिकोण ।

पलक—नेत्रच्छद । पपनी । निमेष । पल । निमीलन ।

गाल—कपोल । गण्ड ।

नाक—घ्राण । गन्धवहा । घोणा । नासा । नासिका । नस ।

ओठ—होठ । ओष्ठ । सृक्किणी । अधर ! रदनच्छद ।

ठुड्डी—चिबुक । हनु । ठोढी । दाढ़ी ।

मूँछ-दाढ़ी—श्मश्रु । मुच्छ । मोछ ।

मुंह*—आनन । मुख । आस्य । लपन । वदन । वक्त्र । तुण्ड ।

जीभ—जिह्वा । रसना । रसज्ञा । गिरा । वाणी । वाचा ।

दाँत—दन्त । रद । दशन । रदन । द्विज ।

जबड़ा—दंष्ट्रा । डाढ़ । जमा । चौहड़ । चौभड़ ।

तालु—तालू । काकुद । तारू ।

कंठ—गल । गला । गलंकिक ।

गरदन—ग्रीवा । शिरोधि । कंधर । कंध ।

[नोट—गरदन की हड्डियों को 'हँसली' कहते हैं]

कंधा—स्कंध । कंध । अंश । भुजमूल । भुजसंधि ।

---

* मुख के मुख्यतः दो भाग हैं । एक तो 'मुखमण्डल' जिसमें नाक, ओठ, गाल, आँख, ललाट और मुख सम्मिलित हैं । दूसरा 'मुख-गह्वर' जिसमें दाँत, जबड़े, ओठ, जीभ, तालु, कण्ठ और गला सम्मिलित हैं ।

घंटी (घाँटी)—कृकाटिका । घाड़ । घाटा । घेंटो । घेघा । गटई ।

छाती—वक्षस्थल । वक्ष । क्रोड़ । उर । वत्स । हृदय ।

स्तन—कुच । उरोज । पयोधर । वक्षोज । थन । उरज । वक्षोरुह ।

स्तन का अग्रभाग—चूचुक । चूँची ।

काँख—कक्ष । बगल । कँखौरी । बाहुमूल ।

कमर—कटि । कट । श्रोणि । श्रोणिफलक । ककुद्मती । श्रोणिफल । श्रोणी । करभ । काञ्चीपद । कलत्र । कटीर । कटी । कटिपार्श्व । पार्श्व । लंक । मध्यांग ।

कूल्हा (कमर की हड्डी)—स्फिच । कटिप्रोथ । कुल्हा । कुल्हड़ ।

पेट—उदर । जठर । कुक्षी । कौंख । तुन्द (तोंद) । पिचण्ड ।

नाभि—तुन्दकूपी । उदरावर्त । पेडू । बोड़ी । बोड़री । ढूढ़ो (ढोढ़ी) ।

पीठ—पृष्ठ ।

पँसली—पार्श्व । पँजरी । पञ्जरी । पञ्जर ।

लिंग (पुरुषेन्द्रिय)—शिश्न । शेफ । मेढ् । मेहन । लांगु । ध्वज । रागलता । व्यङ्ग । कामाङ्कुश । साधन । स्वरस्तम्भ । उपस्थ । मदनाङ्कुश । कन्दर्प मुषल ।

अण्डकोष—भण्ड । मुष्क । वृषण ।

योनि—भग । वराङ्ग । उपस्थ । काममन्दिर । रतिगृह । जन्मवर्त्म । अधर । अवाच्यदेश । प्रकृति । अपथ । स्मरकूप । अप्रदेश । प्रकृति । पुष्पी । संसारमार्गक । गुह्य । स्मरागार । रत्यङ्ग । रतिकुहर । कलत्र । अघ । कन्दर्पसन्धि । गर्भद्वार । गर्भमुख । गर्भस्थाया । कन्दर्पसम्बाध । स्त्रीचिह्न ।

नितम्ब—श्रोणी । चूतड़ । चूत ।

मलद्वार—गुद । गुदा । विष्ठानिर्गमद्वार । अपान । पायु । गुह्य । गुद-वर्त्म ।

मलाशय—कोष्ठ । मलकोष्ठ । कोठा ।

मूत्राशय—बस्ति । पेडू ।

[यह नाभि के नीचे होती है ।]

जाँघ—जघन। सक्थि। ऊरु। जंघा। स्तम्भ। शरीरस्तम्भ।

घुटना—जानु। गुल्फ। पादपृष्ठ (पदपीठ)। पादग्रन्थि। घुटिका। घुटिक। घुण्टक। घुण्ट।

पैर—चरण। पाद। पद। अंघ्रि। टाँग। टँगरी।

एड़ी—पार्ष्णि। एड़।

पैर का तलवा—पदतल। तरवा।

पैर की उँगली—पादाङ्गुली। पदपल्लव। प्रपद। पदाग्र।

बाँह*—भुज। भुजा। बाहु। मंज। प्रवेष्ट। दोष। बाह। बाहा। [वैदिक पर्य्याय—आयती। च्यवना। अप्लवाना। अनीशू। विनंगृस। गभस्ति। कवस्न। भूरिज। त्विपस्ती। शक्करी। भरित्रे।]

केहुनी—टिहुनी। कूर्पर। कफोणी।

[केहुनी के ऊपर मुश्क को 'प्रगण्ड' और केहुनी के नीचे भाग को 'प्रकोष्ठ' कहते हैं।]

हाथ—कर। हस्त। पाणि। पंचशाख। शय।

हथेली—करतल। हस्ततल।

हथेली के पीछे—करप्रष्ठि। हस्तप्रष्ठि। कर पृष्ठ।

उँगुली—अँगुरी। करपल्लव। कररुहन। अंगुलीय। करशाखा। करज। अँगुली।

[क्रम से पाँचों अंगुलियों के नाम—१. अंगुष्ठ (अँगूठा), २. तर्जनी, ३. मध्यमा, ४. अनामिका, ५. कनिष्ठा।]

गावा—अँगुलिसन्धि। गाई।

अँगुली के पोर—पोरा। पर्व।

नाखून—नँह। नख (नष)। पुनर्भव। कररुह। नखर।

---

* जो भुजाएँ घुटने के नीचे तक लटकती हों, वे 'आजानुबाहु' कही जाती हैं। उनका लक्षण 'गारुड़ी' अध्याय ६६ में इस प्रकार दिया है—"निर्मांसौ चैव भग्नाल्पौ, श्लिष्टौ च विपुलौ भुजौ। आजानुलम्बिनौ बाहू वृत्तौ पीनौ नृपेश्वरे॥"

इन्द्रिय*—गो। इन्द्री। हृषीक। गुणकरन। कृषि। विषयी। अक्ष। करण। ग्रहण।

थप्पड़—चपत। चपेट। थपेड़ा। झापड़। प्रहस्त। प्रतल। चाँटा।

घूँसा—मुष्टिक। मुष्टिका। मुक्का (मूका)।

गोद—क्रोड़। अंक। अँकवार। गोधी। अङ्कम।

रोम—लोम। तनूरुह। रोआँ।

रोमाञ्च (खड़े रोयें)—पुलक। त्वक् पुष्प। त्वगङ्कुर। रोमोद्‌भेद।

आँसू—नेत्राम्बु। बाष्प। अश्र। अश्रु। अस्र। अस्रु। चक्षुजल। रोदन। लोच।

पसीना—स्वेद। स्वेदन। उष्मा। ताप। प्रस्वेद।

चमड़ा—चाम। चर्म। त्वक्। त्वचा। सृग्धरा।

लोहू—रक्त। रुधिर। शोण। शोणित। कौणप। असृक। क्षतजात। लोहित।

मांस—पलल। आमिष। माँस। पिशित। तरस। क्रव्य। पल। अस्रज। जाङ्गल। कीर।

चरबी (१)—वसा। वपा। मेद। मेदा।

---

* पाँच कर्मेन्द्रियाँ—हाथ, पैर, मुँह, उपस्थ (लिङ्ग वा योनि), और गुदा। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ—आँख, जिह्वा, नासिका, कान और त्वचा (स्पर्श)। चार प्रकार की अन्तरिन्द्रियाँ—मन, बुद्धि, अहङ्कार, और चित्त।

(१) जो मांस अपनी अग्नि से पकता है उसी से 'मेदा' की उत्पत्ति होती है। मनुष्य के पेट और हड्डियों में चरबी अधिक होती है। जिसका पेट बड़ा होता है उसमें अधिक चरबी समझनी चाहिये। भावप्रकाश में लिखा है कि—

'मेदो हि सर्वभूतानामुदरेष्वस्थिषु स्थितम्।
अत एवोदरे वृद्धिः प्रायो मेदस्विनो भवेत्॥''

मज्जा (१)—अस्थिसार। शुक्रकर। अस्थिस्नेह। अस्थिज। अस्थि-सम्भव। तेज। बीज। जीवन। देहसार।

हड्डी—अस्थि। हाड़। कीकस। कुल्य। मेदज।

वीर्य (२)—रेत। शुक्र। तेज। बीज। इन्द्रिय। जीवन। सार।

रज—(३)—पुष्प। आर्त्तव। ऋतुस्राव। कुसुम। स्त्रीधर्म। मासिक धर्म।

कलेजा—अग्रमांस। बुक्का।

वात(४)—(देखो पृष्ठ १२ में 'वायु' शब्द)

पित्त(५)—अग्नि। तेज। मायु।

कफ(६)—श्लेष्मा (बलगम)।

---

(१) हड्डी से उत्पन्न चरबी को मज्जा कहते हैं। भावप्रकाश में इसकी व्याख्या इस प्रकार है—

"अस्थि यत् स्वाग्निना पक्वं तस्य सारो द्रवो घनः।
यः स्वेदवत् पृथग् भूतः। स मज्जेत्यभिधीयते॥"

हड्डी की अग्नि से पके हुए सारभूत स्निग्ध पदार्थ को मज्जा कहते हैं।

(२) सप्तधातु—रस, रक्त, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र, (वीर्य)—ये सातों मिलकर सप्तधातु कहे जाते हैं।

(३) स्त्रियों को प्रायः बारह वर्ष की अवस्था में रज आरम्भ हो जाता है और प्रतिमास स्राव होता रहता है। गर्भावस्था में स्राव बन्द हो जाता है। प्रायः ५०—६० वर्ष की अवस्था में इसका पूर्ण क्षय हो जाता है।

(४) वात—प्राण, उदान, समान, अपान और व्यान—ये पाँच प्रकार के शरीरस्थ वायु हैं।

(५) पित्त—पाचक, रंजक साधक, आलोचक और भ्राजक—ये पाँच प्रकार के पित्त हैं।

(६) कफ—क्लेदन, अवलम्बन, रसन, स्नेहन, और श्लेष्मण—ये पाँच प्रकार के कफ हैं।

[नोट—वात, पित्त और कफ, इन तीनों की त्रिदोष संज्ञा है।]

नस—स्नायु। स्नसा। वस्नसा। महुर।

नाड़ी—धमनी। शिरा।

लार (थूक)—लाला। खखार। सृणिका। स्यन्दिनी। कफ। श्लेष्मा। थूक।

पिलही (तिल्ली)—प्लीहा। पोला। पिलई (पलही वा पलई)। गुल्म। प्लिहा। तिल्ली।

[नोट—वाम कुक्षि में स्थित मांसखण्ड को प्लीहा कहते हैं।]

यकृत—कालखण्ड। कालखञ्ज। कालेय। कारण्डा। महास्नायु। कालक (जिगर)।

[नोट—दक्षिण कुक्षि में स्थित मांसखण्ड को यकृत कहते हैं।]

अँतड़ी—आँत। अन्तड़ी। अन्त्र। पुरीत। आँती।

फेफड़ा—फुफ्फुस। तिलक। क्लोम। धुकधुकी। हृदय।

त्रिवली—पेटी (पेट के तीन बल)। रोमराजी।

गर्भाशय—गर्भ। जठर। उदर। बच्चादानी। पेट।

गर्भ (गर्भस्थित पिण्ड)—भ्रूण। गर्भपिण्ड। अर्भक। अर्भ।

प्रसव—जनन। प्रसूत।

कान का मैल—कर्णमल। पिञ्जूषा। खूँट।

आँख का कीचड़ (मैल)—दूषिका।

नाक का मैल—नासामल। सिङ्घाण। नकटी। नेटा।

विष्ठा (मल)—मल। मैल (मैला)। पुरीष। विट्। विष्टा। गूथवर्चस्क। गुह। झाड़ा। बीट। टट्टी।

[नोट—गौ के मल को गोबर, भेड़-बकरी आदि के मल को लेंडी वा मेंगनी और घोड़ा आदि के मल को लीद कहते हैं।]

मूत्र—मूत। प्रस्राव। उच्चार (पेशाब)।

पुरुष*—मर्द। पुमान्। नर। ना। पञ्चजन। जन। अर्थाश्रय। अर्थवान्। मानव। मर्त्य। मानुष। मनुष्य। मनु। मदन-सायकाङ्क। मन्मथ-सायक-लक्ष्य। अधिकारी। कर्मार्ह। पूरुष। धव।

स्त्री—योषिता। अबला। योषा। नारी। सीमन्तिनी। वधू। प्रतीपदर्शिनी। वामा। वनिता। महिला। तिय। तिया। कलत्र। मेहरी। दारा।

सुन्दरी स्त्री—सुन्दरी। अङ्गना। भीरु। वामलोचना। कामिनी। प्रमदा। मानिनी। कान्ता। ललना। नितम्बिनी। रमणी। रामा। भामिनी। वरारोहा। उत्तमा। मत्तकाशिनी। तन्वी। पुरन्ध्री। वरवर्णिनी। तनु। तन्वङ्गी (कृशाङ्गी)। कुरङ्गनयना। भामिनी। विलासिनी। सुनेत्रा। अञ्चिभ्रु। ललिता। वासिता। नताङ्गी। त्रिनता।

पतिव्रता स्त्री—साध्वी। सुचरित्रा। सती। मनस्विनी। शुचिचित्ता। पतिभक्ता। पतिपरायणा। भव्या। दिव्या।

कुटुम्बवाली स्त्री—कुटुम्बिनी। पुरन्ध्री।

सधवा स्त्री—जीवत्पतिका। पतिवत्नी। सभर्तृका। सनाथा। सौभाग्यवती। सोहागिन। सोहगिल। विद्यमानपतिका। सावित्री।

विधवा स्त्री—विश्वस्ता। अधवा। जालिका। रण्डा। राँड। यतिनी। यती। अनाथा। पतिहीना। विधवा।

---

* कामशास्त्रानुसार पुरुषों के चार भेद—शशक, मृग, वृषभ और अश्व तथा स्त्रियों के भी चार भेद—पद्मिनी, चित्रिणी, हस्तिनी और शंखिनी माने गये हैं।

अवस्था भेद से पुरुष ६ प्रकार के माने गये हैं यथा—पाँच वर्ष तक कुमार, तन्दुपरान्त १० वर्ष तक पौगंड, पश्चात् १५ वर्ष तक किशोर, इससे ऊपर ३० वर्ष तक युवा, ३० वर्ष से ५० तक प्रौढ़, तत्पश्चात् वृद्ध कहा जाता है। इसी प्रकार स्त्रियों के भी भेद ६ प्रकार के हैं—जन्म से ५ वर्ष तक कुमारी, १२ वर्ष तक कन्या, १५ वर्ष तक मुग्धा वा किशोरी, २५ वर्ष तक युवती वा मध्या, ४० वर्ष तक प्रौढ़ा, तत्पश्चात् वृद्धा कही जाती हैं।

रँडुआ (जिसकी स्त्री मर गई हो)—विधुर। विकल। अपत्नीक।

रजस्वला स्त्री—(१. प्रथम रजोदर्शन होने पर)-मध्यमा। दृष्टरजा। (२. साधारणतः रजस्वला)—पुष्पवती। स्त्रीधर्मिणी। रजोयुक्ता। अवी। आत्रेयी। मलिनी। ऋतुमती। उदक्या। दुरि। पुष्पहासा। विफली। अवीरा। पुष्पिता। निष्फली। म्लाना। पांशुला। सार्त्तवा। एकवस्त्रा।

विगतरजा स्त्री—निष्कला। विगतार्त्तवा। शुद्धा। गतार्त्तवा।

स्वयंवरा स्त्री—वर्या। वरइच्छुका। पतिंवरा।

पति-पुत्रहीना स्त्री—निष्पतिसुता। अवीरा।

सती स्त्री—दुर्गा। देवी। सावित्री। साध्वी। पतिव्रता।

प्यारी स्त्री—प्रिया। प्रेयसी। प्रणयिनी। प्राणदायिनी। ज्येष्ठा। दयिता। वल्लभा। इष्टा। प्राणवल्लभा। रामा। रमणी। वरा। श्यामा। चारुवर्द्धना।

विवाहिता स्त्री—पाणिगृहीता। पत्नी। सहधर्मिणी। भार्या। ब्याही। विवाहिता। द्वितीया। जाया। दारा। सहधर्म्मिणी। धर्मचारिणी। दार। गृहिणी। घरनी। सहचरी। गृह। क्षेत्र। वधू। जनी। परिग्रह। ऊढ़ा। कलत्र।

गर्भवती स्त्री—गर्भिणी। गुर्विणी। अन्तर्वत्नी। ससत्त्वा। आपन्नसत्त्वा। दोहदवती। गुर्वी। उदरिणी। दोपस्ता।

प्रसूता स्त्री—जातापत्या। प्रजाता। प्रसूतिका। जननी। (जच्चा)।

वन्ध्या स्त्री—अफला। बाँझ। विफला। निष्फला। अवकेशी। वृषली। अपत्या। अप्रज।

व्यभिचारिणी—कुलटा। भ्रष्टा। स्वैरिणी। नष्टा। दुष्टा। असती। इत्वरी। खला। पुंश्चली। बंधकी। धर्षिणी। पांशुला। कलहिनी। कुभार्या। छिनाल। रंडी। कामुका। कामातुरा। वृषस्यन्ती। लङ्का। निशाचरी। त्रपारण्डा। छिनारी।

कुटनी—कुट्टनी। शम्भली। दूती। सम्भली। माधवी। रङ्गमाता। अर्जुनी। कुम्भदासी। गणेरुका।

बालक—शिशु। अर्भक। पोतक। शैशववान। बटुक। बटु। मुष्टिन्धय।

किशोरक । शाव । शावक । डिम्भक । डिम्भ । अर्भ । पाक । हितक । गर्भ । माणव । अज्ञ । अबोध । किशोर । लड़का । बेटा ।

बालिका (कन्या)—कन्या । कुमारी । किशोरी । कन्यका । गौरी । रोहिणी । नग्निका । लड़की । बेटी । पुत्री । युवान ।

युवा—जवान । युवक । पट्ठा । तरुण । यून । रमणी ।

युवती—तरुणी । बाला । श्यामा । सुन्दरी । कामिनी ।

प्रौढ़—पोढ़ । अधेड़ । प्रगल्भ ।

प्रौढ़ा—प्रगल्भा । सुवया । श्यामा । चिरिण्टी ।

वृद्ध—बूढ़ । बूढ़ा । बुड्ढा । स्थविर । जर । जरठ । जीन । जीर्ण । जर्जर । प्रवय ।

मस्तिष्क—गोर्द । गोद । मस्तुलुङ्क । (भेजा । दिमाग । मग़ज) ।

शब्द—स्वर । ध्वनि । निनाद । निनद । ध्वान । रव । स्वन । स्वान । निर्घोष । निर्ह्राद । नाद । निस्वान । निस्वन । आरव । आराव । संराव । विराव । संरव । मुखर । घोष । कथन ।

[**नोट**—शब्द दो प्रकार के होते हैं, १. ध्वन्यात्मक—पशुपक्षी, मृदङ्गादि वाद्यों के शब्द, २. वर्णात्मक—जो वर्णों में लिखे जा सकते हैं ।]

दृष्टि—आलोकन । अवलोकन । निरीक्षण । दर्शन । ताक । चितवन । कटाक्ष । दीठ (डीठ) ।

गंध—महक । घ्राण । बू । बास ।

भूख—क्षुत् । क्षुधा । बुभुक्षा । अशनाया । जिघत्सा । भोजनेच्छा ।

प्यास—पिपासा । तृषा । तृष्णा । पानेच्छा । उदन्या । तर्ष । उपलासिका । तास । पियास ।

जँभाई—जृम्भा । जम्भ । जमुहाई ।

छींक—क्षुत । क्षव । छिक्का ।

हँसी*—हास्य। हास। हस। हसन्। घर्घर। स्मित। हासिका।

रोना—रुदन। रोदन। क्रन्दन। विलाप। बिलखना। रोआई।

हिचकी—हिक्का। हुचकी। हेंकटी।

सुनना—श्रवण। श्रुति।

स्वाद—आस्वादन। रस। सवाद।

निद्रा—नींद। शयन। सुषोपति। स्वाप। सुप्त। स्वप्न। संवेश। सुषुप्ति। सुप्ति। स्वप्न।

ऊँघ—तन्द्रा। उँघाई। उपनिद्रा। आलस्य। अलसाई।

आलिङ्गन—लिपटाना। गले लगाना। हिये लगाना। अँकवार भरना। दबोचना। परिष्वंग। परिरंभन। संश्लेष। अङ्गपालि। श्लिषा। उपगूहन।

चुम्बन—चूमा। चुम्मा। मुखसंयोग। अधरामृतपान अधरपान।

मैथुन—प्रसंग। स्त्रीप्रसंग। सहवास। रति। क्रीड़ा। सुरत। निधुवन। केलि। विलास। संभोग। भोगविलास। भोग। व्यवाय। ग्राम्यधर्म। ग्राम्यकर्म।

जीव—प्राण। असु। जान।

आत्मा—ब्रह्म। ब्रह्मरूप। दिव्य स्वरूप। सूक्ष्म देह सूक्ष्मशरीर। ब्रह्मांश। जीव। अर्क। हुताशन।

मन—चित्त। चेत। हृदय। स्वान्त। हृत्। मानस। अङ्ग। अनङ्गक।

बुद्धि—मनीषा। धिषणा। धी। प्रज्ञा। शेमुषी। मति। प्रेक्षा। उपलब्धि। चित्। सम्वित्। प्रतिपत्। ज्ञप्ति। चेतना। मन। मनन। प्रतिपत्ति। मेधा। धारणा। ज्ञान। बोध। पण्डा। प्रतिभा। संख्या। आत्मजा। विज्ञान।

---

* हँसी के ६ भेद—स्मित=मुसकुराना। हसित=दाँत दिखलाते हुए हँसना। विहसित=कुछ बोलते हुए हँसना। उपहसित=नाक फुला कर हँसना। अपहसित=सिर हिलाते तथा आँसू निकलते हुए उद्धत हास। अतिहसित=शरीर कँपाते, ठठाकर, ताली देकर अट्टहास हँसना।

अहंकार*—गर्व । अभिमान । मद । दर्प । स्मय । मान । अवलेप । चित्त समुन्नति । हम । अहंकृति । उद्धत मनस्कत्व ।

कबन्ध—अशिर । अमुंड । रुण्ड ।

मुर्दा—मृत । मृतक । शव । कुणप । क्षितिवर्द्धन ।

भाग्य—भाग । भागधेय । दैव । नियति । सुदिष्ट । विधि । सुदिन ।

अभाग्य—दुर्दैव । कुदिन । दुर्भाग्य । अदिष्ट । विधिवाम । कुसमय ।

(विशेषण बोधक शब्द)

प्रजा—अधीन । आश्रित । सन्तान । जन । शासित ।

धनी—धनवान् । धनिक । ऐश्वर्यशाली । ऐश्वर्यवान् । धनाढ्य । लक्ष्मी-सम्पन्न । प्रभु । महाजन । लक्ष्मीपति ।

दरिद्र—रङ्क । दीन । निर्धन । कंगाल । निस्व । बेबस । दुखिया । अकिञ्चन । भिखारी । भिक्षुक । खिन्न । बपुरा । दुर्गत । ररी । निरीह । रिक्त ।

पंडित (विद्वान्)—कोविद । प्रवीण । विज्ञ । अभिज्ञ । कुशल । कृती । पंडित । दक्ष । पटु । योग्य । शिक्षित । विदुष । निपुण । निष्णात । नागर । आगर । विशारद । विदग्ध । सयाना । वैज्ञानिक । कृतमुख । संख्यावान् । मतिमान् । विद्वान् । कुशाग्रीयमति । कृष्टि । विदुर । बुध । नेदिष्ठ । कृतधी । धीमान् । सुधी । कृतकर्मा । विचक्षण । प्रौढ़ । बोद्धा । सुमेधा । सुमति । तीक्ष्ण । प्रेक्षावान् । विबुध । विदन् । कुशली । विज्ञानी । चतुर ।

मूर्ख—गँवार । मूढ़ । अपढ़ । अज्ञानी । निर्बुद्धि । अबूझ । अबोध । अनजान (अजान) । असमञ्ज । यथाजात । मुग्ध । जड़ । मूक (चुप्पा) । अज्ञ । अनभिज्ञ । अशिक्षित । अबुध । अयोग्य ।

मीठा—मिष्ट । मधुर । मृदु । स्वादु । प्रिय-स्वादु ।

---

* पौराणिक मतानुसार 'अहंकार' तीन प्रकार का होता है। (१) सात्विक—इससे मन की उत्पत्ति होती है, (२) राजस—इससे दशो इन्द्रियों की उत्पत्ति होती है, तथा (३) तामस—इससे सूक्ष्म पञ्चभूतों की उत्पत्ति होती है।

पुनश्च, वेदान्तानुसार 'अहंकार' शरीर विषयक मिथ्या ज्ञान को कहते हैं।

खट्टा—अम्ल । चुक्क । खटरस ।

नमकीन—चरपरा । सलोना ।

तीता—तिक्त । तीत । तीक्ष्ण । [यथा–लाल मिर्च आदि]

कडुआ—कटु । कटुक । [यथा–नीम, चिरायता आदि]

कसैला—कषाय । [यथा-हर्रा, आँवला आदि]

ठंडा—शीतल । शीत । सीर । शान्त ।

गरम—उष्ण । तप्त । तपित । ज्वलन ।

रिक्त—खाली । खोखा । छूछा । खुक्खा । रीता । शून्य ।

सजग—चैतन्य । सावधान । सचेत । चवड़ ।

तैयार—प्रस्तुत । उपस्थित ।

तत्पर—सन्नद्ध । कटिबद्ध ।

पुष्ट—दृढ़ । कठिन । पोढ़ ।

नष्ट—भ्रष्ट । समाप्त । ध्वस्त । मृत । अपचित ।

भाग्यवान—सुकृति । पुण्यवान् । धन्य । भाग्यशाली ।

उदार—महाशय । महेच्छ । हृदयालु । सहृदय ।

पूज्य—मान्य । गण्य । गण्यमान्य । प्रतीक्ष्य । पूजनीय । आदरणीय । श्रद्धेय ।

परीक्षक—जाँचक । अन्वेषक । कारणिक ।

प्रसन्नचित्त—हर्षमाण । विकुर्वाण । प्रमन । हृष्टमानस ।

व्याकुलचित्त—विमन । दुर्मन । अन्तर्मन । व्यग्र । विकल ।

उत्कण्ठित—उन्मन । उत्क । अभिलषित । इच्छित । अभीच्छित । वाञ्छित । प्रलुब्ध । प्रेच्छित । औत्सुक्य ।

सरलचित्त—दक्षिण । सरल । उदार । सीधा । साधु । सज्जन ।

दर्शनयोग्य—दर्शनीय । द्रष्टव्य । मनोज्ञ ।

स्वामी (मालिक)—अधिपति । नायक । अधीश्वर । पति । ईशित्व । अधिभू । नेता । प्रभु । परिवृढ़ । अधिप । आर्य । अवमति । ईश । पालक । अध्यक्ष ।

स्वतन्त्र—अपावृत । स्वैरी । अनियन्त्रित । निरवग्रह । निरयन्त्रिण । यथाकामी । निरर्गल । निरङ्कुश । स्वरुचि ।

पेटू (अपना पेट पालनेवाला)—आत्मम्भरि । कुक्षिंभरि । स्वोदरपूरक । भुक्खड़ ।

विनीत—निभृत । प्रश्रित । नम्र । विनयी । विनयावनत । विनम्र ।

चुगुलखोर—कर्णेजप । सूचक । पिशुन ।

क्रूर—कर्कश । कठिन । निर्दय । निर्मोही । निठुर । घोर । भयंकर । नृशंस । घातुक । पाप । निष्ठुर । क्रूर । टर्रा ।

सज्जन—श्रेष्ठ । संत । साधु । भद्र । शिष्ट । सभ्य । उदार । महाशय । उपकारी । परोपकारी । आर्य । कुलीन । महाकुल । पुङ्गव ।

दुर्जन—दुष्ट । खल । पिशुन । असज्जन । कंटक । पोच । कपटी । पामर । नीच । बर्बर । असाधु । अपकारी । असभ्य । अशिष्ट । अनुदार । असन्त । अभद्र । पतित ।

भयभीत—त्रसित । कादर । कायर । डरपोक । शंकित । सशंक । क्षुब्ध । मोहित । असाहसी । अधीर । भीलुक । भीरुक । दीन ।

कामी—कामातुर । कामार्त्त । मस्त । मदोन्मत्त । कामुक । स्त्रैण । मेहरा ।

व्यभिचारी—कामी । विषयी । लम्पट । कुकर्मी । नष्ट । कुमार्गी । कुपथगामी । कुत्सित । पतित । अधम । लुच्चा । स्त्रैण । परस्त्रीगामी । छिनरा ।

अधम—पतित । नीच । नष्ट । भ्रष्ट । हेय । निकृष्ट । पोच ।

['पतित' और 'दुर्जन' के पर्याय प्रायः समान अर्थवाची होते हैं ।]

उत्तम—श्रेष्ठ । उत्कृष्ट । पवित्र । श्रेयस्कर । ललित । रुचिर । चारु । कान्त । शोभायुक्त । शोभित । मनोरम । मञ्जु । मंजुल । सुष्ठि (सुठि) । सुभग । सुदेश । सुष्ठु । सुहावन । सुघर । सुहाई । ललाम । नीक । सुन्दर । रुचिकर । सरस । कल । वर । प्रकृष्ट । छबीला । कलित । प्रमुख । प्रधान । मुख्य । वर्य्य । प्राग्रय । प्रवर्ह । भद्र । रूर ।

भयंकर—उग्र । दारुण । भीषण । भीष्म । घोर । भीम । भयानक । प्रतिभय । रौद्र । तीव्र । कराल । विकराल । भैरव । भयक । दारुण ।

त्यागी—विरक्त। वैरागी। निस्पृह। विरागी। अतीत। निर्लेप।

आलसी—मंद। बुद। अलस। अनुष्ण। शीतक। सालस। परिमृज।

लम्बा—लम्ब। प्रलम्ब। दीर्घ। सुदीर्घ। दीर्घकाय।

नाटा—ठिगना। ह्रस्व। [अत्यन्त नाटे को 'बौना' वा 'वामन' कहते हैं]

मोटा—तुंदिल। पीन। पीवर। स्थूल। अंसल। मांसल। पृथुलाङ्ग।

पतला—कृश। कृशाङ्ग। दुर्बल। क्षीणकाय। निर्बल। हीनाङ्ग। तनु। तन्वंग।

आरोग्य—स्वस्थ। रोगहीन। पुष्ट। दृढ़। निरोग।

रोगी—रुजी। व्याधिग्रस्त। रुग्ण। क्षीण। सामय। आतुर। विकृत। ग्लान। म्लान। मन्द। अभ्यान्त। अभ्यमित। व्याधित।

अन्धा—अन्ध। नेत्रहीन। अनेत्री। अदृक्। सूर।

काना—काण। एकाक्ष।

बहिरा—बधिर। अश्रुत। एड़। कल्ल। श्रवणापटु। उच्चःश्रव।

गूँगा—मूक। वाक्यरहित। अवाक्। चुप्पा।

कुबड़ा—कुब्ज। कुबरा। गडुल।

नाक-कटा—नकटा। अनासिकी। बिगत नासिकी।

बड़े कानवाले—दीर्घकर्ण। बृहत्कर्ण। लम्बकर्ण।

कानकटा—बूचा। खण्डकर्ण। लघुकर्ण।

लम्बी भुजावाला—दीर्घबाहु। आजानुभुज।

छोटी भुजावाला—टूंटा। डूंठा। कुकर।

हाथ-कटा—लूला। हथकट्टा। शोण।

लँगड़ा—पंगु। पंगुल। अपंग। खंज। खोरा।

सुन्दर—(देखो पृष्ठ १२८ 'उत्तम' शब्द)

कुरूप—दर। कुत्सितरूप। कदाकार। भदेस। कुडौल।

कठोर—दृढ़। पुष्ट। जठर। कठिन। कड़ा।

कोमल—सरल। सुकुमार। मृदु। मृदुल। मुलायम। नरम।

साँवला—श्याम। नील। कृष्णवर्णी। श्यामल। काला। असित। मेचकवर्णी।

गोरा—गौर। धवल। गौराङ्ग।

सफेद—उज्ज्वल। सित। श्वेत। शुभ्र। शुक्ल। पांडुर। अर्जुन। धवल। अवदात।

लाल—रक्त। अरुण। आरक्त। लोहित (रोहित)। श्रोन। रुधिराभ।

पीला—पीत। कपिश। पिङ्ग। पिंगल। कपिल। गौर। पिसंग। सुपीत। हरिद्राभ।

चितकबरा—कर्बुर। चित्रक। कद्रू। कर्मीर। कल्माषक।

हरा—हरित। पालाश। कपि। हरे।

छोटा—लघु। सूक्ष्म। ह्रस्व। अल्प। स्वल्प। क्षुद्र। न्यून। हीन। तुच्छ। औछा। ऊन।

बड़ा—दीर्घ। विशाल। बृहत्। विराट। महा। गुरु। ज्येष्ठ (जेठ)। श्रेष्ठ। बड्र (बड़)। महत्। वृद्ध। बड़हर।

सूक्ष्म—तनु। अणु। त्रुटि। लवलेश। कण। क्षुल्लक। कृश। अनाक। स्तोक। श्लक्ष्ण। अल्प। रंचक।

नया—नवल। नूतन। प्रत्यग्र। अभिनव। नव। नव्य। नवीन।

पुराना—पुरातन। प्राचीन। पुराण। चिरन्तन। दिनी। चिरकालिक।

थोड़ा—किंचित्। लेश। कण। रंच। रचिक। थोर। थोरिक। कछु। कछुक। क्षुद्र। लघु। अणु। अल्प। परिमित। मित। मर्यादित। दभ्र।

[**नोट**—'छोटा' शब्द के सभी पर्याय 'थोड़ा' अर्थ के बोधक होंगे।]

बहुत—अपार। अधिक। ढेर। भूरि। अति। अत्यन्त। अपरिमित। निस्सीम। असीम। अमर्यादित। अतिशय। भृश। अत्यर्थ। उद्गाढ़। तीव्र। नितान्त। गाढ़। प्रगाढ़। दृढ़। अतीव। विशेष। प्रभूत। प्रचुर। बहुल। विपुल। अनेक। निबिड़। घन। निपट। नाना। अदभ्र। अमित। प्रचण्ड। भूय। भूयिष्ठ। प्राज्य। अकुण्ठ। असंख्य। अगणित।

पूर्ण—अशेष । अखण्ड । कृत्स्न । अन्नक । सर्व । पूरा । निश्शेष । अखिन्न । निखिल । समस्त । सकल । कुल । समग्र । सम्पूर्ण । सारा (सारी) । सब । सान्त । निष्पन्न ।

आधा—अर्द्ध । अर्धांश । अद्धा ।

चौथाई—पाद । चतुर्थांश । चौथ ।

चिकना—चिक्कण । स्निग्ध । पिच्छिल । सस्नेह । स्नेह । सनेह ।

रूखा—रूक्ष । खुरखुरा । खद्दरा । खसखसा । खुरदुरा ।

टेढ़ा—कुटिल । खर्व । वक्र । अराल । कुँचित । भग्न । उर्मिमत । नत । वेल्लित । जिह्म । अविद्ध ।

पवित्र—मेध्य । पूत । निर्मल । अमल । शुद्ध । शुचि । प्रयत । पावन । पुण्य । विमल । विशुद्ध । पूता ।

अपवित्र—अशुद्ध । मलिन । मलीन । कच्चर । दूषित । अशुद्ध । अशुचि । अशौच । अपावन । पाप । भली ।

अतिथि—पाहुन । मेहमान । अभ्यागत । गृहागत । आगन्तुक । आवेशिक । आगन्तु । प्राघूर्ण । प्राघूर्णिक । प्राघुणिक । प्राघुण ।

[अकस्मात् घर पर किसी बाहरी व्यक्ति के आजाने वाले को अतिथि कहते हैं]

धूर्त्त—दम्भी । कितव । व्याजी । छली । छद्मी । जिह्म ।

प्रिय—इष्ट । अभीष्ट । इच्छित । वाञ्छित । ईप्सित । प्यारा । अभिलषित । अनुकूल । अपेक्षित । आप्तुमिष्ट ।

पुरवासी—नागरिक । नगरवासी । पौर । प्रज । प्रजन ।

ग्रामवासी—ग्रामीण । गवाँर । गवइँहा । देहाती । ग्राम्य । ग्रामेयक । ग्रामस्थ ।

बटोही—पथी । पंथी । यात्री । पथिक । पाथ । अध्वग । अध्वनीन । अध्वन्य । मार्गी । राही । पान्थ । गन्तु । पथक । यात्रिक । पाथिल ।

थका—हारा । शिथिल । श्रमित । श्रान्त । श्रमी । प्रयासी ।

घृणित—घिनहा। (स्त्री० घिनही)। घिनावन। घिन। बीभत्स। जुगुप्सित। विकृत। घिनौना।

अद्भुत—विचित्र। चित्र। विस्मित। आश्चर्यित।

शान्त—समथ। सुचित्त। समत्व। शमित। श्रान्त। जितेन्द्रिय। शमान्वित। उपशमित। दान्त।

वीर—शूर। विक्रान्त। गण्डीर। तपस्वी।

सीधा—सज्जन। सुहृत्। अवक्र। शुद्ध। प्रगुण। ऋजु। सरलचित्त। साधु। सौम्य। शान्त।

पागल—विक्षिप्त। मतिभ्रष्ट। बौराह। बावला (स्त्री-बावली)। बौरहा।

मौनी—अवक्ता। अभाषी। चुप्पा। अनबोलता। तूष्णीम्भूत। मौनव्रती। मौनयुक्त। नीरव। तूष्णीक।

दानी—दाता। उदार। दानशील। वदान्य। महान्। महाशय। दयालु। देनेवाला। दानकर्ता। दातार। बहुप्रद। दानशौण्ड। दानसागर। दारु। सुचिर। दानीय।

सूम—कृपण। कंजूस। नीच। क्षुद्र। अनुदार। ठस। कदर्य। अदाता। किम्पच। मन्द। कीकट। मितम्पच। खूसट। सूमड़ा।

दानपात्र—दातव्य। दानार्ह। देनेयोग्य।

मुख्य—प्रमुख। प्रधान। प्रवर। उत्तम। वरेण्य। प्रग्य। अग्र। अग्रिय। सुतज्ञ। प्राग्य। प्रवर्ह। प्रवेक। अनवराध्व। श्रेयान्। श्रेष्ठ।

मतवाला—मदी। मत्त। उन्मत्त। क्षीव। उत्कट। शौंड।

पराधीन—अधीन। परतन्त्र। अधीन। नाथवान्। परवश। परवान्।

दयावान्—दयालु। कृपालु। कारुणिक। सूरत।

अपकारी—अनुदार। कृतघ्न। दुर्वृत्त। कुकर्मी। पीड़क। अनिष्टसाधक।

क्षमाशील—सहिष्णु। तितिक्षु। क्षमित। क्षम। सहन। क्षमावान्। क्षमी। शान्तियुक्त। क्षमिता। शक्त। सह। प्रभूष्णु।

क्षमारहित—अक्षम। असमर्थ। क्षमाशून्य। अशक्त।

अधीन—निघ्न (निघिन वा निरघिन)। आयत्त। गृह्यक। अस्वच्छन्द। परतन्त्र। परवश। पराधीन।

अगुआ—अग्रसर। पुरस्सर। प्रष्ठ। पुरोगम। पुरोगा। अग्रगामी।

अशकुन—अपशकुन। असगुन। दुश्शकुन। अशुभ। अमंगल।

उचित—युक्त। ग्राह्य। श्रेयस्कर। योग्य। परिमित।

अनुचित—अयुक्त। अग्राह्य। अयोग्य। अपरिमित।

नंगा—नग्न। वस्त्रहीन। दिगम्बर। अनावृत्त।

हिंजड़ा—नपुंसक। क्लीब। नामर्द। शंढ। वर्षवर।

शत्रु—दुर्हृद्। रिपु। वैरी। आराति। द्वेषी। परिपन्थी। शात्रव। द्विषण। सपत्न। कृतघात। अहित। विपक्षी। प्रतिपक्षी। अपक्ष। अमित्र।

मित्र—सखा। सुहृत्। सहचर। संगी। संघाती। संघी। साथी। मेली। हित। हितू। हितैषी। सपक्ष।

सखी—सहेली। संगिनी। गुँइयाँ। सजनी। आली। अली। सैरंध्री। सहचरी। वयस्था। हितू।

नेता—संचालक। अगुआ। अग्रसर। मुखिया।

कुलीन—महाकुल। कुलश्रेष्ठ। आर्य्य। सभ्य। भद्र। सज्जन। साधु। कुल्य। अभिजात। कौलेयक। जात्य। कौलेय। कुलज। साधुज। सुकुल। सत्कुलज। सद्वंशज। उत्तम।

२. सम्बन्धी वर्ग

माता(१)—अम्बा। अम्बिका। अम्बालिका। सावित्री। जनी। जनित्री। जनयित्री। प्रसू। जननी। ऊक्का। अम्मा। माय। माई। मा। मातु। मैया।

पिता (२)—तात। जनक। वप्ता। जनयिता। जन्मद। गुरु। जन्य। जनिता। वीजी। वप्र। सविता। बाप। वापू। (बाबू)। बप्पा।

पति(३)—अधिपति। स्वामी। ईश्वर। ईश। ईशिता। जीवितेष। परिणेता। रमण। हृदयेश। नर्म्म। कील। सुखोत्सव। अधिभू। नायक। नेता। प्रभु। परिवृढ्। अधिप। धव। नेतार। भरता। भर्त्ता। भरतार। (भतार)। इन्द्र। आर्य। विभु। वर। इन। प्रिय। कान्त। प्राणनाथ। रतिगुरु। पिया।

पत्नी—पाणिगृहीता। पाणिगृहीती। द्वितीया। भार्य्या। सहधर्मिणी। सहभार्या। जाया। दारा। सधर्म्मिणी। दार। धर्मचारिणी। गृहिणी। सहचरी। गृह। क्षेत्र। वधू। बहू। जनी। परिग्रह। ऊढ़ा। कलत्र। मेहर। दयिता।

---

(१) सात प्रकार की मातायें—१. जन्मदात्री माता, २. गुरु की स्त्री, ३. ब्राह्मणी, ४. राजपत्नी, ५. गौ, ६. दूध पिलानेवाली वा सेवा करनेवाली धाय, ७. मातृभूमि।

(२) सात प्रकार के पिता—"कन्यादाताऽन्नदाता च, ज्ञानदाताऽभयप्रदः।
जन्मदो मन्त्रदो ज्येष्ठभ्राता च पितरः स्मृताः॥"
(ब्रह्मवैवर्त्त पुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड, अध्याय ३५)

१. श्वसुर, २. अन्न देनेवाला (पालनकर्ता), ३. ज्ञान देनेवाला,–गुरु, ४. अभय देनेवाला, ५. जन्म देनेवाला, ६. मन्त्रदीक्षा देनेवाला, ७. बड़ा भाई।

(३) साहित्यशास्त्रानुसार पति चार प्रकार के माने गये हैं—१. अनुकूल, २. दक्षिण, ३. धृष्ट और ४. शठ।

प्राणप्रिया। वल्लभा। परिणीता। भूयिष्ठ। गेहिनी। कुलवन्ती। कुलत्री। त्रिया। तिय। तिया। वामाङ्गी। वामा। अङ्गना।

पुत्र—आत्मज। तनय। सूनु। सुत। तनुज। तनूज। अपत्य। दायाद। कुलाधारक। नन्दन। आत्मजन्मा। दारक। स्वज। नन्द। बेटा। पूत। ज।

पुत्री—कन्या। कन्यका। आत्मजा। दुहिता। तनुजा। सुता। अपत्या। पुत्रका। पुत्रिका। स्वजा। जा। तनया। तनजा। नन्दिनी। जाया। दारिका।

पौत्र (पुत्र का पुत्र)—नप्ता। नाती। पोता। पोतड़ा। पुत्रात्मज।

पौत्री (पुत्र की पुत्री)—पोती। पोतड़ी। पुत्रात्मजा।

नाती (पुत्री का पुत्र)—दौहित्र। कुतप। नात। नप्ता।

नतिनी (पुत्री की पुत्री)—दौहित्रा। नातिन। नप्ती। नतिनी।

भाई (सगा)—सहोदर। सोदर। समानोदर। सगर्भ। सहज। भ्राता।

भाई (ज्येष्ठ)—पूर्वज। अग्रज। अग्रिय। वर्य।

भाई (छोटा)— अनुज। कनिष्ठ। लघुभ्राता। यवीय। जघन्यज। जविष्ठ। अवर्य।

बहिन—भगिनी। स्वसा। सहोदरा। सहोदरी। बहनेली (छोटी बहिन को—अनुजा। बड़ी बहिन को – जेष्ठी, जेठी वा अग्रजा कहते हैं)।

दादा (पिता के पिता)—पितामह। आर्यक। आजा। बाबा।

दादी (पिता की माता)—पितामही। आजी। आर्या। (अय्या)।

चाचा—काका। ताऊ। कक्का। चच्चा। पितृव्य।

चाची—काकी। चच्ची। ताई।

बुआ—पितृष्वसा। फूआ। फूफी।

फुफेरा भाई—पितृष्वसेय। पितृष्वस्रीय।

फुफेरी बहन—पितृष्वसेयी। पितृष्वस्रीया।

मौसी—मातृष्वसेय। मासी। मातृभगिनी।

मौसेरा भाई—मातृष्वसेय। मातृष्वस्रीय।

मौसेरी बहन—मातृष्वसेयी। मातृष्वस्रीया।

नाना—मातामह । मातृमह । मातृपिता । नन्ना ।

नानी—मातामही । मातृमही । मातृमाता । आई । मातामहपत्नी ।

मामा—मातुल । मामू । मम्मा ।

मामी—मातुलानी । माँई । मातुला । मातुलपत्नी ।

भान्जा—भगिन्य । भैने । भगिना । भागिनेय । स्वस्रीय । बहनौता । भगिनिज ।

भान्जी—भगिन्या । भैने । स्वस्रीय । भगिनिजा ।

भतीजा—भ्रातृक । भ्रातृज । भ्रातृसुत । भतीज । भ्रातृव्य ।

भतीजी—भ्रातृजा । भ्रातृसुता ।

भौजाई—भ्रातृजाया । भ्रातुर्जाया । भ्रातृभार्या । भाभी । भौजी । सहजन्मह । भ्रातृगेहिनी । प्रजावती ।

बान्धव—स्वजन । कुटुम्ब । ज्ञाति । गोत्रज । बन्धु । परिवार । सगोत्र । गोती । स्व । सकुल्य । समानोदक । अंशक । गंध । दायाद ।

पतोहू [बहू]—पुत्रबधू । श्रुषा । बधू । वहू । बहुरिया ।

सास—श्वश्रू । [पति वा पत्नी की माता]

श्वसुर—ससुर । श्वश्रु । बब्बा । बाबा ।

साला—श्वशर्य । श्याला । श्यालक [पत्नी का भाई]

साली—श्याली । [पत्नी की बहिन] ।

बहनोई—ग्रामहासक । भगिनीपति । बहनेऊ ।

[प्राकृत में—बहिणीवइ]

सरहज—श्यालजा । श्यालजाया । सलहज ।

दामाद—जामाता । दमाद । जमाई । जलाई (जंवाई वा जंवाय) दुहितृपति ।

देवर—देवृ । पतिभ्राता । देवा । देवार । देवान । देवल्लि । द्वितीयवर ।

ननद—नन्द । ननदी । ननान्दा । नन्दिनी । नन्दा । पतिस्वसा । ननान्दरि ।

जेठ (पति का बड़ा भाई)—जेठउत। ज्येष्ठ। जेठउर। भसुर।

पति-पत्नी—दम्पति। जायापती। भार्या-पती।

सौत—सपत्नी। समानपतिका। सवत। सौतिन।

उपपति—जार। यार।

उपपति से उत्पन्न पुत्र*—जारज। कुण्ड। गोलक। दोगला। संकर। गुण्डा।

गोद बैठाया हुआ पुत्र—दत्तक पुत्र। पोष्यपुत्र। पोसपूत।

सन्तान—सन्तति। गोत्रजनन। अपत्य। लड़केबाले। बालबच्चे। प्रजा। तोक। प्रसूति।

समान अवस्था के—समवयस्क। स्निग्ध। सवय। समौरिया।

---

* पति के जीते हुए उपपति से उत्पन्न पुत्र को 'कुण्ड', तथा पति के मर जाने पर उपपति से उत्पन्न पुत्र को 'गोलक' कहते हैं।

३. जाति वर्ग

जाति—कुल। आस्पद। परिवार। कुटुम्ब। बिरादरी। गोत्रिय। वंश। श्रेणी। वर्ग। पंक्ति।

[**नोट**—जाति का 'जात' और पङ्क्ति का 'पाँत' तथा गोत्रिय का 'गोती' अपभ्रंश रूप हैं। अतः ये भी जाति के पर्य्याय हैं।]

ब्राह्मण[1]—द्विज। विप्र। कुलश्रेष्ठ। अग्रजन्मा। भूसुर। द्विजाति। भूदेव। कुदेव। बाड़व। सूत्रकण्ठ। ज्येष्ठवर्ण। मैत्र। अग्रजातक। द्विजन्मा। वक्त्रज। वेदवास। नय। गुरु। ब्रह्मा। षट्कर्मा। द्विजोत्तम। शर्म। बामन। पंडित। महाराज।

[**नोट**—पृथ्वी शब्द के पर्य्याय के साथ 'देव' शब्द जोड़ देने से भी ब्राह्मण का बोधक होगा।]

ब्राह्मण-पत्नी[2]—ब्राह्मणी। बाभनी। पंडिताइन। महराजिन।

क्षत्री—क्षत्रिय। मूर्द्धाभिषिक्त। राजन्य। बाहुज। विराट। क्षत्र। द्विजलिङ्गी। राजा। नाभि। नृप। मूर्द्धक। पार्थिव। सार्वभौम। वर्म। विराज। बाहुज। वीर।

क्षत्री-पत्नी—वीरस्नुषा। वीरमाता। वीरपत्नी। वीरा। राजपत्नी। रानी। महारानी। क्षत्रिया। क्षत्रियाणी। क्षत्रियी। क्षत्राणी। क्षत्रिय-पत्नी।

[**नोट**—पंजाब में क्षत्री जाति को 'खत्री' तथा क्षत्राणी को 'खतरानी' कहते हैं।]

---

१. ब्राह्मणों के छः कर्म—अध्ययन, यजन (यज्ञ-करना) और दान देना—कर्त्तव्य के विचार से, तथा अध्यापन, याजन (यज्ञ कराना) और दान लेना—व्यवसाय के विचार से हैं।

२. पंडिताइन का अर्थ है पंडित की स्त्री; किन्तु पंडिता का अर्थ है जो स्त्री स्वयं विदुषी हो, वह चाहे पंडित की स्त्री हो वा न हो।

कायस्थ*—कूटकृत । पञ्जीकर । करण । दिवान ।

वैश्य—वणिक । बनिया । बनजकार । बिस । ऊरव्य । ऊरुज । अर्य । भूमिस्पृक् । द्विज । विट् । भूमिजीवी । व्यवहर्ता । वार्त्तिक । पणिक । साहु । मोदी । गुप्त । श्रेष्ठ (सेठ) । श्रेष्ठी (सेठी) ।

वैश्य-पत्नी—बनियाइन । सहुआइन । मोदिन (मोदियाइन) । वैश्या । अर्याणी । अर्या । अर्यी ।

शूद्र—अवरवर्ण । वृषल । जघन्यज । पादज । दास । अन्त्यज । अन्त्यजन्मा । जघन्य । अन्त्यवर्ण । पज्ज । चतुर्थ । उपासक । सेवक । सूद ।

शूद्र-पत्नी—शूद्रा । सूदिन । अन्त्यजा । उपासिका । सेविका । दासी ।

चाण्डाल†—अन्त्यज । अस्पृश्य । श्वपच । जनंगम । पुक्कस । दिवाकीर्ति । मातंग । प्लव । अछूत । हरिजन ।

धोबी—रजक । निर्णेजक । शौचेय । कर्मकीलक । धावक । बरेठा ।

धोबी की स्त्री—रजकी । रजकपत्नी । धोबिन । निर्णेजकी । शौचेयी । बरेठन । बरेठिन ।

चमार—चर्मकार । चर्मकारक । चर्मक । त्वचक । चम्मार । चम्मरु । कुरट । पादुकाकार ।

चमार की स्त्री—चमारी । चमारिन । चमाइन । चर्मकारिणी ।

भंगी—मेहतर । चूहड़ा । धरकार । हलखोर (हलाल खोर) ।

धुनियाँ—धुनका । बेहना ।

जुलाहा—तन्तुवाय । तन्दुक । कुविन्द । कोरी ।

---

* ब्रह्मा के शरीर से उत्पन्न चित्रगुप्त के वंशज हैं। आदि काल से ही लेखक, व्यवस्थापक आदि कार्य, न्यायालय के लेखक का कार्य करने के व्यवसायी हैं। इन्हें क्षत्रियवर्ण में रखा गया है।

†चाण्डाल जाति के अन्तर्गत—कोल, किरात, शवर, भील, केवट, पासी, मुसहर, भंगी, डोम, चमार, धोबी, भर, दुसाध, व्याध, नट, बेणुक, (बाँस काटने वाले) आदि हैं। इन्हें अस्पृश्य वा अन्त्यज भी कहते हैं।

अँग्रेज—फिरंगी। गौराङ्ग। गोरा। आङ्गलदेशी। आङ्गलीय।

मुसलमान—यवन। म्लेच्छ। तुर्क (तुरुक)। इस्लामी। मुहम्मदी।

कोलकिरात*—कोलि। शवर। भील। किरात। व्याध। [किरात की स्त्री कोकिराती, किरातिनी, किरातिन कहते हैं।]

लोहार—लौहकार। लोहकारक। व्योकार। अयस्कार। कर्मकार। कर्मार।

बढ़ई—काष्ठकार। तक्षी। वर्धकी। स्यन्दनकार। तरुभेदी। सूत। सूत्रकार।

कहार—स्कंधभार। गोंड। महरा। पनहारा। पनभरा।

ककहा की स्त्री—पनहारी। पनभरी। गोंड़िन। महरी। कहारी। कहारिन।

नाई—दिवाकीर्त्ति। मुंडी। क्षौरी। अन्तवसायी। क्षुरी। नापित। क्षौरकार। नाऊ। छुत्री। वात्सीसुत। नखकुट्ट। ग्रामणी। चन्द्रिल। मुण्ड। भाण्डपुट। न्यायी। नाऊ ठाकुर।

बारी—पत्राली। पत्राजीवी।

ठठेरा—शौल्बिक। ताम्रकुट्ट। ताम्राजीवी। तमेरा। कँसकुट्ट।

अहीर—आभीर। गोप। ग्वाल। गोसंख्य। गोपाल। गोदुह। वल्लव। यादव।

अहीर की स्त्री—आभीर पत्नी। अहिरिन। गोपी। गोपस्त्री। आभीरी।

गडेरिया—अजपोषी। अजी। जाबाल। अजाजीवी।

कुम्हार—कुंभकार। घटक। घटजनन। कुलाल।

कोइरी—काछी।

[नोट—कोयर + ई = सागपात बैचने वाली जाति।]

---

* ब्रह्मवैवर्त्त पुराण के अनुसार लेट नामक पुरुष और तीवर नाम की कन्या से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति है जो छोटा नागपुर से मिरजापुर के जङ्गलों तक फैली हुई पाई जाती है। यह जंगली जाति बहुत प्राचीन काल से है। भील, शबर, किरात आदि इसी के भेद से जान पड़ते हैं।

कुरमी—कुनबी । कूर्मवंशी । कूर्मीय ।

सोनार—स्वर्णकार । रुक्मकार । कलाद । नाडिंधम । पश्यतोहर ।

तेली—धूसर । तैलकार । चाक्रिक ।

कलवार—कलाल । कलार । शुण्डी । शौण्डिक ।

छीपी—रंगरेज । छीपा । रंगक । रंगी । रंगकर । रंगाजीवी ।

दरजी—सूचिक । सौचिक । सौचि । तुन्नवाय । छिपी । सूत्रभिद ।

चुड़िहारा—लाक्षक । आलक्तक । लखेरा । मनिहारा । (स्त्री॰ मनिहारिन) ।

[नोट—ये ही पर्य्याय लाह से बने हुये आलता, महावर, रंग आदि बनाने वालों के लिये लग सकते हैं ।]

माली—मालाकार । मालाकर । मालिक । पुष्पाजीवी । बनार्चक । पुष्पलाव । पुष्पलावक ।

माली की स्त्री—मालिन । मालिनी । पुष्पलावी । मालिकी ।

बहेलिया—व्याध । मृगवधाजीव । मृगयू । लुब्धक । द्रोहाट । मृगजीवन । बलपांशुन । शिकारी । आखेटी । अहेरी । चिड़िमार । मृगहा । जन्तुहा । वागुरिक । जीवान्तक । जालिक । शाकुनिक ।

केवट—[देखो पृष्ठ ४६ जलादि वर्ग]

नट—नर्त्तक । रज्ज्वावतारक । रज्जुजीव । भरतपुत्रक । शैलूष । जायाजीव । शैलालिन । कृशाश्वी ।

भाट—बन्दी । मागध । स्तुतिपाठक । बन्दीजन । लग्न । वैतालिक । वैताल । भट्ट । पशबन्ध । प्रातर्गेय । सूत । मधुक । चारण

कसाई—मांसक । हिंसक । वैतंसिक । कौटिक । मांसिक । कौटकिक । मांसविक्रेता ।

राजगीर—वास्तुकार । गृहकार । गृहकृत । राज ।

कारीगर—शिल्पी । शिल्पकार । कारु । शिल्पकी ।

चित्रकार—चित्रकर । रंगी । चित्रक ।

तमोली—ताम्बूली । बरई । ताम्बूलिक । ताम्बूलकार ।

हलवाई (रसोइया)—सूपक । सूपकार । बल्लव । आरालिक । आन्धसिक । सूद । गुण । पाचक । पाकुक । भक्ष्यङ्कार । पाककर्त्ता । औदनिक । रसोइया । स्वार । सुआर ।

[**नोट**—ये नाम सब प्रकार की रसोई बनाने वालों के हैं ।]

किसान—कृषक । हालक । क्षेत्री । कर्षक । कृषिक । खेतिहर । कृषीवल । कृषिजीवी ।

गवैया—गायक । गाता । गायक । गायन । कथक ।

बजानेवाला—वादक । उपवाद्यकी । महावाद्यकी । वार्तवह । बंशस्फोट ।

बंशी बजानेवाला—वैणविक । वेणुध्म । वेणुक । वेणुपिक ।

मृदंग बजानेवाला—मार्दंगिक । मौर्जिक । मृदंगिया । पखावजी ।

नाचनेवाले पुरुष—नर्त्तक । नट । पोटगल । चारण केलक । तालरेचनक ।

नाचनेवाली स्त्री—नर्तकी । नटी । चारणी । लस्या । लसिका ।

वेश्या—वारस्त्री । गणिका । पतुरिया । रंडी । वारवधू । कंचनी । वाराङ्गना । रामजनी । सामान्या । रूपाजीवा । क्षुद्रा । शालभञ्जिका । झर्झरा । शूला । वारविलासिनी । भण्डहासिनी । लज्जिका । वसुन्धरा । कुम्भा । कामरेखा । बवंटी । पण्याङ्गना । पणाङ्गना । भुजिष्या । भोग्या । सर्ववल्लभा । पुरवामा । मङ्गलामुखी ।

वेश्याओं के गुरु—पीठमर्द । रामजना । कत्थक ।

महन्त—मठाधीश । पीठाधीश । अध्यक्ष । कुलपति ।

पुरोहित (पण्डा)—पुरोधा । पोधा । पौरोहित । पण्डा । सखरावान । प्रोहित ।

पहरेदार—ड्योढ़ीदार । प्रहरी । पौर । प्रतीहार । द्वारपाल । दौवारिक । स्थितदर्शक । वेत्रक । वेत्रधार । द्वारस्थ ।

दूत—संदेशहर । धावन । धापक । चर । चार । प्रणिधि । चटुक । अपिसर्पक । संदेशिया ।

दास—सेवक। भृत्य। किंकर। चेटक। गोप्यक। प्रैष्य। नियोज्य। भुजिष्य। परिचारक। प्रेष्य। प्रेष। प्रैष। परिकर्मी। परिचर। सहाय। उपस्थाता। अभिसर। अनुग। अनुचर। अनुगामी। वृषल।

दासी—परिचारिका। किंकरी। अनुचरी। अनुगामिनी। सहाया। भृत्या। चारि। वृषली। बिधिकरनी। बाँदी।

बाजीगर (जादूगर)—ऐन्द्रजालिक। प्रतीहारक। इन्द्रजालकारक। मायाकारक। कौसुतिक। मायावी। व्यंसक। मायी। मायिक।

चोर—चौर। तस्कर। दस्यु। साहसिक। एकागारिक। मोषक। मलिम्लुच। पाटच्चर। रात्रिचर। परास्कंदी। गूढ़नर। प्रतिरोधी। स्तेन। स्तैन्य। प्रच्छन्नजन। कुम्भिल। खनक। शङ्कितवर्ण। खानिक। तृपु। तक्वा। रिभ्वा। रिक्वा। विहाया। तायु। वनर्गु। वृक। अघशंस।

ठग—छली। धूर्त्त। धोखेबाज़। वंचक। प्रतारक। चाइयाँ। गिरहकट।

कैदी—प्रतिग्रह। प्रग्रह। उपग्रह। बन्दी।

जुआरी—सभिक। सभीक। द्यूतकार। अक्षधूर्त्त। द्यूतक्रीड़क। धूर्त्त। अक्षदेवी। कितव। द्यूतकृत। ज्वारी।

कवि (पण्डित)—पण्डित। कोविद। सुधी। कवीश। कवीन्द्र। कविराज। छान्दस। कृति। श्रोत्रिय। धीमान्। प्राज्ञ। मनीषी। विदग्ध। ज्ञ। ज्ञानी। सुजान। सूरि। विचक्षण। सत्। आचार्य। दूरदर्शी।

लेखक (मुहर्रिर)—अक्षरचण। लिपिकर। अक्षरचंचु। पंजीकर।

ज्योतिषी—कार्त्तान्तिक। मौहूर्तिक। सांवत्सर। दैवज्ञ। गणक। मौहूर्त। विज्ञ।

शास्त्री—शास्त्रज्ञ। तान्त्रिक। तत्वज्ञ। ज्ञात। सिद्धान्त।

नौकर—सेवक। दास। टहलुआ। अनुजीवी। अर्थी। चाकर।

न्यायाधीश—अक्षदर्शक। प्राड्विवाक। न्यायक। धर्मराज।

धर्माध्यक्ष—अक्षपाटक।

व्यास—कथावाचक। सूत। पौराणिक।

यज्ञकर्ता—याज्ञिक । याजक ।

वेदान्ती—ब्रह्मवादी । तत्त्ववादी । दार्शनिक । तत्वज्ञ । तज्ञ ।

नैयायिक—तार्किक । अक्षपाद ।

मीमांसक—जैमिनीय ।

वेदपाठी—श्रोत्रिय । छान्दस । वैदिक । श्रोत्री । वेदाध्यायी ।

शिक्षक—पाठक । उपाध्याय । अध्यापक । उपदेशक । गुरु । आदेशक । आदेष्टा । उपदेष्टा । तत्त्वबोधक । आचार्य ।

अध्यापिका—उपाध्याया । उपाध्यायी । गुरुआनी । आचार्या ।

शिष्य—शैक्ष । छात्र । दीक्षित । विद्यार्थी । जिज्ञासु ।

वैद्य*—रोगहारी । अगदङ्कार । भिषक् । चिकित्सक । आयुर्वेदी ।

विष-वैद्य—गारुड़िक । विषघ्न । विषमारक । जाङ्गुलिक ।

महाजन—श्रेष्ठि । धनी । सभ्य । प्रमुख । साधु ।

हाकिम—अधिकारी । शासक । शास्ता । शासनकर्त्ता । देशक । शासिता ।

जासूस—चर । गुप्तचर । स्पश । चार । प्रणिधि । अपसर्प । गूढ़पुरुष । यथार्हवर्ण ।

चक्रवर्त्ती राजा—सार्वभौम । सम्राट् । जगदीश्वर । ('सम्राट' का स्त्रीलिङ्ग 'सम्राज्ञी' है)

महाराजाधिराज—अधिराज । अधीश्वर । राजराजेश्वर ।

राजा—राज । नृप । भूप । पार्थिव । महीपति । नृपेश । नरपति । नरपाल । राजेश्वर । मण्डलेश्वर । नरेश । भुआल । भूपति । अवनीपति । अवनीश । क्षितिपाल । प्रजापति । पार्थ । नाभि । दण्डधर । भूभुक् । स्कन्ध । राट् । क्ष्माभृत् ।

पटरानी - राज्ञी । महारानी । रानी । महिषी । अर्धासनी । राजपत्नी ।

---

* 'वैद्य' नाम की एक जाति जो बङ्गाल में अधिक है, अपने को 'अम्बष्ठ' का वंशज मानती है । चार प्रकार के वैद्य माने गये हैं, यथा—१. रोगचिकित्सक, २. विषचिकित्सक, ३. शल्यचिकित्सक (सर्जन), ४. कृत्याहार ।

मंत्री—सचिव। अमात्य। धीसचिव। धीसख। सामवायिक।

पारिषद (दरबारी)—सभासद। सभ्य। सभास्तार। सामाजिक। परिषद्वल। पर्षद्वल। पार्षद। परिसभ्य। साधु।

सेना*—चमू। ध्वजिनी। वाहिनी। पृतना। अनीकिनी। वरूथिनी। बल। सैन्य। चक्र। अनीक। वाहना। पूतना। गुल्मिनी। वरचत्तु। अनी।

सिपाही (योद्धा)—सैनिक। भट। योद्धा। योध। योद्धार।

सेनापति—सेनानी। बाहिनीपति। सेनाध्यक्ष। सेनप। चमूपति। चमूप।

प्यादा (सैनिक)—पद्ग। पदाति। पत्ती। पदग। पदिक। पादात। पदचर।

रथी (सैनिक)—स्यन्दनारोह। रथारूढ़। रथारोही।

घोड़सवार—अश्वारोही। तुरगारूढ़। सवार। सादी। अश्ववह। अश्ववार। तुरगी।

महावत—हाथीवान। गजारोह। हस्तिपक। निषादी। पद्मीक। आधोरण। इभपालक। गजाजीव।

कोचवान (सारथी)—नियन्ता। प्राजिता। सूत। दक्षिणस्थ। सारथी।

ब्रह्मचारी—व्रती। संयमी। यमी। बटु। वर्णी। प्रथमाश्रमी।

गृहस्थ—गृही। कुटुम्बी। ज्येष्ठाश्रमी। गृहमेधी। स्नातक। गृहपति। सत्री। गृहयाय। गृहाधिप। गृहायनिक।

वानप्रस्थी—वैखानस।

सन्यासी—(देखो स्वर्गादिवर्ग पृष्ठ १४)

भिक्षुक—भिक्षाजीवी। भिखमंगा। मंगन। याचक। अर्थी। वनीयक। याचनक। मार्गण। भिक्षोपजीवी। कंगाल।

---

* सेना चार प्रकार की होती है १. पैदल, २. घोड़सवार, ३. हाथीसवार, ४. रथी। चारों प्रकार की संयुक्त सेना का नाम "चतुरङ्गिनी" सेना है।

४. भावादि वर्ग

प्रेम—रति। अनुराग। प्रीति। प्रियता। स्नेह। हार्द। राग। प्यार। लगन। रमण। आसक्ति।

[नोट—शृंगार रस का स्थायी भाव]

शोक—मन्यु। शुच्। शोचन। खेद।

[नोट—करुण रस का स्थायी भाव]

उत्साह—उद्यम। अध्यवसाय। सूत्र। उबाल। जोश। उमंग। उछाह। साहस।

[नोट—वीर रस का स्थायी भाव]

भय—दर। त्रास। भीति। भी। साध्वस। प्रतिभय। आतङ्क। आशङ्का। डर। भिया। भयानक। भयङ्कर।

[नोट—भयानक रस का स्थायी भाव]

क्रोध—कोप। अमर्ष। रोष। रिस। प्रतिघ। भीम। हेल। हर। ह्णि। त्यज। भाम। एह। ह्वर। तपुषी। जूर्णि। मन्यु। व्यथि।

[नोट—रौद्र रस का स्थायी भाव]

घृणा—घिन। वैभत्स्य।

[नोट—बीभत्स रस का स्थायी भाव]

शान्ति—शम। स्थिरता। प्रशम। उपशम। शमथ। प्रशान्ति। तृष्णाक्षय। निर्वेद।

[नोट—शान्त रस का स्थायी भाव]

भक्ति*—भजनासक्ति। अनुराग। प्रेम। भजनरति।

---

*नवधा भक्ति—१. श्रवण, २. कीर्त्तन, ३. स्मरण, ४. पादसेवा, ५. अर्चन, ६. वन्दन, ७. दास्य, ८. सख्य, ९. आत्मनिवेदन।

[नोट—सात्विक 'रति' के सभी पर्य्याय 'भक्ति' के अर्थबोधक हो सकते हैं, क्योंकि सेवक-सेव्य भाव में जो रति होती है, वही 'उत्तम रति' वा भक्ति कहलाती है।]

त्याग—वैराग। निस्पृहा। अस्पृहा। निर्वेद। वर्जन। विराग।

ग्लानि—क्षय। हर्षक्षय। नाश। शेष। मूर्छन। म्लानि।

वात्सल्य—सौहार्द। स्नेह। हृदयद्राव।

शंका—सन्देह। अनिर्णय। संशय। त्रास। डर।

डाह—राग। जलन। कुढ़न। ईर्ष्या। असूया। मात्सर्य।

द्वेष—शत्रुता। बैर। विरोध। विद्वेष। खार। द्वेषण।

श्रम—परिश्रम। मेहनत। उद्यम।

श्रद्धा—आदर। प्रेम। सम्मान (गुरुजनों के प्रति आदर भाव)।

मद—नशा। विकार। गर्व। अहङ्कार। मादकता।

धीरज—धैर्य। ढाढ़स। धीरता। सन्तोष। मनस्थिरता। तोष। अचञ्चल-चित्तता।

आलस्य—मन्दता। मान्द्य। अलसता। तन्द्रा। आलस। कौसीद्य। अलस। कार्यप्रद्वेष। शीतक। अनुष्ण।

दुःख (विषाद)—विषाद। अवसाद। जड़ता। साद। मूर्खता। पीड़ा। विषण्णता। क्लेश। बाधा। व्यथा। कृच्छ्र। कष्ट। संकट। शूल। शोक। ग्लानि। दरद। करक। क्षोभ। खँभार। शाल। यातना। अमंगल। असमंजस। आर्त्त।

चिन्ता—चिन्तना। चिन्तन। आध्यान। चिन्तिया। आध्या। स्मृति। शोच (सोच)। विसूर। उद्वेग। ध्यान। भावना। उत्कण्ठा। विषाद। कातरता। भय। त्रास। अनमन।

मोह (अज्ञानता)—अज्ञानता। मूर्खता। ममत्व। ममता। माया। मूढ़ता। अज्ञानान्धकार।

स्वप्न—निद्रा। शयन। नींद। सपन।

[नोट—सुषुप्तावस्था का मनोविकार]

ज्ञान—बोध। विबोध। अबबोध। चेतनता। प्रकाश।

स्मृति—स्मरण। चिन्तन। सुधि (सुध)। चेत। ध्यान। विचार।

सहनशीलता—सहिष्णुता। क्षमा। अक्रोध।

असहनशीलता—अमर्ष। अमर्षण। असहिष्णुता। क्रोध। रिस।

उत्कण्ठा—लालसा। चाव। उत्सुकता। औत्सुक्य। चाह। आकुलेच्छा। अत्यन्तेच्छा। प्रबलेच्छा। तीव्राभिलाषा।

न्योछावर—बलिहार। उत्सर्ग। त्याग। दान। समाप्ति। प्रदान। समर्पण। अर्पण।

उत्सव—उछाह। मंगलकार्य। धूमधाम। त्योहार। पर्व। समैया। आनन्द। बिहार। बधाव।

दीनता—दैन्य। कार्पण्य। दारिद्र्य। अधीनता। दुःख। सिधाई।

हर्ष (सुख)—आनन्द। प्रसन्नता। सुख। सौख्य। मोद। प्रमोद। संमद। प्रीति। प्रमद। आमोद। शर्म्म।

लज्जा—व्रीड़ा। संकोच। शर्म। मन्दाक्ष। मन्दास्य। लज्या। व्रीड़। ह्रीत्व। व्रीड़न। लाज। मर्य्यादा।

उग्रता—उग्रत्व। चण्डता। प्रचण्डता।

व्याधि—रोग। रुज। उपद्रव। पीड़ा। सन्ताप। ताप। व्यथा।

भ्रम—घूर्णन। भ्रान्ति। चक्रावर्त्त। घूर्णि। भ्रमि। धोखा। चक्कर। फेर। भूल।

आवेग—त्वरा। शीघ्रता। आतुरता। चपलता। वेग। जल्दी। लाघव। लघुता। अचिरता। पटुता। स्फूर्त्ति। तेजी। प्रवाह।

अभाव—कमी। न्यूनता। क्षीणता। हीनता। खुटाव। अनुपस्थिति।

परिक्रमा—प्रदक्षिणा। परिक्रमण। परिभ्रमण। फेरी। फेरा। घुमरी। चक्कर।

हद—पराकाष्ठा। चरम। सीमा। इति। सीमान्त। अन्त। छोर। अशेष। समाप्ति।

समाप्ति—सिद्धि। सम्पूर्णता। अन्त। निष्पत्ति। पूरा। पूर्णता। समापन। पूर्त्ति। इति।

अकस्मात्—अनायास। सहसा। अचानक। एकाएक। एकबएक। हठात्। सद्यः। सपदि। तत्क्षण। अतर्कित।

अकाल—असमय। अप्रशस्त काल। अशुद्ध काल। दुकाल। महर्घ। महँगी। मन्दी। कुसमय।

तारतम्य—न्यूनाधिक। कमबेश। थोड़ाबहुत। घटबढ़।

समूह—वृन्द। निकर। ढेर। झारि। जूट। कुल। स्तोम। थोक। ग्राम। बरूथ। पटल। निकाय। संचय। हार। समाहार। समुच्चय। कलाप। कदंब। यूह। यूथ। पुञ्ज। चय। राशि। गण। ओघ। संघ। समवाय। व्रज। समुदाय। संदोह। चक्र। टोली। परिकर। पूग। प्रसर। प्रचय। सानु। मंडली। गोष्ठी। व्यूह। दल। जाल। कषाल। निवह। बटुर।

उन्माद—पागलपन। मतिभ्रंश। उन्मना। विक्षिप्ति। लहर। चित्त-विभ्रम। चित्तविप्लव। सनक। झक। जक। मदातिरेक।

शाप (गाली)—गाली। अभिशाप। अकृपा। कोप। आक्रोश। अभिसम्पात। अवग्रह। अश्लील वचन।

न्याय—निर्णय। विवेक। औचित्य।

जड़ता—जाड्य। अपाटव। अपटुत्व। स्तैमिति। स्तब्धता। शून्यता। स्थिरता। शीतलत्व। मूर्खता। अज्ञानता। अचेतनता। मूढ़ता।

चपलता—चंचलता। शीघ्रता। त्वरित। विकलता। अशांति। तरलता। तारल्य। चाञ्चल्य। अस्थिरता।

क्षण—समय। घड़ी। मुहूर्त। बेला। बिरियाँ। छिन। छन। काल। दण्ड। अवसर। प्रसङ्ग। निमेष। पल। अदिष्ट।

धीरे—सहज। धीमे। मन्दगति। हरुए। आहिस्ते। शनैः।

अवकाश—समय। छुट्टी। अवसर।

शीघ्र—त्वरित । लघु । क्षिप्र । द्रुत । चपल । तूर्ण । अर । सत्वर । आशु । अविलम्ब । बेग । वेगि । जल्द । झपदि । सहसा । अविरत । हरद । सद्य । अचिर । तरसा । जव । अविराम । झटित । हाल । उत्ताल । स्पद । तुरन्त । हौले । पटु । स्फूर्ति । आतुर । झटपट । तत्क्षण ।

व्यतीत—गत । विगत । अवसान । अतिवाहन । निष्पत्ति । निष्पन्न । क्षेपण । यापन । बिताना । समाप्त । समापन । अन्त । सत्वरण । सिद्ध । इति । ठंडा पड़ना ।

वितर्क—तर्क । अनुमान । विकल्प । विचार । अनुभव । बोध । अटकल ।

निर्लज्जता—अमर्यादा । निस्संकोच ।

मूर्छा—सम्मोहन । मोहन । अचेतन । मोह । कश्मल । मूर्च्छन ।

मान (आदर)—आदर । गौरव । प्रतिष्ठा । सम्मान । मर्य्यादा । यश । कीर्त्ति । प्रतिपत्ति । प्रागल्भ्य ।

मान (हठ)—हठ । रोष । रूठना । कोहाना । कोह । कोप । मचलाई । अड़ । टेक । ऐंठ । आन । बात । आर ।

अपमान—अनादर । अप्रतिष्ठा । अपयश । गौरवहीनता । अमान । अवज्ञा । परीहार । परिहार । पराभय तिरस्कार । अवहेला । अवहेलना । अमर्यादा । धिक्कार । क्षेप । अतिपात ।

मानता—मनौती । मन्नत । प्रण । प्रतिज्ञा । व्रत ।

स्वभाव—प्रकृति । निसर्ग । स्वरूप । भाव । सर्ग । संसिद्धि ।

काम (कामना)—वासना । कामना । चाह । तृषा । तृष्णा । प्यास । मनोर्थ । मनोऽभिलाष । आकांक्षा । अभिलाषा ।

लोभ—लालच । तृषा । तृष्णा । लिप्सा । स्पृहा । कांक्षा । आकांक्षा । गर्द्धः ।

पाखण्ड—कपट । छल । छद्म । दम्भ । धूर्त्तता । जाल ।

प्रमाद—असावधानी । अनवधानता । भ्रम । भूल । अव्यवस्थितचित्तता

अभिप्राय (विचार)—अभिलाषा । इच्छा । कांक्षा । विचार । आकांक्षा । आशय । तात्पर्य्य । स्पृहा । कामना । सम्मति ।

सन्तोष—तृप्ति । तोष । हृष्टि । आनन्द ।

स्नेह—राग । अनुराग । प्रेम । प्रीति । सौहार्द । हार्द ।

उपवास—औपवस्त । लंघन । अनाहार । निराहार । अनशन । भोजनाभाव ।

आज्ञा—आदेश । निदेश । अनुमति । शासन । शिष्टि । अववाद । निर्देश ।

जीवन (जीवनकाल)—अवस्था । आयु । वयःक्रम । जीवनकाल ।

मृत्यु—मरण । पञ्चत्व । निधन । अत्यय । विनाश । नाश । प्रलय । मृति । दिष्टान्त । कालधर्म । अन्त । देहान्त । देहावसान । शरीरान्त । निपात ।

कल्याण—कुशल । मंगल । क्षेम । सुख । आनन्द । श्वः । श्रेयस । शिव । भद्र । शुभ । भावुक । भविक । भव्य । शस्त । शं ।

आचार—चरित्र । चारित्र । व्यवहार । वृत्त । शील ।

क्रूरता—कर्कशता । निर्दयता । काठिन्य (कठिनता) । निर्मोह । निर्ममता । निष्ठुरता । पाप । भयंकरता ।

पाप—अघ । अपवाद । अपकर्म । अपकृति । अपधर्म । अधर्म । विधर्म । कुधर्म । कुकर्म । कुदृष्ट । पङ्क । किल्विष । कल्मष । मल । कलुष । वृजिन । एन । अह । दुरित । दुष्कृत । पातक । तूस्त । कण्व । शल्य । पापक ।

पुण्य—धर्म । शुभादृष्ट । श्रेय । सुकृत । वृष । पावन । सुगन्धि । शोभन । सत्कर्म ।

अपराध—आग । मन्तु । अकार्य । दुष्कर्म । अपकर्म ।

[**नोट**—'पाप' के सभी पर्य्याय 'अपराध' के पर्य्याय हो सकते हैं ।]

सत्य—सच । तथ्य । यथार्थ । शपथ । ऋत । सम्यक् । अविभूत । तथोक्त । तद्वत् ।

झूठ—असत्य । मृषा । मिथ्या । वितथ । अनृत । अतथ्य ।

हाव*—आह्वान। शृंगार भाव। नखरा। (नखड़ा)। चोंचला। पुकार। बुलाहट।

यात्रा—भ्रमण। परिभ्रमण। व्रज्या। प्रव्रज्या। पर्यटन। प्रस्थान। गमन। गम। प्रस्थिति। यान। प्राणन।

दण्ड—साहस। दम। दमन।

व्यवहार—बर्त्ताव। सलूक। साम्न। साम। सात्वमथ।

कीर्ति†—सुख्याति। समज्ञा। समाज्ञा। समाख्या। समज्या। अभिख्या। श्लोक। वर्ण। कीर्त्तना। यश। गुणावलि।

अपशय—अपकीर्त्ति। अकीर्त्ति। अयश। अपवाद। निन्दा।

[नोट—'निन्दा' वाचक सभी शब्द 'अपयश' के पर्य्याय हैं।]

अपकार—द्रोह। अनुपकार। असद्व्यवहार। अत्याचार। बुराई। खुटाई। अपकर्म। दुष्क्रिया। मन्दकर्म। द्वेष। अपकृति।

उपकार—भलाई। नेकी। हितसाधन। उद्धार। उपकृति।

मधुर-वचन—प्रियवचन। सूनृत। मञ्जुभाषण। शांत्व। सामंजस। संगत। हृदयंगम।

दुर्वचन—अश्लील। ग्राम्य। परुष। निष्ठुर। कठोर। तब्ध। कर्कश-वचन। असामंजस। कुवचन। कुबोल।

नीति—न्याय। व्यवहार। उचित। यथार्थ। नय।

---

* संयोग समय में स्त्रियों की स्वाभाविक अङ्गादि चेष्टाओं को 'हाव' कहते हैं। काव्यशास्त्र में हाव १२ प्रकार के माने गये हैं। यथा—१. लीला, २. हेला, ३. ललित, ४. विभ्रम, ५. विहृत, ६. विलास, ७. विच्छित्ति, ८. विव्वोक, ९. किलकिञ्चित, १०. मोट्टाइत ११. कुट्टमित, १२. बोधक।

† दानादि से जो ख्याति होती है उसे 'कीर्त्ति' तथा शौर्य्यादि से जो ख्याति होती है उसे 'यश' कहते हैं। यथा—"दानादिप्रभवा कीर्त्तिः शौर्य्यादि प्रभवं यशः।"—इति माधवी।

स्तुति—प्रशंसा । नुति । स्तोत्र । प्रस्तुति । स्तव । शस्त । ईलित । पणायित । वर्णित ।

अपवाद—निन्दा । अवर्ण । आक्षेप । निर्वाद । परीवाद । उपक्रोश । जुगुप्सा । कुत्सा । गर्हण । बाधक ।

कृपा—अनुग्रह । अनुकम्पा । मया । दया । अनुक्रोश । अनुकंपना ।

कपट—छद्म । छल । दम्भ । पाखण्ड । शाठ्य । कैतव । व्याज ।

कलंक—दोष । दाग । लाञ्छन । अपवाद । पंक । मषि । किञ्जल्क । मिर्याद । लक्ष्म । मलीन । मली ।

शपथ (कसम)—सौगन्ध । सौंह । कसम । आन । अभिषङ्ग सत्य । शाप । शप । शापन । प्रत्यय ।

कंजूसी—कृपिणता । कृपणता । कार्पण्य । दैन्य । दीनता । दरिद्रता । कादरता । अनुदारता । क्षुद्राशयता । क्षुद्रता । छिछोरापन ।

जय (विजय)—विजय । जीत । उन्नति । वृद्धि । विभव ।

हार (पराजय)—पराजय । अजय । पराभव । भङ्ग । अवनति ।

आशीर्वाद—आशी । आशीर्वचन । शुभवचन ।

बचपन—बालपन । कौमार । शैशव । बालकत्व । शिशुत्व ।

जवानी—यौवन । युवावस्था । तारुण्य । तरुणता । ज्वानी ।

अधेड़—प्रौढ़त्व । प्रौढ़ावस्था । पक्की उम्र ।

बुढ़ापा—जरा जीर्णावस्था । वृद्धावस्था । वृद्धत्व । जरत्व । वृद्ध । जरठत्व । जीर्ण । जरठपन ।

सुन्दरता—सौन्दर्य । सुरूपता । रूपता । लावण्य । छबि ।

[**नोट**—शोभा' शब्द के पर्य्याय भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।]

कुरूपता—कदर्य । अरूपता । अपरूपता । विरूपता ।

प्रार्थना—विनती । विनय । नम्रता । दीनता । आर्तवचन । अभ्यर्थना ।

उत्पात—उपद्रव । अशुभ । अमंगल । विघ्न । बखेड़ा । झगड़ा । टंटा । ऊधम ।

सूचना—समाचार। निवेदन। कथन। आवेन। सूचन।

हँसीठट्ठा—परिहास। परीहास। क्रीड़। देवना। वर्करा। विजल्पन। दिल्लगी।

प्रलाप—जक। बक-बक। मिथ्यालाप। अनर्थभाषण। जल्प। दुर्वाद।

संस्कार*—संशोधन। शुद्धि। प्रतियत्न। शोधन। शुद्धता। परिशोधन।

विद्या†—ज्ञान। तत्त्वबोध। बोध। शिक्षा। शास्त्र। यथार्थज्ञान।

व्यसन‡—टेव। लत। बान। आसक्ति। अभ्यास। खोटी आदत।

बहाना—ब्याज। मिष (मिस)। छल। कपट।

कला§—कारीगरी। शिल्पनैपुण्य। शिल्पकर्म।

---

* हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार द्विजातियों के कुल १६ संस्कार माने गये हैं। यथा—१. गर्भाधान। २. पुंसवन। ३. सीमन्त। ४. जातकर्म। ५. नामकरण ६. निष्क्रमण। ७. अन्नप्राशन। ८. चूड़ाकरण (मुण्डन)। ९. कर्णवेध। १०. उपनयन। ११. वेदारम्भ। १२. समावर्त्तन। १३. विवाह। १४. गृहस्थाश्रम। १५. वानप्रस्थाश्रम। १६. संन्यासाश्रम।

† विद्या १८ प्रकार की मानी गई है। यथा—१. शिक्षा। २. कल्प। ३. व्याकरण। ४. निरुक्त। ५. ज्योतिष। ६. छन्द। ७. ऋग्वेद। ८. यजुर्वेद। ९. सामवेद। १०. अथर्ववेद। ११. मीमांसा। १२. न्याय। १३. धर्मशास्त्र। १४. पुराण। १५. आयुर्वेद। १६. धनुर्वेद। १७. गान्धर्व वेद। १८. अर्थशास्त्र।

‡ व्यसन १८ प्रकार के होते हैं। यथा—१. मृगया, २. जुआ खेलना, ३. दिन में सोना, ४. दूसरे का दोष कहना, ५. स्त्रियों में आसक्ति, ६. नशेबाजी, ७. बाजा बजाना, ८. नाचना, ९. गाना और १० व्यर्थ घूमना—ये दस कामज व्यसन हैं। तथा ११. चुगली खाना, १२. दुस्साहस, १३. द्रोह, १४. ईर्ष्या, १५. असूया (द्वेष), १६. दूसरे की वस्तु हरण १७. कटु भाषण और १८. अत्यन्त ताड़ना देना—ये आठ क्रोधज व्यसन हैं।

§ कला के ६४ भेद हैं। यथा—१. गायन (गीत)। २. वाद्य (बजाना)। ३. नृत्य (नाचना)। ४. चित्रकारी। ५. तिलक काढ़ना। ६. तण्डुल कुसु

सुगन्धि—सौरभ। सुगन्ध परिमल। आमोद। सद्‌गंध। खुशबू।
दुर्गन्धि—दुर्गन्ध। दुष्टगन्ध। पूतिगन्ध। पूतिगंधि पूति।
निश्चय—निर्णय। निर्णयन। निचय। ठीक। तय। पक्का। सिद्ध।

मावली (चावलों से पुष्पादि काढ़ना)। ७. पुष्पातरण (पुष्प का शृङ्गार रचना)। ८. अङ्गराग (शृङ्गार)। ९. मणिभूमिका कर्म (सोने के लिये स्थान रचना)। १०. शयन रचना। ११. उदक वाद्य (जलतरंग आदि बाजे)। १२. उदकाघात (पिचकारी छोड़ना)। १३. चित्र योग (प्रकृति में रासायनिक परिवर्त्तन)। १४. माल्य ग्रन्थन। १५. शेखरक (बाल गूँथना), आपीड (चोटी गूँथना)। १६. नेपथ्य प्रयोग। १७. कर्णपत्रभङ्ग। १८. गन्धयुक्ति। १९. अलङ्कारयोग (आभूषणादि धारणविधि)। २०. ऐन्द्रजाल (जादूगरी)। २१.कौचुमार योग (स्वरूप रचना)। २२.हस्तलाघव (हाथ की सफाई का काम)। २३. सूपकर्म (रसोइयादारी)। २४. पानकादि भोजन (रस, शर्बत, आसव आदि बनाना)। २५. सूचीकर्म (सिलाई का काम)। २६. सूत्रक्रिया (कसीदा काढ़ना)। २७. वीणा-डमरु वाद्य। २८. प्रहेलिका। २९. प्रति-माला (अन्त्याक्षरी)। ३०. कूटक-योग (कूट शब्दों का प्रयोग)। ३१. पुस्तक-वाचन (स्वर सहित पुस्तक पढ़ना)। ३२. नाट्यकला। ३३. समस्यापूर्ति। ३४. पट्टिकावान विकल्प (मेज-कुरसी-पलंग आदि बीनना)। ३५. तक्ष कर्म। (मरम्मत करना)। ३६. तक्षण (बढ़ई का काम)। ३७. वास्तुकर्म (गृह-निर्माण-कला)। ३८. धातुपरीक्षा (सोना, चाँदी आदि परखना)। ३९. धातुवाद (विविध धातुओं का मिश्रण)। ४०. मणिरागज्ञान (रत्नादि का ज्ञान)। ४१. वृक्षायुर्वेद योग (बाग़वानी)। ४२. सजीव द्यूत (तीतर, बटेर, मुर्ग, मेढ़ा आदि लड़ाना)। ४३. शुकसारिका प्रलापन (चिड़ीबाजी)। ४४. उत्सादन (तैलमर्दन आदि)। ४५. अक्षर मुष्टिकाकथन (संक्षेप में बातचीत करना)। ४६. म्लेच्छित विकल्प (साङ्केतिक अर्थ समझना)। ४७. देश भाषा विज्ञान। ४८. पुष्पशकटिका (फूलसेज, या फूल से गाड़ी सजाना ४९. निमित्त ज्ञान (शुभाशुभ ज्ञान)। ५०. यन्त्रमंत्रिका। ५१. धारणमंत्रिका।

सिद्धान्त=राद्धान्त। दृढ़सम्मति। पक्की राय। दृढ़मत। स्थिरमत। प्रधान लक्ष्य।

स्वीकार—अङ्गीकार। ग्राह्य। मान्य।

पवित्रता—शुचित्व। शुचिता। शौच। शुद्धता। पूतत्व। स्वच्छता। अदूषण। निर्दोषत्व। निर्दोषिता। निर्मलता।

मधुर शब्द (शब्द प्रयोग में)—मृदुवचन। सुभाषण। मञ्जुभाषा। सुवाणी। सुवचन। मिष्ठ भाषण।

अपभ्रंश—भ्रष्ट। ग्राम्य। प्राकृत। ठेंठ।

पर्य्याय—आवृत्त। आनुपूर्वी। अनुक्रम। परिपाटी। प्रकार। एकार्थ। एकार्थबोधक (वाचक)। समानार्थक।

विपर्य्यय—व्यतिक्रम। विपर्य्यास। व्यत्यास। व्यत्यय। विपर्य्याय। उलट-फेर। विपरीत। अयन। प्रतिकूल।

ओंकार—प्रणव। बीजमन्त्र। वेदमाता। आद्या। ब्रह्माक्षर।

इतिहास—इतिवृत्त। प्राचीनकथा। पुरावृत्त। पूर्ववृत्तान्त। पुराण।

प्रबन्ध—निबन्ध। लेख। रचना।

आख्यान (कथा)—कथा। कहानी। किस्सा। वृत्तान्त। वर्णन। बयान। वृत्त। इतिवृत्त।

आख्यायिका*—उपन्यास। प्रसिद्ध कथा।

---

५२. सम्पाद्य। ५३. मानसी। ५४. काव्यक्रिया (कविता रचना वा समस्या पूति करना)। ५५. अभिधान कोष। ५६. छन्दोज्ञान। ५७. क्रियाकल्प। ५८. छलित (ठगी)। ५९. वस्त्रगोपन। ६०. द्यूतक्रीड़ा। ६१. आकर्ष क्रीड़ा (चौपड़ पासे)। ६२. बालक्रीड़नक। ६३. वैनयिकी (नम्रता)। ६४. वैजयिकी वा व्याभामकी (लड़ाई, कुश्ती, कसरत आदि)।

* वह कथा जो पुराणादि के आधार पर रची गई हो। जिस आख्यान में पात्र भी अपने मुँह से अपना कुछ २ वर्णन करता है, उसे "आख्यायिका" कहते हैं।

पहेली—प्रहेलिका । प्रवह्लिका । प्रवह्ली । प्रहेली । प्रश्नदूती ।

गल्प—उपकथा । गप्प । छोटी कहानी ।

चाटुकारी—चापलूसी । लल्लोपत्तो । अनुनय । स्तुति ।

संगीत—गान । गाना । गायन । गेय । कीर्त्तन ।

राग *—ध्वनि । लय ।

नाच†—नृत्य । लास्य । नर्त्तन । तांडव । नृति । नटन । नृत्त । लास । लास्यक । नृत ।

प्रतिध्वनि—प्रतिशब्द । झाँई । प्रतिनाद । प्रतिश्रुत । प्रतिध्वान ।

विदित—अवगत । व्यक्त । प्रतिपन्न । प्रकट (प्रगट) । ज्ञात ।

नाटक§—रूपक । प्रसहन । नाच-गाना । नृत्यसंगीतादि । दृश्य-काव्य ।

---

* किसी ध्वनि में बैठाये हुए स्वर जिनके उच्चारण से गान होता है, 'राग' कहलाता है। भरत के मत से राग ६ प्रकार के हैं। यथा १. भैरव, २ कौशिक, ३. हिन्दोल, ४. दीपक, ५. श्री, ६. मेघ।

† पुरुष के उद्धत नाच को 'ताण्डव' और स्त्रियों के नाच को 'लास्य' कहते हैं। भाव बतलाते हुए नाच को 'नृत्त' तथा ताल-स्वर के आधार पर नाचने को नृत्य कहते हैं।

§ नाटक—किसी रङ्गमञ्च पर पात्र और पात्रियों द्वारा दृश्यकाव्यानुसार किया जाने वाला अभिनय नाटक वा रूपक कहलाता है। यह १० प्रकार का होता है। १. नाटक, २. प्रकरण, ३. भाण, ४. व्यायोग, ५. समवकार, ६. डिम, ७. इहामृग, ८. अंक, ९. बीथी, १०. प्रहसन।

इसी प्रकार उपरूपक के १८ भेद होते हैं—१. नाटिका, २. त्रोटक, ३. गोष्ठी, ४. सट्टक, ५. नाट्यरासक, ६. प्रस्थानक, ७. उल्लाप्य, ८. काव्य, ९. रासक, १०. प्रेंखण, ११. संलापक, १२. श्रीगदित, १३. शिल्पक, १४. विलासिका, १५. दुर्मल्लिका, १६. प्रकरणिका, १७. हल्लीश और १८. भाणिका।

रूपक और उपरूपक के ये भेद भी 'नाटक' के पर्य्याय हो सकते हैं।

प्रदर्शन। नाट्यकलाप्रदर्शन।

सेवा—परिचर्या। चर्या। शुश्रूषा। टहल। चाकरी। नौकरी।

विघ्न—व्याघात। अन्तराय। प्रत्यूह। विघात।

व्यर्थ—बेकाम। निष्प्रयोजनीय। निरर्थक। निष्फल। बादि। मोघ। वृथा। अकाम। अकारथ। असार।

प्रतिज्ञा—पण। प्रण। संविद। पैज। वचन। प्रतिज्ञात। नियम। आश्रव। संश्रव। प्रतिश्रय। नेम। करार। कौल।

संयोग—मेल। मिलाप। साथ। संग।

वियोग—बिछोह। विरह। विप्रलम्भ। विप्रयोग। जुदाई।

प्रकार—भेद। सादृश्य। किस्म।

शोभा—दीप्ति। कान्ति। छवि। द्युति। छबि। अभिख्या। शुभा। भा। श्री। भासा। सुषमा। छाया। विभा। भाति। कमा। रमा। आभा। रुचि। रोचिष। प्रभा। त्विष। छटा। सुन्दरता। चमक। दमक।

श्रीहत—कान्तिहीन। प्रभाहीन। अप्रभ।

संकेत—प्रज्ञप्ति। परिभाषा। शैली। आकार। उदाहरण।

[**नोट**—गुप्त स्थान को भी संकेत कहते हैं जिसका पर्याय "सहेट, अँगोट, एकान्त, निर्जन" है।]

अतिरिक्त—समधिक। अधिक। सिवाय। अलावा।

समता—साम्य। समत्वभाव। एकता (ऐक्य, एकत्व)। समैक्य। बराबरी। जोड़तोड़।

विषमता—असाम्य। अनैक्य। अनेकता। बेमेल। बेजोड़। वैषम्य। छिट पुट।

बलात्कार—हठात्कार। हठ। बलप्रयोग। प्रसभ।

[**नोट**—आजकल 'बलात्कार' शब्द का विशेष प्रयोग किसी स्त्री के सतीत्व को जबरदस्ती भ्रष्ट करने के अर्थ में किया जाता है।]

उपहार—पुरस्कार। भेंट। उपायन। उपढौकन। प्राभृत। प्रदेशन। उपग्राह्य। उपदा।

विस्मय—आश्चर्य। अचरज। विचित्रता। संभ्रम।

उल्लंघन—विरोध। अवमानना। अतिक्रमण। व्यत्ययन। व्यतिक्रमण।

प्यार—मनुहार। दुलार। स्नेह। प्रीति। प्रेम।

प्रतीक्षा—आसरा। राह देखना। अपेक्षा। बाट जोहना।

प्रभाव—प्रताप। रोबदाब। तेज। असर। शक्ति।

प्रस्ताव—निवेदन। प्रसङ्ग निवेदन। अवसर। प्रसङ्ग। स्तुति। प्रकरण। वृत्तान्त-निवेदन। कथानुष्ठान।

परिस्थिति—दशा। अवस्था। अवसर। समय।

अन्वेषण—जाँच। खोज। अनुसंधान। गवेषण। परीष्टि। पर्य्येषण।

[**नोट**—खोज करने वाले व्यक्ति को 'अन्वेष्टा' कहते हैं, जिसका पर्याय है—'आनुपद्य'।]

कुण्ठित—मन्द। हीन। संकुचित।

व्यङ्ग्य—उलटा। टेढ़ा। ताना।

घूस—उत्कोच। प्राभृत। ढौकन। लम्चा। कौशलिक। उपाचार। प्रदा। आनन्दा। हार। ग्राह्य। अयन। उपदानक। अपप्रदान।

विपरीत—उत्क्रम। व्यतिक्रम। अक्रम।

समर्थन—मण्डन। अनुमोदन। पोषण। संप्रधारण।

फुटकर—पृथक्-पृथक्। भिन्न-भिन्न। छिट-पुट। विविध।

तन्मय—लीन। तल्लीन। दत्तचित्त। लवलीन। तद्रूप।

लक्ष्य—निशाना। उद्देश्य। सिद्धान्त।

शैली—ढंग। ढब। चाल। परिपाटी। प्रणाली।

क्लिष्ट—दुस्तर। कठिन। संकुल। पराहत। क्लिषित।

उजाला—प्रकाश। दीप्ति। द्योत। आतप। प्रभा। विभा। आलोक। तेज। ओज। त्विषा।

अन्धेरा—अन्धकार। अप्रकाश। ध्वान्त। तमिस्र। तम। तिमिर।

[व्यापक अन्धेरा = सन्तमस्। महान्धकार = अन्धतामस्। अल्पान्धकार = अवतमस्।]

बदला (अपकार के बदले अपकार)—प्रतिशोध। वैरशुद्धि। वैरनिर्यातन। चिकित्सा। कसर। खार चुकाना। बैर। प्रत्यपकार।

[उपकार के बदले उपकार को 'प्रत्युपकार' कहते हैं।

५. रोगादि वर्ग

रोग—रुज। गद। उपताप। व्याधि। आमय। आम। अपाटव। आतङ्क। भय। उपघात। भङ्ग। अर्ति। तमोविकार। क्षय। अनार्जव। मृत्यु भृत्य। मान्द्य। आकल्प।

ज्वर—जूर्ति। आतङ्क। महागद। रोगपृष्ठ। ताप। तापक। सन्ताप। जूड़ी।

दोष—पाप। अपराध। विकार।

[**नोट**—वात-पित्त-कफ, रोग के ये ही प्रधान दोष माने गये हैं, जिनके विकृत हो जाने पर अनेक प्रकार के रोगों की उत्पत्ति होती है। इन तीनों दोषों को 'त्रिदोष' कहते हैं।]

दाह—जलन। तपन।

शीत—ठण्ड। सरदी। जाड़ा।

पीनस—नाकड़ा। प्रतिश्याय।

[**नोट**—जुकाम के बिगड़ जाने से नाकड़ा हो जाता है। इसमें गाढ़ा जुकाम होकर दुर्गन्धि पैदा कर देता है। कुछ काल के अनन्तर घ्राण-शक्ति भी नष्ट होने लगती है।]

क्षय—छई। यक्ष्मा। राजयक्ष्मा। दिक। तपेदिक। शोष। रोगराज। गदाग्रणी। ऊष्मा। अतिरोग। नृपामय।

खाँसी—कास। क्षवथु।

सूजन—शोथ। शोफ। श्वयथु। सूज।

बेवाई—बेवाय। बिमाई। पादस्फोट। विपादिका। स्फटी। स्फटि। पादस्फोटी।

सेहुँआ—सिध्म। किलास।

[**नोट**—सात प्रकार के महाकुष्ठ रोग के अन्तर्गत एक प्रकार का कुष्ठ रोग, जिसमें शरीर का ऊपरी चमड़ा निकल जाता है और चकत्ते पड़ जाते हैं।]

शीतला—चेचक। माता। विस्फोट। मसूरिका। पापरोग। रक्तवटी। मसूरी। वसन्तरोग।

दाद—दिनाय। पामा। दद्रू। विचर्चिका। पाम। खसरा।

खाज—खुजली। कंडू। खर्जू।

[नोट—दाद, खाज, खसरा, उकवत, अपरस, सेहुँआ, अगियासन् आदि कुष्ठ के अन्तर्गत रोग हैं। इनके रोगी को सूर्य भगवान की उपासना पूजा आदि करनी चाहिये। रूक्ष और क्षारयुक्त (नमकीन) भोजन का त्याग तथा सादा, अलोना और स्निग्ध भोजन का ग्रहण श्रेयस्कर है।]

फोड़ा (फुन्सी)—फोट। विस्फोट। फुड़िया। पिटक। पिटका। विटक। विटका। स्फोट। स्फोटक। ईर्म।

घाव—व्रण। चीरा। ईर्म। अरुस।

पीब—क्षतज। मलज। पूयन। प्रसित। पूय।

कोढ *—कुष्ट। फूल। कोठ। मण्डलक। व्याधि। वाप्य। पारिभव्य। पाकल। उत्पल। पापरोग।

फील-पाँव—श्लीपद। पादवल्मीक। हाथी पाँव। हस्तिपाद।

सोजाक—पूयमेह। मधुमेह।

बवासीर—बयेसी। अर्श। दुर्नामक। दुर्नाम। गुदकील। गुदांकुर। अनामक।

पथरी—अश्मरी।

मृगी—अपस्मार। अङ्गविकृति। लालाध। भूतविक्रिया।

उपदंश (गर्मी)—अवदंश। गरमी। (आतशक)। फिरंग रोग।

अतिसार—अन्नगन्धि। उदरामय। अतीसार। (पेचिश)।

---

* कोढ़, क्षय, उपदेश, सोजाक, और महामारी (प्लेग, हैजा) आदि महापाप रोग हैं। ये कई पीढ़ियों तक चलते हैं।

आँव—आम। मलवैषम्य रोग। आमातिसार।

[नोट—शरीर में आम पक जाने पर जब सारे शरीर में शोथ हो जाता है, तब उसे 'आमवात' कहते हैं)।

संग्रहणी—प्रवाहिका। ग्रहिणी। गुध्वाहि।

वमन—कय। प्रच्छर्दिका। छर्दि। वमि। वमथु। ओकलाई। ओक।

कब्ज—मलावरोध। मलबद्ध। कोष्ठबद्ध।

प्रमेह—मूत्रदोष। बहुमूत्र। धातुस्राव। धातुदोष।

मन्दाग्नि—अल्पाग्नि। अग्निमान्द्य।

अजीर्ण—अपच। अनपच।

हैजा—विसूची। विसूचिका। महाजीर्ण। विशूचिका।

कामला—पाण्डु। कँवल। कांवला।

[नोट—इस रोग में यकृत (पिलही) बढ़ जाती है। अग्नि मंद हो जाने से रस का शुद्ध पाक नहीं होता। शरीर पीला पड़ जाता है। आँख के कोये भी पीले हो जाते हैं। जब थूक, मूत्र तक पीले रंग के हो जायँ, तब इस रोग का उग्र रूप जानना चाहिये।]

श्वास—साँस। (दमा)। श्वास क्षय।

क्षीणता—दुर्बलता। कृशता। सुखंडी।

तृष्णा—(देखो 'प्यास' शब्द—'मनुष्यवर्ग'।)

मूर्छा—(देखो 'मूर्छा' शब्द,—भावादि वर्ग।)

मूत्रकृच्छ्र—कड़क। कृच्छ्र। [यह सोजाक का पूर्वरूप है]

आमवात—आँवबात।

हिस्टीरिया (अं०)—अपतंत्रक। मूर्च्छा।

आक्षेपक—शून्य वायु।

उदावर्त्त—गुदग्रह । [मल-मूत्र-वायुरोधक रोग]

आंतवृद्धि—अन्त्रवृद्धि । पानी उतरना । आँत उतरना । पोता बढ़ना ।

गण्डमाला—गलगण्ड । कंठमाला ।

अर्बुद—मांसकील । मांस पुरुष ।

[छोटे अर्बुद को 'इल्ला' वा 'गोखरू' कहते हैं]

शूकरोग—लिङ्गवृद्धि रोग ।

अम्लपित्त—मचली । जी मचली । (मतली) ।

विसर्प—विसर्पि । सचिवामय ।

मुखपाक—पाका । मुँहपाका । निनावाँ । छाला ।

गंज रोग—इन्द्रलुप्तक । इन्द्रलुप्त । केशघ्न । केशनाशक रोग ।

शिर-पीड़ा—सिर दर्द । आधीसीसी । अधकपारी । शिरोरोग ।

[नोट—आधे सिर की पीड़ा दो प्रकार की होती है, एक तो जो प्रातः आरम्भ होकर सायंकाल को समाप्त होती है उसे 'सूर्यावर्त्त' और दूसरी जो सायंकाल को प्रारंभ होकर रातभर रहती हुई प्रातःकाल जाती है, उसे 'चन्द्रावर्त्त' कहते हैं ।]

प्रदर—स्त्रीरोग । विदार । क्षीणता । धातुक्षय ।

[यह रोग स्त्रियों को 'श्वेत प्रदर' और 'रक्त प्रदर' नाम से दो प्रकार का होता है ।]

गुल्म—वायुगोला । रजोग्रन्थि । गोला ।

योनि कन्द—योनिस्राव । योनिभङ्ग । योनिव्रण ।

स्तनपाक—थनैल । थनैला ।

सूतिका रोग—प्रसूति ज्वर । परसूति ।

पूतना—दुर्दर्शना । दुर्गन्धा । मेघकालिका । बालमातृका ।

[**नोट**—यह रोग छोटे बालकों को तीसरे दिन, तीसरे महीने वा तीसरे वर्ष होता है। इसमें प्रायः बच्चे नहीं बचते।]

पक्षाघात—पक्षघात। शून्यवात (सुन्न बाई)। लकवा। (फालिज)।

नोट—इस रोग में शरीर का एक अंग दाहिना वा बायाँ शून्य हो जाता है। शिरा, स्नायु के रक्त का शोषण होकर सन्धियों में चर्बी का नाश हो जाता है। सन्धियों की संचालन-क्रिया बन्द हो जाती है। धीरे धीरे वह अंग शिथिल और अचेतन होने लगता है। इस रोग के विशेष प्रकोप से मृत्यु तक सम्भव है। कहा जाता है कि यह रोग भयंकर पापों का फल है।]

---

६. भोजनादि वर्ग

*भोजन— आहार । अशन । स्वदन । निगर । निघस । विघस । जेमन (जेवन) । भक्षण । खाना ।

दाल—पहित । पहिती । सूप ।

भात—भक्त । अन्न । ओदन । चाँवल । मिष्मा । भिस्सा ।

माँड—मासर । आचम । निश्राव । मण्ड ।

कढ़ी—तेमन । निष्ठान । कलायल (करायल) । क्वथित । परेह । परोह ।

रोटी—चपाती । बेली । फुलकी (फुलका) । पनेथी (हाथ की बनी मोटी रोटी) । रोट (बड़ी रोटी) । करपट्टिका ।

लिट्टी वा बाटी—अंगार कर्कटी । टिकरी । टिक्कड़ । भौरी । बटिका ।

पूरी—पूड़ी । सोहारी । पूलिका । शष्कुली ।

कचौरी—माषगर्भा-शष्कुली । माषगर्भा ।

---

* (क) रस-भेद से भोजन छः प्रकार का होता है—१. मधुर (मीठा), २. लवण (नमकीन), ३. तिक्त (तीता), ४. कषाय (कसैला जैसे आँवला आदि), ५. कटु (कडुवा जैसे नीम, कड़वी लौकी आदि), ६. अम्ल (खट्टा)।

(ख) प्रकार-भेद से भोजन छः प्रकार का होता है। यथा १. भक्ष्य (जो निगल कर खाया जाय, जैसे हलुवा, खीर, मलाई आदि), २. भोज्य (जो दाँतों से कुचल कर खाया जाय, जैसे दाल-रोटी, पूरी आदि), ३. चर्व्य (जो चबा कर खाया जाय, अर्थात् खाने की सूखी वस्तु जैसे चबैना, दालमोठ, माठ, मठरी आदि), ४. चोष्य (जो चूस कर खाया जाय, जैसे आम, सँहिजन की फली, ईख आदि), ५. लेह्य (जो चाट कर खाया जाय, जैसे सिरका, चाशनी, शहद, चटनी, आदि), ६. पेय (जो पिया जाय, जैसे दूध, शर्बत आदि)।

तरकारी—भाजी। शाक। सालन।

खीर—क्षीर। पायस।

मीठा भात—गुडान्न। बखीर।

सिखरन—श्रीखण्ड। रसाला। मार्जिता। शिखरिणी।

चबैना—चर्वण। चर्व्यं। चबैनी। दाना (भुना हुआ)। भूजा।

हलुआ—सीरा। मोहनभोग। लप्सिका। लपसी।

मालपुआ—मल्लपूप। पूआ। पूप। पिष्टक। अपूप। पुआ।

पोलाव—पलान्न। पुलाक। पुलाव। मांसोदन।

लावा—लाजा। खील। धान-खील। अक्षत।

चिउड़ा—चिपिटक। पृथुक। चिउरा। चीड़ा। चिपिट।

चटनी—लेह्य। लेहन पदार्थ। खांडव (नौरतन-चटनी)। रसाला। मार्जिता। चक्षण। लेहनी। चखनी।

रायता—रायतो। राजिकाक्त। मार्जिता।

अचार—सन्धान। संधितद्रव्य। सन्धित। संधानक।

मुरब्बा—राग खांडव। पाग।

पन्ना—पानक। पना। प्रपानक।

फुलौरी (पकौड़ी)—वटिका। चाणकी।

[**नोट**—पत्तों की पकौड़ी = रिकवँच, रिकूछ, रकूछ, पतौड़।]

बरी—बटी। माषेंडरी। बटिका।

मुंगौरी—मुग्दबटी। मुग्दबटिका। माषरंगी।

घुंघुरी—कुल्माष। छोले। घुंघुनी

बड़ा—बटका। बरा। बारा पिष्टक। पिष्टबटका। पूप। माष बटका।

इमली के पन्ना का बड़ा—पानक-बटका।

दही-बड़ा—तक्र-बटका।

[**नोट**—इसी प्रकार सूरन के बड़े को 'सूरण-बटका', कुम्हड़े के बड़े को 'कूष्माण्ड-बटका' कहते हैं।]

पापड़—पर्पट । चरक ।

भरता—भर्त्रि । चोखा । भुरता । भरित्रा ।

चिखना—[मद्यपानादि के वाद रोचक भक्ष्य पदार्थ]—मद्य पाशन । चक्षण । चखना । चाट । चटपटा ।

पराठा—प्रामूठे । पौलिका । परोठा । परावठा । चौपती ।

बेढई—बेढ़मिका ।

[नोट—उड़द या चने की पीठी भर कर जो रोटी तैयार की जाती है, उसे बेढ़ई कहते हैं ।]

पूरन-पूड़ी (मीठी पूड़ी)—पूर्णपूलिका । पूरनपोली । पूर्णगर्भापूलिका ।

सेंवई—सैंमई । सेविका ।

अनरसा—इन्दुरसा । अँदरसा । शालि-पूप ।

गुझिया—संयाव । गूझा । पेड़किया।

खाजा—खजला । खाझा ।

चूरमा—चूरमोदक ।

जलेबी—कुंडलिनी । गुडूची । जिलेबी । कुंडली ।

लड्डू—मोदक । बिन्दुमोदक । मोदकी ।

मोतीचूर के लड्डू—मुक्तामोदक ।

मूँग के लड्डू—मुग्ददल । मगदल । मगद । मुग्द-मोदक ।

फेनी—फेनिका । सूतफेनी ।

घेवर—घृतपूर । घृतवर । घार्तिक ।

गुलाब जामुन—दुग्धकूपिका । रस कूपिका ।

शक्करपाला—खुरमा । सक्करपाला । शंखपाल ।

खिचड़ी—कृशरान्न । कुशरा । कृशरी (अप० खिचड़ी) ।

सत्तू—सक्तू । सतुआ । (सतुवा) सक्तुक ।

हाबुस—ओलंबी ।

[नोट—गेहूँ, जौ, चने, आदि की अधपकी फलियाँ भून कर फिर उसकी भूसी साफ करके तैयार करते हैं उसे 'हाबुस' कहते है ।]

बघार—छौंकन । वासित । छौंक ।

कौर—कवल । ग्रास ।

बटुआ—पिठर । बटलोही । स्थाली । उखा । उषा । कुण्ड । हण्डीष । हाँडी ।

तावा —पिष्टपचन । ऋजीष । ऋचीष । तष । पृष्टिपच । तपा ।

कड़ाही—कढाही । टोकनी । तसली । तसला ।

कलछी—करछुलि । दर्वी । कम्बी । खजाका । चमचा । कलछुल । करछुल । कर्छी ।

काठ की कलछी—तर्द्दू । दारु हस्तक । काष्ठ दर्वी ।

कटोरा, कटोरी—खोरा । पानपात्र । कंश (कंश) । कांस्य । खोरवा ।

करवा (लोटा)—गडुआ । कर्करी । आलु । आल । आरु । गलन्तिका । लोटा । बृहत् जलपात्र ।

गिलास—जलपात्र । लुटिया । (आबखोरा) । खोरिया ।

घड़ा (गगरी)—घट । कुम्भ । कुट । निप । घटी । कलश । कलशी । कलसा ।

घड़ेका ढक्कन—शराव । सरवा । कसोरा । परई । मलैया । ढक्कन ।

मटका (कुंडा)—कमोरा । मटकी । मणिक । अलिंजर । अलंजर ।

थाली—भोजनपात्र । टाठी । थाल । थारी । स्थाली ।

चकला—चौका । होरसा ।

पथरी—पथरौटा ।

सिल—सिलौटी । शिला । शिली ।

बट्टा—लोढ़ा । लोढ़िया । बटिया । बाटिका । बटिका ।

झरना—पौना । झन्ना ।

कठवत—कठौती । कठौता ।

बरतन—पात्र । भाण्ड । अमत्र । भाजन । बासन । आवपन ।

तेल की कुप्पी—कुतू । कुतुप । स्नेहपात्र ।

चौकी—चतुष्की । तख्ता । तखत ।

पीड़ा—पिढ़ई । आसन । पीठ । पाटा ।

सूप—शूर्प । प्रस्फोटन । फटकन । बेरमा ।

चलनी—चालनी । तितऊ । अँगिया । छन्नी ।

ओखली—उलूखल । उदूखल । ऊखल । ओखरी ।

मूसल—मुषल । मूसर । मूशल ।

चूल्हा—चुल्ही । उष्मान । उद्धार । अश्मन्त । अन्तिका । अधिश्रयणी । अन्दिका ।

चक्की—जाँत । चकिया । चकरी । जाँता ।

दौरा-दौरी—पिटक । पेटक । पिट । काण्डोल । कुरई । डेलवा । टोकनी । टोकरी ।

झाँपी—कट । किलिञ्जक । करंडा । पेटारा । पेटारी । मोना । मोनियाँ ।

अँगेठी—अँगारधानिका । हसन्ती । हसनी । अंगारधानी । अंगारशकटी ।

लुआठ (जलती हुई लकड़ी)—लुकाष्ठ (लुकाठ) । अलात । उल्मुक । अलाव ।

खपड़ी (चबैना भूनने का पात्र) अम्बरीष । भ्राष्ट । खपरा कड़ाह ।

भट्ठी (भाँड़)—कन्दू । स्वेदनी । (शराब चुआने की भट्ठी) । भाड़ ।

उपला (कण्डा)—गोहरा । गोहरी । कंडा । उपरी । चिपरी । करीष । गोइँठा ।

जलाने की लकड़ी—इंधन । ईंधन । इध । इध्म ।

राख—क्षार । छारा । राखी ।

जूठा भोजन—उच्छिष्टान्न । उच्छिष्ट । फेला । फेली । जूठन ।

७. वस्त्राभरण वर्ग

उबटन—उद्वर्त्तन । चिक्कस । चीकस । उच्छादन । उत्सादन । बुकवा ।

तैलमर्दन—अभ्यङ्ग । स्नेहन ।

स्नान—आप्लाव । आप्लव । नहाना (हनाना) । मार्ज्जन । मज्जन ।

चन्दनादिलेपन—चर्चा । चार्चिक्य । विलेपन ।

महावर—लाक्षा । आलक्तक (आलता) । जतु । याव । जावक । जतुरस । राग । जननी । सम्पद्या । अलक्तक । चक्रवर्त्तिनी ।

पुष्पमाला—माला । मालिका । स्रक् ।

[नोट—चोटी में लपेटी माला = आपीड़ । शेखर ।)

वस्त्र—कपड़ा । आच्छादन । वास । चैल । चेल । वसन । अंशुक । पट । परिधान । अम्बर । दुकूल । चीर । निचोल । कर्पट । सिचय । प्रोत । लक्तक । शाटक । कशिपु । छादन ।

रेशमी-वस्त्र—पाटपट । पाटम्बर । कौशेय । दुकूल । कृमिकोशोत्थ । कोसा ।

ऊनी-वस्त्र—रोम-पट । राङ्कव ।

नया-वस्त्र—नवाम्बर । कोरा कपड़ा । मड़िहारा कपड़ा । नूतन पट । तन्त्रक । निष्प्रवाणि ।

छालटी—वल्कल-वस्त्र । क्षौमी । शाण (सन के बने हुये कपड़े) दुकूल ।

धोया-वस्त्र—स्वच्छ वस्त्र । धौत वस्त्र । उद्गमनी ।

पुराना-वस्त्र—जीर्ण वस्त्र । पटच्चर ।

मोटा-कपड़ा—स्थूल शाटक । गज्जी । मोटऊ ।

फटा-कपड़ा—चिथड़ा । कर्पट । नक्तक । गूदड़ ।

खादी—(हाथ के कते सूत के हथकरघे पर बनेवस्त्र) खादी । खद्द

पगड़ी—पाग । पगिया । मुरेठा । सेला । साफा । समला । उष्णीष । सिर फेंटा ।

दुपट्टा (चादर)—दुकूल । चादर । प्रावर । प्रावार । उत्तरासग । बृहतिका । संव्यान । उपवस्त्र । वृहती । उत्तरीय ।

जामा—अँगरखा । कुरता । झगुली ।

धोती—अधोंशुक । परिधान । अन्तरीय । उपसंव्यान । [जनानी धोती = साड़ी ।] धौतपरिधान ।

फतुही—बनियान । गंजी । बंडी । सदरी । कुरती । झुल्ला ।

चोली—अँगिया । चोलिया । छोटा कपड़ा । खण्ड । चोल । कूर्पासक ।

कमरबन्द—कटि-फेट । फेटा । पट्टुका ।

लहँगा—आप्रपदीना । आप्रपदीन । चण्डातक । पटवास ।

रजाई—नीशार । ओढ़ना ।

[**नोट**—ऊनी कम्बल को 'रल्लक' कहते हैं ।]

तोशक—बिछौना । गद्दा । तूलिका । तुराई । तल्प ।

तकिया—उपधान । गलसुआ । गलसुई । उपबर्ह ।

[**नोट**—बड़ी तकिया = मसनद । छोटी तकिया = गेण्डुक, कन्दुक ।)

चँदवा—वितान । उल्लोच । चन्द्रातप । चँदोवा ।

परदा—यवनिका (जवनिका) । कनात । प्रतिसीरा । तिरस्करणी । पटल । पट ।

ओहार—परदा । अच्छदपट । निचोल । निचुल । पटल ।

कुरसी (मचिया)—आसन्दी ।

पलँग—सेज । शयनीय । पर्यंक । शैया । मंच । खट्वा । खटिया । चारपाई । तल्प । पलँगरी । पलङ्क ।

छड़ी—यष्टी । लगुड़ । लकुटी । बेंत । दण्ड । दण्डिका । लाठी । बाँस । डंडा । लकुट । गोजी ।

जूता (खड़ाऊँ)—उपानह । पादत्राण । पादुका । पादू । पादुक । पादपीठ । पनही ।

छाता—छत्र । छतरी । आतपत्र । छायामित्र । पटोटज । आतपवारण ।

कंघी—कंकती । कंकतिका । असाधन । केश-प्रक्षालिका । कँगही ।

दर्पण—मुकुर । आइना (ऐना) । आदर्श । शीशा ।

पंखा—व्यजन (विजन) । बेना । पंखी ।

पीकदान—प्रतिग्राह । पतग्रह । पीकदानी । आचमनक । प्रोण्ठ । कटकोल । पदद्ग्रह । निष्ठीवनपात्र ।

दीपक—दीप । प्रदीप । आलोक । प्रकाश । स्नेहाश । कज्जलतरु । शिखातरु । गृहमणि । ज्योत्स । बृक्ष । दशेन्धन । दोषातिलक । नयनोत्सव ।

डब्बा—सम्पुटक । समुद्गक । सम्पुटी । मञ्जूषा ।

आभूषण—अलङ्कार । भूषण । आभरण । परिष्कार । विभूषण । मण्डन । भूषा । अलंकरण । कलाप ।

[नोट—अलंकारयुक्त व्यक्ति = अलंकृत । भूषित । मण्डित । प्रसाधित परिष्कृत ।]

*शृङ्गार—भूषा । अलंक्रिया । साज । ठाठ । सिंगार ।

मुकुट—किरीट । मुकुट ।

शिरफूल—चूड़ामणि । शिरोरत्न । शिरोमणि ।

बेंदी वा टीका—ललाटिका । सिरबेंदी । बंदी । टीका । पत्रपाश्या ।

कर्णफूल—तरकी । तरौना । तालपत्र । कर्णिका । कनफूल ।

कुण्डल—कर्णवेष्टन ।

कंठा—कंठी । ग्रैवेयक । कण्ठभूषा । हँसुली ।

---

* शृंगार १६ हैं—१. शौच, २. उबटन, ३. स्नान, ४. केशबन्धन, ५. अङ्गराग, ६. अञ्जन, ७. जावक (महावर), ८. दन्तरञ्जन, ९. ताम्बूल, १०. वसन्, ११. भूषण, १२. सुगन्ध, १३. पुष्पहार, १४. कुंकुम, १५. भाल-तिलक, १६. चिबुक-बिन्दु ।

[नोट—लम्बी कंठी को ललन्तिका वा प्रलम्बिका कहते हैं ।]

मोती का हार—मुक्ताहार । उरसूत्रिका । हार मुक्तावली ।

नत्थ—नकबेसर । बेसर । नथिया । नथुनी (छोटीनथ) ।

नाक की कील—फूल । लौंग । कील ।

बिजायठ—बाजूबन्द । केयूर । अंगद । भुजबन्द ।

पहुँची—वलय । कटका । पारिहार्य । आवापक । प्रकोष्ठाभरण ।

कड़ा वा कंकण—कंकण । करभूषण । कंगन । (कँगना) ।

अंगुठी—मुद्रा । अंगुलीयक । ऊर्मिका । मुद्रा । मुँदरी । गोल । छल्ला ।

करधनी—मेखला । कांची । सप्तकी । रसना । शृंखला । किङ्किणी । क्षुद्रघंटिका ।

घुँघुरू—किंकिणी । क्षुद्रघण्टिका । क्षुद्रघंटी । प्रतिसरा । किंकणीका । कङ्कणी । कङ्कणिका । क्षुद्रिका । घर्घरी ।

पायजेब—पादकण्टक । हंसक । मंजीर । मंजील ।

नूपुर—बिछिया । गुँगिया । छल्ला । गूंगी । पादांगुद । हंसक । पादकटक । मञ्जीर । तुलाकोटि ।

८. ब्रह्मचारी वर्ग

पुस्तक—पोथी । किताब । ग्रन्थ । पुस्तिका ।

पत्रा—पन्ना । पत्र । कागज़ । कागद ।

कलम—लेखनी ।

स्याही—काली । मसि । रोशनाई । मेला । अञ्जन । पत्राञ्जन । रञ्जनी । मलिनाम्बु । मशी ।

दावात—मसिपात्र । मसिदानी । मसिधानी । मसिमणि । मस्याधार । मेलान्धु । वर्णकूपिका । मेलानन्दा । मसिधान । मसिकूपिका । बोरकना ।

पटिया—तख़्ती । पट्टी । पाटी । पट्ट ।

काला तख़्ता—श्याम-पट्ट । श्याम-पट । असित-पट्ट ।

नक्शा—मान चित्र । देश चित्र । राष्ट्र-चित्र ।

अध्ययन—पठन । पढ़ना । अभ्यासन । स्वाध्याय ।

अध्यापन—पाठन । पढ़ाना । निपाठ । शिक्षण ।

मनन करना—गुनना । बोध करना (होना) । अवधारण करना । अभ्यास करना । हृदयङ्गम करना । चिन्तन करना ।

हवन—(देखो स्वर्गादिवर्ग 'यज्ञ' शब्द पृष्ठ १३)

शाकल्य—शाकला । हवि । साम्नाय । हव्य ।

आचमन—उपस्पर्श । आचम । शुचिप्रणी ।

प्रणाम—नमस्कार । अभिवादन । पादग्रहण । चरण स्पर्शन । पायलागन । दण्डवत् । प्रणिपात । नमन ।

भूमिपर सोनेवाले—भूमिशायी । स्थण्डिल ।

ब्रह्मचारी का दण्ड—(पलास का दण्ड)=आषाढ़ । (बाँस का दण्ड)=राम्भ । वैणय । वेणुदण्ड ।

ब्रह्मचारी का पात्र—कमण्डलु । कमण्डल । कुण्डी । पञ्चपात्र ।

मृगचर्म—अजिन। चम। कृत्ति।

नित्य-कर्म—यम।

[नोट—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, और ब्रह्मचर्य—इनको यम कहते हैं]।

संस्कार-भ्रष्ट—व्रात्य। संस्कारहीन।

जनेऊ—उपवीत। यज्ञोपवीत। यज्ञसूत्र। ब्रह्मसूत्र।

कौपीन (लंगोटी)—कछनी। कच्छा। धटी। कच्छा। लँगोट। लंगोटी। काछा। भगई। भगवा।

आसन—(देखो भोजनादि वर्ग 'पीढ़ा' शब्द पृष्ठ १७०)।

मुण्डन कर्म—क्षौर। भद्राकरण। वपन। मूड़न।

होम का ईंधन—समिधा।

पवित्री—पैंती। कुशमुद्रिका। कुसपैंती।

[नोट—कुश के दलों की बनी हुई मुद्रिका जो श्राद्ध तर्पणादि में अनामिका में धारण की जाती है।]

***विवाह**—परिणय। उद्वाह। उपयाम। पाणिपीड़न। पाणिग्रहण। दारकर्म। उपयम। करग्रह। निवेश। ब्याह। शादी। मंगनी। सगाई। कुड़माई। परिभवन।

वर (बर)—दुलहा (दूलहा)। बर।

[नोट—सम्बन्धी वर्ग 'पति' शब्द के पर्य्याय वाले सभी शब्द इसके पर्य्याय हो सकते हैं।]

बरात (बारात)—वरयात्रा। जनेत।

बराती—वरयात्री। जनैती।

---

* मनु के अनुसार विवाह आठ प्रकार के माने गये हैं। यथा—१. ब्राह्म। २. दैव। ३. आर्ष। ४. प्राजापत्य। ५. आसुर। ६. गान्धर्व। ७. राक्षस। ८. पैशाच।

—मनुस्मृति अ० ३-२१.

९. राज वर्ग

राजधानी—कोट । राजधानिका । रियासत । स्कन्धावार ।

राज्य*—मण्डल । जनपद । देश । प्रदेश । राष्ट्र । विषय । उपवर्त्तन ।

राज्य-व्यवस्था—राजनियम । नीति ।

राज्याभिषेक—राजगद्दी । राज्यारोहण ।

दुन्दुभी—नौबत । नगाड़ा । भेरी । आनक । ढक्का । पटह । पटहा । डंका । दमामा ।

छत्र—ककुद । राजलक्ष्म । आतपत्र ।

चँवर—चामर । प्रकीर्णक । चौरी । चामरा । चामरी । रोमगुच्छक । बालव्यजन ।

पूर्णकलश—घटपूर्ण । भद्रकुम्भ । पूर्णकुम्भ ।

खेमा (पड़ाव)—शिविर । । डेरा । निबेश । पटवास । सेनानिवास ।

पहरा (गश्त)—सज्जन । उपरक्षण । चौकी । फेरी ।

कैद—कारावास-दण्ड । कारागृह-दण्ड । दण्ड । बन्धन । जेल की सजा । बन्ध ।

कोड़ा—चाबुक । बेंत । दुर्रा । साँटा । कवर ।

देश निकाला की सजा—निर्वासन ।

फाँसी की सजा—प्राणदण्ड । मृत्युदण्ड । शूली ।

महसूल—शुल्क । लगान (टैक्स) । पोत ।

राजगद्दी—नृपासन । भद्रासन । सिंहासन ।

---

* राज्य के आठ अंग माने गये हैं, जिन्हें राज्याङ्ग वा प्रकृति कहते हैं। यथा—१. राजा, २. अमात्य (मंत्री) । ३. सुहृत् । ४. कोष (खजाना) । ५. राष्ट्र (प्रजा) । ६. दुर्ग (किला) । ७. बल (शक्ति, सेनादि) । ८. पौर श्रेणी (पुरवासियों का समूह) ।

हाथी—गज। हस्ती। करी। वारण। मातङ्ग। गजेन्द्र (गयन्द)। कुंजर। सिंधुर। इभ। शुंडाल। कुंभी। नाग। पुष्करी। पद्मी। व्याल। दंती। द्विरद (दुरद)। द्वीप। वितुण्ड। (हाथी का बच्चा=कलभ)।

हथिनी—वसा। वरेणुका। करिणी। धेनुका। वासिता।

मदवाले हाथी—मदोत्कट। मदकल। मत्त। प्रभिन्न।

हाथी की सूड़—शुण्ड। तुण्ड। कर। शुण्डादण्ड।

हाथी का सिक्कड़—शृंखल। निगड़। सांकल। अलान। अन्दुक।

हाथी का मद—मद। दान।

हाथी का अंकुश—आँकुस। शृणी। अंकुश।

हाथी की बोली—चिग्घाड़। गर्जन।

घोड़ा—घोटक। अश्व। घोट। पीती। वीति। तुरंग (तुरग)। बाजी। वाह। हय। सैन्धव। गन्धर्व। अर्वा। हरी। धाराट। जवन। जवी। श्रीभ्राता। अमृतसोदर। वातायन। शालिहोत्री। मरुद्रथ। चामरी। एकशफ। आशु। सुपर्णा। विमानक। अरुष।

घोड़ी—वामी। अश्वा। बड़वा। घोटकी।

घोड़े की गर्दन के बाल—अयाल। आल।

घोड़े की खुर—खुर। क्षुर। शफा। सुम।

घोड़े की बोली—हिनहिनाना।

घोड़े की लगाम—बाग। बागडोर। लगाम।

घोड़े की चाबुक—कषा। सुटुकुनी। कोड़ा। चमोटी। चाबुक।

रथ (लड़ाई के लिये)—स्यन्दन। शताङ्ग।

हवाई-जहाज—पुष्प रथ। पुष्पक विमान। विमान। व्योमयान।

जनाना-रथ—कर्णीरथ। प्रवहण। हयन। डयन।

गाड़ी—शकट। गान्त्री। गान्त्रीक।

पालकी—शिविका। याप्ययान।

डोली—दोला। प्रेंखा। हिंडोल।

बख्तर—कवच। तनत्राण। वर्म। दंशन। कंकटक। जगर। कटक। योग। सन्नाह (सनाह) कंचुक। उरश्छद।

टोप—शिरस्त्राण। कुंडी। शीर्षण्य। शीर्षक।

गेंद—कन्दुक। गेण्डुक। गेंदा।

धनुर्धर—धन्वी। निषंगी। धनुष्मान्। धानुष्क। धनुर्भृत्। तीरन्दाज।

बर्छीबाज—शाक्तिक।

लट्ठबाज—याष्टिक। लट्ठैत। लाठीबाज।

धनुष—चाप। शरासन। कोदण्ड। कार्मुक। गुणी। तारक। धनु।

धनुष की डोर—गुण (गुन)। मुर्वी। शिंजिनी। प्रत्यञ्चा। मौर्वी। चिल्ला।

बाण—विशिख। शर। नाराच। खग। आशुग। कलम्ब। पत्री। इषु। शायक। अजिह्मग। मार्गण। असुप। काण्ड। प्रषत्क। शिलीमुख। पुंख। क्षुर। इक्षुप्र। सायक।

तरकश—तूण। तूणीर। निषङ्ग। इषुधि। तूणी।

तलवार—खड्ग। चन्द्रहास। करपाल। कृपाण। असि। रिष्टि। करवाल। मण्डलाग्र। कौक्षेयक। सायक। शायक।

ढाल—चर्म। फलक। फल। फर।

गुप्ती—ईली। करपालिका। खाँड़ा।

छुरी—छुरिका। असिपुत्री। असिधेनुका। कत्ती।

युद्ध—लड़ाई। आयोधन। विदारण। आस्कन्दन। समर। अनीक। रण। विग्रह। कलह। अभिसम्पात। संयुग। जन्य। प्रधन। मृध। संख्य। समीक।

साम्परायिक। संप्रहार। कलि। संस्फोट। संग्राम। अभ्यागम। समुदाय। संयत। सम्पराय। अभिमर। अभ्यामर्द। समाघात। आहव। आनाह। विदार। दारण। आनर्त्त। मार काट। मार। दंगा। जूझ।

तोप—तुपक। गोला। शतघ्नी।

बन्दूक—गोली। अग्न्यास्त्र।

भाला—शेल। शल्य। शंकु। दीर्घायुध। शल। कुन्त। विषांकुर।

वध—घात। हिंसा। प्रमापण। निवर्हण। निकारण। निशारण। प्रवासन। परासन। निसूदन। निहिंसन। निर्वासन। निर्ग्रन्थन। अपासन। निहनन। क्षणन। मारण। हनन। प्रतिघातन। उद्वासन। प्रमथन। क्रथन। आलम्ब। पिञ्ज। विशर। विदारण। पात। परिघ। परिघातन। कदन। निवारण। समाघात। उत्पात। मार। संघात। निधन।

चिता—चित्या। काष्ठ मठी। चैत्य। चिताचूड़क। चित्य। चिति।

१०. व्यवसाय वर्ग

जीविका—आजीव। वृत्ति। वर्त्तन। जीवन। वार्ता। जीव। जीवनोपाय। जीवन-मार्ग। रोजी। व्यापार। काम। व्यवसाय। धंधा। पर्य्युदञ्चन।

ऋण—उद्धार (उधार)। कर्ज़ा।

सूद—ब्याज। कुसीद। कुषीद। अर्थवृद्धि। अर्थप्रयोग। वृद्धिजीविका। वृद्ध्याजीवन।

सूद-खोर—कुसीदक। वृद्ध्याजीवी।

खेती—कृषि। कृषिकर्म। अनृतकर्म। किसानी।

खलियान—खल-स्थान। खलाधान। खरिहान।

कुदार—कुद्दाल। खनित्र। अवदारण।

हँसुआ—दात्र। लवित्र। दातरी। हँसिया।

हर—हल। हाल। लांगला। सीर। गोदारण।

हरिस—ईषा। लांगल। दण्ड।

हर का फाल—निरीप। कूटक। फाल। कृषिक। कृषिका।

बैल—वृषभ। बलीवर्द। उक्षा। भद्र। वृष। बरधा।

साँड़—षण्ड। गोपति। पिट्चर।

कोठार—कुठला। कोठिला। भंडार। कोठा। बखार।

रस्सी—दाम। दामा। रज्जु (लेजुर)। पशुरज्जु। दामनी। रसरी। उद्दाहिनी। उबहनी। उबहन।

मथानी—रई। छोढ़ी। वैशाख। मन्थ। मन्थान। मन्थदण्डक।

मूलधन—नीवी। परिपण। पूँजी।

नफा—मुनाफा। लाभ। फल।

लेन-देन—विनिमय। निमय। विमय। परिवर्त। प्रतिदान। अदल-बदल। एराफेरी।

धरोहर—उपनिधि। खादक। गिरों। खातक। गिरवीं। न्यास। ऋणिया। थाती।

ऋण लेनेवाला—खादक। खातक। ऋणिया।

बिक्री की वस्तु—विक्रेय। पणितव्य। पण्य। क्रय्य।

बेंचना—विक्रय। विपण।

तौल वा मान—परिमाण। मान। यौतव। पाय्य। मान।

तराजू—तुला। तौली। काँटा।

तराजू का पलड़ा—पल्ला। तुलापट। डाल। डल्ला। डलिया।

डाँड़ी—डाँड़। बेंट। दंडा। काँटा।

बाट—बटखरा। बटक। तुलक।

नकद—नगद। तत्काल-धन।

उधार—(देखो "ऋण" शब्द पृष्ठ १८१)

सस्ता—स्वास्थ। किफायत। मंदा।

मँहगा—महर्घ। कीमती। महँग।

दुकान—पण्यशाला। पण्य।

धन—सम्पत्ति। वित्त। द्रव्य। ऋकुथक। (रिकुथ)। अर्थ। विभव। भोग्य। लक्ष्मी। वसु। हिरण्य काञ्चन। भोग। वृद्धि।

जुआ—द्यूत। कैतव। पण। अक्षवती।

वेतन—मजूरी। दक्षिणा। विधा। कर्मण्या। भरण्य। भरण। मूल्य। पुरस्कार। भर्म्म। पण। आजीव। जीवन। वृत्ति। मेहनताना। कमाई। पारिश्रमिक।

सलाई—शलाका। सिक्चा। सींक। सीका। तीली।

दिया-सलाई—दीपशलाका। प्रदीपक।

भाथी—भस्त्रा । चर्मप्रसेविका । धौंकनी ।

कूँची (ब्रश)—तूलिका । इशिका । ईषिका । मार्जनी ।

घरिया (धातु गलाने की घटिका)—मूषा । कुल्हिया । धरिया । घड़िया । घटिका । कुल्या ।

कसौटी—कष । निकष । शाण । कस ।

रेती—पत्रपरशु । व्रश्चन ।

बरमा (छेदनेवाला)—बेधनी । बेधनिका । आविध । आस्फोटनी ।

कतरनी—कृपाणी । कर्त्तरी । कैंची ।

टाँकी—पाषाणदारण । टङ्क ।

आरा—क्रकच । करपत्र ।

खूँटी—भारयष्टी । मेख । काँटा । टँगनी ।

बहँगी—विहङ्गिका । विहङ्गिमा ।

सिकहर—छींका । शीका । शीक्य । काच ।

जाल—वागुर । बन्धनी । मृगबन्धनी ।

फन्दा—कूटयन्त्र । उन्माथ ।

गुड़िया—पुत्रिका । पुत्तलिका । पाञ्चालिका । पुतली । गुड्डआ । गुड्डई । पाञ्चाली ।

बाँक (टँगारी)—टँगारा । वृक्षभेदी । वृक्षादन । गैंटा । कुल्हाड़ी ।

चौपड़—शारि फल । अष्टापद । चौपट्ट ।

[**नोट**—शतरंज की गोटियों के भी ये ही नाम हैं ।]

पासा—पाशन । अक्ष । देवन ।

अस्तूरा—क्षुर । क्षुरिका । उस्तरा । छूरा ।

जामिन—प्रतिभू । लग्नक ।

खन्ती—स्तम्बघ्नी । स्तम्बहननी ।

सूई—शूचि ।

तागा—धागा । सूत । डोरा । डोर ।

सिकड़ी—साँकल । जंजीर । शृंखला । शृंखल ।

ताला—तलक । रक्षक । सुरक्षक ।

ताली—कुञ्जी । चाबी । कुञ्जिका ।

कुंडी—कुंडा । कोंढ़ा । कड़ी ।

११. स्वर-तालादि वर्ग

स्वर*—सुर । आवाज । बोल । ध्वनि । शब्द ।

ताल†—ठेका । करतलध्वनि ।

मधुर-स्वर—कल । काकली । मंद स्वर । सूक्ष्म स्वर ।

धीर-स्वर—गम्भीर स्वर । मद्र । मन्द्र ।

---

* संगीतशास्त्रानुसार स्वर के सात भेद हैं, यथा—१. षड्ज । २. ऋषभ । ३. गान्धार । ४. मध्यम । ५. पञ्चम । ६. धैवत । ७. निषाद वा सप्तम । इन्हीं सातों स्वरों को 'सरगम' कहते हैं । स्वरों के चढाव को आरोहण और स्वरों के उतार को अवरोहण कहते हैं ।

† ताल के मुख्य प्रकार—[१]अष्ट, [२]रुद्र, [३]ब्रह्म, [४]इन्द्र और [५]चतुर्दश ये पाँच हैं ।

(१) अष्टताल के भेद—१. आड़ । २. दोज । ३. ज्योति । ४. चन्द्रशेखर । ५. गञ्जन । ६. पञ्चताल । ७. रूपक । ८. समताल ।

(२) रुद्रताल के भेद—१. वीर विक्रम । २. विषम समुद्र । ३. घरण । ४. बीर दशक । ५. मण्डूक । ६. कन्दर्प । ७. डाँशपाहिड़ । ८. ध्रुव चरण । ९. दशकोषी । १०. गजेन्द्रगुरु । ११. छटका ।

(३) ब्रह्मताल के भेद—१. ब्रह्म । २. विराम ब्रह्म । ३. षट्कला । ४. सप्तमात्रा ।

(४) इन्द्रताल के भेद—१. देवसार । २. देव चाली । ३. मदनदोला । ४. गुरु गन्धर्व । ५. पञ्चाली । ६. इन्द्रभाष ।

(५) चतुर्दश ताल के भेद—१. चिन्हताल । २. चन्द्रमात्रा । ३. देवमात्रा । ४. अर्द्ध ज्योतिका । ५. स्वर्गसार । ३. लमाष्ट । ७. धराधरा । ८. वसन्त वाक् । ९. काक कला । १०. वीर शब्दा । ११. ताण्डवी । १२. हर्ष धारिका । १३. भाषा । १४. अर्द्धमात्रा ।

—"सङ्गीत दामोदर"

उच्च-स्वर—तार स्वर । तीव्र स्वर ।

चढ़ाव—आरोहण । आरोहन । प्ररोहण ।

उतार—अवरोहण । अवरोहन । अवतारण । अधोगमन ।

बाजा*—वाद्य । वादित्र । आतोद्य ।

वीणा—बीन । वल्लकी । विपञ्ची । परिवादिनी ।

मृदङ्ग—मुरज । पखावज ।

ढोल—पणव । पटह । ढक्का । ढोलक । ढोलकी ।

डमरू—डिंडिम ।

तबला—ठेका । डुग्गी । दुक्कड़ ।

सारंगी—चिक्कारा । सरगी । चीत्कारा ।

वंशी—बंसी । बाँसुली । मुरली । वेणु । मुरलिका ।

तुरही—शृङ्गी । सिंघा । मुरचंग (मुँहचंग) । विषाण ।

मजीरा—मञ्जीर । जोड़ी ।

शहनाई—पिपिहरी । नफीरी । रौशन चौकी ।

झाँझ—झाल । झल्लरी ।

डफला—डफ । चंग ।

---

*बाजों के दो भेद हैं—१. जो स्वर निकालते हैं और २. जो ताल देते हैं । पुनः बाजों के चार भेद माने गये हैं—१. तत, २. आनद्ध ३. सुषिर और ४. घन ।

(१) तत—वीणा, सितार, आदि तार वाले बाजे । (२) आनद्ध—मृदङ्ग, ढोल, तबला आदि ताल देने वाले बाजे । (३) सुषिर वा शुषिर—वंशी, तुरही, शंख आदि मुँह से बजाने वाले बाजे । (४) घन—घंटा, मजीरा, झांझ, भेरी आदि धातु के बने हुये घनघनाने वाले बाजे ।

चतुर्थ खण्ड

१. पशु वर्ग

पशु*—जानवर । चतुष्पद । चौपाया । मृग ।

सिंह—हरि । केसरी । केशरी । हर्यक्ष । मृगेन्द्र । मृगराज । पञ्चास्य । पारीन्द्र । श्वेत पिङ्गल । । कण्ठीरव । पंचशिख । शैलाट । भीमविक्रम । सटांक । केशी । महावीर । इभारि । मृगारि । क्रव्याद । नखी । मानी । विक्रान्त । बहुबल । दीप्तपिङ्गल । नखरायुध । पुण्डरीक । पञ्चानन । शेर । बबर ।

बाघ—व्याघ्र । द्वीपी । शार्दूल । पृदाकु । वनश्व । चित्रक । पुण्डरीक । हिंस्रक । श्वापद । पंचनख । व्याल । गुहाशय । तीक्ष्णदंष्ट्र । भीरु । नखायुध ।

व्याघ्र-नख—व्याड़ायुध । करज । नख । नखी । बघनखा । नखाङ्क ।

चीता—तरक्षु । मृगादन । तरक्षु । तर्क्षु । तरक्षुक । चित्रक । चित्रकाय । उपव्याघ्र । मृगान्तक । शूर । चित्र व्याघ्र । क्षुद्र शार्दूल ।

सूअर—शूकर । वराह । घृष्टी । कोल । किरी । किटि । दंष्ट्री । घोणी । स्तब्धरोमा । क्रोड़ । भूदार । पोत्री । दन्तायुध । पृथुस्कन्ध । पोत्रायुध । बह्वपत्य । वन्यस्य । रोमश ।

भेड़िया—वृक । ईहामृग । कोक । वत्सादन । विरुक । छागभोजी । जनाशन । हुँडार । बीघ । बग्घा । लकड़बग्घा ।

---

*चार पैरों से चलने वाले, सींग-पूँछ वाले जीव को पशु कहते हैं। इनमें सभी पशुओं को सींग नहीं होती, परन्तु पूँछ सभी के होती हैं।

नोट—'हाथी' और 'घोड़ा' के पर्याय 'राजवर्ग' पृ० १७८ में देखिये।

गैंड़ा*—गण्डक। खड्गी। खड्ग। गण्डा।

भालू—रीछ। ऋक्ष। भल्ल। भल्लूक। अच्छ भल्ल। अच्छ।

भैंसा—महिष। लुलाय। लुलाप। कासर। सैरिभ। वाहद्विष। यमवाहन। विषज्वर। वंशभीरु। आनूप। रक्ताक्ष। अश्वारि। कलुष। मत्त। विषाणी। गवली। बली।

ऊँट—क्रमेलक। महाङ्ग। मय। दीर्घगति। बली। करभ। धूसर। लम्बोष्ठ। रवण। महाजंघ। जवी। जांघिक। दीर्घ। शृंखलक। महाग्रीव। महानाद। महाध्वज। महापृष्ठ। बलिष्ठ। दीर्घजंघ। ग्रीवी। धूम्रक। शरभ। कण्टकाशन। बहुकर। भीली। अध्वग। मरुद्विप। वक्रग्रीव। वासन्त। कुलनाश। मरुप्रिय। दुर्ग लंघन। भूतघ्न। दासेर। दीर्घग्रीव। उष्ट्र। केलि कीर्ण।

गदहा—रासभ। गर्दभ। खर। वैशाख-नंदन। चक्रीवान्। शीतलावाहन। वालेय। राशभ। शङ्कुकर्ण। भूरिगम। धूसराह्वय। वेशव। धूसर। चिरमेही। चारपुंख। चारट। ग्राम्याश्व।

[नोट—गदहे और घोड़ी के संयोग से 'खचर' जाति की उत्पत्ति होती है। यह बहुत दीर्घायु और परिश्रमी होता है।]

सियार (गीदड़)—शृगाल। शिवा। फेरु। मृगधूर्त्तक। वञ्चक। जम्बुक। जम्बूक। भूरिमाय। गोमायु। फेरव। मूत्रमत्त। कुरव। श्वधूर्त। वनश्वा। घोर बासन। शालावृक। गोमी। कटस्वादक। शिवालु। फेरण्ड। व्याघ्रनायक। निष्ठुर। खल। भीरु।

---

* गैंडा—भैंस के आकार का एक बड़ा पशु होता है, जो जंगलों में नदी के किनारे के दलदलों में पड़ारहता है। जंगली झाड़ियों की जड़ों और कोपलों को खाता है। इसके पैरों में तीन तीन अँगुलियाँ होती हैं। इसका चमड़ा बिना बाल का अत्यन्त मोटा और कड़ा होता है, जिससे ढाल बनाई जाती है। इसकी नाक पर पैनी सींग होती है, जिससे यह चोट करता है। गंगासागर के पास सुन्दर वन में गैंडे बहुत मिलते हैं।

—"हिन्दी शब्द सागर"।

हरिण*—मृग। कुरङ्ग। अजिनयोनि। सारङ्ग। भीरुहृदय। वातायु। ऋश्य। कुरङ्गम। चारुलोचन। सुरभी।

मृग-चर्म—अजिन। ऐण।

बन्दर—बानर। शाखामृग। मर्कट। कपि। प्लवङ्ग। प्लवग। कीश। वलीमुख। वनौका। मर्क। प्लव। प्रवङ्ग। प्रवग। प्लवङ्गम। गोलाङ्गूल। कपित्थास्य। हरि। नगाटन। झम्पी। केलिप्रिय। शालावृक। शिखि।

गाय—माहेयी। सुरभी। गोरू। शृंगिणी। अघन्या। अर्जुनी। रोहिणी। गौ। उस्रा। धेनु। सौरभेयी। अघ्ना। दोग्धी। भद्रा। भूरिमही। माहेन्द्री। इज्या। दोग्ध्री। अनडुही। कल्याणी। पावनी। गौरी। महा। द्विडा। सरस्वती। बहुला। अही। अदिति। इला। जगती। शर्करी।

गाय का बछवा वा बछिया—वत्स। सकृत्करी। बछवा (बछिया)।

गायों का समूह—गोधन। गोकुल।

भेंड़ा—मेष। वृष्णि। एड़क। मेढ़। उरभ्र। उरण। ऊर्णायु। भेंड़। हुड़। शृंगिण। अवि। लोमश। वली। रोमश। भेंड़क। भेंटक।

बकरा—अज। छाग। छगलक। वस्त। स्तुभ। छगल। तभ। स्तभ। शुभ। बर्कर। क्रयसद। पर्णभोजी। लम्बकर्ण। मेनाद। अल्पायु। पयस्वल। छगड़ी। अबुक। मेध्य। पशु।

---

* मृग के भेद—१. कृष्णसार। २. रुरु। ३. न्यंकु। ४. रंकु। ५. शंकर। ६. रौहिष। ७. गोकर्ण। ८. पृषत। ९. ऐण। १०. ऋश्य। ११. रोहित। १२. चमर।

हरिण के भेद—१ गन्धर्व। २. शरभ। ३. राम। ४. सृमर। ५. गवय। ६. शश। 'बारहसिंगा' नामक हरिण की एक जाति विशेष है, इसकी सींग के बीच से शाखा रूप में कई सींगें निकलती रहती हैं।

सृमर = साँभर, चीतल। गवय=नीलगाय। शश=खरहा। ये सब मृग के ही भेद हैं।

साही—श्वावित् । शल्य ।

साही के रोम (काँटे)—श्वाविध । शलल । शल । शलली ।

बिलार—बिड़ाल । बिल्ली । बिलैया । मार्जार । मार्जारी (स्त्री०) । वृषदंशक । आखुभुक् । विराल । विलाल । दीप्ताक्ष । जाहक । विड़ारक । त्रिशङ्कु । जिह्माप । मेनाद । सूचक । मायावी । शालावृक । दीप्तलोचन ।

❀ **कुत्ता**—कुक्कुर । श्वान । श्वा । शुनक । शुनि । भाषक । कौलेयक । सारमेय । मृगदंशक । भषण । भल्लूक । वक्रलाङ्गूल । वृकारि । रात्रिजागर कालेपक । ग्राम्यमृग । मृगारि । शूर । शयालु ।

[**नोट**—कुतिया=सरमा, शुनी, कुक्कुरी, भषी आदि ।]

खरहा—खरगोश । शश । शशक । शसा ।

चूहा—मूषक । उन्दुरु । मूषीक । बभ्रु । पिंग । आखनिक । वृष । वृश । नखी । खनक । बिल्कारी । धान्यारि । आखु । बहुप्रज । मूसा ।

[**नोट**—छोटी चूहियों को बालमूषिका, गिरिका, चुहिया, मुष्टी, वा मुसटी कहते हैं ।]

छछूंन्दर—दीर्घतुण्डिका । गंधमुखी । गंधमूषिका ।

नेवला—नकुल । पिङ्गल । सर्पहा । बभ्रु । सूचीवदन । सर्पारि । लोहितानन ।

गिलहरी—गिलाई । चेखुर । गिल्ली । गिरि ।

[**नोट**—यह रोयेंदार पूँछवाला जानवर चूहे की एक विशेष जाति है, जो वृक्षों पर विशेषतः रहती है ।]

---

* कुत्ते के ६ गुण—बह्वाशी स्वल्पसन्तुष्टः सुनिद्रः शीघ्रचेतनः ।
प्रभुभक्तश्च शूरश्च षडेते च शुनो गुणाः ॥
—'चाणक्यनीति' ।

बहु भोजी, स्वल्प सन्तोषी, खूब सोनेवाला, शीघ्र चैतन्य हो जाने वाला, प्रभु भक्त और शूर ये छः गुण कुत्ते में होते हैं ।

२. सरीसृप वर्ग

शेषनाग—अहिराज। सहस्रानन। फणीश। धरणीधर। अहीश। नागराज। पन्नगेश। शेष। अनन्त। सर्पपति। महाअहि। सहस्रमुख। महिधर।

सर्पराज—वासुकी। वासुकेय।

सर्प—भुजग। भुजंग। नाग। फणी। द्विरसन। व्याल। अहि। उरग। पन्नग। साँप। दर्वी। चक्षुश्रा। भोगी। पवनाशन। हरि। सारंग। आशीविष। गूढ़पद। विषधर। करदर्प। लेलिहान। जिह्मग। मणिधर। फणधर। चक्री। काल। बिलेशय। कुण्डली। दीर्घपृष्ठ। काकोदर। दन्तशूक। दर्वीकर। तक्षक। गोकर्ण। कुम्भीनस। कञ्चुकी। पृथाकु।

गोनस-सर्प—गोनस। तिलित्स।

अजगर-सर्प—शयु। वाहस।

डेड़हा-सर्प—जलव्याल। अलगर्द। आनगर्द। अलिगर्द।

दोमुँहा-साँप—राजिल। डुण्ड।

करैत-साँप—मालुधान। मातुलाहि। करइत।

साँप का शरीर—भोग।

साँप का फन—फण। फटा। फणा। फट। स्फट। दर्व्वी। फटी। स्फुट।

साँप का केंचुल—कञ्चुक। निर्मोक। केंचुली।

साँप का दाँत—अहिदंष्ट्र। आशी।

साँप का विष—क्ष्वेड। गरल। विष। गर।

साँप पकड़नेवाला—सँपेरा। मदारी। व्यालग्राह। गारुड़ी। अहितुंडिक।

बिच्छु—बीछी। अलि। द्रोण। वृश्चन। अरुण। आली। वृश्चिक।

कान खजूरा—कर्णसूचिका। शतपदी। गोजर। कर्णजलौका।

बिल—कुहर। सुषिर। विल। छिद्र। सुषि। निर्व्यथन। रोक। श्वभ्र। दर। विवर। छेद। वया। खूराख।

गोह—निहाका। गोविका। गोधी।

केचुआ—गण्डुपद। किञ्चुलुक। शिली। गण्डूपदी। शूककीट।

गिरगिट—सरट। कृकलास। गिरगिटान।

छिपकिली—गृहगोलिका। गृहगोधी। गृहगोधिका। मुषली। गृहालिका। विषतुइया। पल्ली।

३. पक्षी वर्ग

पक्षी—खग। विहङ्ग। विहग। विहङ्गम। विहायाः। शकुनि। शकुन्ति। शकुन्त। शकुन। द्विज। पत्री। पतत्री। पतग। पत्ररथ। अण्डज। नगौका। वाजी। विकिर। नीडोद्भव। गरुत्मान्। नभसङ्गम। नभचर। नाडीचरण। पतङ्ग। चंचुभृत्। छुरण्ड। सरण्ड। द्युग। चिड़िया। चिरई। चिरैया। पंछी।

मोर—मयूर। बर्ही। बर्हिण। नीलकण्ठ। भुजङ्गभुक्। शिखावल। शिखी। चन्द्रकी। सिताङ्ग। ध्वजी। मेघानन्दी। केकी। कलापी। शिखण्डी। चित्रपिच्छिक। मेघनादानुशासक। भुजगभोगी।

मोर-शिखा—बर्हिचूड़ा। शिखिनी। शिखालु। शिखा। सुशिखा। शिखाबला। केकीशिखा।

मोर-चन्द्रिका—मेचक। चन्द्रक। चन्द्रिका।

पपीहा—चातक। स्तोकक। सारङ्ग। मेघजीवन। हरि। तोकक। पपीहरा। पपैया।

हंस—राजहंस। कलकण्ठ। सितच्छेद। सितपक्ष। सरःकाक। पुरुदंशक। धवलपक्ष। मानसालय। श्वेतगरुत्। मानसौक।

बगुला—बलाका। बिसकंठिका।

बत्तख—कादम्ब। कलहंस। प्लव। कारण्डव।

सारस—लक्ष्मण। लक्ष्मग। सरसीक। पुष्कराह्व। गोनर्द। नाङ्कुर। सरोत्सव। रसिक। कामी।

[**नोट**—मादा सारस = सारसी, लक्ष्मणा।]

कुररी—कुरर। उत्क्रोश। कुरल। खरशब्द। क्रौञ्च। पंक्तिचर। टिट्टिभ। टिटिह। टिटिहरी। टिट्टी।

चकवा—कोक। चक्र। रथाङ्ग। भूरिप्रेमा। द्वन्द्वचारि। सहाय। कान्त। कामी। कामुक। रात्रिविश्लेषगामी।

गरुड़—गरुत्मान्। तार्क्ष्य। वैनतेय। खगेश्वर। विष्णुरथ। नागान्तक। सुपर्ण। पन्नगासन। महावीर। पक्षिसिंह। शाल्मली। हरिवाहन। अमृताहरण। खगेन्द्र। भुजगान्तक। तरस्वी। तार्क्ष्यनायक।

खंजन—खिड़रिच। खञ्जरीट। कणाटीन। काकछर्दि। खञ्जखेल। तातन। मुनिपुत्रक। भद्रनामा। रत्ननिधि। खञ्जखेट। गूढ़नीड़। तण्डक। चर। काकच्छद। नीलकण्ठ। कणाटीर। कणाटारक।

कोयल—कोकिल। परभृत। पिक। वनप्रिय। परपुष्ट। काल। वसन्तदूत। ताम्राक्ष। गन्धर्व। मधुगायन। वासन्त। कलकण्ठ। कामान्ध। काकलीरव। कुहूरव। मत्त। मदनपाठक।

आड़ी—शराली। आटी। आठी। शराडी। शर ाटी। शराती।

गिद्ध—गृद्ध। दूरदर्शन। दाक्षाय्य। वज्रतुण्ड।

चील—चिल्ल। आतायी। आतापी। पिल्ल।

कौआ—काक। काग। करट। अरिष्ट। बलिपुष्ट। ध्वांक्ष। आत्मघोष। बलिभुक्। वायस। दीर्घायु। कृष्ण। पिशुन। ग्रामीण। कटखादक। सूचक। काण। धूलिजंघ। कौशिकारि। मुखर। खर। महालोल। चिरंजीवी। चलाचल। करकट। नागवीरक। सकृत्प्रज। गाढ़मैथुन। श्रावक। रतज्वर।

डोमकौआ—द्रोण काक। काकोल। द्रोण। कालकंटक।

चमगादर—जतुका। जतूका। चमगुदरी। परोष्णी। तैलपायिका। अजिन पत्रा। चर्मचटिका। चमगीदर।

हारिल—हरीत। हारिल सुग्गा।

सुग्गा वा तोता—शुक। कीर। वक्रतुण्ड। मेधावी। रक्ततुण्ड। दाड़िमप्रिय। वक्रचञ्चु। चिमि। चिमिक। शूक। प्रियदर्शक। मञ्जुपाठक।

मैना—सारिका। सारी। पीतपादा। गोराटी। शारिका। गोकिराटिका। चित्रलोचना। मधुरालापा। पूती। मेधाविनी। गोराण्टिका। गोकिराटी। गोरिका। कलहप्रिया। धड़वा।

तीतिर—तित्तिरी । तैतिर । तीतुर । तीतल । कुक्कुभ । याजुषोदर ।

बटेर—वर्त्तका । वर्त्तिका । वर्त्तिक ।

नीलकंठ—चाष । चास । किकीदिवी । किकीदिव ।

भुजंगा—कलिंग । भृंग । धूम्याट । नौवा ।

कठफोरा—शतपत्रक । दार्वाघाट ।

उल्लू—घुग्घू । उलूक । कौशिक । तामस । घूक । कुशि । दिवान्ध । नक्तञ्चर । निशार । काकारि । घोरदर्शन । लक्ष्मी-वाहन ।

बाज—श्येन । शशादन । पत्री । कपोतारि । पतङ्गोरु । घातिपक्षी । ग्राहक । पक्षी । शशाद । क्रव्याद । क्रूर । बेगी । खगान्तक । करग । नीलपिच्छ । लम्बकर्ण । रणप्रिय । रणपत्री । पिच्छवाण । स्थूल नील । भयंकर । शशघातक । कुही ।

लवा—भरदूल । भरद्वाज । भरुई । व्याघ्राट । लाव । भरद्वाजक । कोरक ।

कबूतर—कपोत । पारावत । गृहकपोत । कलरव । छेद्म । पारापत । गृहकुक्कुट । रक्तलोचन ।

रुरुआ*—कर्करेट । करेटू । ररुई । कौड़िला ।

टिटिहरी—टिट्टिभी । कोयष्टी । टिटिही ।

मुर्गा—ताम्रचूड़ । अरुणशिखा । कुक्कुट । चरणायुध । कृकवाकु । कालज्ञ । नियोद्धा । विष्किर । नखरायुध । रात्रिवेद । उषाकर । वृताक्ष । काहल । दक्ष । यामनादी । शिखण्डिक । कुक्कुड़ ।

गौरैया—चटक । कलविंग । चित्रपृष्ठ । गृहनीड़ । वृषायण । कामुक । नीलकण्ठक । कालकण्ठक । कामचारी । कला विकल ।

---

* कहते हैं कि रुरुआ पक्षी जिस किसी का नाम सुन पाता है, वह उसी नाम की रट लगाने लगता है। जिससे उस मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। यह निचाट रात में बोलता है। इसकी बोली कर्कश होती है और अशुभ मानी जाती है।

चकोर—चन्द्रिकापायी। कौमुदीजीवन। चकोरक। कोरक।

काका कौआ—काकातूआ। तूआ।

चोंच—चञ्चु। ठोर। टोंट। त्रोटि। चंचू। चंचुका। सृपाटिका। तुंड।

अंडा—पेशी। कोष। पेशीकोष। डिम्ब।

घोंसला—नीड़। कुलाय। खोता।

पंख—पखना। पर। डैना। पक्ष। पत्र। छद। पतत्र। गरुत्।

चिड़ियों के बच्चे—पोत। पोतक। शावक। अर्भक। पाक। डिम्भ। पृथुल। शिशु। पोआ। गेदा।

४. कीट-पतङ्गादिवर्ग

मक्खी—मक्षिका। माखी। माछी। मच्छी। भम्भ। माचिका। पतंगिका। पत्तिका। अमृतोत्पन्ना। वमनीया। नीला। पलङ्कषा। वर्वणा।

मच्छर—मच्छड़। डाँस। दंश। सूक्ष्ममक्षिक। वज्रतुण्ड। सूच्यास्य। मशा (माशा)। वनमक्षिका।

भौंरा—भ्रमर। अलि। मधुकर। मधुव्रत। मधुलिट्। मधुप। द्विरेफ। पुष्पलिट्। भृंग। षट्पद। अली। कालालाप। शिलीमुख। मधुकृत। द्विप। भसर। चञ्चरीक। सुकाण्डी। मधुलोलुप। इन्दिन्दिर। मधुपर। लम्ब। पुष्पकीट। भृंगराज। मधुमारक। मधुसूदन। मधुलेही। रेणुवास।

मधुमक्खी—मधुमक्षिका। सरघा। सहद की माखी। मछोह। भौंर।

[शहद की मक्खी चार प्रकार की होती है—पुत्तिका, भ्रमर, क्षुद्रा, मक्षिका।]

बर्रैं—भिड़। ततैया। वरट। वरटा। गन्ध मक्खी। गन्धोली। भिर्र।

[**नोट**—लाल बर्रैं को 'हड्डा' वा 'हाड़ा' कहते हैं। इनके डंक मारने पर डँसा हुआ स्थान प्रायः पक जाता है और जब तक उसके अन्दर से टूटे हुये डंक के आर नहीं निकल जाते तब तक घाव अच्छा नहीं होता।]

झींगुर—झिल्ली। झिल्लरी। भृंगारी। भीरुका। चीरी। झीरिका। झिल्लिका। चिल्लिका। चीलिका।

फतिंगा—दीपपतङ्ग। शलभ। पतङ्ग। फनगा।

टिड्डा-टिड्डी—शलभ। पत्रांग। पत्राङ्क। पतंग। फनगा।

[**नोट**—चपड़ा, फनगा आदि अनेक प्रकार के फतिंगों के भी ये ही पर्य्याय होंगे।]

जुगुनू—खद्योत। ज्योतिरिङ्गण। प्रभाकीट। उपसूर्य्यक। तमोमणि। दृष्टिबन्धु। तमोज्योति। ज्योतिरिंग। निमेषक। खज्योति। सोनकिरवा। पटवीजना।

मकड़ी—लूता। तन्तुवाय कीट। मर्कटक। ऊर्णनाभ। मर्कट। लूतिका। शनक। मकरी।

खटमल—खटकीरा। खट्वमल। उद्दंश। उड्डंस। मत्कुण। कोणकुण। उत्कुण। किटिभि। रक्तपायी। मञ्चकाश्रय।

चीलर—चिल्लड़। चैलकीट। चैलारि।

जूँ—जुँआ। ढील। लीख (लीक)। लिक्षा। लिक्का। लिक्षिका। यूका। केशकीट। पाली। बालकृमि। स्वेदज। षट्पद।

घुन—घुण। काष्ठभेदक। काष्ठकृमि। काष्ठवेधक।

चींटी—च्युँटी। पिपीलिका। पिपील। पीलक। पिपीली। चिमटी।

चींटा—च्यूँटा। चिमटा। पिपीलक।

लाल चींटा—बेमटा। माटा।

[**नोट**—यह लालरंग का चींटा होता है जो कि आम, इमली, अमरूद, आदि मीठे फलवाले वृक्षों पर अधिक रहता है। यह बहुत तेज काटता है।]

वीरबहूटी—वीरवधूटी। इन्द्रवधूटी। मखमली कीड़ा। वैराट। इन्द्रगोप। अग्निरज। तितिभ। अग्निक। वर्षाभू। रक्तवर्ण।

[**नोट**—यह छोटी मकड़ी के आकार का लाल मखमल जैसे मुलायम चमड़ेवाला कीड़ा बरसात के आरम्भ में खेतों और बगीचों में बहुधा पाया जाता है। यह एक प्रकार का उष्मज कीड़ा है, जो वनस्पतियों और भूमि की उष्मा से उत्पन्न होता है।]

५. क्रियादि वर्ग

अकुलाना—व्याकुल होना। घबड़ाना। अधीर होना। आकुल होना। उकताना। ऊबना। अफरना। खिझाना।

अगोरना—रखाना। रखवाली करना। सुरक्षित रखना। यत्न से रखना। चौकी देना।

अघाना—तृप्त होना। पेट भरना। सन्तुष्ट हो जाना। छकना। पूर्ण हो जाना। अफरा उठना। अफरना। हिया भरना। जी भर जाना।

अँगेजना—बरदाश्त करना। सहना। ओज लेना। ओजना।

अचवना—मुँह धोना। कुल्ली करना। आचमन करना। अचवन करना।

अटना—समाना। भर जाना। भरना। पर्य्याप्त होना।

अटकना—रुकना। ठहरना। टिकना। अड़ना। फँसना। बझना। उलझना। अरुझना।

अटकाना—रोकना। ठहराना। टिकाना। अड़ाना। छेकना। वारण करना। रुकावट डालना। फँसाना। उलझाना। बझाना।

अठिलाना—इतराना। ऐंठना। चोंचलाना (चोंचला करना)। नखरा करना। ठसक दिखाना। मदान्ध होना। ऐंठ दिखाना। इठलाना। मटकाना। चमकाना।

अपनाना—अङ्गीकार करना। स्वीकार करना। अँगेजना। आश्रय देना।

अराधना—सेवना। पूजना। जपना। सुमिरना (स्मरण करना)।

अलसाना—सुस्ती करना। ऊँघना। तन्द्रित होना। मंद होना। ठंडे पड़ना। सुस्ताना। झपकना। प्रमत्त होना।

अवगाहना—थहाना। मथना। घंघोरना। निमज्जना। खँगारना। हिलोरना।

अवमानना—अनादर करना। अपमान करना। निरादर करना। तिरस्कार करना। अवहेलना करना।

अवराधना—[देखो 'अराधना' शब्द]

अलापना—गाना। राग काढ़ना। राग अलापना।

आँकना—अन्दाजना। अनुमान करना। निरखना। समझना।

आना—आगमन होना। उपविष्ट होना। उपस्थित होना। हाजिर होना।

उकटना—(बात) ओटना। बारबार कहना। नंगई करना। बात खोलना। (सं० उत्कथन)।

उकताना—चिढ़ना। चिढ़ाना। ऊबना। उबाना। खीझना। खिझाना। घबड़ाना।

उकसना—चढ़ना। उठना। उभड़ना। उमड़ना। तनना। ऊपर आना। उचकना। उझकना। उछलना। कूदना।

उकेलना—उधेड़ना। खोलना। उकिलना। उखिलना। उलटना। उतिनना।

उखड़ना—निकलना। उकसना। उभड़ना। उमड़ना।

उगना—उरोहना। उत्पन्न होना। निकलना। अँकुराना। उभड़ना। बढ़ना। अँखुआना।

उगलना—निकालना। थूकना। कय करना। उलटना। उलटी करना। बमन करना। बाहर करना। ओकाना। प्रकट करना। आगेरखना। ओकलाना। छाँट करना।

उगाहना—वसूल करना। उतारना। तहसीलना। इकट्ठा करना। एकत्र करना।

उघारना—खोलना। नंगा करना। परदा खोलना। व्यक्त करना। प्रकट करना। उद्घाटित करना। जाहिर करना।

उचटना—उखड़ना। टूटना। बिछुलना। बिचलना। बिखरना। खिन्न होना। उच्चाट होना। विचलित होना।

उचाड़ना—नोंचना। खसोटना। नकोटना। उधेड़ना। निकालना। अलगियाना।

उछलना—फुदकना। कूदना। उछाल मारना।

उजड़ना—उखड़ना। विनाश होना। बिलटना। नष्ट होना।

उझिलना—उँडेलना। उलटना। ढालना। उलिचना। उदहना। उछिलना। निकालना।

उतरना—धँसना। नीचे आना। अवतरित होना। घटना। आजाना।

उतराना—ऊपर आना। तैरना। पैरना। थिराना। पौड़ना।

उतारना—नीचे लाना।

[**नोट**—देखो "उकेलना" पृष्ठ २०२]

उथलना—उलटना। औंधाना। नीचे ऊपर करना।

उद्धारना—मुक्त करना। छुटकारा देना। स्वतन्त्र करना। बचाना। तारना। पार लगाना।

उपटना—दाग पड़ना। निशान पड़ना। उभर आना। उपट आना।

उफनना—उबलना। खौलना। गरमा जाना। गरम होना। उथलना। जोश में आना।

उबालना—गरमाना। पकाना। औटाना। खौलाना। जोश लाना। औटना।

ऊँघना—झपकी लेना। तन्द्रित होना। अलसाना। सुस्त पड़ना। पलक मारना। झेंपना।

ऐंठना—उमेठना। मरोरना। मरोड़ना। मुर्री देना। अकड़ना।

ओढ़ना—पहनना। धारण करना। लपेटना।

ककोरना—खुरचना। छीलना। खोदना। उखाड़ना। खुरेदना। कुरेदना। करोना। खींचना।

कचरना—रूँधना। गूँथना। रौंदना। कूँचना। माड़ना। सानना। मसलना। कूटना। मलना। दबाना।

कतरना—काटना। छाँटना। काट-छाँट करना।

करकना—खटकना। गड़ना। चुभना। पीड़ा देना। दुखना। कसकना।

कहना—कथना। वर्णन करना। निवेदन करना। बोलना। कथन करना। बयान करना। उच्चारण करना। भाषण करना। बतराना। बताना। बतलाना। उचारना। संलाप करना। व्यक्त करना।

काटना—कतरना। मारना। तोड़ना। अलग करना। टुकड़े करना।

भोंकना—गुभाना। खोंसना। घुसेड़ना।

कोंचना—चुभाना। धँसाना। गड़ाना। गोदना। गुभाना। बींधना।

कोसना—अपवाद करना। बुराभला कहना। सरापना। गाली देना। बदकारना। निन्दा करना। शाप देना। जी दुखाना। जलाना। कुढ़ाना। दुःखी करना।

खाना*—भोजन करना। जेंवना। भोग लगाना। भोजन पाना। प्रसाद पाना

खिसकना—टसकना। टलना। हटना। आगे बढ़ना। विसकना। चम्पत होना। भाग जाना। रफूचक्कर होना।

खेलना—क्रीड़ा करना। मौज करना। आनन्द करना। खेल करना। मन लुभाना। बहलना। खेल-कूद करना।

गढ़ना—निर्माण करना। बनाना। रचना। ठोंकना। सुधारना। सँवारना।

गन्धाना—बसाना। महकना। सड़ना। बदबू करना। दुर्गन्ध। करना।

गर्जना—गाजना। चिग्घाड़ना। गुर्राना। धड़धड़ाना। गर्जन करना।

---

* छः प्रकार के भोजन पदार्थों के अनुसार क्रमशः खाने के लिए पर्याय शब्द—भक्ष्य = निगल जाना। भोज्य = खाना, भोजन करना। चर्व्य = चबाना। चोष्य = चूसना। लेह्य = चाटना। पेय = पीना।

गलना—पिघलना। द्रवीभूत होना। द्रवित होना। घुलना। आर्द्र करना। नरमाना।

गिरना—पतित होना। पात होना। लुढ़कना। पड़ना। नीचे आ जाना। पतन होना।

गूथना—सीना। टाँकना। पोहना। गुत्थी करना। लगाना। पिरोहना।

गूँधना—[देखो पृष्ठ २०४ 'कचरना' शब्द]।

घिनाना—घृणा करना। नफरत करना। मुँह फेरना। निन्दा करना। जुगुप्सा करना।

घिरना—आवृत होना। छेका जाना। घेर जाना। बझना। बँध जाना। फँस जाना। फँसना।

घिसना—रगड़ना। रगड़ जाना। संघर्षण होना। मलना। खियाना।

घुसना—पैठना। प्रविष्ट होना। चुभना। भीतर जाना। धँसना। गड़ना। पिलना।

घोंटना—चिकनाना। साफ करना। चमकाना। पीसना।

[**नोट**—'रगड़ना' के अर्थ में भी 'घोटना' शब्द का प्रयोग होता है।]

चपाना—दाबना। थोपना। लजाना। दबाव डालना। विवश करना।

चभोरना—डुबकी देना। डुबाना। बुड़ाना। बोरना। भिगोना। तर करना। सराबोर करना।

चमकना—दमकना। प्रकाश होना। चमचमाना। बलना। झलकना। लौकना। लहकना।

चलना—गमन करना। आगे बढ़ना। पधारना। पदार्पण करना। विचलित होना। चलायमान होना। बढ़ना। प्रस्थान करना। कढ़ना। निकलना। जाना।

चसना—मरना। नष्ट होना। मसकना। फटना। गड़ना। बिगड़ना। टूट-फूट जाना। कसकना।

चहकना—खुश होना। चहचहाना। शोभित होना। प्रसन्न होना। किलकिलाना। खिल उठना।

चहलना—कचरना। माड़ना। काँड़ना। कुचलना। कूचना। गींजना।

चालना—छानना। पछोरना। झारना। कटकना।

चिढ़ाना—कुढ़ाना। खीझना। चिड़चिड़ाना। झल्लाना। अप्रसन्न होना।

चिताना—बतलाना। बताना। जताना। जतलाना। सूचित करना। सावधान करना। चौकस करना। याद दिलाना। चेत धराना। चैतन्य करना।

चिल्लाना—चीत्कार करना। शोर करना। हल्ला मचाना।

चिलकना—चमकना। टीसना। टीस मारना। दर्द होना। टपकना।

चुभना—धँसना। गड़ना। घुसना। गुदना। कोंचना। पैठना। छिपना। बिंधना।

चुराना—हरना। अपहरण करना। चोरी करना। ठगना। लूटना। मूसना। तस्करी। बटमारी करना। गिरहकट्टी करना। छलना। डाका मारना वा पड़ना। डकैती करना। झटकना।

चूकना—भूलना। गलती करना। भ्रम करना।

छजना—शोभना। (सोहना) शोभा देना। सजाना। जँचना।

छिड़कना—सींचना। तर करना। छींटना। भिगोना। आर्द्र करना। छिड़काव करना।

छिपना—लुकना। हटना। गुम होना। दबक रहना। गुप्त रहना वा होना। लुका जाना। अप्रकट होना। आड़ करना। अप्रकाशित होना। ओट में होना।

छूना—स्पर्श करना। हाथ लगाना। परसना।

छेदना—वेधना। पार करना। छिद्र करना। गोदना। गड़ाना। चुभाना। धँसाना। बिल करना।

जनना—जनाना। उत्पन्न करना। प्रसव करना। जन्म देना।

जमाना—(१)—बोना। वपन करना। उत्पन्न करना। (२)—गाढ़ा करना। तह लगाना। थोक करना।

जागना—उठना। चैतन्य होना। सजग होना। जगना। सावधान होना।

जगाना—उद्बोधित करना। चैतन्य करना। उठाना। सजग होना। सावधान करना।

जलना—भस्म होना। खाक होना। स्वाहा होना। नष्ट होना। बरबाद होना। आग लग जाना। दहना। दग्ध होना। बरना (बलना)। सुलगना।

जाना—[देखो पृ० २०५ 'चलना' शब्द]।

जानना—समझना। पहचानना। परिचय करना। चीन्हना।

जुटाना—जोड़ना। भिड़ा देना। मिलाना। एकत्र करना। इकट्ठा करना। जमाना। सँजोना।

जोहना—आशा देखना। राह ताकना। आशावान् होना। राह देखना। समझना। प्रतीक्षा करना। ताकना। ताक लगाना। जोवना। चितवना। बाट देखना।

झकोरना—हिलाना। हिलोड़ना। कँपाना। झोरना। झकझोरना।

झखना—पछताना। पश्चात्ताप करना। अनुताप करना। रोना। झींखना।

झगड़ना—बकझक करना। विवाद करना। लड़ना। कलह करना। झगड़ा करना। लड़ाई करना। वाद-विवाद करना। सरबर करना। भिड़ना। मुहाँ मुहीं करना। मुँहजोरी करना।

झझकारना—फटकारना। दुत्कारना। तिरस्कार करना। डपटना। डाँटना। हटाना। अवहेलना करना। अनादर करना। अश्रद्धा करना। अवज्ञा करना। झिड़कना। झटकना।

झटकना—(१) छीनना। मार लेना। लूट लेना (२) दूसरे अर्थ में "झझकारना" के पर्याय के अनुसार। उचक लेना।

झड़ना—झरना। टूटकर गिरना। गिरना। पतन होना। स्खलित होना। विचलित होना। टपकना। चूना (चूपड़ना)। विचलना।

झल्लाना—चिड़चिड़ाना। खीझना। चिढ़ना। कुढ़ना। किटकिटाना।

झाँसना—भुलावा देना। झटक लेना। झाँसा पट्टी देना। फुसलाना। बहकाना। ठगना। धोखा देना।

झाड़ना—(१) साफ करना। बुहारना। बटोरना। झारना। झाड़ू देना। (२) गिराना। टपकाना। चुआना। निचोलना। (३) फूक डालना। मन्त्र फूँकना। (भूतादि बाधा) उतारना। झाड़-फूक करना। टोना टोटका करना।

झुराना—सूखना। सुखाना। मुरझाना। शुष्क होना। झुलसना।

झूमना—काँपना। हिलना। डोलना। लहराना। झोका खाना।

झोंकना—फेंकना। ढकेलना। घुसेड़ना। डालना।

टकराना—टक्कर खाना। टक्कर मारना। धक्का खाना। चोटखाना।

टघलना—टघरना। पिघलना। गलना। द्रवीभूत होना।

टिकना—बसना। ठहरना। रहना। रुकना। अड़ना। अड़कना। थँभना।

टेकना—आश्रय लेना। थाँमना। आड़ना। सहारा लेना। आड़ लगाना। ओट लगाना। टेक लगाना।

टेवना—तेज करना। सान चढ़ाना। पैना करना। तीखा करना। धार देना।

टोहना—टोह लेना। पता लगाना वा लेना। खोजना। अनु-सन्धान करना। ढूंढ़ना। अन्वेषण करना।

ठगना—भुलावा देना। लूटना। लूट लेना। भुलाना। प्रतारण करना।

ठठना—सजना। रचना। सवंरना। सजधज करना।

ठिठुरना—सदियाना। काँपना (सर्दी से)। थरथराना। जकड़ना। जड़ाना। शीत लगना। जमना वा जमजाना।

डगमगाना—लड़खड़ाना। चंचल होना। डोलना। डवाँडोल होना। काँपना। हिलना। इधर-उधर होना। विचलित होना।

ढकेलना—ठेलना। आगे बढ़ाना। रेलना। धक्का देना।

ढाकना—तोपना। झाँरना। मूंदना। बन्द करना। अव्यक्त करना।

तरसना—लालायित होना। ललकना। ललचना। लोभ करना। उत्कण्ठित होना।

तरसाना—प्रलोभन देना। ललचाना। ललकाना। व्यर्थ लालच देना। लोभाना (लुभाना)।

तरेरना—तीक्ष्ण दृष्टि से देखना। लाल आँखें करना। घूरना। आँखें दिखाना। त्योरी बदलना। आँख-भौं चढ़ाना।

त्यागना—छोड़ना। तजना। त्याग देना। अलग करना।

दहलना—शंकित होना। आतंकित होना। काँपना। शंकाक्रान्त होना। डरना। भयभीत होना। थर्राना।

देखना—ताकना। अवलोकन करना। दृष्टिगोचर करना। निहारना। दर्शन करना। अवलोकना। निखरना। लखना। निरीक्षण करना। घूरना। दृष्टिगत होना। नजर आना। साक्षात् होना। प्रत्यक्ष होना। पेखना।

देना—प्रदान करना। दान करना। सौंपना। उत्सर्ग करना। निर्वपण करना। वितरण करना (बाँटना)। समर्पण करना। उत्सर्जन करना।

दौड़ना—(सं० धोरण)। भागना। पराना (पलायन)। प्रधावित होना। गतिमान होना। सवेग चलता। धावना। भजना। वेगवान् होना। भाजना।

धड़कना—हिलना। दहलना। डरना। कँपना। थर्राना। थरथराना। धुकधुकाना। धड़धड़ाना। फड़कना।

धधकना—भभकना। जल उठना। प्रज्वलित होना।

धमकाना—डराना। धमकी देना। भय दिखाना। डाँटना। झिड़कना। घुड़कना।

धिक्कारना—फटकारना। तिरस्कार करना। निन्दा करना। अपवाद करना।

धोना—साफ करना। पखारना। शुद्ध करना। संधालना। प्रक्षालन करना।

नकारना—अस्वीकार करना। न मानना। मुकरना।

नाघना—लाँघना। उल्लंघन करना। छलाँग मारना। डाकना। फलाँग मारना।

निकालना—बाहर करना। खदेड़ना। भगाना। काढ़ना। बहिष्कृत करना। दुरदुराना।

निखारना—उजराना। साफ करना। स्वच्छ करना। धोना। खँगारना। थिराना।

निगलना—लील जाना। घोंट जाना। गटक जाना। गटकना। गपक जाना। (गले के नीचे) उतार जाना। घूँटना।

निथारना—रसाना। निचोड़ना। गारना। फरियाना। साफ करना।

निबाहना—निर्वाह करना। पूरा करना। सिद्ध करना। समाप्त करना।

नियराना—नगिचाना। निकट आना। समीप आना। पास आना।

निहुरना—झुकना। नवना। नमित होना। नत होना। मुड़ना। दबना। प्रणत होना।

निवारण करना—मना करना। रोकना। दूर करना। बर्जना। बचाना। हटाना। वारण करना।

निस्तारना—उद्धार करना। बचाना। छुटकारा देना। उबारना। मुक्त करना। त्राण करना।

पकना—सीझना। रँधना। पक्व होना। सिद्ध होना। चुरना।

पकाना—रींधना। सिद्ध करना। चुराना। सिझाना। उबालना। जोश देना।

पगना—भिगना। डूबना। निमज्जित होना। मग्न होना। रस में डूबना।

पगुराना—जुगाली करना। जुगलाना। चबाना। रोमन्थ करना।

पढ़ना—अध्ययन करना। स्मरण करना। याद करना। रटना। अभ्यास करना।

पढ़ाना—अध्यापन करना। रटाना। अभ्यास कराना। सिखाना।

पलना—पोस पाना। पालित होना। पोषित करना। बढ़ना। प्रतिपालित होना। पनपना।

पलोटना—दबाना। कुचलना। मींजना। सेवना।

पहनना—परिधान करना । धारण करना । लपेटना ।

पहचानना—परिचय पाना । जानना । चीन्हना ।

पाना—प्राप्त करना । उपलब्ध करना । लहना । पावना ।

पालना—रक्षा करना । पोसना । रखना । पालना करना । पोषण करना । भरण करना । प्रतिपालन करना ।

पिचकना—सिमिटना । सिकुड़ना । पचकना । दबना । धँसना । चुचुकना । बिचिकना ।

पिछलना—बिछुलना । फिसलना । गिरपड़ना । पड़ना । गिरना । सकिलना । सरकना । (सं० पिच्छिल) । सरना ।

पीना—पान करना । आचमन करना । अँचवना ।

पुकारना—गोहराना । बुलाना । हाँक लगाना । हाँक मारना । डाँकना । आह्वान करना ।

पैरना—[देखो पृष्ठ २०३ "उतराना" शब्द]

पोसना—[देखो "पालना" शब्द]

प्रकट होना—प्रकाशित होना । प्रत्यक्ष होना । अवतरित होना । आना । आ जाना । व्यक्त होना । प्रसिद्ध होना । जाहिर होना । विदित होना । स्पष्ट होना । साक्षात्कार होना वा करना । साक्ष होना ।

फँदना—फँसना । अटकना । उलझना । बझना । रुकना ।

फरकना—चमकना । फड़कना । दमकना । छटकना । थिरकना । फुदकना । उछल कूद करना । इधर उधर होना ।

फूलना—(१) खिलना । हुलसना । प्रफुल्लित होना । आनन्दित होना । प्रसन्न होना । प्रस्फुटित होना । विकसित होना । कुसुमित होना । पुष्पित होना । (२) सूजना ।

फेंकना—दूर करना । प्रक्षेपण करना । निकाल देना । त्यागना ।

फैलना—पसरना । बिथरना । बिखरना । छिटाना । इधर-उधर होना ।

फैलाना—पसारना। छींटना। बिथारना। बिखेरना। प्रचार करना। प्रकाश करना।

बकना—अकबक करना। जल्पना। बकझक करना। बकवाद करना।

बटोरना—संग्रह करना। संकलन करना। एकत्र करना। जुटाना। इकट्ठा करना। चयन करना।

बनाना—प्रस्तुत करना। रचना। तैयार करना। ठीक करना। निर्माण करना।

बरजना—मना करना। वारण करना। निषेध करना। वर्जन करना। रोकना।

बरना—(१) वरण करना। स्वीकार करना। ब्याह करना। चुनना। आमंत्रण करना। (२) बलना। सुलगना।

बहाना—प्रवाह करना। भसाना। फेंकना। चलाना। बहादेना।

बहाना करना—बातें बनाना। भुलाना। भुलावा देना। बात बदलना। छिपाव करना। छिपाना। दुराव करना।

बहलाना—फुसलाना। बहलाव करना। प्रसन्न करना। मनोरञ्जन करना।

बाँटना—(१) भाग करना। हिस्सा लगाना। बखरा लगाना। बाँट करना। विभाजित करना। विभक्त करना। (२) पीसना। रगड़ना। घिसना।

बासना—सुवासित करना। सुगंधित करना। महकाना। गमकाना। गंधाना।

बिचकना—भड़कना। सतर्क होना। सावधान होना।

बिचलना—विचलित होना। फिसलना। बिछलना। खसकना। स्खलित होना। टरकना। टलना। हटना।

बिछुड़ना—जुदा होना। अलग होना। वियोग होना। पृथक होना।

विदारना—विदीर्ण करना। फाड़ना। चीरना। काटना।

बींधना—डसना। डंक मारना। डाँस मारना। आर धँसाना।

बिलसना—(१) भोगना । उपभोग करना । चमकना । आनन्द करना । मौज उड़ाना । (२) शोभा देना । प्रकाशित होना ।

बीतना—समाप्त होना । पूरा होना । व्यतीत होना । गुजरना । अवसान होना ।

बूकना—पीसना । कूटना । चूर्ण करना । बुकनी करना ।

बेधना—गड़ाना । चुभाना । गोदना । कोंचना । धसाना ।

बैठना—उपविष्ट होना । उपवेशन करना । विराजना । आसन लगाना वा जमाना । विराजमान होना । स्थिर होना । आसन ग्रहण करना । स्थापित होना । बैसना ।

बोलना—[देखो पृष्ठ २१२ "कहना" शब्द] ।

भकुआना—अकचकाना । भुलाना । चकित होना । कर्तव्य विमूढ़ होना । स्थकित होना । सन्न होना ।

भगाना—हटाना । दूर करना । हँकाना । खदेड़ना । खेदना । दुरदुराना ।

भजना—(१) भजन करना । स्तुति करना । रटना । विनय करना । आराधना करना । स्मरण करना । उपासना करना । पूजना । अर्चना । ध्याना । गुणानुवाद करना । कीर्त्तन करना । जपना । लव लगाना । (२) भागना । दूर हटना । बिलग होना ।

भटकाना—भुलावा देना । धोका देना । बहकाना । भुलाना । भ्रमित करना । भ्रम में डालना ।

भड़काना—चमकाना । चौंकाना । झिझकाना । उचाटना । जी हटाना ।

भरमाना—ठगना । वञ्चन करना । छलना । धोखा देना । भुलावा देना ।

भसाना—[देखो पृष्ठ २१२ "बहाना" शब्द]

भागना—[देखो पृष्ठ २०९ "दौड़ना" शब्द]

भाना—अच्छा लगना । सुहावना लगना । सोहाना । प्रिय लगना । जँचना ।

भासना—विदित होना । प्रकाशित होना । ज्ञात होना । शोभित होना । [भास्=शोभा, प्रकाश] ।

भुनना—भूँजना । सेंकना । भर्जन करना ।

भुलाना—प्रतारण करना । फुसलाना । धोखा देना । छलना । भुलवाना ।

भूलना—चूकना । विस्मरण होना । बिसरना । विस्मृत होना ।

भेजना—पठाना । पहुँचाना । प्रस्थापित करना ।

भेंटना—मिलना । भेंट होना वा करना । मुलाकात करना ।

भोंकना—गोदना । चुभाना । घुसाना । घुसेड़ना । ठूँसना ।

मचलना—हठ करना । घमंड करना । दुराग्रह करना । जिद करना । रूठना । चिढ़ना । मटकना । नंगई करना ।

मटकाना—कटाक्ष करना । आँख चमकाना । बिराना (बिड़ाना) ।

मथना—महना । बिलोना । बिलोड़ना ।

मनाना—प्रसन्न करना । मिन्नत करना । मनौती करना । प्रसादन करना । राजी करना ।

मरना—निधन होना । प्राणान्त होना । समाप्त होना । अवसान होना । मृत्यु होना । निपात होना । देहान्त होना । दिवंगत होना ।

मलना—रगड़ना । मींजना । मसलना । साफ करना । घँसना । मर्दन करना ।

मानना—स्वीकार करना । मान जाना । राज़ी होना ।

माजना—स्वच्छ करना । उजराना । निर्मल करना । धोना । (सं० मार्ज्जन) ।

मारना—(१) प्राणान्त करने के अर्थ में 'राजवर्ग' के "वध" शब्द के पर्य्याय के साथ 'करना' जोड़ देने से बोध हो जायगा ।

(२) पीटना । ताड़ना । ठोंकना । ठठाना । पीठपूजा करना ।

मिटाना—बिगाड़ना । नष्ट करना । मेट देना । मेटना ।

मिलना—प्राप्त होना। उपलब्ध होना। लाभ होना। पाना। जुड़ना (जुरना)। हाथ लगना।

मीचना—ढाकना। ढाँपना। मूंदना। बन्द करना। तोपना। मीलना।

मुड़ना—घूमना। फिरना। झुकना। टेढ़ा होना। ऐंठना। बल खाना। मुर्री पड़ना।

मुरझाना—सूखना। शुष्क होना। कान्तिहीन होना। मलीन होना। उदास होना। निष्प्रभ होना।

मूड़ना—(१) ठगना। ऐंठना। छलना। धोखा देना। फुसला कर ले लेना। (२) सिर घोंटना। बाल मूँड़ना। बाल काटना।

मूसना—चोरी करना। लूटना। सर्वस्व चोरी जाना। खसोटना।

रगड़ना—[देखो 'घिसना' शब्द पृ० २०५]

रचना—निर्माण करना। बनाना। सजाना। तैयार करना। प्रस्तुत करना। विधान करना।

रमना—(१) रमण करना। क्रीड़ा करना। आनन्द करना। जी लगना। मौज उड़ाना। खेलना-कूदना। (२) घूमना। पर्यटन करना। स्वेच्छया यात्रा करना। भ्रमण करना।

रहना—बसना। टिकना। ठहरना। होना। स्थिर होना। स्थान ग्रहण करना। स्थापित होना।

रिसाना—क्रोध करना। रोष करना। रूसना। कोपना।

रीझना—प्रसन्न होना। प्रेम करना। मोहित होना। मुग्ध होना।

रूठना—अप्रसन्न होना। रूसना। कोहाना। झगड़ना। बिगाड़ करना। अनबन होना।

रोकना—कीलन करना। रोक करना। प्रतिषेध करना। थाम्हना। ठहरना। कीलना। प्रतिरोध करना। अटकाना। हटकना। बरजना। (वर्जन)।

रोना—रुदन करना। विलाप करना। विलपना। कलपना। राग काढ़ना। आँसू बहाना। प्रलाप करना। दाढ़ें मारना।

रोपना – (१) (पेड़) लगाना । बोना । वपन करना ।
(२) ठान ठानना । आरम्भ करना ।

लखना— पहचानना । ताड़ना (ताड़जाना) । चीन्हना । देखभाल देना । जानना ।

लजाना—लाज करना । हया करना । ब्रीड़ा करना । शर्माना । सकुचाना । संकोच करना ।

लटपटाना—लड़खड़ाना । विचलित होना । डिगना । हिलना ।

लपेटना—ओढ़ाना । बाँधना । बेंठन लगाना ।

ललचाना—तरसाना । लुभाना । लालच दिलाना । लहकाना ।

लहना—लगना । ठहरना । जँचना ।

लहकना—[देखो पृष्ठ २०५ "चमकना" शब्द]

लहकाना—(१) उभाड़ना । चिट्टा देना । ताल देना । शह देना । बहकाना (२) बालना । सुलगाना । जलाना । धधकाना ।

लहलहाना—खिलना । फूलना । विकसना । उमगना । विकसित होना । हराभरा होना । प्रसन्न होना । गद्‌गद होना ।

लादना—बोझना । भरना ।

लिपटना—चिपकना । सटना । गले लगाना । गले पड़ना । चिमटना । अँगेजना । भिड़ना । चिपटना । जुटना ।

लिपटाना—सटाना । भिड़ाना । युक्त करना । गले लगाना । चिपकाना । चिमटाना । अङ्ग लगाना । आलिङ्गन करना ।

लुटाना—उड़ाना । दे देना । गँवाना । बाँट देना । खोना । बरबाद कर डालना ।

लुकना—छिपना । गुप्त रहना । ओट देना । आड़ में आना । हट जाना ।

लूटना—हर जाना । छिन जाना । अपहृत होना । नष्ट हो जाना । बरबाद हो जाना ।

लेना—ग्रहण करना। स्वीकार करना। अङ्गीकार करना। प्राप्त करना।

लेटना—सोना। शयन करना। ढरकना। पीठ लगाना। पौढ़ना। विश्राम करना।

लौटना—फिरना। पलटना। घूम पड़ना वा जाना। घूमना। वापस आना। मुड़ना।

संचना—जुटाना। जुगाना। बटोरना। संग्रह करना। एकत्रित करना। संचय करना।

सँवारना—सजाना। सिंगारना (शृंगार करना)। बनाना।

सकाना—शंकित होना। भयभीत होना। डरना। त्रास पाना।

सकारना—स्वीकार करना। मान लेना। मंजूर करना। हामी भरना।

सड़ना—बसियाना। उबसना। गलना। बजबजाना। गन्धाना।

सधना—सिद्ध होना। सिझना। बनना। होना। ठीक होना।

समाना—अँटना। घुसना। पैठना। प्रविष्ट होना। भरना।

समेटना—सिकोड़ना। बटोरना। संकोच करना।

सँभालना—सुधारना। सँवारना। बनाना। प्रबंध करना। थाँभना।

सराहना—प्रशंसा करना। सराहना करना। बखानना। बड़ाई करना।

सहमना—डरना। भय खाना। संकुचित होना।

सहलाना—खुजलाना। सहराना। हाथ फेरना।

सहेजना—सौंपना। सुपुर्द करना। सँभाल करा देना। देख-भाल करना। देखना-भालना। समझ-बूझ लेना। जाँच कर लेना।

सालना—भिदना। चुभना। गड़ना। टीस मारना। टीसना।

सिझाना—[देखो पृष्ठ २१० "पकाना" शब्द]

सिधारना—जाना। चले जाना। प्रयाण करना। हट जाना। दूर होना।

सिमिटना—सिकुड़ना। बटुरना। जुटना।

सिराना—(१) बन पड़ना। हो सकना। होना। (२) जुड़ाना। ठंडा होना वा पड़ना। शीतल होना।

सिहरना—कँपना। थर्राना। डर जाना। घबड़ा जाना।

सींचना—तर करना। सिंचन करना। पानी देना वा छिड़कना। छिड़काव करना। भिगाना।

सीना—सिलाई करना। तुरपना। टाँकना। तागना। गाँथना। गूँथना।

सुनना—कर्णगोचर करना। श्रवण करना।

सूँघना—बास लेना। घ्राण लेना। महक लेना। गँध लेना।

सोना—शयन करना। निद्रित होना। खुर्राटे लेना। नींद लेना।

सौंपना—समर्पण करना। सुपुर्द करना। दे देना।

हँकाना—आगे बढ़ाना। चलाना। बढ़ाना। रेंगाना।

[**नोट**—"हँकाना" का प्रयोग पशुवर्ग के लिये ही होता है।]

हँसना—स्मित होना। प्रसन्न होना। बत्तीसी दिखाना। खिलखिलाना। हास्य करना। हास करना।

हकबकाना—घबड़ाना। व्याकुल होना। उद्विग्न होना। भौचक्का होना। रुन्न होना। किंकर्तव्य विमूढ़ होना। चकित होना।

हकलाना—तुतलाना। हकारना।

हटकना—मना करना। निषेध करना। प्रतिषेध करना। रोकना। थाम्हना। अटकाना। बाधा डालना।

हटना—(१) अलग होना। पृथक होना। बिलग होना। बिलगाना। किनारे होना वा रहना। किनारा कसना। दूर रहना। दूर भागना। पीछे होना। पीछा दिखाना। मुँह मोड़ना। मुँह चुराना वा लुकाना। जी चुराना। सरक जाना। टल जाना। खसक जाना। (२) बात से हटना=मुकरना। नकारना। बात बदलना।

हटाना—दूर करना। अलगाना। अलग करना। टाल देना।

हराना—थकाना। जीतना। पराजित करना। हार देना।

हड़पना—हज़म कर लेना। मार लेना। खा डालना। ले लेना।

हारना—(१) पराजित होना। अजयी वा अजित होना। पराभूत होना। अवनत होना। नत होना। (२) बात हारना=वचन देना। बात देना। वचन-बद्ध होना।

हिचकना—आगा पीछा करना। अटकना। रुकना। सन्देह में पड़ना। संशयित होना। हिचकिचाना। सशंकित होना।

हिलोरना—घँघोरना। खँगारना। हिलाना। छानना। हलकोरना। लहराना।

हुलसना—प्रसन्न होना। आनन्दित होना। हर्षित होना। आनन्द विभोर होना।

होना—विद्यमान होना वा रहना। उपस्थित रहना वा होना। रहना।

❀ समाप्त ❀

हिन्दी साहित्य के महारथी स्वर्गीय आचार्य
महावीर प्रसाद जी द्विवेदी

सम्मति

हिन्दी-पत्रपत्रिकाओं की कोश-
बड़े महत्व की पुस्तक है।
हिन्दी में इस ढंग की पुस्तक
अब तक मेरे देखने में न
आई थी। इस पुस्तक ने उस
अभाव की पूर्ति कर दी।
लेखक और प्रकाशक दोनों
बधाई के पात्र हैं।

म० प्र० द्विवेदी

दौलतपुर
१२-५-३५

स्वर्गीय महामहोपाध्याय डाक्टर गङ्गानाथ झा एम्० ए० डी० लिट, भूतपूर्व वाइस् चान्सलर् इलाहाबाद युनिवर्सिटी ।

जीवन पर्यन्त "अमरकोश" तथा राजेट् कृत "थिसरस् ऑव् इङ्लिश् वर्ड्स् एन्ड फ्रे-ज़् ज़्" का व्यवहार करते हुए मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक बड़े ही उपकार की होगी। हिन्दी के उन लेखकों को जो शुद्ध शब्दों के प्रयोग में विशेष ध्यान देते हैं यह पुस्तक सर्वदा अपने पास रखनी चाहिये ।

४-८-'३५ । गङ्गानाथ झा ।

कविसम्राट् पण्डित अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' भू० पू० प्रोफेसर-हिन्दी विभाग, हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी ।

"हिन्दी-पर्य्यायवाची कोश की प्राप्ति सादर स्वीकार करता हूँ। ग्रन्थ उपयोगी और उपकारक है। परिश्रम से लिखा गया है। उसके प्रकाशन और संकलन के लिये आपको बधाई है। यह कवियों और विद्यार्थियों के लिये विशेष उपकारक है। आपका श्रम सार्थक है। ग्रन्थ पाकर मैं आह्लादित हुआ। आशा है हिन्दी संसार में इसका उचित आदर होगा।"

अध्यापक स्व० रामदास जी गौड एम्० ए०

"मैंने पं० श्रीकृष्ण शुक्ल का लिखा 'हिन्दी-पर्य्यायवाची कोश' देखा। इस ढंग का हिन्दी में यह पहला ही कोश है जिसमें इतने शब्दों का गद्य में संग्रह है। यह 'अमरकोश' की तरह वर्गानुक्रम से है। शुक्ल जी ने इसमें बहुत ही परिश्रम किया है। यह आरंभिक काम है। औरों के लिए आपने मार्ग दिखा दिया है। लेखकों, कवियों और शिक्षकों के लिये तो यह एक अनमोल चीज है। हिन्दी साहित्य के भाण्डार की शुक्ल जी ने एक अमूल्य रत्न से वृद्धि की है। आपकी पादटिप्पणियाँ बड़े काम की हैं। इस सत्संग्रह के लिये आप सर्वथा बधाई के पात्र हैं।"

महामहोपाध्याय हरनारायण शास्त्री विद्यासागर, देहली ।

मैंने पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल का बनाया हुआ 'हिन्दी पर्यायवाची कोश' देखा। संस्कृत में इस प्रकार के कोश होते हुए भी हिन्दी में इस ढंग का कोश न होना मुझे बहुत दिनों से खटकता था। मैं चाहता था कि कोई सुयोग्य विद्वान् इस विषय में परिश्रम करे। आनन्द की बात है कि शुक्लजी ने इस अभाव की पूर्ति कर दी। जहाँतक मैं समझता हूँ हिन्दी में इस प्रकार के कोश का निर्माण पहिला ही प्रयास है। इससे विद्यार्थियों को और कविता करनेवाले विद्वानों को भी बहुत कुछ सहायता मिलेगी। इसके फुटनोट ग्रन्थकर्त्ता के गम्भीर ज्ञान के परिचायक हैं और पाठकों के लिये विशेष उपयोगी होंगे ऐसी आशा है। इसके लिये ग्रन्थकर्त्ता और प्रकाशक दोनों ही धन्यवाद और बधाई के पात्र हैं। इत्यलम्।

राजर्षि स्व० पुरुषोत्तमदास टंडन एम्० ए० प्रयाग।

आपका भेजा "हिन्दी पर्य्यायवाची कोश" आपके पत्र के साथ मिला। अपने मित्र पं० श्रीकृष्ण शुक्ल के इस परिश्रम को देखकर मैं प्रसन्न हुआ। ऐसे कोश की हिन्दी में बहुत आवश्यकता थी। वास्तव में वर्गों के विभाग के अनुसार इससे भी बड़े कोश की आवश्यकता है। पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल ने यह काम उठा लिया है इससे मुझे आशा है कि वह आगे परिश्रम कर अन्य बहुत शब्दों और वर्गों का समावेश कर सकेंगे। मेरी ओर से उनको बधाई।

हिन्दी के अनन्य भावुक कवि एवं सफल नाट्यकार स्व० बाबू जयशंकर 'प्रसाद' जी काशी।

"वर्णानुक्रम से संगृहीत शब्द कोश संस्कृत वाङ्मय में बहुत हैं। विषयानुकूल शब्दों का ज्ञान कराने में उनकी विशेष उपयोगिता है। पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल जी का पर्य्यायवाची कोश हिन्दी में उस शैली का प्रथम प्रयास है। इसमें

उपयोगी टिप्पणियाँ भी दी गई हैं ! इसे देख कर मुझे प्रसन्नता हुई । आशा है कि इसके आगामी संस्करण में कुछ छूटे हुए वर्ग और भी संगृहीत होंगे और अधिक टिप्पणियाँ बढ़ाई जायँगी ।

स्व० पण्डित रामनारायण जी मिश्र बी० ए०, पी० ई० एस्०

पं० श्रीकृष्ण शुक्ल का "हिन्दी पर्य्यायवाची कोश" देखकर मुझे आश्चर्य और प्रसन्नता हुई । आश्चर्य इस बात से कि अनेक झंझटों के रहते हुए भी वे इतने महत्व का काम कर सके । यह उनकी बरसों की तपस्या का फल है ।

प्रसन्नता इस बात से कि यह कोश हिन्दी की एक बड़ी आवश्यकता को पूरा करता है। इससे पहिले ऐसे शब्दों का कोई संग्रह मैंने हिन्दी में नहीं देखा था ।

मुझे आशा है कि यदि शुक्ल जी का उत्साह बढ़ाया जायगा तो वे इसके दूसरे संस्करण में यह भी बतला सकेंगे कि इन पर्य्यायवाची शब्दों के अर्थ में क्या भेद है । शुक्ल जी को मैं इस परिश्रम की सफलता के लिए बधाई देता हूँ ।

डाक्टर जगन्नाथ प्रसाद शर्मा एम्० ए०, डी० लिट्०

भू० पू० अध्यक्ष हिन्दी विभाग, हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी ।

"प्रस्तुत हिन्दी-पर्य्यायवाची कोश ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता का अनुभव सभी कर रहे थे, परन्तु पं० श्रीकृष्णशुक्ल ने जिस अध्यवसाय एवं लगन के साथ इस पुस्तक को तैयार किया है वही इस बात का प्रमाण है कि उनके हृदय में वाङ्मय की यह न्यूनता अत्यधिक खटकती रही । आठ-दस वर्षों के सतत प्रयास से जो यह ग्रन्थ तैयार किया गया है वह अनेक प्रकार से प्रशंसनीय है । इसकी पाद टिप्पणियाँ लेखक के विशेष ज्ञान एवं परिश्रम की ही केवल परिचायक नहीं हैं, वरन् पढ़ने वालों के लिए विशेष उपयोगी हैं । वर्तमान काल में यह पुस्तक अपने ढंग की एक ही है। इसका लेखक सभी प्रकार से साधुवाद का पात्र है ।"

प्रसिद्ध सामयिक पत्र पत्रिकाओं की सम्मतियाँ

सरस्वती, प्रयाग मार्च १९३५

हिन्दी में यह कोश अपने विषय का पहला है, साथ ही उत्कृष्ट भी है। इसके रचयिता पण्डित, श्रीकृष्ण शुक्ल विशारद ने इसकी रचना में काफी परिश्रम किया है और इसको उपयोगी बनाने में उन्होंने अपनी ओर से कुछ उठा नहीं रक्खा। इसकी रचना संस्कृत कोशों के आधार पर की गई है और सभी शब्दों के उपलब्ध पर्याय संकलित करने का खासा प्रयास किया गया है। प्राचीन कविता-पुस्तकों के अध्ययन में तथा संस्कृत-बहुला नई रचना करने में इस कोश से पूरी सहायता मिल सकती है। यह कोश विषय के अनुसार ३९ वर्गों में विभाजित है तथा इसमें २,२७९ शब्दों के पर्याय दिए गये हैं। हिन्दी-कोश होने के कारण हिन्दी-पर्याय संकलित करने में भी परिश्रम किया गया है।

——

विशाल-भारत, कलकत्ता। अगस्त १९३५

हिन्दी में अभिधान ग्रन्थों की प्रचुरता नहीं है। उनकी संख्या उँगलियों पर गिनी जा सकती है। प्राय: सभी अभिधान ग्रन्थों में केवल शब्द और उनके अर्थ संग्रह किये जाते हैं। किसी-किसी शब्द के अर्थ में यदा कदा दो एक पर्यायवाची शब्द दे दिये जाते हैं। प्रस्तुत कोश की विशेषता यह है कि इसमें शब्दों के पर्यायवाची शब्द ले लीजिए, साधारण अभिधान ग्रन्थ में कौवा शब्द के आगे केवल इतना ही लिखा मिलेगा, एक प्रकार का बड़ा काला पक्षी 'काक'। परन्तु प्रस्तुत पुस्तक में आपको कौवे के दो दर्जन से अधिक पर्यायवाची शब्द मिल जाएँगे। हमारे यहाँ पर्यायशब्दों की कमी नहीं, हाँ लोग उन्हें जानते कम हैं, इसलिये उनका व्यवहार कम करते हैं।

पर्यायवाची कोश विद्यार्थियों, शिक्षकों, कवियों और लेखकों के बड़े काम की चीज है। पर्याय शब्दों के ज्ञान और व्यवहार से भाषा समृद्धशाली होती है यह कहने की जरूरत नहीं। लेखक और प्रकाशक ने इस पुस्तक के द्वारा हिन्दी की एक कमी की पूर्ति की है जिसके लिए वे धन्यवाद के अधिकारी हैं।

———

माधुरी. लखनऊ । अप्रैल १९३६

जब से "शब्दार्थ पारिजात्" और "हिन्दी-शब्द सागर" जैसे कोश लिखे गए, तब से हिन्दी-भाषा-भाषियों की अनेक असुविधाएँ दूर तो अवश्य हो गईं; पर इनकी उपादेयता थी एकांगी ही। अक्षरानुक्रम की दृष्टि से तो अब तक अनेक प्रयास किये गये, पर किसी ने भी शब्दानुक्रम की ओर कोई महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं किया। पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल का हिन्दी-पर्यायवाची कोश इस क्षेत्र में सर्वप्रथम और सफल प्रयास है। मान्यवर महावीरप्रसादजी द्विवेदी, कविवर अयोध्यासिंहजी हरिऔध तथा प्रख्यात नाट्यकार श्रीजयशंकरप्रसादजी जैसे महानुभावों ने इस पुस्तक की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। पुस्तक की उपादेयता का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण यही है।

पुस्तक के लेखक श्रीकृष्णजी शुक्ल और प्रकाशक कैलाशनाथजी भार्गव दोनों ही बधाई के पात्र हैं।

मासिक विश्वामित्र, कलकत्ता । नवम्बर १९३५

संस्कृत में 'अमर' 'मेदिनी कोष' आदि कोशग्रन्थ शब्दों के वर्गानुक्रम के अनुसार जिस रूप में हैं उसी रूप में इस कोश की हिन्दी भाषा में रचना की गयी है। इसमें शब्दों के पर्याय वर्गीकरण की पद्धति पर दिये गये हैं जिससे एक ही अर्थ के विभिन्न शब्दों का संग्रह एक ही स्थान पर मिल जाता है। जहाँ शब्दों का चुनाव करना होता है वहाँ निस्सन्देह इस प्रकार का कोश बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। आयुर्वेद, ज्योतिष आदि शास्त्रों के व्यावहारिक शब्द भी इस कोश में संगृहीत हैं जिससे इसकी उपयोगिता और बढ़ गई है। जहां तक हम जानते हैं, हिन्दी में यह सर्वप्रथम ही प्रयास है और इसमें सन्देह नहीं कि इसके प्रणयन में इसके विद्वान् प्रणेता को पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है। पुस्तक महत्वपूर्ण और बड़े काम की है। विद्यार्थी, कवि, लेखक आदि इससे अमित लाभ उठा सकते हैं।

वर्गानुक्रम शब्द-सूची

प्रथम खण्ड

६. कालादि वर्ग

द्वितीय खण्ड

तृतीय खण्ड

१. मनुष्य वर्ग

२. सम्बन्धी वर्ग

१०. व्यवसाय वर्ग

चतुर्थ खण्ड

शुद्धिपत्र ।

निवेदन—मेरे दृष्टिदोष तथा कुछ प्रेस की असावधानी के कारण कुछ अशुद्धियाँ रह गई हैं, जिन्हें इस 'शुद्धिपत्र' के अनुसार शुद्ध करके तब ग्रन्थावलोकन करें । —लेखक ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धरूप	शुद्धरूप
२	२४	'जतुर्दश	चतुर्दश
३	९	राजेन्द्र	गजेन्द्र
,,	१५	जम्बुक	अम्बुक
७	२	कदर्पी	कपर्दी
९	३	हेम्बर	हेरम्ब
१५	५	आगय	आगम
१५	१०	थभा	यथा
२१	२१	वायुकोण (पू०+द०)	वायुकोण (प० + उ०)
		अग्निकोण (प० + उ०)	अग्निकोण (पू० + द०)
४३	२२	मौकादण्ड	नौका दण्ड
५२	२२	दर्गुर	दर्दुर
५४	६	स्वर्य गैरिक	स्वर्ण गैरिक
७९	१७	लघुर्शालु	लघुशेलु
९२	१८	श्यामातुलसी	श्यामा तुलसी
९३	२१	धमुर्द्रुम	धतुर्द्रुम
९७	६	रिक्त मरिच	रक्त मरिच

नोट :—प्रेस को सावधान कर देने से ग्रन्थ के तृतीय और चतुर्थ खण्डों में अशुद्धियाँ नहीं देख पड़ीं। यदि मेरे दृष्टिदोष के कारण यत्किंचित भूलें रह गई हों तो सहृदय पाठक अपने विवेक से उन्हें सुधार लें तथा इसकी सूचना लेखक अथवा प्रकाशक को देने की कृपा करेंगे ।